आरम्भके साढ़े तेरह फार्म कलकत्ता २०१, हरीसन रोडके नरसिंह प्रेसमें पं० काशीनाथजी जैनके द्वारा छापे गये, बाकीका सम्पूर्ण ग्रंथ चितपुर रोडके श्री लक्ष्मीप्रिंटिंग वर्क्समें बाबू नरसिंहदास अग्रवाल द्वारा छापा गया

प्रकाशकीय-निवेदन ।

साधर्मिक बन्धुओंसे सप्रेम निवेदन है,-कि प्रस्तुत पुस्तकके सम्बन्धमे हमारी यह अभिलाशा थी कि, इसका मूल्य न रखकर विना मूल्य ही प्रचार करवाया जाय। तदनुसार इस पुस्तकके पूर्व-वक्तव्य-में तथा बीकानेर महावीर-मण्डलकी नियमावलीमें विज्ञापन देकर समस्त जैन बन्धुओंको भेंट देनेका उल्लेख कर दिया था। परन्तु बादमें कई सज्जनोंके यह कहनेपर कि "सब किसीको मुफ्त दे देनेसे कईयोंके पास दो-दो-तीन-तीन प्रतियें चली जाँयगी और कई भाई-योंही वंचित रह जायेंगे। तथा मुफ्तको पुस्तक जानकर कई भाई उसका ठीक तरह उपयोग भी न कर सकेंगे। अतः इसका लागत दाम रख दीजिये या उससे कम करके थोडा दाम रख दीजिये; पर दाम जरूर रखिये।" यह समझ कर हमने अब यह निश्चय किया है, कि यति साधु-साध्वी तथा लायब्रेरी-पुस्तकालयको भेंट दी जाय और साधर्मिक भाई बहनोंसे लागत मूल्यसे भी कम दाम लेकर दी जाय।

प्रस्तुत पुस्तककी २००० प्रतियोंपर छपाई, शोधाई, बन्धाई और कागज आदिका सारा व्यय २५००) हुआ है। तदनुसार प्रति पुस्तकका मूल्य १।) सवा रुपेया पडता है। परन्तु हर एक साधर्मिक भाई लाभ लेसके इस ख्यालसे पूरे दाम न रखकर केवल ॥।) बारह आने ही रखे हैं। और इन पुस्तकोंके जो दाम आयेंगे उन दामोंमें फिर कोई नयी पुस्तक प्रकाशित करवा कर आप लोगोंकी सेवामें उपस्थित करेंगे। आशा है, प्रेमी जनोंको हमारी यह व्यवस्था प्रिय प्रतीत होगी।

इस पुस्तकके प्रकाशन करवानेके सम्बन्धमें शासन-रक्षक, गांभिर्यादि गुण-विभूषित, शास्त्र-विशारद, व्याख्यान-वाचस्पति, पूज्यपाद, प्रातः स्मरणीय, जंगम-युगप्रधान भट्टारक जैनाचार्य श्री १००८ श्रीजिनचारीत्रसूरीश्वरजीने हमे सदुपदेश देकर इसको एक हजार प्रतियोंके छपवानेका निश्चय करवाया था। परन्तु कुछ समयके बाद शासन-मण्डन सकल शास्त्र-सम्पन्न, चारित्र-चूडामणि परम-पूज्य जैनाचार्य श्री १००८ श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजको विशेष प्रेरणा होनेपर दो हजार प्रतियोंके छपवानेका निश्चय हुआ। और तदनुसार हमने दो ही हजार प्रतियें छपवाकर प्रकाशित करवायी हैं।

इस पुस्तकके छपवाकर प्रकाशित करवानेका सारा श्रेय उक्त दोनों गुरुवर्योंको ही हैं। क्योंकि उन्हींकी परम कृपा और विशेष प्रेरणासे यह पुस्तक आप लोगोंकी सेवामें रखी गयी है। आशा है, इसे सप्रेम अपनाकर उक्त दोनों गुरुवर्योंके सदुपदेशको तथा हमारे परिश्रमको सफल करेंगे। यदि इस पुस्तकका हाथों-हाथ प्रचार हो गया तो थोड़ेही समयमें दूसरी कोई नयी पुस्तक तैयार करवाकर आप सज्जनोंकी सेवामें रखेंगे। यही हमारा अन्तिम निवेदन है।

प्रस्तुत पुस्तकका नामकरण हमारे स्वर्गीय पुत्र श्रीयुत अभयराजके स्मरणार्थ उसीके नामपर इसका नाम "अभयरत्नसार" रखा गया है। अस्तु।

निवेदक—

शंकरदान नाहटा।

अलग कर दिया है, जिससे पाठकोंके समझनेमें अड़चण न होगी। शुरूमें श्रावकोंके पाँचों प्रतिक्रमण अनन्तर साधु-प्रतिक्रमण, चैत्यवन्दन, स्तुति, स्तवन, सज्झाय, रास, लावणी, छन्द, पूजायें सूतक विचार, भक्ष्याभक्ष्य विचार, तपस्याओंके स्तवन और उनकी विधियें आदि प्रायः सभी उपयोगी और आवश्यक चीजें उधृत कर दी गयी हैं। भक्ष्याभक्ष्यके सम्बन्धमें खूब विवेचन देकर समझा दिया गया है। बाईस अभक्ष्य और बत्तीस अनन्त-काय किसे कहते हैं?, किस ऋतुमें कौनसे पदार्थ भक्ष्य और अभक्ष्य है?, श्रावकोंके लिये कौन कौनसे पदार्थ भक्ष्य माने गये हैं?, सचित्ताचित्त किसे कहते हैं?, श्राविकाओंको कैसा व्यवहार करना चाहिये। इत्यादि बातें सुविस्तृत रूपसे ठीक तरह समझा दी गयी हैं। हिन्दीके पाठकोंको ज्ञान करानेके लिये यह पहलाही साधन है। आशा है, पाठकगण प्रस्तुत पुस्तकको प्रेम-पूर्वक उप-योगमें ले कर हमारा और प्रकाशक महोदयका परिश्रम सफल करेंगे।

आरम्भमें प्रकाशक महोदयका यह विचार था कि प्रस्तुत ग्रन्थका लागत मूल्य रख कर प्रचार करावाया जाये। और उसके जितने दाम आवें उनमें और और पुस्तकें प्रकाशित कर-वायी जाय; पर आपका यह विचार अन्त तक स्थिर नहीं रहा। शेषमें अन्तिम निर्णय यही रहा कि विना दाम ही प्रचार कराया जाय। तदनुसार ज्ञानभण्डार, पुस्तकालय, पाठशाला, साधु, सध्वी, श्रावक और श्राविकाओंको उपहार स्वरूप देनेका निश्चय किया है। अतएव हर एक साधर्मीक वन्धुओंको चाहिये कि

इस पुस्तकको मंगवा कर अवश्य पढ़ें। ऐसा आवश्यक और उपयोगी ग्रन्थ भेंट मिलना असम्भव है।

पाठकोंसे हमारा अन्तिम यह निवेदन है, कि प्रस्तुत पुस्तकके सम्पादन और मुद्रण कार्यमें अनेक दोष छूट गये हैं। किसी किसी स्थल पर अक्षम्य दोष भी रह गये हैं। जिनके रह जानेसे हमें अत्यन्त दुःख हैं। ऐसा होनेका कारण हमारे स्वास्थ्य की अस्वस्थता एवं समयकी शीघ्रता है। आशा है, पाठक गण हमारी इन कठिनाइयोंकी ओर ख़याल करते हुए हमें क्षमान्वित करेंगे। शुभमस्तु।

कलकत्ता
२०१, हरिसन रोड़,
ता० ३०-७-१९२७

आपका—
काशीनाथ जैन।

ध्यानसे पढ़िये।
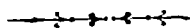
इस पुस्तककी या और किसी विषयके पुस्तककी आशातना-अवज्ञा नहीं करनी चाहिये। क्योंकि ज्ञानकी अवज्ञा करनेसे ज्ञानावरणीय कर्मोंका बन्ध होता है। पूजनकी पुस्तकोंमें भी लिखा है, कि "आगमनी आशातना नवी करीये" अर्थात् शास्त्रकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये। प्रत्युत उक्त वाक्यको बार-बार मनन करते हुए ज्ञानकी आशातनाका भयकर जिस तरह बन सके ज्ञानका अधिक आदर और विनय-पूर्वक बहुमान करना चाहिये। पुस्तकको पासमें रखकर खान-पान न करना, अशुद्ध हाथोंसे या पेशाब कर लेनेके बाद बिना-हाथ धोये पुस्तकको नहीं छूना चाहिये। ज्ञानको पासमें रखकर शयन नहीं करना चाहिये। थूंक लगी हुई अंगुलीसे स्पर्श नहीं करना चाहिये। पुस्तकके समक्ष पाऊँपर पाऊं लगाकर नहीं बैठना चाहिये। पुस्तकको ज़मीन पर नहीं रखना चाहिये। मैली जगह पर या अकाल समयमें नहीं पढ़ना चाहिये। पाऊं अथवा चरवले पर पुस्तक रखकर पठन करना ठीक नहीं। क्योंकि नाभीके नीचेका अवयव अपवित्र होता है। और चरवलेसे भूमि-मार्जन किया जाता है, इसलिये पुस्तक-को संपुट-साँपड़े पर रखकर तथा मुखके आगे मुंहपत्ती या वस्त्र देकर अध्ययन करना कहा है।

"मुँहके आगे मुँहपत्ती रखनेकी प्रथा दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है, यह बहुत ही दोषास्पद है। मुँहपत्तीके न रहनेसे

श्वास, थूँक आदिसे ज्ञानकी अत्यन्त आशातना होती है, इसलिये हर एक पाठकको चाहिये कि विना मुखपर मुँहपत्ती या वस्त्र रखे किसी पुस्तकको न पढ़े। एक समय गौतमस्वामीने शासन नायक वीर प्रभुसे यह प्रश्न किया कि, इन्द्र सावद्य भाषा बोलते हैं या निरवद्य? इसपर भगवान्‌ने कहा कि मुखके आगे वस्त्र आदि रखकर बोलनेसे निरवद्य भाषा होती है। अन्यथा वह सावद्य समझनी चाहिये। अतएव अष्ट प्रवचन माताके रक्षक यति-मुनियोंको भी आलस्य त्यागकर मुँहपत्ती (जोकि आजकल नाम-मात्र हो गयी है)के सदुपयोग रखनेका ख़याल रखना अत्यन्त आवश्यक है। इससे समीपवर्ती श्रावक-श्राविकाओंको भी मुँह-पत्तीके सम्बन्धमें सदुपयोग रखनेका पूरा उपदेश मिलता है।"

मार्गमें चलते समय ज्ञानको नाभीके ऊपर और मस्तकके नीचे रखना चाहिये। जिस तरह राजा, सेठ-साहूकारके आनेके समय उनका बहुमान किया जाता है। उसी तरह ज्ञानका भी वन्दन, पूजन करके बहुमान करना चाहिये। यदि ज्ञानावरणीय कर्मोंका शीघ्र ही क्षय करना हो तो आपके द्वारा ज्ञानकी किसी तरह आशातना न हो वैसा निरन्तर शुद्ध उपयोग रखनेका प्रयत्न कीजिये। ज्ञाना[illegible] कर्मोंके नाश होनेसे लोकालोक प्रकाशक उत्तम केवल[illegible] प्राप्ति होती है।

निवेदक—

सम्पादक।

धर्मप्रेमी स्वर्गीय बाबू अभयराजजी नाहटाका संक्षिप्त परिचय।

आपका जन्मस्थान वीकानेर था। आपने ओसवाल जातिके नाहटा वंशमें चैत्र वदी ६ सं० १९५५ वि० में जन्म लिया था। आपके पिताका नाम श्रीमान् सेठ शंकरदानजी है। आपके पूर्वज वीकानेर राज्यान्तर्गत डांडूसर ग्रामके रहनेवाले थे। पीछेसे व्यापारिक सम्बन्धके कारण वीकानेर शहरमें रहने लगे। श्रीमान् सेठ शंकरदानजी नाहटा व्यापारके कार्यों में बड़े दक्ष हैं। अपने बाहुबलसे इन्होंने अच्छी सम्पत्ति अर्जन की है और इस समय कलकत्ता आदि कई नगरोंमें आपकी दुकानें चल रही हैं। शोकके साथ लिखना पड़ता है, कि आपका एक अत्यन्त होनहार पुत्र अकालहीमें आपको शोक-सागरमें डुबाकर चल बसा, जिसका संक्षिप्त जीवन परिचय नीचे दिया जाता है।

आप (श्रीयुत अभयराजजी) के माता पिता, चार सहोदर भ्राता और कुटुम्बी इस समय वीकानेरमें हैं। आपकी स्त्रीका देहावसान आपकी मृत्युके तीन वर्ष पश्चात् हो गया। आपके केवल एक पुत्रीको छोडकर अन्य कोई सन्तान नहीं है।

आपने वचपनमें मारजा (वाणिका अध्यापक) के यहाँ छोटी पाठशालामें वाणिज्य-विद्या पढ़ना आरम्भ किया। कुछ

बड़े होनेपर आपने स्थानीय श्रीजैन पाठशालामें प्रवेश कर दशम कक्षातक अङ्गरेजी, संस्कृत तथा हिन्दीकी शिक्षा प्राप्त की थी। आपका हिन्दी भाषासे विशेष प्रेम था।

आपमें धर्मका अङ्कुर बचपनहीसे था। इस अङ्कुरने युवावस्थामें आपकी वृत्तिको जैन जातिमें घुसी हुई कुरीतियोंको दूर करनेकी ओर झुकाया। आप सदा अब इस बातकी चिन्तामें रहने लगे कि समाजकी इन कुरीतियोंको कैसे दूर किया जाये। बहुत कुछ सोचने विचारनेके पश्चात् आपने अपने मनमें यह निश्चय किया कि अविद्या अन्धकारको नष्ट किये बिना कोई भी सामाजिक सुधार करना दुष्कर ही नहीं बल्कि असम्भव है। अस्तु अब सब ओरसे अपने मनको हटाकर आपने विद्या-प्रचारहीमें अपनी शक्तिको लगाना प्रारम्भ किया।

सर्व प्रथम आपने स्थानीय श्रीजैन पाठशाला ही को, जिसमें आप पहले बचपनमें विद्याध्ययन कर चुके थे, सुधारना अपना परम कर्त्तव्य समझा। पहले आप इसके उपमन्त्री पदपर रह कर कार्य करने लगे। आपके उत्साह और कार्यको देखकर और लोगोंका भी ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ, जिसका फल यह कि जैन समाजके कुछ उत्साही पुरुषोंने यथासाध्य तन, मन, आपको इस कार्यमें सहायता प्रदान की। थोड़े शब्दोंमें ना पर्याप्त होगा कि जीवन पर्यन्त आपने इस पाठशालाकी सेवा की और जो कुछ उन्नति इस पाठशाला की हुई वह आपहीके परिश्रमका फल है। सबसे बड़ी बात जो आपने की वह शिक्षण-प्रणालीका सुधार था। जिससे बालकोंके हृदयमें स्वजाति

स्वधर्म तथा स्वदेशके प्रति श्रद्धा और प्रेमभाव उत्पन्न हो और जैन जातिका भविष्य अवनतिके अन्धकारसे निकल कर उन्नतिके प्रभाकरसे उज्ज्वल हो और कुछ अंशोंमें आपकी आशा फलवती भी हुई।

आपको विद्याध्ययनके समय सभा सोसाइटियोंसे अधिक प्रेम था। और इसीसे श्रीजैन पाठशालाके अन्तर्गत ही आपने "शिक्षाप्रचारक जैन पुस्तकालय"की स्थापना की थी। इसका मुख्योद्देश्य जैन समाजमें शिक्षा-प्रचार करना तथा व्याख्यानादि द्वारा समाज-सुधार करना था। यही संस्था अब इस समय श्रीजैन महावीर मण्डलके नामसे प्रसिद्ध है जो स्वजातिकी असीम सेवा कर रही है। आज दिन यहाँ जैन समाजमें वेश्या-नृत्य तथा अन्यान्य कुरीतियोंका उन्मूलन होना आपहीके सद् परिश्रमका फल है।

आपने बीकानेरहीमें नहीं प्रत्युत कलकत्ता शहरमें भी जैन श्वेताम्बर मित्र मण्डलका भी बहुत कुछ सुधार किया। इसमें इन्होंने एक पाठशाला की नितान्त आवश्यकता बतला कर स्थापना करवायी और आप इसके अवैतनिक उपमन्त्री पद पर रहकर यथाशक्ति सेवा की। आज तक यह पाठशाला अपना काम सुचारु रूपसे कर रही है।

आप तीर्थयात्राके बड़े प्रेमी थे। और इतनी ही अवस्थामें सिद्धाचल, गिरनार, आबू समेतशिखर पावापुरी तथा चम्पापुरी आदिकी यात्राएँ कर डाली थीं।

दुर्भाग्यवश पिछले दिनोंमे आप श्वास रोगसे पीड़ित हो गये

बड़े होनेपर आपने स्थानीय श्रीजैन पाठशालामें प्रवेश कर दशम कक्षातक अङ्गरेजी, संस्कृत तथा हिन्दीकी शिक्षा प्राप्त की थी। आपका हिन्दी भाषासे विशेष प्रेम था।

आपमें धर्मका अङ्कुर बचपनहीसे था। इस अङ्कुरने युवावस्थामें आपकी वृत्तिको जैन जातिमें घुसी हुई कुरीतियोंको दूर करनेकी ओर झुकाया। आप सदा अब इस बातकी चिन्तामें रहने लगे कि समाजकी इन कुरीतियोंको कैसे दूर किया जाये। बहुत कुछ सोचने विचारनेके पश्चात् आपने अपने मनमें यह निश्चय किया कि अविद्या अन्धकारको नष्ट किये बिना कोई भी सामाजिक सुधार करना दुष्कर ही नहीं बल्कि असम्भव है। अस्तु अब सब ओरसे अपने मनको हटाकर आपने विद्या-प्रचारहीमें अपनी शक्तिको लगाना प्रारम्भ किया।

सर्व प्रथम आपने स्थानीय श्रीजैन पाठशाला हो को, जिसमें आप पहले बचपनमें विद्याध्ययन कर चुके थे. सुधारना अपना परम कर्त्तव्य समझा। पहले आप इसके उपमन्त्री पदपर रह कर कार्य करने लगे। आपके उत्साह और कार्यको देखकर और लोगोंका भी ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ, जिसका फल यह कि जैन समाजके कुछ उत्साही पुरुषोंने यथासाध्य तन, मन, आपको इस कार्यमें सहायता प्रदान की। थोड़े शब्दोंमें पर्याप्त होगा कि जीवन पर्यन्त आपने इस पाठशालाकी की और जो कुछ उन्नति इस पाठशाला की हुई वह आपपरिश्रमका फल है। सबसे बड़ी बात जो आपने की वह -प्रणालीका सुधार था। जिससे बालकोंके हृदयमें स्वजाति

स्वधर्म तथा स्वदेशके प्रति श्रद्धा और प्रेमभाव उत्पन्न हो और जैन जातिका भविष्य अवनतिके अन्धकारसे निकल कर उन्नतिके प्रभाकरसे उज्ज्वल हो और कुछ अंशोंमें आपकी आशा फलवती भी हुई।

आपको विद्याध्ययनके समय सभा सोसाइटियोंसे अधिक प्रेम था। और इसीसे श्रीजैन पाठशालाके अन्तर्गत ही आपने "शिक्षाप्रचारक जैन पुस्तकालय"की स्थापना की थी। इसका मुख्योद्देश्य जैन समाजमें शिक्षा-प्रचार करना तथा व्याख्यानादि द्वारा समाज-सुधार करना था। यही संस्था अब इस समय श्रीजैन महावीर मण्डलके नामसे प्रसिद्ध है जो स्वजातिकी असीम सेवा कर रही है। आज दिन यहाँ जैन समाजमें वेश्या-नृत्य तथा अन्यान्य कुरीतियोंका उन्मूलन होना आपहीके सद्‌ परिश्रमका फल है।

आपने बीकानेरहीमें नहीं प्रत्युत कलकत्ता शहरमें भी जैन श्वेताम्बर मित्र मण्डलका भी बहुत कुछ सुधार किया। इसमें इन्होंने एक पाठशाला की नितान्त आवश्यकता बतला कर स्थापना करवायी और आप इसके अवैतनिक उपमन्त्री पद पर रहकर यथाशक्ति सेवा की। आज तक यह पाठशाला अपना काम सुचारु रूपसे कर रही है।

आप तीर्थयात्राके बड़े प्रेमी थे। और इतनी ही अवस्थामें सिद्धाचल, गिरनार, आबू समेतशिखर पावापुरी तथा चम्पापुरी आदिकी यात्राएँ कर डाली थीं।

दुर्भाग्यवश पिछले दिनोंमें आप श्वास रोगसे पीड़ित हो गये

थे। चिकित्सा करनेमें कोई कोर कसर न रखी गयी। बीकानेर, कलकत्ता, भवाली और जयपुर आदि स्थानोंमें सयाने वैद्यों और डाक्टरोंका इलाज हुआ। अन्तमें आप जयपुरमें वैद्यराज लच्छो-रामजीके पास रह कर इलाज करने लगे। इनके इलाजसे कुछ लाभ भी हुआ। इन्हीं दिनोंमें इन्दौरमें वैद्य-सम्मेलन हुआ। आप सभा, सम्मेलन आदिके विशेष प्रेमी थे। अत: ऐसी अवस्थामें भी आप उक्त वैद्यजीके साथ इन्दौर-वैद्य-सम्मेलनमें सम्मिलित हुए। वहाँ जाने पर आपका स्वास्थ्य कुछ अधिक ख़राब हो गया और आप वहाँसे लच्छीरामजीके चेलेके साथ जयपुर लौट आये। अति खेद है कि इनका दुःख बढ़ता ही गया और वहीं शिवजी रामजीके बागमें वैसाख वदी ७ सम्वत् १९७७ वि०को २२ वर्षकी अवस्थामें आपका शरीरान्त हुआ।

आप इस समय संसारमें नहीं हैं; परन्तु आपका कार्य सदा आपका सुचरित्र कहकर भविष्यमें होनेवाले नवयुवकोंको सत्पथ दिखला रहा है। आप यदि कुछ दिन और जीवित रहते तो न जाने और कौन-कौनसे कार्य करके जाति और देशको लाभ पहुंचाते। इतनी ही थोड़ी अवस्थामें आपने ऐसे-ऐसे काम कर दिखाये ...को श्रवण कर यहाँकी जैन जातिमें कई सज्जन आश्चर्य- ...हो जाते हैं। सभा इत्यादि सङ्गठित करना, व्याख्यान देना ...। आदि कार्य आपने ही बीकानेरकी जैन समाजमें अच्छी ...से जारी किया। जैन जातिको ऐसे वीर युवकका अभिमान ...ना चाहिये और सदा इस वीरका कृतज्ञ होना चाहिये।

निवेदक—संपादक.

विषयानुक्रमणिका

देववन्दन तथा प्रातःकाल और सायंकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुतियें

चैत्यवन्दन ।

स्तवन ।

नाम पृष्ठ

रास ।

सज्झाय-संग्रह ।

पूजा-संग्रह।

विधि-संग्रह।

तपस्या-स्तवन और विधियें।

अतीत, वर्तमान और अनागत चोविसीके तीर्थङ्करोंकी नामावली ।

अतीत चोविसी

१ श्रीकेवलज्ञानीजी
२ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥
३ श्रीसागरजी
४ श्रीमहायसजी
५ श्रीविमलदेवजी
६ श्रीसर्व्वानुभूतिजी
७ श्रीश्रीधरजी
८ श्रीदत्तस्वामीजी
९ श्रीदामोदरजी
१० श्रीसुतेजनाथजी
११ श्रीस्वामीजी
१२ श्रीमुनिसुव्रतजी
१३ श्रीसुमतिनाथजी
१४ श्रीशिवगतिजी
१५ श्रीअस्तागजी
१६ श्रीनमीश्वरजी
१७ श्रीअनिलनाथजी
१८ श्रीयशोधरजी
१९ श्रीकृतार्थजी
२० श्रीजिनेश्वरजी
२१ श्रीशुद्धमतीजी
२२ श्रीशिवकरजी
२३ श्रीस्यन्दनजी
२४ श्रीसंप्रति स्वामीजी

वर्त्तमान चोविसी

१ श्रीऋषभदेवजी
२ श्रीअजितनाथजी
३ श्रीसंभवनाथजी
४ श्रीअभिनन्दनजी
५ श्रीसुमतिनाथजी
६ श्रीपद्मप्रभूजी
७ श्रीसुपार्श्वनाथजी
८ श्रीचंद्रप्रभूजी
९ श्रीसुविधिनाथजी
१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसनाथजी
१२ श्रीवासुपूज्यस्वामीजी

१३ श्रीविमलनाथजी
१४ श्रीअनन्तनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी
१६ श्रीशांतिनाथजी
१७ श्रीकुंथुनाथजी
१८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमल्लिनाथजी
२० श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी
२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी
२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागत चोविसी

१ श्रीपद्मनाभजी
२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्श्वजी
४ श्रीस्वयंप्रभुजी
५ श्रीसर्व्वानुभूतिजी
६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभुजी
८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी
१० श्रीशतकीर्त्तिदेवजी
११ श्रीसुव्रतनाथजी
१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कषायदेवजी
१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी
१६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी
१८ श्रीसंवरनाथजी
१९ श्रीयशोधरजी
२० श्रीविजयनाथजी
२१ श्रीमल्लिप्रभूजी
२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी
२४ श्रीभद्रंकरजी

॥ नमो वीतरागाय ॥

श्रीबृहत्खरतरगच्छीय—

पंच-प्रतिक्रमण-सूत्र ।

१—नमस्कार सूत्र ।

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्व-साहूणं । एसो पंच-णमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

२—स्थापनाचार्यजीकी तेरह पडिलेहणा ॥

शुद्ध स्वरूप धारूँ (१) ज्ञान (२) दर्शन (३) चारित्र (४) सहित सद्दहणा-शुद्धि (५) प्ररूपणा-शुद्धि (६) दर्शन-शुद्धि (७) सहित पाँच आचार पालूँ (८) पलावूँ (९) अनुमोदूँ

(१०) मनो-गुप्ति (११) वचन-गुप्ति (१२) काय-गुप्ति आदरूँ (१३)।

३—खमासमण सूत्र।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

४—सुगुरुको सुख-शाता-पृच्छा।

इच्छकारी सुहराई सुह-देवसि सुख-तप शरीर निराबाध सुख-संजम-यात्रा निर्वहते हो जी। स्वामिन् ! शाता है ? आहार पानीका लाभ देना जी।

५—अब्भुट्ठिओ (गुरु-खामणा) सूत्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओ हं अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं। इच्छं, खामेमि देवसिअं।

जं किंचि अपत्तिअं पर-पत्तिअं, भत्ते-पाणे विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अन्तर-भासाए, उवरि-भासाए, जं

किंचि मज्झ विणय-परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

६—मुहपत्ती पडिलेहणके २५ बोल।

*१ सूत्र-अर्थ सच्चा सद्दहूँ, २ सम्यक्त्व-मोहनीय, ३ मिथ्यात्व-मोहनीय, ४ मिश्र-मोहनीय परिहरूँ। ५ काम-राग, ६ स्नेह-राग, ७ दृष्टि-राग परिहरूँ।

†१ ज्ञान-विराधना, २, दर्शन-विराधना ३ चारित्र-विराधना परिहरूँ। ४ मनो-गुप्ति ५ वचन-गुप्ति, ६ काय-गुप्ति आदरूँ। ७ मनो-दण्ड, ८ वचन-दण्ड, ९ काय-दण्ड परिहरूँ।

‡१ सुगुरु, २ सुदेव, ३ सुधर्म आदरूँ;

* ये सात बोल मुहपत्ती खोलते समय कहने चाहिएँ।

† ये नव बोल दाहिने हाथके पडिलेहणके समय कहने चाहिएँ

‡ इन नव बोलोंका चिन्तन बाँये हाथके पडिलेहणके समय करना चाहिए।

४ कुगुरु, ५ कुदेव, ६ कुधर्म परिहरूँ। ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ६ चारित्र आदरूँ।

७—अंगकी पडिलेहणाके २५ बोल *

कृष्ण लेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३ परिहरूँ (मस्तक)। ऋद्धि-गारव १, रस-गारव २, साता-गारव ३, परिहरूँ (मुख)। माया-शल्य १, निदान-शल्य २, मिथ्यादर्शन-शल्य ३ परिहरूँ (हृदय)। क्रोध १, मान २, परिहरूँ (दहिना कन्धा)। माया १, लोभ २ परिहरूँ (बायाँ कन्धा)। हास्य १, रति २, अरति ३ परिहरूँ (बायाँ हाथ)। भय १, शोक २, दुगंछा ३ परिहरूँ (दाहिना हाथ) पृथ्वीकाय १, अप्काय २, तेऊकाय ३ परिहरूँ (बायाँ पैर)। वायुकाय १, वनस्पतिकाय २, त्रसकाय ३ परिहरूँ (दाहिना पैर)।

---

* ये बोल कहते समय जिस स्थानका नाम कोंसमें लिखा है, उस स्थानपर मुहपत्ति (मुखवस्त्रिका) रखते जाना चाहिये।

८—सामायिक सूत्र ।

करेमि भंते ! सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

९—इरियावहियं सूत्र ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए । गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे जे मे जीवा विराहिया—एगिंदिया, बेइंदिया; तेइंदिया, चउरिंदिया; पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया; ठाणाओ ठाणं संकामिया; जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

१०—तस्स उत्तरी सूत्र ।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

११—अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥

१२—लोगस्स सूत्र ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च

सुमइंच। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस— वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥ ३॥ कुंथुं अरंच मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥ ४॥ एवं मएअभि- थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउ- वीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥ ५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥ ६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥ ७॥

१३—जयउ सामिय सूत्र।

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंत पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरि

पास। दुहदुरिअखंडण अवर विदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि तीआणागय-संपइअ वंदं जिण सव्वेवि ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि उक्कोसय सत्तरिसय जिण वराण विहरंत लब्भइ; नवकोडिहिं केव-लीण, कोडिसहस्स नव साहु *गम्मइ। संपइ जिणवर वीस, मुणि बिहूं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडिसहस्सदुअ थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥२॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ। चउसय छायासीया, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ३ ॥ वन्दे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडि लक्ख तेवन्ना। अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पड़िमा ॥ ४ ॥

१४—जं किंचि सूत्र।

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिण-बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि।१।

---

* पाठान्तर 'संपइ'।

१५—नमुत्थुणं सूत्र।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइग-राणं * तित्थयराणं सयं-संबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं पुरिस-वर-पुंडरीआणं पुरिस-वर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोग-नहाणं लोग-हि-याणं लोग-पईवाणं लोग-पज्जोअगराणं, अभय-दयाणं चक्खु-दयाणं मग्ग-दयाणं सरण-दयाणं बोहि-दयाणं, धम्म-दयाणं धम्म-देसयाणं धम्म-नायगाणं धम्म-सारहीणं धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहय-वर-नाण-दंसणधराणं विअट्ट-छउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअ-गाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलम-रुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धि-गइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं। नमो जिणाणं जिअ-भयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ

---

* पाठान्तर 'तित्थगराणं'।

भविस्संतिणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १ ॥

१६—जावंति चेइआइं सूत्र।

जावंति चेइआइं, उड्डे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

१७—जावंत केवि साहू सूत्र।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

१८—परमेष्ठि-नमस्कार।

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

१६—उवसग्गहरं स्तोत्र।

उवसग्ग-हरं पासं, पासं वंदामि कम-घण-मुक्कं। विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठ-

जराजंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरा मरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचंद ॥

२०—जयवीयराय सूत्र।

जय वीयराय! जगगुरु!, होउ ममं तुह पभावओ भयवं!। भव-निव्वेओ मग्गा-णुसा-रिया इट्ठफल-सिद्धी ॥ १ ॥ लोग-विरुद्ध-च्चाओ, गुरु-जण-पूआ परत्थकरणं च। सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखण्डा ॥ २ ॥

२१—आचार्य आदिको वन्दन।

आचार्यजी मिश्र, उपाध्यायजी मिश्र, जङ्गम युगप्रधान भट्टारक (वर्त्तमान श्रीपूज्य-आचार्यजीका

नाम लेकर) मिश्र, सर्व साधु मिश्र।

२२—सव्वस्सवि सूत्र।

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

२३—इच्छामि ठाइउं सूत्र।

॥ इच्छामि *ठाइउं काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता चरित्ते सुए सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

* पाठान्तर 'ठामि'।

२४—अरिहंतचेइयाणं सूत्र ।

अरिहन्तचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तियाए, पूअण-वत्तियाए, सक्कार-वत्ति-याए सम्माणवत्तियाए, बोहि लाभ-वत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए ॥ सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

२५—पुक्खर-वर-दीवड्ढे सूत्र ।

पुक्खर-वर-दीवड्ढे,धायइ-संडे अ जंबु-दीवे अ । भरहेरवय-विदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स सुर-गण-नरिंद-महियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ॥ २ ॥ जाई-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स । कल्लाण-पुक्खल वि-साल-सुहावहस्स ॥ को देव-दाणव-नरिंद-गण-च्चियस्स । धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥३॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी

सया संजमे । देवंनागसुवन्नकिन्नरगण-स्सब्भूअभावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं । धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तियाए० ॥

२६—सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र ।

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणंपरंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहि आ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठनि-

ट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

२७—वेयावच्चगराणं सूत्र ।

वेयावच्च-गराणं संति-गराणं सम्मद्दिट्ठिस-माहिगराणं करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ० ॥

२८—सुगुरु वन्दन सूत्र ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि अहोकायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो । अप्प-किलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं । *आवस्सिआए पडिक्कमामि । खमासमणाणं देवसिआए असायणाए तित्तीसन्नयराए जं

---

* दुवारा पढ़ते समय 'आवस्सिआए' पद नहीं कहना । रात्रिक प्रतिक्रमण में 'राइवइक्कंता', चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में 'चउमासो वइक्कंता', पाक्षिक प्रतिक्रमण में 'पक्खो वइक्कंतो', सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में 'संवच्छरो वइक्कंतो', ऐसा पाठ पढ़ना ।

किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

२६—देवसिअं आलोउं सूत्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअं आलोउं। इच्छं। आलोएमि जो मे०।

३०—आलोयण।

आजके चार प्रहरके दिनमें मैंने जिन जीवोंकी विराधना की होय। सात लाख पृथ्वी-काय, सात लाख अपूकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक-वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दो इन्द्रिय वाले, दो लाख तीन इन्द्रिय वाले, दो लाख चार इन्द्रिय वाले, चार

लाख देवता, चार लाख नारक, चार लाख तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य। कुल चौरासी लाख जीवयोनियोंमेंसे किसी जीवका मैंने हनन किया, कराया या करते हुएका अनुमोदन किया वह सब मन, वचन, काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ॥३०॥

३१—अठारह पापस्थानक आलोउं।

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पाँचवाँ परिग्रह, छठा क्रोध, सातवाँ मान, आठवाँ माया, नववाँ लोभ, दशवाँ राग, ग्यारहवाँ द्वेष, बारहवाँ कलह. तेरहवाँ अभ्याख्यान, चौदहवाँ पैशुन्य, पन्द्रहवाँ रति-अरति, सोलहवाँ पर-परिवाद, सत्रहवाँ माया- मृषावाद, अठारहवाँ मिथ्यात्व-शल्य; इन पापस्थानोंमें से किसीका मैंने सेवन किया, कराया या करते हुएका अनुमोदन किया, वह सब मिच्छा मि दुक्कडं।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव-गुरु-धर्मकी आशातना की हो; पन्नरह कर्मादानोंकी आसेवना की हो; राज-कथा, देश-कथा, स्त्री-कथा, भक्त-कथा की हो; और जो कोई पर निंदादि पाप किया हो, कराया हो, करतेे हुएका अनुमोदन किया हो, सो सब मन, वचन, काया करके, रात्रि-अतिचार आलोयणा करके, पडिक्कमणामें आलोउं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥३१॥

३२—वंदित्तु—श्रावकका प्रतिक्रमण सूत्र।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्व साहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्मा-इआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो वा अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं,

चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण
व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे नि
ग्गमणे, ठाणे चंकमणे [य] अणाभोगे । अभि-
ओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥५॥
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिं-
गीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं
॥६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे
दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ।७।
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआ-
रे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं
सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलगपाणा-
इवायविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमा-
यप्पसंगेणं ॥९॥ वहबंध छविच्छेए, अइभारे भ-
त्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे
देसिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि, परि
थूलगअलियवयणविरईओ । आयरिअमप्प-
सत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥११॥ सहसा-रहस्स-

दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ। बीयवयस्स-
इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयम्मि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ।
कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१४॥
चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविर-
ईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसं-
गेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाह-
तिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे
देसिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पं,—चम-
म्मि आयरिअमप्पसत्थम्मि। परिमाणपरिच्छे, ए
इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७॥ धण-धन्न-खित्त
वत्थू-रूप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे दुपए
चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥
गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ
तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि

गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोगपरी-भोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं-॥२१॥ इंगालीवणसाडी,—भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दं,—तलक्खरसके-सविसविसयं ॥२२॥ एवं खु जंतपिल्लण,—कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरदहतलाय-सोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गि-मुसलजंतग—तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२४॥ न्हाणुवट्टणवन्नग—विलेवणे सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरणभो-गअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे,

अणवट्टाणे तहा सइविहूणे। सामाइय वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे। देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही—पमाय तह चेव भोयणाभोए पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निन्दे तं च गरिहामि ॥३१॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसि-

अस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणव-यसिक्खागा, रवेसु सन्नाकसायदंडेसु । गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धं-धसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्प-रिआवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहाविसं कुट्ठ-गयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ३९॥ कयपावोवि मणु-स्सो, आलोइअ निंदिअ य गुरुसगासे होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेणकालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडि-

अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामाइय वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे। देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही—पमाय तह चेव भोयणाभोए। पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे असंजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निन्दे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसि-

अस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणव-यसिक्खागा, रवेसु सन्नाकसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहाविसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ३९॥ कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ य गुरुसगासे होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि वहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेणकालेण ॥४१॥ आलोअणा वहुविहा, नय संभरिआ पडि-

क्कमणकाले मूलगुणउत्तरगुणे तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स—अब्भुट्ठिओमि आरा-हणाए विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइँ ताइँ वंदे, इह संतो तत्थ सताइँ ॥४४॥ जावत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउवीसजिणविणिग्गयकहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।

मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई ॥४९॥
एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिअ दुगंछिउं
सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे
चउव्वीसं ॥५०॥

[illegible] उवज्झाए सूत्र।

[illegible] सीसे साहम्मिए कुल-
[illegible] कसाया, सव्वे तिविहेण
[illegible]॥१॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ
अंजलिं करिअसीसे। सव्वं खमावइत्ता,
खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥२॥ सव्वस्स जीव-
रासिस्स भावओ धम्मनिहिअनियचित्तो। सव्वं
खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥३॥

३४—सकलतीर्थ नमस्कार।

सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यन्त-
राणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले
तारकाणां विमाने। पाताले पन्नगेन्द्रे स्फुट-
मणिकिरणै ध्वंस्तसान्द्रान्धकारे, श्रीमत्तीर्थङ्क

क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च
घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे। कर्णाटे
हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे, श्रीम
त्ती० ॥४॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे
मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयति-
लके सिंहले केरले वा। डाहाले कोशले वा
विगलितसलिले जङ्गले वा ढमाले, श्रीमत्ती०
॥ ५ ॥ अङ्गे बङ्गे कलिङ्गे सुगतजनपदे सत्प्र

ुरण्डे वरतरद्रविडे
द्रे माद्रे पुलिन्द्रे
ुराष्ट्रे, श्रीमत्ती०
गजपुरमथुरापत्तने
ोशलायां कनकपुर
नासिक्ये राजगेहे
त्यां, श्रीमत्ती० ॥७॥
ीखर हृदे स्वर्णदीनी
जलनिधिपुलिने भूरु-
वने वा स्थलजल
विषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमत्ती० ॥ ८ ॥
श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शालमलौ जम्बु
वृत्ते, चौज्जन्ये चैत्यनन्दे रतिकररुचके कौण्डले
मानुषाङ्के। इक्षूकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ
व्यन्तरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवन्ति त्रिभुव-
नवलये यानि चैत्यालयानि ॥९॥ इत्थं श्रीजैन
चैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः, प्रोद्यत्क

त्याणहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसन्ध्यम्। तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमल ते मान वानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः ननसां च्चित्तमानन्दकारी ॥ १० ॥

३५—परसम

परसमयतिमिर र णवरतरणिम्। रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्धसंसारविहारकारि-दुरंतभावारिगणा निकामम्। निरंतरं केवलिसत्तमा वो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ—संमोहपङ्कहरणा-मलवारिपूरम्। संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥३॥ परिमल-भरलोभालीढलोलालिमाला—वरकमलनिवासे हारनीहारहासे। अविरलभवकारागारविच्छि-त्तिकारं, कुरु कमलकरे मे मङ्गलं देवि सारम्।४।

वइरो य । सफलीकयगिहचागा साहू सुविहिया हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा । फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाणमाईणं ॥२॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि संभरइ जीवो जं च न संभरामि अहं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चिंतिय- मसुहं वायाइ भासियं किंचि । असुहं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥४॥ सामाइयपोसहसंठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो । सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥५॥ मैंने सामायिक विधिसे किया, विधिसे पूर्ण किया, विधिमें किसी प्रकारकी अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं । दस मनके, दस वचनके, बारह कायाके इन बत्तीस दोषोंमें से कोई दोष लगा हो तो वह मन, वचन, काया करके मिच्छामि दुक्कडं ॥

।

जय जिण

स, दुरिअ-

लंघिआण,

इं जिणेस

इ समरंत

ण-सुवण्ण-

॥ पिक्खइ

इण। इअ

तिहुअण वर-कप्प-रुक्ख, सुपसन्न कुण मह

जिण ॥ २ ॥

जर-जज्जर परिजुण्ण-कण्ण, नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण।
चक्खु-क्खीण खएण खुण्ण, नर सल्लिय सूलिण॥
तुह जिण सरण-रसायणेण, लहु हुंति पुणण्ण-
व। जय-धन्नंतरि पास महवि, तुह रोग-हरो
भव ॥ ३ ॥ विज्जा-जोइस-मंत तंत-सिद्धीउ
अपयत्तिण। भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि,

सिज्झहि तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवि-
त्तओ वि, जण होइ पवित्तउ । तिहुअण-
कल्लाण-कोस, तुह पास निरुत्तउ खुद्द-
पउत्तइ मंत-तंत-जंताइ विसुत्तइ। वर-थिर-
गरल-गहुग्ग-खग्ग-रिउ- दुत्थिय-
सत्थ अणत्थ-घत्थ, नि ण्यिइ
हरउ स पास-देउ, दु ५॥
तुह आणा थंभेइ भीम-दप्पुद्धुर-सुर-वर-रक्खस-
जक्ख-फणिंद-विंद-चोरानल-जलहर ॥ जल-
थल-चारि-रउद्द-खुद्द-पसु-जोइणि-जोइय । इय
तिहुअणअविलंघिआण, जय पास सुसामिय
॥ ६ ॥ पत्थिय-अत्थ अणत्थ-तत्थ, भत्ति-ब्भर-
निब्भर। रोमंचंचिय-चारु-काय किन्नर-नर-सुर
वर ॥ जसु सेवहि कम-कमल-जुयल, पक्खा-
लिय-कलि-मलु। सो भुवण-त्तय-सामि पास,
मह मद्दउ रिउ-बलु ॥ ७ ॥ जय जोइय-मण-
कमल-भसल, भय—पंजर कुंजर। तिहुअण-

जण-आणंद-चंद, भुवण-त्तय-दिणयर ॥ जय मइ-मेइणि-वारिवाह, जय-जंतु-पियामह । थंभणय-ट्ठिय पासनाह, नाहत्तण कुण मह ॥८॥ वहुविह-वन्नु अवन्नु सुन्न, वन्निउ छप्पन्निहि । मुक्ख-धम्म-कामत्थ-काम, नर नियनिय-सत्थि हि ॥ जं झायहि वहु दरिसणत्थ, वहु-नाम-पसिद्धउ । सो जोइय-मण-कमल-भसल, सुहु पास पवद्धउ ॥ ९ ॥ भय-विब्भल रणझणिर-दसण, थरहरिय-सरीरय । तरलिय-नयण विसन्न सुन्न, गग्गर-गिर करुणय ॥ तइ सहस-त्ति सरंत हुंति, नर नासिय-गुरु-दर । मह विज्झव सज्झसइ पास, भय-पंजर-कुंजर ॥१०॥ पइं पासि वियसंत-नित्त-पत्तंत-पवित्तियवाह-पवाह-पवूढ-रूढ-दुह-दाह सुपुलइय ॥ मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु, अप्पाणं सुर-नर । इय तिहुअण-आणंद-चन्द, जय पास-जिणेसर ॥११॥ तुह कल्लाण-महेसु घंट-टंकारय-पिल्लिय ।

वल्लिर-मल्ल महल्ल-भत्ति, सुर-वर गंजुल्लिय ॥ हल्लुप्फलिय पवत्तयंति, भुवणेवि महूसव । इय तिहुअण-आणंद-चंद, जय पास सुहुब्भव ॥१२॥ निम्मल-केवल-किरण-नियर-विहुरिय-तम-पहयर । दंसिय-सयल-पयत्थ-सत्थ, वित्थरिय-पहा-भर ॥ कलि-कलुसिय-जण-घूय-लोय-लोयणह अगोयर । तिमिरइ निरु हर पासनाह भुवण-त्तय-दिणयर ॥ १३ ॥ तुह-समरण-जल-वरिस-सित्त, माणव-मइ-मेइणि । अवरावर-सुहुमत्थ-बोह-कंदल-दल-रेहिणि ॥ जायइ फल-भर-भरिय हरिय-दुह-दाह अणोवम । इय मइ-मेइणि-वारिवाह, दिस पास मइं मम ॥१४॥ कय-अविकल-कल्लाण-वल्लि, उल्लूरिय-दुह-वणु । दाविय-सग्गपवग्ग-मग्ग, दुग्गइ-गम-वारण ॥ जय-जन्तुह जणएण तुल्ल, जं जणिय हियावहु । रम्मु धम्मु सो जयउ पासु, जय-जन्तु-पियामहु ॥ १५ ॥ भुवणारण्ण-निवास-

दरिय-पर-दरिसण-देवय-जोइणि-पूयण-खित्त-वाल-खुद्दा-सुर-पसु-वय ॥ तुह-उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु, अविसंठुलु चिट्ठहि । इय तिहुअण-वण-सीह पास, पावाइं पणासहि ॥१६॥ फणि-फण-फार-फुरन्त-रयण-कर-रंजिय-नह-यल-फलिणी-कंदल-दल-तमाल-नीलुप्पल-सामल । कमठा-सुर-उवसग्ग-वग्ग-संसग्ग-अगंजिय । जय पच्च-क्ख-जिणेस पास थंभणयपुर-ट्ठिय ॥ १७ ॥ मह मणु तरलु पमाणु नेय, वायावि विसंठुलु । नेय तणुरवि अविणय सहावु, अलस-विहलं-घलु ॥ तुह माहप्पु पमाणु देव, कारुण्ण-पवि-त्तउ । इय मइ मा अवहीरि पास, पालिहि विलवंतउ ॥ १८ ॥ किं किं कप्पिउ नय कलुणु, किं किं व न जंपिउ । किं व न चिट्ठिउ किट्ठु देव, दीणयमवलंविउ ॥ कासु न किय निप्फल्ल लल्लि, अम्हेहि दुहत्तिहि । तहवि न पत्तउ ताणु किंपि, पइ पहु परिचत्तिहि ॥ १९ ॥ तुहु

सामिउ तुहु मायबप्पु, तुह मित्त पियंकरु। तुहु गइ तुहु मइ तुहुजि ताणु, तुहु गुरु खेमंकरु॥ हउ दुहभरभारिउ वराउ, राउ निब्भग्गह। लीणउ तुह कम-कमल-सरणु, जिण पालहि चंगहा ॥२०॥ पइ किवि कय नीरोय लोय, किवि पाविय सुहसय। किवि मइमंत महंत केवि, किवि साहिय-सिव-पय। किवि गंजिय-रिउ-वग्ग केवि, जस-धवलिय-भू-यल मइ अवहीरहि केण पास, सरणागय-वच्छल।२१। पच्चुवयार-निरीह नाह, निप्फन्न-पओयण। तुह जिण पास परोवयार-करणिक्क परायण॥ सत्तु-मित्त-सम-चित्त-वित्ति, नय-निंदय-सममण। मा अवहीरय अजुग्गउवि, मइ पास निरंजण ॥२२॥ हउ बहुविह-दुह-तत्त-गत्तु-तुह दुह-नासण-परु। हउ सुयणह करुणिक्क-ठाणु, तुहु निरु करुणाकरु॥ हउ जिण पास असामि सालु, तुहु तिहुअण-सामिय। जं अवहीरहि

महं झखंत, इय पास न सोहिय ॥ २३ ॥ जुग्गाऽजुग्ग-विभाग नाह, न हु जोयहि तुह-सम । भुवणुवयार-सहाव-भाव-करुणा-रस-सत्तम ॥ सम विसमइं किं घण नियइ, भुवि दाह समंतउ । इय दुहि-बंधव पास-नाह, मइ पाल थुणंतउ ॥२४॥ नय दीणह दीणयं मुयवि, अन्नुवि किवि जुग्गय । जं जोइवि उवयार करहि, उवयार-समुज्जय ॥ दीणह दीण निहीणु जेण, तइ नाहिण चत्तउ । तो जुग्गउ अहमेव पास, पालहि मइं चंगउ ॥ २५ ॥ अह अन्नुवि जुग्गय-विसेसु किवि मन्नहि दीणह । जं पासिवि उवयारु करइ, तुह नाह समग्गह ॥ सुच्चिय किल कल्लाणु जेण, जिण तुम्ह पसीयह । किं अन्निण तं चेव देव, मा मइ अवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थण न हु होइ विहलु, जिण जाणउ किं पुण । हउ दुक्खिय निरु सत्त-चत्त, दुक्कहु उस्सुय-मण ॥ तं मन्नउ निमिसेण

एउ, एउ वि जइ लब्भइ। सच्चं जं भुक्खिय-वसेण, किं उंबरु पच्चइ ॥२७॥ तिहुअण-सामिअ पासनाह मइ अप्पु पयासिउ। किज्जउ जं निय-रूव-सरिसु न मुणउ बहु जंपिउ॥ अण्ण जिण जग्गि तुह समोवि, दक्खिन्न-दयासउ। जइ अवगन्नसि तुह जि अहह, कह होसु हयासउ ॥ २८ ॥ जइ तुह रूविण किणवि पेय-पाइण वेलवियउ। तुविजाणउ जिण पास तुम्हि, हउं अंगीकरउ॥ इय मह इच्छिउ जं न होइ, सा तुह ओहावणु। रक्खंतह नियकित्ति णेय, जुज्जइ अवहीरणु ॥ २९ ॥ एह महारिय जत्त देव, इहु न्हवण-महूसउ। जं अणलिय-गुण-गहण तुम्ह, मुणि-जण-अणिसिद्धउ॥ एम पसीअसु पासनाह, थंभणयपुरट्ठिय। इय मुणिवरु सिरि-अभयदेउ, विन्नवइ अणिंदिय ॥ ३० ॥

३९—जय महायस।

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय-सुह-फलय, जय समत्थ-परमत्थ-जाणय जय जय गुरु-गरिम गुरु। जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणय-ट्ठिय पासजिण, भवियह भीम-भवुत्थु भय अवणिं-ताणंतगुण, तुज्झ ति-संझ नमोत्थु ॥ १ ॥

४०—श्रुतदेवताकी स्तुति।

सुवर्ण-शालिनी देयाद्, द्वादशाङ्गी जिनो-द्भवा। श्रुतदेवी सदा मह्य—मशेष-श्रुत-संपदम् ॥ १ ॥

४१—क्षेत्र-देवताको स्तुति।

यासां क्षेत्र-गताः सन्ति, साधवः श्रावका-दयः। जिनाज्ञां साधयन्तस्ता रक्षन्तु क्षेत्र-देवताः ॥ १ ॥

४२—नमोऽस्तु वर्धमानाय।

इच्छामो अणुसट्ठिं, णमो खमासमणाणं।

नमोऽस्तु वर्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्मणा। तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥१॥ येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या सदृशैरतिसङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः कषायतापार्दितजन्तुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः। स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ २ ॥ श्वसित-सुरभि-गन्धा-ऽलीढ-भृङ्गी-कुरङ्गं मुखशशिनमजस्रं, बिभ्रति या बिभर्ति। विकच-कमलमुच्चैः साऽस्त्वचिन्त्य-प्रभावा, सकलसुख-विधात्री, प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥

४३—श्रीस्तम्भनपार्श्वनाथ चैत्यवन्दन।

श्रीसेढी-तटिनी-तटे-पुर-वरे, श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेव-सूरि–विबुधाधीशैः समारोपितः। संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः, स्फूर्जत्फणा-पल्लवः पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथय

तां, नित्यं मनो-वाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधिव्याधि हरो देवो, जीरावल्ली शिरोमणिः । पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नत-नाथो नृणां श्रिये ॥ २ ॥

४४—सिरि-थंभणय-ठिय-पास-सामिणो ।

सिरि-थंभणय-ठिय पास-सामिणो सेस-तित्थ-सामीणं तित्थ-समुन्नइ-कारण-सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसिमहं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए । भत्तीए गुण-सुट्ठियस्स संघस्स समुन्नइ-निमित्तं ॥ २ ॥

४५—चउ-क्कसाय सूत्र ।

चउ-क्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु । सरस-पिअंगु-वण्णु गय-गामिउ, जयउ पासु भुवण-त्तय सामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु-कंति-कडप्प-सिणिद्धउ, सोहइ फणि मणिकिरणालिद्धउ । नं नव-जलहर-तडिल्लय-लंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

४६—अर्हन्तो भगवन्त।

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धि-स्थिता, आचार्या जिन—शासन्नोन्नति-कराः पूज्या उपाध्यायकाः। श्री सिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम्॥ १॥

४७—लघु-शान्ति स्तव।

शान्तिं शान्ति-निशान्तं-शान्तंशान्ताऽशिवं नमस्कृत्य। स्तोतुः शान्ति-निमित्तं, मन्त्र-पदैः शान्तये स्तौमि॥ १॥ ओमिति-निश्चत-वचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्। शान्ति-जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम्॥ २॥ सकलातिशेषक-महा-सम्पत्ति-समन्विताय शस्याय। त्रैलोक्य-पूजिताय च, नमो नमः शान्ति-देवाय॥३॥ सर्वामर-सुसमूह—स्वामिक-संपूजिताय निजिताय। भुवन-जन-पालनोद्यत—तमाय सततं नमस्तस्मै॥ ४॥ सर्व-

दुरितौघ-नाशन—कराय सर्वा-ऽशिव-प्रशम नाय । दुष्ट ग्रह भूत पिशाच—शाकिनीनां प्रम थनाय ॥५॥ यस्येति नाम मन्त्र—प्रधान वा-क्यौपयोग-कृत-तोषा । विजया कुरुते जन-हित—मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥६॥ भवतु नमस्ते भगवति !, विजये ! सुजये ! परापरैरजिते ! । अपराजिते ! जगत्यां जयतीति जयावहे भवति ! ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य भद्र-कल्याण-मंगल-प्रददे । साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टि-पुष्टि-प्रदे-जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृत-सिद्धे !, निर्वृति-निर्वाण-जननि ! सत्त्वा नाम् । अभय-प्रदान-निरते !, नमोऽस्तु-स्वस्ति-प्रदे ! तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां शुभावहे नित्यमुद्यते ! देवि ! । सम्यग्दृष्टीनां धृति-रति-मति-बुद्धि-प्रदानाय ॥१०॥ जिन-शासन-निर तानां शांति-नतानां च जगति जनतानाम् । श्रीसम्पत्-कीर्ति-यशो—वर्द्धनि ! जय देवि !

विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल-विष-विषधर, दुष्ट-ग्रह-राज-रोग-रण-भयतः राक्षस-रिपु-गण-मारि—चौरेति-श्वापदादिभ्यः ॥१२॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति। तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम् ॥ १३ ॥ भगवति! गुणवति! शिव-शान्ति—तुष्टि-पुष्टि-स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम्। ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीँ ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रौँ फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर—पुरस्सरं संस्तुता जया देवी। कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्व-सूरि-दर्शित—मन्त्र-पद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः। सलिलादि-भय-विनाशी, शान्त्यादि करश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम्। स हि शान्ति-पदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः।

मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥
सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यं, सर्व-कल्याण-कारणम्।
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम्॥१९॥

४८—भुवनदेवताकी स्तुति।

चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवन-वासिनी।
निहत्य दुरितान्येपा, करोतु सुखमक्षयम् ॥१॥

४९—वर-कनक सूत्र।

ओंवर-कणय-संख-विद्दुम—मरगय-घण-संनिहं विगय-मोहं। सत्तरि-सयं जिणाणं, सव्वा-मर- पूइयं वन्दे ॥१॥ स्वाहा ॥ ओं भवणवइ-वाणमंतर—जोइस-वासी विमाण-वासी य। जे केवि दुट्ठ-देवा, ते सव्वे उवसमंतु मे ॥ २ ॥ स्वाहा ॥

॥ बृहद्-अतिचार ॥

॥ नाणम्मि दंसणम्मि य, चरणम्मि तवे य तह य विरियम्मि। आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,

दर्शनाचार २, चारित्राचार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५, एवं पांचविधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष-दिवसमांहि. सूक्ष्म बादर, जाणतां अणजाणतां, हुओ होय, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार,—
काले विणए बहु-माणे, उवहाणे तह य निन्ह-वणे । वंजण-अत्थ-तदुभए. अट्ठविहो नाणमा-यारो ॥१॥ ज्ञान काल-वेलामांहि पढ़िउं गुणिउं नहीं, अकाले पढ़िउं, विनय-हीन बहु-मान हीन उपधान-हीन श्रीउपाध्याय कनें नही पढ़िउं, अथवा अनेरा कने पढ़िउं, अनेरो गुरु कह्यो । व्यंजन, अर्थ, तदुभय कूडो पढ्यो । देव-वांदणे, पडिक्कमणे, सिज्झाय करतां, पढतां गुणतां कूडो अक्षर काने-मात्रे-अधिको-ओछो आगल-पाछल भण्यो । सूत्र-अर्थ कूडा भण्या, भणीनें विसा-र्‍यो । तपोधन तणे धर्मे काजो अणऊधरे,

दांडी अणपडिलेही, वसती अणसोधी; असिज्झाई अणोझा-काल-वेलामांहि दशवैकालिक-प्रमुख सिद्धान्त भण्यो गुण्यो। योग कह्यांपखे भण्यो। ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली. नवकरवाली, सांपडा, सांपडी, वही, दस्तरी, ओलीया, कागल-प्रमुख प्रतें आशातना हुई. पग लागो, थूंक लागो, ओसीसे मूक्यां. कने छतां आहार-नीहार कीधो, ज्ञान-द्रव्य भक्षण-उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधे विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो. छती शक्तें सार-संभाल न कीधी। ज्ञानवंत प्रतें मच्छर वह्यो, अवज्ञा-आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष-मत्सर अंतराय-अपघात कीधो। मतिज्ञान. श्रुतज्ञान. अवधिज्ञान. मनः—पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पांच ज्ञान तणी असद्दहणा कीधी। कोई तोतलो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो। आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो। अष्ट-

विधि ज्ञानाचार विषइओ जिको अतिचार पक्ष-दिवसमांहे सूक्ष्म बादर, जाणतां अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन, वचन, कायाइं करी मि०॥

दर्शनाचारना आठ अतिचार,—निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढ-दिट्ठी अ। उव-वूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥१॥ देव-गुरु-धर्म-तणे विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं । 'सघलाइ मत भला छे' एहवी श्रद्धा कीधी । धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसन्देह बुद्धि धरी नहीं । चारित्रिया साधु-साधवी तणां मल-मलिन गात्र देखी दुगंछा उपजावी । मिथ्यात्वीतणी पूजा-प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणो कीधो । संघमांहे गुणवंततणी अनुपवृंहणा, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति अभक्ति चिंतवी, संघ मांहे थिरिकरण वात्सल्य, शक्ति छते प्रभावना न कीधी । देवद्रव्य विनासिउं, विणासंतु उवेखिउं,

छतो शक्ते सार-संभाल न कीधी । साधर्मिकशुं कलह-कर्म कीधुं । जिन-भवन-तणी चोरासी आशातना कीधी । गुरु प्रतें तेत्रीस आशातना कीधी । अधौत वस्त्रें देव पूजा कीधी । तिहुं ठाम पाखें देव-पूजा-वास-कूपी-कलशतणो ठबको लागो । मुख-तणी चाफ लागी । ठवणा-रिय हाथ थको पडिओ. पडिलेहवो वीसारयो । नवकरवालीनें पग लागो । दर्शनाचार विषइओ जिको अतिचार० ॥ ३ ॥

चारित्राचारना आठ अतिचार;—

पणि-हाण-जोग-जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥१॥ इरिया-समिति १, भासा-समिति २, एषणा-समिति ३, आयाण-भंडमत्त-निक्खेवणा-समिति ४, उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-संघाण-पारिठा-वणियासमिती ५, मनो-गुप्ति १, वचन-गुप्ति २, काय-गुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति.

विधि ज्ञानाचार विषइओ जिको अतिचार पक्ष-दिवसमांहे सूक्ष्म बादर, जाणतां अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन, वचन, कायाइं करी मि०॥

दर्शनाचारना आठ अतिचार,—निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढ-दिट्ठी अ। उव-वूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥१॥ देव-गुरु-धर्म-तणे विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्‌यो नहीं । 'सघलाइ मत भला छे' एहवी श्रद्धा कीधी । धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसन्देह बुद्धि धरी नही । चारित्रिया साधु-साधवी तणां मल-मलिन गात्र देखी दुगंछा उपजावी । मिथ्यात्वीतणी पूजा-प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणो कीधो । संघमांहे गुणवंततणी अनुपबृंहणा, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति अभक्ति चिंतवी, संघ मांहे थिरिकरण वात्सल्य, शक्ति छते प्रभावना न कीधी । देवद्रव्य विनासिउं, विणासंतु उवेखिउं,

छती शक्ते सार-संभाल न कीधी । साधर्मिकशुं कलह-कर्म कीधुं । जिन-भवन-तणी चोरासी आशातना कीधो । गुरु प्रतें तेत्रीस आशातना कीधी । अधौत वस्त्रें देव पूजा कीधी । तिहुं ठाम पाखें देव-पूजा-वास-कूपी-कलशतणो ठबको लागो । मुख-तणी बाफ लागी । ठवणा-रिय हाथ थको पडिओ, पडिलेहवो वीसार्यो । नवकरवालीनें पग लागो । दर्शनाचार विषइओ जिको अतिचार० ॥ ३ ॥

चारित्राचारना आठ अतिचार;—

पणि-हाण-जोग-जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥१॥ इरिया-समिति १, भासा-समिति २, एषणा-समिति ३, आयाण-भंडमत्त-निक्खेवणा-समिति ४, उच्चार-पास-वणखेल-जल्ल-संघाण-पारिठा-वणियासमिती ५, मनो-गुप्ति १, वचन-गुप्ति २, काय-गुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति,

रूडी परें पाली नहीं। साधुतणें धर्में सदैव श्रावकतणे पोसह-पडिक्कमणे लीधे अष्टविध चारि-त्राचार-विषईओ जिको अतिचार०॥

विशेषतः श्रावकतणें धर्में श्रीसम्यक्त्व-मूल वारह व्रत। श्रीसम्यक्त्व-तणा पांच अति-चार;—संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगोसु। संका,—श्रीअरिहंत-तणां बल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, जिन-वचन-तणो संदेह कीधो। आकांक्षा;—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, गोत्रदेवता। ग्रह-पूजा विणाइग, हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम, गोत्र, देश, नगर, जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें, आतंकें इहलोक-परलोकार्थें पूज्या, मान्या। बोद्ध, सांख्यादिक संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगिया, योगी, दरवेश अनेराई दर्श-नियानो कष्ट, मंत्र चमत्कार देखी परमार्थ

जाणया विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र सिख्यां सांभल्यां। शराध, संवत्सरी, होली, बलेव, माही पूनिम, अजा पडिव, प्रेतबीज, गोरत्रीज, विणायग-चोथ, नाग-पांचम, झुलणा-छठा, शील-सातम-श्रो-आठम, नउली-नवम अहव-दसम, व्रत-इग्यारस, वत्स-बारस, धन-तेरस, अनंत-चौदश, आदित्य-वार, उत्तरायण, नवो-दक, जाग-भोग-उतारणा-कीधा। पिंपले पाणी घाल्यां, घलाव्यां। घर, बाहिर, कूई, तालाव, नदी, समुद्र, कुंडमें पुण्य-हेतु स्नान कीधां, दान दीधां। ग्रहण, शनिश्चर, माह-मास, नवरात्रि नाहिया, अजाणतां थाप्यां। अनेराई व्रत व्रतोला कीधां, कराव्यां। विचि किच्छा:—धर्म संबंधिया फल तणो संदेह कीधो। जिण, अरिहंत, धर्मना आगर, विश्वो पकार-सागर-मोक्ष-मार्ग दातार, देवाधिदेव-बुद्धें शुद्ध भावें न पूज्या, न मान्या। महा

रसाला भात-पाणी-तणी दुगंछा कीधी । कुचा रित्रिया देखी चारित्रिया उपरें अभाव हुओ । मिथ्यात्वी-तणी प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी । प्रीति मांडी, दाक्षिण्य लगें तेहनो धर्म मान्यो । श्री समकित विषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष-दिवस मांहि सूक्ष्म-बादर, जाणतां अजाणतां, हुओ होय, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि० ।

पहिले प्राणातिपात-विरमण व्रतें पांच अति चार । वह-बंध-छविच्छेए, अइभारे भत्त-पाण-वुच्छेए ॥ द्विपद-चउपद प्रतें रीश-वशें गाढो घाउ-प्रहार घाल्यो, गाढ बंधने बांध्यां, घणे भारे पीड्या, निर्लाञ्छन कर्म कीधां, चारा-पाणी-तणी वेला सार-संभार न कीधी । लहिणे-देणे किणही-प्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या । अणगल पाणी वावर्यूं रूडे गलणे गल्युं नही । अणगल पाणी झीलयां, लूगडां धोयां ।

इंधण अणसोध्युं जाल्युं। ते माँहि साप, कानखजूरा, सुलहला, मांकड, जूआ, गोगिंडा, साहतां मूआ, दूखव्यां, रूडे थानक न मूक्या। कीडी, मकोडी, उदेही, घीतेली, कातरा चूडेली, पतंगियां, देडकां, अलसिया, ईली, कूति, डांस, मसा, बगतरा, माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा, चांपिया, दूहव्या। माला हलावतां पंखी, काग, चिडकलानां इंडा फूटां। अनेरा एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा, चांप्या, दूहव्या। हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां, विध्वंसपणुं कीधुं, जीव-रक्षा रूडे न कीधी। संखारो सूकव्यो। सलया धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां। खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या। जीवाकुल भूमि लीपावी। वाशी गार राखी, रखावी। दलणे, खांडणे, लीपणे रूडी जयणा न कीधी। आठम चउदशना नियम भांग्या। धूणी करावी।

पहला प्राणातिपात-व्रत-विषइओ अनेरो०॥१॥

बीजे स्थूल-मृषावाद-विरमण व्रतें पांच अतिचार। सहसा-रहस्स-दारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसात्कार;—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांते वात करतां देखी 'तुम्हें तो राज-विरुद्ध चिंत वोछो' इत्यादिक कह्युं। स्वदार-मंत्र-भेद कीधो। अनेराई किणहीनो मंत्र आलोचमर्म प्रकाश्यो। किणहीनें कूडो बुद्धि दीधी। कूडो लेख लिख्यो। कूडी साख भरी। थापण-मोसो कीधो। कन्या-ढोर-गाय-भूमि-संबंधिया लेहणें देहणें व्यवसाय-वाद्-वढावढि करतां मोटकुं झूठ बोल्युं। हाथ-पग-भणी गाल दीधी। करडका मोड्या। अधर्म्म वचन बोल्यां। बीजे मृषावाद-व्रत-विषइओ० ॥२॥

त्रीजे अदत्तादान-विरमण व्रतना पांच अतिचार। तेनाहडप्पओगे। घर, बाहिर, क्षेत्र,

खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी। चोरीनी वस्तु मोल लीधी। चोर, धाडी प्रतें संबल दीधुं, संकेत कह्युं। विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो। नवा पुराणा, सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा। खोटे तोले मान माप वहोरयां। दाण-चोरी कीधी। लाटे लांच लीधो। माता, पिता, पुत्र, कलत्र, परिवार वंची जूदी गांठ कीधी। किण हीनें लेखे पलेखे भूलव्युं। पडी वस्तु ओलवी लीधी। त्रीजे अदत्तादान-व्रत विषइओ०॥३॥

चोथे स्वदार-संतोष मैथुन व्रतें पांच अतिचार॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग-वीवाह-तिव्व-अणुरागे॥ अपरिगृहीतागमन, इत्वर-परिगृहिता-गमन, विधवा, वेश्या, स्त्री, कुलाङ्गना, स्वदार शोक तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम चउदश अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या। घरघरणां

कीधां, कराव्यां, अनुमोदीयां। कुविकल्प चिंतव्या। अनंग क्रीडा कीधी। पराया विवाह जोड्या। काम भोग तणे विषे तीव्राभिलाष कीधो। कुस्वप्न लाधां। नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं। चौथे मैथुन-व्रत वि० ॥ ४ ॥

पांचमे परिग्रह-परिमाण-व्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू। धन, धान्य, क्षेत्र, वस्तु, रूप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पद ए नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्च्छा लगें संक्षेप न कीधो। माता, पिता, पुत्र, कलत्रादि तणे लेखें कीधो। परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नही, पढ़ी विसारिओ। नियम विसारिओ। पांचमे परिग्रह परिमाण व्रत विषइओ० ॥ ५ ॥

छट्ठे दिग्-विरमण-व्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्स य परिमाणे ॥ ऊर्ध्वदिसि, अधोदिसि, तिर्यग्दिसि जायवा आववा तणो नियम जे

कोई अजाणे भांगो। एक गमा संकोडी बिजो गमा वधारी। विस्मृत लगे अधिक भूमि गया। पाठवणी आघी मोकली ॥ छट्ठे दिग्व्रते वि० ॥ ६ ॥

सातमें भोगोपभोग-परिमाण-व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहूंती पन्नरे, एवं वीश अतिचार ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे। सच्चित तणे नियम लीधे अधिक सच्चित्त लीधुं, तथा सच्चित मली वस्तु, अपक्वाहार, दुष्पक्वाहार, तुच्छोषधि तणु भक्षण कीधुं। होला, उंबी-पहुंक, काकडी, भडथां कीधां। सुलयां धान प्रमुख भक्षण कीधां। सच्चित्त-दव्व-विगई—पाणह तंबोल-वत्थ-कुसुमेसु। वाहण-सयण-विलेवण-बंभ-दिसि-ण्हाण-भत्तेसु ॥१॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभारया-संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या। बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकाय

मांहि आदु, मूला, गाजर, पींडालू, सूरण, सेलरां, काची आंबली, गोल्हां खाधां। चोमासा-प्रमुख-मांहे वासी कठोलनो रोटी खाधी। त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं। मधू, महुडां, माखण, माटी, वेंगण, पीलू, पीचू, पपोटा, पींपो, विष, हिम, करहा, घोलवडां, अणजाण्यां फल, टींबरुं, अथाणुं, आमणबोर, काचुंमीठुं, तिल, खसखस, काचां कोठिंबडां खाधां। रात्रि-भोजन कीधुं। लगभगती वेलाये व्यालू कीधुं। दिवस उग्या विण शिराव्या। तथा पन्नरे कर्मादान-इंगालि-कम्मे, वण-कम्मे, साडी-कम्मे, भाडी-कम्मे, फोडी-कम्मे, दंत-वाणिज्ये, लाक्षा-वाणिज्ये, रस-वाणिज्ये, केश-वाणिज्ये, विष-वाणिज्ये, जंतपीलण-कम्मे, नील्लं छण-कम्मे, दवग्गि-दावणया, सरदह-तलाव-सोसणया,-असई-पोसणया, ए-पांचकर्म्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला

कराव्या। इंटवाह, नीवाह पचाव्या। घाणी, चणा, पक्वान्न करी वेच्या। वासी माखण तपाव्यां। अंगीठा कीधा, कराव्या। तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरान्त राख्या। कूकडा, सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं॥ सातमा भोगोपभोग-व्रत-विषइओ० ॥७॥

आठमा अनर्थ-दंड-विरमण-व्रतना पांच अतिचार॥ कंदप्पे कुक्कुइए॥ कंदर्प लगें विटनी परे हास्य, कुतूहल, मुखादि-अंग-कुचेष्टा कीधी। मूरखपणा लगे कुणहीने असंबद्ध वाक्य बोल्या। खांडा, कटारी, कुसी, कुहाड़ा, रथ, ऊखल, मूसल, अगन, घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो। अंघोल, नाण, दांतण, पग-धोअण पाणी तेल अधिक आण्यां हींडोले हींच्या। राज-कथा

देश-कथा भक्त-कथा स्त्री-कथा पराई वात कीधी । आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां । कर्कश वचन बोल्या । करडका मोड्या । संभेडा लाया । भेंसा, सांड, कूकडा, मिंढा, श्वानादि झूझतां कलह करतां जोयां । खाधी लगें अदेखाई चिंतवी । माटी, मीठुं, कण, कपासिया काज विणचांप्या तेह ऊपर बयठा । आली वनस्पति खुंदी । छास पाणी घीरस तेल गुल आम्ल वेतस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां, ते मांहि कीडी, कंथुआ, मांखी, उंदर, गिरोली प्रमुख जीव विणठा । सूडा प्रमुख जीव क्रीडा-हेतें बांधी राख्या । घणी निद्रा कीधी । राग-द्वेष लगें एकने ऋद्धि-परिवार वांछी, एकने मृत्यु-हाणि विमासी । आठमा अनर्थ-दंड-व्रत वि० ॥

नवमा सामायिक व्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे । सामायिक लीधे मन

आहट दोहट चिंतव्युं। वचन सावद्य बोल्युं। काय अणपडिलेह्युं। हलाव्युं। छती वेलाइं सामायिक न लीधुं। सामायिक लई उघाडे मुखे बोल्या, ऊंघ आवी कीधी। वीज दीवा तणी उजाही लागी। कण, कपासीया, माटी, मीठुं, नील-फूल, हरि-कायना संघट्ट हुआ। पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ। तथा स्त्री तिर्यंची आभडी। मुहपत्तीयों संघट्टी। सामायिक अण पूरिउं पारिउं, पारउं विसारिउं। नवमे सामायिक-व्रत-विषइओ० ॥ ९ ॥

दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार;— आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल-पक्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहि बाहिर थकी कांई अणाव्युं। आप कन्हाथी बाहिर मोकल्युं। साद करी, रूप देखाडी, कांकरी नाखी आपणपणु छतुं जणाव्युं ॥ दशमे

देशावकाशिक-व्रत-विषइओ० ॥१०॥

इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार;-

संथारुच्चार-विही पमाय तह चेव भोअणाभोए॥

पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिला दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं। मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइ परठविउं, परठवतां चिंतवण न कीधो, 'अणुजाणह जस्सुग्गहो' न कह्यो, परठव्या पूठे वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं। पोसह सालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सिही आवस्सही कहेवी विसारी। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ। संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ। पोरसीमांहि उंध्या। अविधि संथारुं पाथरयुं। काल वेलायें पडिक्कमण न कीधुं। पारणादिक तणी चिन्ता निपजावी। कालवेला देव वांदवा वीसारिया।

पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो। पर्व्व तिथि आवी पोसह लीधो नही॥ इग्यारमे पोषधोपवास-व्रत-विषइओ० ॥ ११ ॥

बारमे अतिथि-संविभाग-व्रतें पांच अतिचारः—सचित्ते निक्खिवणे॥ सच्चित्त वस्तु हेठे उपरि थके महातमा प्रतें असूझतु दान दीधुं। अदेवा तणी बुद्धे सूझतु फेडी असूझतु कीधुं। देवा तणी बुद्धे असूझतु फेडी सूझतु कीधुं। आपणुं फेडी परायुं कीधुं। विहरवा वेला टली गया। पछें असुर करी महातमा तेड्या। मच्छरलगें दान दीधुं। गुणवंत आवे भगति न साचवी। छती शक्ति साधर्मिक-वात्सल्य न कीधुं। अनेराई धर्म्मक्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धरया नहीं॥ बारमें अतिथि-संविभाग-व्रत-विषइयो० ॥ १२ ॥

संलेहणा तणा पांच अतिचार। इहलोए परलोए॥ इहलोगासंसप्पओगे परलोगासंसप्प-

ओगे जीविआसंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे। इहलोक-मनुष्य भवे मान, महत्त्व, लोक तणी सेवा, ठकुराई, बलदेव-वासुदेव-चक्रवत्ति-पद वांछयां। परलोके इंद्र-अहमिंद्र-देवाधिदेव-पदवी वांछी। सुख आव्ये जीववा तणी वांछा कीधो। दुःख आव्ये मरवा तणी वांछा कीधी। काम-भोग-तणी इच्छा कीधी॥ संलेहणा-व्रत-वि०॥

तपाचार बारभेदें॥ छ अभ्यन्तर, छ बाहिर। अणसणमूणोयरिया०। अणसण कहीयें उपवास, ते पर्व्वतिथि छतो शक्ते कीधुं नही। ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही। द्रव्य-संक्षेप विगय-प्रमुख-परिमाण कीधुं नही। आसनादिक काय-किलेश न कीधो। संली-णता—अंगोपांग संकोच्या नहीं। नवकारसी, पोरसी, गंठसी, मूठसी, साड्ढपोरसि, पुरिम-ड्ढ, एकासणो, बेआसणो, नीवी, आंबिल

प्रमुख पच्चक्खाण पारवां वीसार्यां, बेसतां नव-
कार भण्यो नहो, ऊठतां दिवस-चरिमं न कीधुं
नीवी, आंबिल, उपवासादिक तप करी काचुं
पाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य-तप-व्रत-विष-
इओ० ॥

अभ्यंतर तप पायच्छित्तं विणओ ।
गुरुकनें मन सुद्धे आलोयणा लीधीं नहीं ।
गुरु-दत्त प्रायच्छित्त तप लेखा शुद्ध पहुंचाड्युं
नहीं । देव—गुरु-संघ-साहम्मी प्रतें विनय
साचव्यो नहीं । वाचना, प्रच्छना, परावर्त्तना,
अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पंच विधि सिज्झाय
कीधी नहीं । धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही ।
कर्मक्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउ-
स्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यन्तर तप विषइओ ॥

वीर्याचारना तोन अतिचार ॥ अणिगू-
हियबलविरिओ, परिक्कमइ जो जहुत्तठाणेसु ॥
जुं जइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरियायारो ॥१॥

पढवे, गुणवे, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामा यिक, दान, शील, तप, भावना प्रमुख धर्म्म कृत्य तणो विषे मन, वचन, काय तणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं । रूडा पञ्चाङ्ग खमासमण न दीधां । बेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार-व्रत-विषइओ० ॥

नाणाइ अट्ठ अइ वय, सम संलेहण पण पनर कम्मेसु । बारस तव विरिअ तिगं, चउ वीसं सय अईयारा ॥१॥ पडिसिद्धाणं करणे ॥ जिन-प्रतिषिद्ध बावीस अभक्ष्य, बत्तीस अनं तकाय, बहु-बीजभक्षण, महाआरंभ, महापरि ग्रहादिक कीधां । नित्यकृत्य, देवपूजा, सामा यिकादिक तथा तीर्थयात्रादिक न कीधां। जीवाजीवादि विचार सद्दहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र—प्ररूपणा कीधी । प्राणा तिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ

६, राग १० द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८, ए अढारह पापस्थानकमाँहि जें कोइ कीधो करा व्यो अनुमोद्यो एवंप्रकारे श्रावक—धर्मे श्रीस म्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसा सो अतिचार मांहि जिको कोई अतिचार पक्षदिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहु मन वचन कायायें करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

५१—कमलदल-स्तुति।

कमल-दल-विपुल-नयना, कमल-मुखी कम ल-गर्भ सम गौरी। कमले स्थिता भगवती ददातु श्रुत-देवता सौख्यम् ॥१॥

५२—भुवनदेवता-स्तुति।

भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ०। ज्ञानादिगुणयुतानां,स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम्।

विद्धातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ।१।

५३—क्षेत्रदेवता-स्तुति ।

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ।
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

५४—पच्चक्खाण-सूत्र ।

* नमुक्कारसहिश्र-पचखाण ।

(१)

उग्गए सूरे नमुक्कार-सहिअं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्व-समाहि-वत्तिआगारेणं; विगईओ पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सह सागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्त विवेगेणं पडुच्च मक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं; देसावगासियं भोग-परिभोगं पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं

महत्तरागारेणं सव्व-समाहि-वत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥

(२)

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरइ ॥१॥

२—पोरसी-साड्ढपोरिसी-पच्चक्खाण।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं—सहसागारेणं पच्छण्ण-कालेणं दिसामोहेणं साहु-वयणेणं सव्व-समाहि वत्तियागारेणं; विगईओ पच्चक्खाइ इत्यादि।

३ पुरिमड्ढ-अवड्ढ-पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए, पुरिमड्ढं अवड्ढं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ; चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसा-

गारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसा-मोहेणं साहु-वयणेणं; महत्तरागारेणं सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं; विगईओ पच्च० ।

४— एकासण-बिआसण-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारे-णं, पच्छन्नकालेणं, दिसा-मोहेणं साहु-वयणे-णं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं; एकासणं बिआ-सणं वा पच्चक्खाइ, दुविहं तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्न० सह० सागा-रिआगारेणं, आउंटण-पसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणे-णं, पारि० मह० सव्व० देसावगासिय० इत्या-दि ॥ ४ ॥

५—एगलठाण-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ. उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं—असणं,

पाणं, खाइमं, साइमं अण्ण० सह० पच्छण्ण० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगट्ठाणं पच्चक्खाइ, दुविहं, तिविहं, चउव्विहंपि आहारं—असणं, खाइमं, साइमं, अण्ण० सह० सागा० गुरु० पारि० मह० सव्व० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ।५।

६—आयंबिल-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थ० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० आयंबिलं पच्चक्खाइ, अण्णत्थ० सह० लेवालेवेणं, गिहत्थ-संसिट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं, पारिट्ठा० मह०, सव्व० एकासणं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं—असणं, खाइमं, साइमं; अण्ण० सह० सागा० आउंटण० गुरु० पारि० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ६ ॥

७—निव्विगइय-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढ-पोरिसिं वा पच्चक्खाइ,

उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अणत्थ० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० निव्विगइयं पच्चक्खाइ, अणत्थ० सह० लेवा० गिहत्थ० उक्खित्त० पडुच्च० पारि-ट्ठा० मह० सव्व० एकासणं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारं—असणं, खाइमं, साइमं, अणत्थ० सह० सागा० आउंटण० गुरु० पारिट्ठा० मह० सव्व० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ७ ॥

८—चउव्विहाहार-उपवास-पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ । चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइ-मं; अणत्थ० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥८॥

९—तिविहाहार-उपवास-पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ । तिवि-हंपि आहारं-असणं, खाइमं साइमं, अणत्थ० सह० पाणहार पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिम-ड्ढं, अवड्ढं वा पच्चक्खाइ अणत्थ० सह०

पच्छण्णा० दिसा० साहु० सव्व० देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ ६ ॥

१०—दत्ती-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढं, अवड्ढं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे, चउविहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अण्णत्थ० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगट्ठाणं दत्तियं पच्चक्खामि, तिविहं चउविहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थ० सह० सागा० गुरु० सह० सव्व० विगइओ पच्चक्खाइ इत्यादि पूर्ववत्, देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ १० ॥

११—दिवसचरिम-चउव्विहाहार-पच्चक्खाण ।

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ ११ ॥

१२–दिवसचरिम-दुविहाहार-पच्चक्खाण।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहंपि आहारं असणं, खाइमं; अणत्थ० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ १२ ॥

१३–पाणाहार-पच्चखाण

पाणाहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ १३ ॥

१४–भवचरिम-पच्चखाण

भवचरिमं पच्चक्खाइ, तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं,अणत्थ० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ १४ ॥

१५–देसावगासिय-पच्चक्खाण
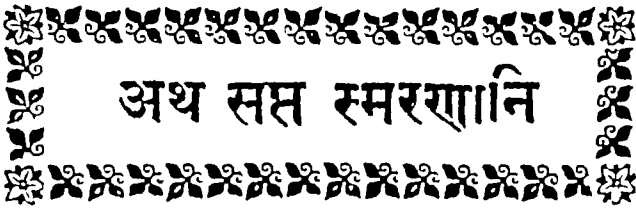
अहंणं भंते ! तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। दव्वओ णं देसावगासियं, खित्तओ णं इत्थ वा अणत्थ वा, कालओ णं जाव

धारणा, भावओ णं जाव गहेणं न गहेज्जामि, छलेणं न छलेज्जामि, अण्णेण केणवि रोगायं-केण वा एस मे परिणामो न परिवडइ ताव अभिग्गहो, अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वो-सिरइ ॥ १५ ॥

५५—पच्चक्खाण-आगार-संख्या।

दो चेव नमुक्कारे, आगारा छच्च हुंति पोरिसिए। सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणम्मि अट्ठेव ॥ १ ॥ सत्तेगट्ठाणस्स उ, अट्ठेव य अंबिलम्मि आगारा। पंचेव अब्भत्तट्ठे छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिग्गहे, निव्वीए अट्ठनव य आगारा। अप्पाव-रणे पंचउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥
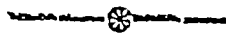
अथ सप्त स्मरणानि

५६—अजित-शान्ति-स्तवन ।

अजिअं जिअ-सव्व-भयं, संतिं च पसंत-सव्व-गय-पावं । जयगुरु संति-गुण-करे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा) ववगय-मंगुल- भावे, ते हं विउल तव-निम्मल-सहावे । निरुवम-मह-प्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे ॥ २ ॥ (गाहा) सव्व-दुक्ख-प्पसंतीणं, सव्व-पाव-प्पसंतिणं । सया अजिअ-संतीणं, नमो अजिअ- संतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो) अजिअ-जिण ! सुह-पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नाम-कित्तणं । तह य धिइ-मइ-प्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥४॥ (मागहिआ) किरिया-विहि-संचिअ-कम्म-किलेस-विमुक्ख-यरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महा-मुणि-

सिद्धि-गयं । अजिअस्स य संति-महा मुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ-कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ (आलिंगणयं) पुरिसा जइ दुक्ख-वारणं, जइ य विमग्गह सुक्ख-कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥६॥ (मागहिआ) अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअमुवरय-जर-मरणं,सुर-असुर-गरुल-भुयग-वइ-पयय-पणिवइयं । अजि-अमहमवि अ सुनय-नय-निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि-दिविज-महिअं सययमु-वणमे ॥ ७ ॥ [संगययं] तं च जिणुत्तम-मुत्तम-नित्तम-सत्तधरं, अज्जव-मद्दव-खंति-विमुत्ति-समाहि-निहिं । संतिकरं पणमामि दमुत्तम-तित्थयरं, संति-मुणी मम संति-समाहि-वरं दिसउ ॥ ८ ॥ [सोवाणयं] सावत्थि पुव्व-पत्थिवं च वर-हत्थि-मत्थय-पसत्थ-वित्थिन्न-संथियं, थिर-सरिच्छ-वच्छं मयगल-लीलाय-

माण-वरगंध-हत्थि-पत्थाण-पत्थियं संथवारिहं।
हत्थि-हत्थ-बाहुं धंत-कणग-रुअग-निरुवहय-
पिंजरं पवर-लक्खणो-वचिय-सोम-चारु-रूवं,
सुइ-सुह-मणाभिराम-परम-रमणिज्ज-वर-देवदुं-
दुहि-निनाय-महुरयर-सुह-गिरं ॥ ९ ॥ [वेड्ढ-
ओ] अजियं जिआरि-गणं, जिअ-सव्व-भयं
भवोह-रिउं। पणमामि अहं पयओ पावं
पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ (रासालुद्धओ)
कुरु-जणवय-हत्थिणाउर-नरीसरो पढमं तओ
महा-चक्कवट्टि-भोए मह-प्पभाओ जो बावत्तरि-
पुरवर-सहस्स-वर-नगर-निगम-जणवय-वई ब-
त्तीसा-राय-वर-सहस्साणुयाय-मग्गो। चउदस-
वर-रयण-नव-महा-निहि-चउ-सट्ठि-सहस्स-प-
वर-जुवईण सुंदर-वई चुलसीहय-गय-रह-सय-
सहस्स-सामी छन्नवइ-गाम-कोडि-सामी-आसी
जो भारहम्मि भयवं ॥ ११ ॥ (वेड्ढओ)
तं संतिं संतिकरं संतिण्णं सव्व-भया। संतिं

थुणामि जिणं संतिं वेहेउ मे ॥ १२ ॥ [रासो-नंदियं] इक्खाग विदेह-नरीसर नर-वसहा मुणि-वसहा नव-सारय-ससि-सकलाणण वि-गय-तमा विहुअ-रया । अजिउत्तम तेअ-गुणेहिं महा-मुणि-अमिअ-बला विउल-कुला पणमामि ते भव-भय-मूरण जग-सरणा मम सरणं ॥१३॥ (चित्तलेहा) देव-दाणविंद-चंद-सूर-वंद हट्ठ-तुट्ठ-जिट्ठ-परम-लट्ठ-रूव धंत-रुप्प-पट्ट-सेय-सुद्ध-निद्ध-धवल-दंतपं-ति संति सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति पवर, दित्त तेअ-वंद धेअ सव्व-लोअ-भाविअ-प्पभाव णेअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ (नारायओ) विमल-ससि-कलाइरेअ-सोमं, वितिमिर-सूर-कराइरेअ-तेअं । तिअस-वइ गणाइरेअ-रूवं, धरणिधर-प्पवराइ-रेअ-सारं ॥ १५ ॥ (कुसुमलया) सत्ते य सया अजियं, सारीरे अ बले अजिअं । तव-संजमे य अजिअं, एस थुणामि जिणमजिअं ॥ १६ ॥

(भुअगपरिरंगिअं) ॥ सोम-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-ससी, तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-रवी। रूव-गुणेहिं पावइ न तं ति-अस-गण-वई, सार-गुणेहिं पावइ न तं धरणि-धर-वई ॥ १७ ॥ (खिज्जिअयं) ॥ तित्थ-वर-पवत्तयं तम-रय-रहिअं, धीर-जण-थुअच्चिअं चुअकलि-कलुसं। संति-सुह-प्पवत्तयं ति-गरण-पयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥१८॥ (ललिअं) ॥ विणओणय-सिरि-रइअंजलि-रिसि-गण-संथुअं थिमिअं, विबुहाहिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महिअच्चियं बहुसो। अइरु-ग्गय-सरय-दिवायर-समहिअ-सप्पभं तवसा, गयणं-गण-विअरण-समुइय-चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ (किसलयमाला) ॥ असुर-गरुल-परिवन्दिअं, किन्नरोरग-णमंसिअं। देव-कोडि-सय-संथुअं, समण-संघ-परिवंदिअं ॥ २० ॥ (सुमुहं) ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं।

अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥
(विज्जुविलसिअं) ॥ आगया वर-विमाण-दि-
व्व-कणग-रह-तुरय-पहकर-सएहिं हुलिअं।
ससंभमोअरण-खुभिअ लुलिय-चल-कुण्डलं-
गय-तिरीड-सोहन्त-मउलि-माला ॥२२॥ (वेढ-
ओ) ॥ जं सुर-संघा सासुर-संघा वेर-विउत्ता
भत्ति-सुजुत्ता, आयर-भूसिअ-संभम-पिंडिअ-
सुट्ठु-सुविम्हिय-सव्व-बलोघा। उत्तम-कंचण-
रयण-परूविअ-भासुर-भूसण-भासुरिअंगा,गाय-
समोणय-भत्ति-वसागय-पंजलि-पेसिअ-सीस-
पणामा ॥२३॥ (रयणमाला) ॥ वंदिऊण थो-
ऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं।
पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइया स-भ-
वणाइं तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तयं) ॥ तं म-
हामुणि-महंपि पंजली, राग-दोष-भय-मोह-व-
ज्जिअं। देव-दाणव-नरिंद-वंदिअं, संति-मु-
त्तम-महातवं नमे ॥ २५ ॥ (खित्तयं) ॥ अंब-

रंतर-वियारणिआहिं, ललिअ-हंस-वहू-गामिणिआहिं। पीण-सोणि-थण-सालिणिआहिं, सकल-कमल-दल-लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ (दीवयं) ॥ पीण-निरंतर-थण-भर-विणमिअ-गायलयाहिं, मणि-कञ्चण-पसि-ढिल-मेहल-सोहिअ-सोणि-तडाहिं। वर-खिंखिणि-नेउर-सतिलय-वलय-विभूसणियाहिं, रइकर-चउर-मणोहर-सुन्दर-दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ ॥ [चित्तखरा] देव-सुन्दरीहिं पाय-वन्दिआहिं, वन्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डण-पगारएहिं केहिं केहि वि अवंग-तिलय-पत्त-लेह-नामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्ति-सन्निविट्ठ-वंदणागयाहिं हुन्ति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ (नारायओ) ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ-मोहं। धुअ-सव्व-किलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ (नंदिअयं) ॥ थुअ-वंदिअस्सा रिसि-गण-देव-

गणेहिं, तो देव-वहूहिं पयओ पणमिअस्सा। जस्स जगुत्तम-सासणअस्सा, भत्ति-वसागय-पिंडिअआहिं। देव-वरच्छरसा-वहुआहिं, सुर-वर-रइ-गुण-पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ (भासुरयं) वंस-सद्द-तंति-ताल-मेलिए, तिउक्खराभिराम-सद्द-मीसए कए अ, सुइ-समाणणे अ सुद्ध-सज्ज-गीअ-पाय-जाल-घंटिआहिं, वलय-मेहला-कलाव-नेउराभिराम-सद्द-मीसए कए अ देव-नट्टिआहिं, हाव-भाव-विब्भम-प्पगारएहिं, न-च्चिऊण अंग-हारएहिं वन्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय-सव्व-सत्त-सन्ति-कारयं, पसंत-सव्व-पाव-दोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ (नारायओ) ॥ छत्त-चामर-पडाग-जूअ-जव-मंडिआ, झय-वर-मगर-तुरग-सिरिवच्छ-सुलंछणा। दीवसमुद्द मंदर-दिसागय-सोहिआ, सत्थिय-वसह-सीह-रह-चक्क-वरंकिया ॥३२॥ (ललिअयं) सहाव-

लट्ठा सम-प्पइट्ठा, अदोस-दुट्ठागुणेहिं जिट्ठा। पसाय-सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥३३॥ (वाणवासिआ)॥ ते तवेण धुअ-सव्व-पावया, सव्व-लोअ-हिअ-मूल-पावया। संथुआ अजिय-सन्ति-पायया, हुंतु मे सिव-सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ (अपरान्तिका)॥ एवं-तव-बल-विउलं, थुअं मए अजिअ-संति-जिण-जुअलं। ववगय-कम्म-रय-मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ (गाहा) ॥ तं बहु-गुण-प्पसायं,मुक्ख-सुहेण परमेण अविसायं। नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥३६॥ (गाहा)॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं। परिसाविअ सुह-नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ (गाहा)॥ पक्खिअ चाउम्मासे, संवच्छरिए अ अवस्स-भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं उवसग्ग-निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो

अ निसुणइ, उभओ-कालंपि अजिय-सन्ति-थयं। न हु हुन्ति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासन्ति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम-पयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे। ता तेलुक्कुद्धरणे, जिण-वयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

इति श्रीवृहदजितशान्तिस्तवनं प्रथमं स्मरणम्।१।

॥ अथ द्वितीयं लघु-अजितशान्तिस्मरणम् ॥

उल्लासि-क्कम-नक्ख-निग्गय-पहा-दण्ड-च्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंतइव्व पयडं निव्वाण-मग्गावलिं। कुन्दिन्दुज्जल-दन्त-कन्ति-मिसओ नीहन्त-नाणंकुरु क्केरे दावि दुइज्जसोलस-जिणे थोसामि खेमङ्करे ॥१॥ चरम-जलहि-नीरं जो मि णिज्जअलीहिं, खय-समय-समीरं जो जि-णिज्जा गईए। सयल-नहयलं वा लंङ्घए जो पएहिं, अजियमहव सन्तिं सो समत्थो थुणेउं ॥२॥ तहवि हु बहु-माणूल्लास-भत्ति-ब्भरेण, गुण-कणमिव कित्तेहामि चिन्तामणि व्व।

अलमहव अचिन्ताणन्त-सामत्थओ सिं फलिहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥३॥ सयलजय-हिआणं नाम-मित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठ-दोघट्ट-थट्टं। नमिर-सुर-किरीडुग्घिट्ठ-पायारविन्दे, सययमजिअ-सन्ती ते जिणन्देभिवन्दे ॥४॥ पसरइ वर-कित्ती वड्ढए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती। फुरइ परम-तित्ती होइ संसार-छित्ती, जिणजुअ-पय-भत्ती हीअ-चिंतोरु-सत्ती ॥५॥ ललिअ-पय-पायारं भूरि-दिव्वंग-हारं, फुड-घण-रस-भावोदार-सिंगार-सारं। अणिमिस-रमणिज्जं डंसण-च्छेअ-भीया, इव पुण मणिबंधाकास-नट्टोवयारं ॥६॥ थुणह अजिअ-संती ते कयासेस-संती, कणय-रय-पसंगा छज्जए जाणि मुत्ती। सरभस-परिरंभारंभि-निव्वाण-लच्छी, घण-थण-घुसिणिक्कुप्पंक-पिंगीकयव्व ॥७॥ बहुविह-नय-भंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं, सदस-

दणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं । इय कुनय-विरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसिं, वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥८॥ पसरइ तिय-लोए ताव मोहंध-यारं, भमइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त-छण्णं । फुरइ फुड फलंताणंत-णाणंसु-पूरो, पयडमजिअ-संति-ज्झाण-सूरो न जाव ॥९॥ अरि-करि-हरि-तिण्हुण्हंबु-चोराहि-वाही, समर-डमर-मारी रुद्द-खुद्दोवसग्गा । पलयमजिअ-संती-कित्तणे झत्ति जंती, निविडतर-तमोहा भक्खरालुंखिअव्व ॥१०॥ निचिअ दुरिअ दारु दित्त झाणग्गि-जाला-परिगयमिव गोरं, चिंतिअं जाण रूवं । कणय-निहस रेहा-कंति-चोरं करिज्जा, चिर-थिरमिहलच्छिं गाढ-संथंभि-अव्व ॥११॥ अ-डवि-निवडियाणं पत्थिवुत्तासिआणं, जलहि-लहरि-हीरंताण गुत्ति-ट्ठियाणं । जलिअ-जलण जाला- लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संतिनाहाजिआण ॥ १२ ॥ हरि-करि-परिकिण्णं

पक्क-पाइक्क-पुन्नं, सयल-पुहवि-रज्जं छड्डिअं आण-सज्जं। तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्तिमग्गं, चरणमणुपवन्ना हुंतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण-ससि-वयणाहिं फुल्ल-नित्तुप्पलाहि, थण-भर-नमिरीहिं मुट्ठि-गिज्झोदरीहिं। ललिअ-भुअ-लयाहिं पीण-सोणि-त्थणाहिं, सम-सुर-रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिसकिडिभ-कुट्ठ-गंठि-कासाइसारा, खय-जर-वण-लूआ-सास-सोसोदराणि। नह-मुह-दसणच्छी-कुच्छि-कन्नाइ-रोगे, मह-जिण-जुअ-पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरु-दुह-तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर-दुग-थुत्तं वच्छरे वा पवित्तं। पढह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण घाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाऽजिअसत्तु पुत्त! सिरि-अजिअ-जिणेसर!, तह अइरा-विस-सेण-तणय! पंचम-चक्कीसर!। तित्थंकर! सोलसम! संति!

जिण-वल्लह संथुअ !, कुरु मंगलमवहरसु दुरि-
यम-खिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥

इति श्रीलघु-अजितशान्तिस्तवनं द्वितीयं
स्मरणम्॥ २ ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

नमिऊण पणय-सुर-गण,-चूडामणि-किरण-
रंजिअं मुणिणो । चलण-जुअलं महाभय,-
पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय-कर-चरण
नह-मुह,-निबुड्ड-नासा विवन्नलायण्णा । कुट्ठ-
महा-रोगानल,-फुलिंग-निद्दड्ढ-सव्वंगा ॥ २ ॥
ते तुह चलणा-राहण,-सलिलंजलि-सेअ-
वुड्ढिअ-च्छाया । वण-दव-दड्ढा गिरि-पाय-
यव्वपत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ दुव्वाय-खुभिय-
जलनिहि,-उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे । संभंत-
भय-विसंठुल,-निज्जामय-मुक्क-वावारे ॥४॥ अवि-
दलियजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं

कूलं। पास-जिण-चलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर-पवणुद्धुय-वणदव,-जालावलि-मिलिय-सयल-दुम-गहणे। डज्झंत-मुद्धमिय-वहु,-भीसण-रव-भीसणम्मि वणे॥६॥ जग-गुरुणो कम-जुअलं, निव्वाविय-सयल-तिहुअणाभोअं। जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत-भोग-भीसण,—फुरिआरुण-नयण-तरल-जीहालं। उग्ग-भुअंगं नव-जलय,-सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीडसरिसं, दूर-परिच्छूढ-विसम-विस-वेगा। तुह नामक्खर-फुड-सिद्ध,-मंत गुरुआ नरा लोए ॥९ ॥ अडवीसु भिल्ल-तक्कर,-पुलिंद-सद्दूल-सद्द भीमासु। भय-विहुर-वुन्न-कायर,-उल्लरिअ-पहिअ-सत्थासु ॥१०॥ अविलुत्तविहव-सारा, तुह नाह ! पणाम-मत्त-वावारा। ववगय-विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनल-नयणं, दूर विआरिय-मुहं महा-

कायं । नह-कुलिस-घायविअलिअ,-गइंद-कुंभ-त्थलाभोअं ॥१२॥ पणय-ससंभमपत्थिव;-नह-मणि-माणिक्क-पडिमस्स । तुह-वयणपहरणधरा, सोहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि धवलदंत-मुसलं, दीह-करुल्लाल-वड्ढिउच्छाहं । महु-पिंगनयण-जुअलं, ससलिल-नव-जलहरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महा-गइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति । जे तुम्ह चलणजुअलं मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्खखग्गा,-भिग्घाय·पविद्ध-उद्धुय-कवंधे । कुंत-विणिभिन्न करि-कलह-मुक्क सिक्कार-पउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिय-दप्पुद्धररिउ,—नरिंद-निवहा भडा जसं धवलं । पावंति पाव-पसमिण ! पास-जिण ! तुह प्पभावेण ॥१७॥ रोग-जलजलण-विसहर-चोरारि-मइंद-गय-रण-भयाइं । पास-जिणनाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महाभयहरं, पास-जिणिं-

दस्स संथवमुआरं। भविय-जणाणंदयरं, कल्लाण-परंपर-निहाणं ॥१६॥ राय-भय-जक्ख-रक्खस,—कुसुमिण-दुस्सउण-रिक्ख-पीडासु। संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइ-णो य माणतुंगस्स। पासो पवां पसमेउ, सयल-भुवणच्चिअ-चलणो ॥ २१ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयं स्मरणम् ॥

अथ गणधरदेव-स्तुतिरूपं चतुर्थं स्मरणम् ॥

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण। सम्मं पवत्तियं भव्व-सत्त-संताण-सुह-जणयं ॥१॥ नासियसयल-किलेसा, निहय-कुलेसा पसत्थ-सुह-लेसा। सिरिवद्धमाण-तित्थस्स मङ्गलं दिन्तु ते अरिहा ॥२॥ निद्दड्ढ-कम्म-बीआ, बीआ परमेट्ठिणो गुण-समिद्धा। सिद्धा ति -जयपसिद्धा, हणन्तु दुत्थाणि तित्थ-

स्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता पंच-पयारं सया पयासन्ता । आयरिआ तह तित्थं. निहयकुतित्थं पयासन्तु ॥ ४ ॥ सम्म-सुअ-वायगा वायगा य सिअवाय-वायगा वाए । पवयण-पडणीय-कए वणिंतु सव्वस्स सङ्घस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण-साहणुज्जुय-साहूणं जणिय-सव्वसाहज्जा । तित्थ-प्पभावगा ते हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं णाणं निव्वाण-फलं च चरणमवि हवइ । तित्थस्स दंसणं तं मंगुलमवणेउ सि-द्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छउमो सुअधम्मो, समग्ग-भव्वंगि-वग्ग-कय-सम्मो । गुण-सुट्ठिअस्स सं-घस्स मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ-भव्व-सत्त-सिव-सम्मो । नीसेस-किलेसहरो, हवउ सया सयल-संघस्स ॥ ९॥ गुण-गण-गुरुणो गुरुणो, सिव-सुह-मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि-वद्धमाण-पहुपयडि-अस्स कुसलं समग्गस्स ॥१०॥ जिय-पडिवक्खा

जक्खा, गोमुह-मायङ्ग-गयमुह-पमुक्खा । सिरि-बम्भसन्तिसहिआ, कय-नय-रक्खा सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहयडिम्बा; सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स । चक्केसरि-वइरुट्टा, सन्ति-सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥१२। सोलस विज्जा-देवीउ, दिन्तु सङ्घस्स मङ्गलं विउलं । अच्छुत्ता-सहिआओ, विस्सुअ-सुयदेवयाइ समं ॥१३॥ जिण-सासण-कय-रक्खा जक्खा चउवीस-सासण-सुरावि । सुहभावा संतावं, तित्थस्स सया पणासन्तु ॥ १४ ॥ जिण-पवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे । वेयावच्चकरावि अ तित्थस्स हवन्तु सन्तिकरा ॥१५॥ जिण-समय-सिद्ध-सुमग्ग-वहिय-भव्वाण जणिय-साहज्जो । गीयरई गीअजसो, सपरिवारो सिवं दिसउ ॥१६॥ गिह-गुत्त-खित्त-जल-थल-वण-पव्वयवासी देव-देवीओ । जिण-सासण-ट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥१७॥ दस-दिसिपाला स-

खित्तपालया नव गहा स-नक्खत्ता। जोइणि-राहु-गह-काल-पासकुलिअद्ध-पहरेहिं ॥ १८ ॥ सहकाल-कंटएहिं सविट्ठि-वच्छेहिं कालवेलाहिं। सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसन्तु सव्वस्स सङ्घस्स ॥१९॥ भवणवई वाणमन्तर,-जोइस-वेमा-णिआ य जे देवा। धरणिन्द-सक्क-सहिआ, दलन्तु दुरियाइं तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणा-सिय-तमोहं। तंतित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सज्ज वि सासणं जए जयइ। सिद्धि-पह-सासणं कुपह-नासणं सव्व-भय-महणं ॥ २२ ॥ सिरि-उसभसेण-पमुहा, हय-भय-निवहा दिसन्तु तित्थस्स। सव्व-जिणाण गणहारिणोऽणहं वञ्छियं सव्वं ॥ २३ ॥ सिरि-वद्धमाण-तित्थाहिवेण तित्थं समप्पियं जस्स। सम्मं सुहम्म-सामी, दिसउ सुहं स यल-संघस्स ॥ २४ ॥ पयईए भद्दिया जे, भद्दाणि

दिसन्तुसयल-संघस्स। इयर-सुरा वि हु सम्मं जिण-गणहर-कहिय-कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंझं, दुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए। जिणदत्ताणाए ठिओ, सनिट्ठिअट्ठो सुही होई ॥ २६ ॥

इति श्रीगणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणम्।

॥ अथ गुरुपारतन्त्र्यनामकं पञ्चमं स्मरणम् ॥

मय-रहियं गुण-गण-रयण, सायरं सायर पणमिऊण। सुगुरु-जण-पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय-मोह-जोहा, निहय-विरोहा पणट्ठ-संदेहा। पणयंगि-वग्ग-दाविअ-सुह-संदोहा सगुण-गेहा ॥ २ ॥ पत्त-सुजइत्त-सोहा, समत्त-पर-तित्थ जणिय-संखोहा। पडिभग्ग-मोह-जोहा, दंसिय-सुमहत्थ-सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ-सत्थ-वाहा, हय-दुह-दाहा सिवंब-तरु-साहा। संपाविअ-सुह-लाहा, खीरो-

हणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुण-जण-जणिय-चुज्जा सज्जो निरवज्ज-गहिय-पवज्जा । सिव-सुह-साहण-सज्जा, भव-गिरि-गुरु चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्ज-सुहम्म-पमुहा, गुण-गण-निवहा सुरिंद-विहिअ-महा । ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जियाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ-जिण-देवो, देवायरिओ दुरंत-भवहारी । सिरिनेमि-चन्द-सूरी उज्जोअण-सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि-वद्धमाण-सूरी, पयडीकय-सूरि-मंत-माह-प्पो । पडिहय-कसाय-पसरो, सरय-ससंकुव्व सुह-जणओ ॥ ८ ॥ सुह-सील-चोर-चप्परण-पच्चलो निच्चलो जिण-मयम्मि । जुगपवर-सुद्ध-सिद्धन्त-जाण-ओ पणय- सुगुणजणो ॥ ९ ॥ पुरओ दुल्लह-महिव,—ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्का वि आ रिऊणं, सीहेणव दव्वलिंगि गया ॥ १० ॥ दसमच्छेरय-निसि-विप्फुरन्त-सच्छन्द-सूरि-मय-तिमिरं । सूरेणव सूरि-

जिणे,-सरेण हय-महिअ-दोसेणं ॥ ११ ॥ सुक-इत्त-पत्त-कित्ती, पयडिअ-गुत्ती पसन्त-सुह-मुत्ती पहय-परवाइ-दित्ती, जिणचंद-जईसरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ-नवंग-सुत्तत्थ,—रयणुक्कोसो पणासिअ-पओसो । भव-भीय-भविअ जण-मण,-कय-संतोषो विगय-दोसो ॥ १३ ॥ जुग-पवरागम-सार,—प्परूवणा-करण-बन्धुरो धणिअं । सिरि-अभयदेव-सूरी, मुणि-पवरो परम-पसम-धरो ॥ १४ ॥ कय-सावय-संतोसो, हरिव्व सारंग-भग्ग-संदेहो । गय-समय-द्प्प-द्लणो, आसाइअ-पवर-कव्व-रसो ॥ १५ ॥ भीम-भव-काणणम्मि अ, दंसिअ गुरु वयण-रयण-संदोहो । नीसेस-सत्त-गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअ-सच्चरणो, चउरणु-ओग-प्पहाण-सच्चरणो ।असम-मयराय महणो, उड्ढ-मुहो सहइ जस्स करो ॥ १७ ॥ दंसिअ-निम्मल-निच्चल,-दन्त-गणोगणिअ-सावओत्थ-

भओ । गुरु-गिरि-गरुओ सरहुव्व, सूरी जिण-वल्लहो होत्था ॥ १८ ॥ जुग-पवरागम-पीउस-पाण पीणिय-मणा कया भव्वा । जेण जिणव-ल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १६ ॥ विप्फु-रिय-पवर-पवयण,-सिरोमणी वूढ-दुव्वह-खमो य । जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताण-करो ॥ २० ॥ सच्चरिआण-महीणं, सुगुरूणं पारतन्तमुव्वहइ । जयइ जिणदत्त-सूरी, सिरि-निलओ पणय-मुणि-तिलओ ॥ २१ ॥

इति श्रीगुरुपारतन्त्र्यनामकं पञ्चमं स्मरणम् ।

॥ अथ षष्ठं स्मरणम् ॥

सिग्घमवहरउ विग्घं,जिण-वीराणाणुगामि-संघस्स । सिरि-पास-जिणो थंभण-पुर-ट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयम-सुहम्म-पमुहा, गणवइणो विहिअ-भव्व-सत्त-सुहा । सिरि-वद्ध-माण-जिण-तित्थ-सुत्थयं ते कुणन्तु सया ॥२॥

सक्काइणो सुरा जे, जिण-वेयावच्च-कारिणो संति। अवह-रिय-विग्घ-संघा, हवन्तु ते संघ-सन्तिकरा ॥ ३ ॥ सिरि-थंभणय-ट्ठिय-पास-सामि-पय-पउम-पणय-पाणीण। निद्दलिय-दु-रिय-विंदो, धरणिंदो हरउ दुरियाइं ॥ ४ ॥ गोमुह-पमुक्ख जक्खा, पडिहय-पडिवक्ख-पक्ख-लक्खा ते। कय-सगुण-संघरक्खा, हवन्तु सं-पत्त-सिव-सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का-पमुहा, जिण-सासण-देवया वि जिण पणया। सिद्धा-इया-समेया, हवन्तु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसा सच्चउर-पुरट्ठिओ वद्धमाण-जिण-भत्तो। सिरि-बम्भ-सन्ति-जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥७॥ खित्त-गिह-गुत्त-सन्ताण-देस-देवा-हिदेवया ताओ। निव्वुइ-पुर-पहिआणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि-चक्कधरा, वि-हिपहरिउ छिन्नण-कन्धरा धणियं। सिव-सरण-लग्ग-संघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ८ ॥

तित्थवइ-वद्धमाणो, जिणेसरो सङ्घओ सुसंघेण। जिणचन्दोऽभयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहपहू मं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरो व्व हय-तिमिरो। जिणचंदा-ऽभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥ ११ ॥ गुरु-जिण-वल्लह-पाए,-ऽभयदेव-पहुत्त-दायगे वंदे। जिण-चन्द-जिणेसर-वद्धमाण-तित्थस्स वुड्ढि-कए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नन्ति कुणन्ति जे य कारंति। मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ ते वि ॥१३॥ जिणदत्तगुणे नाणा-इणो सया जे धरन्ति धारन्ति। दंसिअ-सिअ-वाय-पए, नमामि साहम्मिआ ते वि ॥ १४ ॥

इति षष्ठं स्मरणम् ॥६॥

॥ अथ उवसग्गहरनामकं सप्तमं स्मरणम् ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं। विसहर विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ

जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो,तुज्झ पणामो वि बहु-फलो होइ। नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्प-पायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस!, भत्ति-ब्भर-निब्भरेण हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे, भवे पास! जिण-चंद!॥ ५ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं सप्तमं स्मरणम् ॥७॥

समाप्तानि सप्त स्मरणानि।

अथ श्रीभक्तामर-स्तोत्रम्।

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा,--मुद्द्यो-तकं दलित-पाप-तमो-वितानम्। सम्यक् प्रण-म्य जिन! पाद-युगं युगादा,—वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम्॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकल

वाङ्मय-तत्त्व-बोधा,-दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥ युग्मम् ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ ! स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम् । बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब,—मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ? ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र ! शशाङ्क-कान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ? । कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ? ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश !, कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्म-वीर्य्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम् ? ॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् । यत् कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु-चूत-कलिका-निक-

रैक-हेतु ॥६॥ त्वत्संस्तवेन भव-संतति-संनिबद्धं, पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम् । आक्रान्त-लोकमलि-नीलमशेषमाशु, सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्ध-कारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद,—मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु, मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूद-बिन्दु ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्त-दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ६ ॥ नात्यद्भुतं भुवन-भूषण ! भूतनाथ !, भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः । तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति ? ॥१०॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः शशि-कर-द्युति दुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ? ॥११॥ यैः

शान्तराग-रुचिभिःपरमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रि-भुवनैक-ललाम-भूत!। तावन्त एव खलु तेऽप्य-णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूप-मस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र- हारि, निःशेष-निर्ज्जित-जगत्त्रितयोपमानम्। विम्वं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डु पलाश-कल्पम् ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कलाकलाप,—शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति। ये संश्रितास्त्रि-जगदीश्वर-नाथमेकं, कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम्? ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्नीतं मना-गपि मनो न विकारमार्गम्। कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रि-शिखरं च-लितं कदाचित्? ॥१५॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जित-तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोपि। गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽ-परस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं

कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति। नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः, सूर्यातिशायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं, गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्। विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषुतमस्सुनाथ ?। निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः ?॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु। तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति। किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता। सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं, प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥२२॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,-मादित्य-वर्णममलं तमसः परस्तात्। त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माण-मीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम्। योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं, ज्ञान-स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात्। धाताऽसि धीर! शिव-मार्ग-विधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नम-स्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ!, तुभ्यं नमः क्षितितला-मल-भूषणाय। तुभ्यंनमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोत्र यदि नाम गुणैरशेषै,-स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! । दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद्-पीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख,-माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त-तमो-वितानं, बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्व-वर्त्ति ॥२८॥ सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् । बिम्बं वियद्विलसदंशु-लता-वितानं, तुङ्गो-दयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुन्दावदात-चलचामर-चारु-शोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम् । उद्यच्छ-शाङ्क-शुचि-निर्झर-वारिधार—मुच्चैस्तटं सुरगि-रेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥ छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त,-मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम् । मुक्ताफल-प्रकर-जाल-वि-वृद्ध-शोभं, प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्ज-कान्ति, पर्यु -ल्लस-न्नख-मयूख-शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्जिनेन्द्र !, धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल.-मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम् । ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा-श्रिता-नाम् ॥३४॥ भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त,-मुक्ताफल-प्रकर भूपित-भुमि-भागः । यद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते ॥३५॥ कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं. दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् । विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं, त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्य-

शेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कराठ-
नीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त-शङ्क,-स्त्वन्नाम-
नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥ वल्गत्तु-
रङ्ग-गज-गर्जित-भीम-नाद,-माजौ बलं बलव-
तामपि भूपतीनाम् । उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखा-
पविद्धं, त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति
॥ ३८ ॥ कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह,-
वेगावतार-तरणातुरयोध-भीमे । युद्धे जयं वि-
जित-दुर्ज्जय-जेय-पक्षा,-स्त्वत्पादपङ्कज-वनाश्रयि
-णो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभी-
षण-नक्र-चक्र,—पाठीन-पीठ-भयदोल्बण-वाड-
वाग्नौ । रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यानपात्रा,-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥
उद्भूत -भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः, शोच्यां
दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः । त्वत्पादपङ्कज-
रजोऽमृत-दिग्ध-देहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-

तुल्य-रूपाः ॥ ४१ ॥ आपाद-कण्ठमुरु-शृङ्खल-वेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्टजङ्घाः। त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त-द्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि,—संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्। तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्। धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

॥ इति श्रीभक्तामरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशान्तिः ॥

भो भो भव्याः! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हताभक्ति-भाजः। तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादि-प्रभावा-दारोग्य-श्री-धृति-मतिकरी क्लेश-वि-

ध्वंस-हेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत-विदेह-सम्भवानां, समस्त-तीर्थकृतां जन्मन्यासन-प्रकम्पानन्तर-मवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा-घण्टा-चालना-नन्तरं सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भ-ट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे विहित-जन्माभिषेकः शान्ति-मुद्घोषयति, ततोऽहं कृता-नुकारमिति कृत्वा, 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' इति भव्य-जनैः सह समागत्य, स्नात्र-पीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्घोषयामि। तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरम्, इति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयन्तां २, भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः, सर्वदर्शि-नः। त्रैलोक्य-नाथाः, त्रैलोक्य-महिताः, त्रै-लोक्य-पूज्याः, त्रैलोक्येश्वराः, त्रैलोक्योद्यो-तकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानि १, निर्वाणि २, सागर ३, महायशः ४, विमल ५, सर्वानुभू-

ति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ६, सुतेजः १०, स्वामि ११ मुनिसुव्रत १२ सुमति १३ शिवगति, १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्घ १६ जिनेश्वर २० शुद्धमति २१ शिवकर २२ स्यन्दन २३ संप्रति २४ एते अतीत-चतुर्विंशति-तीर्थंकराः ॥

ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, सम्भव ३, अभिनन्दन ४ सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७. चन्द्रप्रभ ८, सुविधि ६, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५. शान्ति, १६, कुन्थु, १७ अर १८, मल्लि १६, मुनिसुव्रत २० नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २६. वर्द्धमान २४ एते वर्तमान-जिनाः ॥

ॐ श्रीपद्मनाभ १, शूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७ पेढाल ८, पोट्टिल ८. शतकीर्ति १० सुव्रत ११. अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४,

निर्मम १५, चित्रगुप्त १६ समाधि १७, संवर १८ यशोधर १६; विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य्य २३, भद्रंकर २४, एते भावि-तीर्थंकराः जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु । ॐ मुनयो मुनि-प्रवरा रिपु-विजय-दुर्भिक्ष-कान्तारेषु दुर्ग-मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम् ॥ ॐ श्री नाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन ८, सुग्रीव ६, दृढ़रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुम्भ १६, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४, इति वर्त्तमानचतुर्विंशति-जिन-जनकाः ॥

ॐ श्री मरुदेवी १, विजया, २ सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६ पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ६, नन्दा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३ सुयशा १४, सुव्रता १५,

अचिरा १६, श्री ७, देवी १८, प्रभावती १९ पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४, इति वर्त्तमान-जिन, जनन्यः ॥

ॐ श्रीगोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुम्बुरु ५, कुसुम ६, मातङ्ग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३ पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गन्धर्व १७, यक्षराज १८, कुवेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१ गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्माशान्ति २४, इति वर्त्तमान-जिन-यक्षाः ॥

ॐ चक्रेश्वरी १ अजितबला २ दुरितारि ३ काली ४ महाकाली ५ श्यामा ६, शान्ता ७ भृकुटि ८ सुतारका ९ अशोका १० मानवी ११ चण्डा १२ विदिता १३ अङ्कुशा १४ कन्दर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७ धारिणी १८ धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गान्धारी २१, अम्बिका २२, पद्मावती २३ सिद्धायिका २४ इति वर्त्तमान--

चतुर्विंशति-तीर्थंकर-शासनदेव्यः।

ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति-कीर्त्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्या-साधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीत-नामानो जयन्ति ते जिनेन्द्राः। ॐ रोहिणी १ प्रज्ञप्ति २ वज्रशृङ्खला ३ वज्राङ्कुशा ४ चक्रेश्वरी ५ पुरुषदत्ता ६ काली ७ महाकाली ८ गौरी ९ गान्धारी १० सर्वास्त्रमहाज्वाला ११ मानवी १२ वैरोट्या १३ अच्छुप्ता १४ मानसी १५ महामानसी १६ एताः षोडश विद्या-देव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा॥ ॐ आचार्योपाध्याय-प्रभृति-चातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमण-सङ्घस्य शान्तिर्भवतु। ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु-केतु-सहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द-विनायका ये चान्येऽपि ग्राम-नगर-क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां २ अक्षीण-कोश-कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा॥ ॐ पुत्रमित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृत्

संबन्धि-बन्धु-वर्ग सहिता नित्यं चामोद-प्रमोद-कारिणो भवन्तु । अस्मिंश्च भूमण्डले आय-तन-निवासिनां साधु-साध्वी-श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग-व्याधि-दुःख-दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मङ्गल्योत्सवा भवन्तु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यन्तु, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्य-स्यामराधीश,-मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट-ग्रह-गति-दुःस्वप्न दुर्निमित्तादि । सं-पादित-हित-संपद्, नाम-ग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघ-पौर-जन-पद,-राजाधिप-राज-संनिवे-शानाम् । गोष्ठिक-पुरमुख्याणां, व्याहु-रणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य

शान्तिर्भवतु, श्रीपौर-लोकस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराज-संनिवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु। ॐ स्वाहा २ ॐ ह्रीं श्रीँ पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-यात्रा स्नात्रावसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुङ्कुम-चन्दन-कर्पूरागुरु-धूप-वास-कुसुमाञ्जलि-समेतः स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचिः शुचिवपुः पुष्प-वस्त्र-चन्दनाभरणालंकृतः, चन्दनतिलकं विधाय कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्ति-पानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यन्ति नृत्यं मणि-पुष्प-वर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥ अहं तित्थयर-माया, सिवा-देवी तुम्ह-नयर-निवासिनी अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असुहोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥ २ ॥ शिवमस्तु सर्व-जगतः, पर हित- निरता भवन्तु

भूत-गणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोकः ॥२॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति पूज्य-माने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥

इति बृहच्छान्तिः समाप्ता ॥

अथ जिनपञ्जर-स्तोत्रम् ।

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्रीगौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥१॥ एष पञ्च-नमस्कारः, सर्व-पाप-क्षयंकरः । मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः । कमलप्रभ-सूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं

यः पठेदिदम्। मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम्॥ ४॥ भूशय्याब्रह्मचर्य्येण, क्रोध-लोभ विवर्जितः। देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम्॥ ५॥ अर्हन्तं स्थापयेद् मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके। आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके॥ ६॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च। सूर्य-चन्द्र-निरोधेन, सुधीः सर्वार्थ-सिद्धये॥ ७॥ दक्षिणे मदन-द्वेषी, वाम-पार्श्वे स्थितो जिनः। अङ्ग-संधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः॥ ८॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे,-दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः। दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैऋतीं च त्रिकालवित्॥९॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः। उत्तरां तीर्थकृत् सर्वामीशानीं च निरञ्जनः॥१०॥ पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः। रोहिणी प्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम्॥ ११॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे-दजितोऽपि विलोचने।

संभवः कर्ण-युगलं, नासिकां चाभिनन्दनः ॥१२॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभुः । जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कण्ठं श्रीसुविधी रक्षेद्, हृदयं च श्रीशीतलः । श्रेयांसो बाहु-युगलं, वासुपूज्यः कर-द्वयम् ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षेद्, अनन्तोऽसौ स्तनावपि । सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशान्तिर्नाभि-मण्डलम् ॥ १५ ॥ श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षे,—दरो रोम-कटी तटम् । मल्लिरूरू पृष्ठ-वंशं, जङ्घे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादाङ्गुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयम् । श्रीपार्श्वनाथः सर्वाङ्गं, वर्धमानश्चिदात्मकम् ॥१७॥ पृथिवी-जल-तेजस्क,—वाय्वाकाशमयं जगत् । रक्षेद-शेष-पापेभ्यो, वीतरागो निरञ्जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रु-संकटे । व्याघ्र-चोराग्नि-सर्पादि-भूत-प्रेत-भयाश्रिते ॥१९॥ अकाल-मरण-प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ।

अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोग-पीड़िते ॥२०॥ डाकिनी-शाकिनी-ग्रस्ते, महा-ग्रह-गणार्दिते। नद्युत्तारेऽध्व-वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥२१॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम्। तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लभते सुख सम्पदम् ॥ २२ ॥ जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासरम्। कमलप्रभराजेन्द्र,—श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम्। आसादयेत्स कमलप्रभाख्य,—लक्ष्मीं मनो-वाञ्छित-पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीय-वरेण्य-गच्छे, देवप्रभाचार्य-पदाब्जहंसः। वादीन्द्र-चूडामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमल-प्रभाख्यः ॥ २५ ॥

॥ इति श्रीजिनपञ्जर-स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

—o—

अथ श्रीऋषिमण्डल-स्तोत्रम्।

आद्यन्ताक्षर-संलक्ष्य,-मक्षरं व्याप्य यत् स्थितम्। अग्नि-ज्वाला-समं नाद-विन्दु-रेखा-समन्वितम् ॥ १ ॥ अग्नि-ज्वाला-समाक्रान्तं, मनो-मल-विशोधकम्। देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः। सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य ॐ सिद्धेभ्यो नमोनमः। ॐ नमः सर्वसूरिभ्य उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्य ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः। ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्यश्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेऽस्तु श्रियेऽस्त्वेतदर्हदाद्यष्टकं शुभम्। स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग्बीजसमन्वितम् ॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां रक्षेत्, परं रक्षेत्तु मस्तकम्। तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥७॥ पञ्चमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घण्टिकाम्।

नाभ्यन्तं सप्तमं रक्षेद्, रक्षेत् पादान्तमष्टमम् ॥ ८ ॥ पूर्व-प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्व्यब्धि-पञ्चषान्। सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, श्रितो विन्दु-स्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पञ्चातो ज्ञानदर्शन—चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीँ सान्तसमलंकृतः ॥१०॥ ॐ ह्राँ। ह्रीँ। ह्रुँ। ह्रूँ। ह्रेँ। ह्रैँ। ह्रौँ। ह्रः। असिआउसा-ज्ञान-दर्शनचारित्रेभ्यो नमः। जम्बूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधि-समावृतः। अर्हदाद्यष्टकैरष्ट-काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥११॥ तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः। उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारामण्ड-लमण्डितः ॥१२॥ तस्योपरि सकारान्तं, बीज-मध्यास्य सर्वगम्। नमामि बिम्बमार्हन्त्यं, ल-लाटस्थं निरञ्जनम् ॥१३॥ अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्य-तोज्झितम्। निरीहं निरहङ्कारं, सारं सारतरं घनम् ॥१४॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतम्। तामसं चिरसंबुद्धं, तै-

जलं शर्वशान्तमम ॥१५॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम्। परापरं परातीतं, परंपरपरापरम् ॥१६॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम्। पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं १७ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रान्तिवर्जितम्। निरञ्जनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयम् ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्म-संबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु। ज्योतीरूपं महादेवं, लोकालोक-प्रकाशकम् ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः, सरेफो बिन्दुमण्डितः। तुर्य-स्वर-समायुक्तो, बहुधा नाद-मालितः ॥२०॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्या जिनोत्तमाः। वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥२१॥ नादश्चन्द्र-समाकारो, बिन्दुर्नील-समप्रभः। कलारुण-समा सान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरः संलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः। वर्णानुसार-संलीनं, तीर्थकृन्मण्डलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्तौ, नाद-

स्थिति-समाश्रितौ । बिन्दुमध्यगतौ नेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभ-वासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ । शिर-ई-स्थिति-संलीनौ, पार्श्व-मल्ली-जिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थंकृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः । माया बीजाक्षर-प्राप्ता,—श्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २६ ॥ गत-राग-द्वेष-मोहाः, सर्व-पाप-विवर्जिताः । सर्वदाः सर्व-कालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥२७॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादित-सर्वाङ्गं, मा मां हिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ देव देवस्य० मा मां हिनस्तु राकिनी ॥२९॥ देवदे० मा मां हिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु काकिनी ॥३१॥ देवदे० मा मां हिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु हाकिनी ॥३३॥ देवदे० मा मां हिनस्तु याकिनी ॥३४॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु पन्नगाः ॥३५॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥३६॥ देवदे०

मा मां हिंसन्तु गन्धर्वाः ॥३७॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु वह्नयः ॥३८॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु सिंहकाः॥ ३९॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु दुर्ज्जनाः ॥४०॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु भूमिपाः ॥४१॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्य या भुवि लब्धयः । ताभिरभ्युद्यत-ज्योतिरर्हं सर्व-निधीश्वरः ॥४२॥ पातालवासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः । स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधि-लब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवा, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जना भूत-वेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेव-प्रभावतः ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिलक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया नित्याक्लिन्ना जिता मदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी । माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥४७॥ एताः सर्वा महा-

स्थिति-समाश्रितौ। बिन्दुमध्यगतौ नेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभ-वासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ। शिर-ई-स्थिति-संलीनौ, पार्श्व-मल्ली-जिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः। माया बीजाक्षर-प्राप्ता,—श्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २६ ॥ गत-राग-द्वेष-मोहाः, सर्व-पाप-विवर्जिताः। सर्वदाः सर्व-कालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥२७॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादित-सर्वाङ्गं, मा मां हिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ देव देवस्य० मा मां हिनस्तु राकिनी ॥२६॥ देवदे० मा मां हिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु काकिनी ॥३१॥ देवदे० मा मां हिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु हाकिनी ॥३३॥ देवदे० मा मां हिनस्तु याकिनी ॥३४॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु पन्नगाः ॥३५॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥३६॥ देवदे०

मा मां हिंसन्तु राक्षसाः ॥३७॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु वह्नयः ॥३८॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु सिंहकाः॥ ३९॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु दुर्ज्जनाः ॥४०॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु भूमिपाः ॥४१॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्य या भुवि लब्धयः । ताभिरभ्युद्यत-ज्योतिरर्हं सर्व-निधीश्वरः ॥४२॥ पातालवासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः । स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधि-लब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवा, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जना भूत-वेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेव-प्रभावतः ॥४५॥ ॐ ह्रीँ श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया नित्याक्लिन्ना जिता मद-द्रवा ॥ ४६ ॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी । माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥४७॥ एताः सर्वा महा-

देव्यो, वर्त्तन्ते या जगत्त्रये । मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्तिं कीर्त्तिं धृतिं मतिम् ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुः-प्राप्यः, श्रीऋषिमण्डलस्तवः । भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघः ॥४९॥ रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥५०॥ राज्य-भ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदम् । लक्ष्मी-भ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतम् । वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरण-मात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यैवाष्टमहासिद्धिर्गृहे, वसति शाश्वती ॥५३॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे । धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्व-भीति-विनाशकम् ॥५४॥ भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्नलैः । वात-पित्त-कफोद्रेकैः-र्मुच्यते नात्र संशयः ॥५५॥ भूर्भुवः-

स्वस्त्रयीपीठ-वर्त्ति न शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतै-र्वन्दितैर्दृष्टैर्यत् फलं तत्फलं श्रुतौ ॥५६॥ एतद्
गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित् ।
मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बाल-हत्या पदे पदे ।५७।
आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनाव-लीम् । अष्टसाहस्त्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धि-हेतवे ॥५८॥ शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने
दिने । तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः
॥५६॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः
पठेत् । स्तोत्रमेतद् महातेजो, जिनबिम्बं स
पश्यति ॥६०॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके
ध्रुवम् । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दन-न्दितः ॥६१॥ विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्या-णानि च सोऽश्नुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि,
भूयस्तु न निवर्त्तते ॥६२॥ इदं स्तोत्रं महा-स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परम् । पठनात्स्मरणाज्जा-पाल्लभ्यते पदमुत्तमम् ॥६३॥ (इति श्रीऋषिम-

गडलस्तोत्रं चेपकश्लोकान्निराकृत्य मूलमन्त्रक-रूपानुसारेण लिखितं गणिभिः श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायैः, तदेवात्रास्माभिर्मुद्रितम्)

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिन-वृद्धस्तवनम् ॥

॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादिनी, जागै जग विख्यात । पास तणां गुण गावतां मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगै अणहलपुरे, अहमदावादै पास । गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ सुभ वेला सुभ दिन घड़ी, मुहुरत एक मंडाण । प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ (ढाल) गुणहि विशाला मंगलीक माला, वामानो सुत साचोजी । धण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो धणी जाचौजो (गु०) ॥४॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा; तुरक तणें घर हुंतोजी । अश्वनी भूमि अश्वनो पीडा, अश्वनो वालि विगूती जी (गु०) ॥५॥ जागंतो जच जेहनै कहियै, सुहणो

तुरकनैं आपै जी। पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझो संतापै जी (गु०) ॥६॥ प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी। अधिक म लेजे ओछो म लेजे, टका पांचसैं लेजे जी (गु०) ॥ ७ ॥ नहिं आपिस तो मारीस मुरडीस, मोर बंध बंधास्ये जी। पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लाछि घणी घर जास्यै जी (गु०) ॥८॥ मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै, सारथवाह जे गोठी जी। निलवट टीलो चोखा चेढ्या, वस्तु वहै तसु पोठी जी (गु०) ॥६॥ (दूहा) ॥ मनसु बीहनो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण। बीबी नें सुहणा तणो, संभलावै सहिनाण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, बडा देव है कोय। अवस ताव परगट करो, नहीतर मारै सोय ॥११॥ पाछली रात परोडीयै, पहली बांधै पाज। सुहणा माहें सेठने, संभलावै जक्ख-राज ॥ १२ ॥ (ढाल) एम कही जक्ख आयो राते,

सारथवाहने सुहणौ जी। पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी (एम०) ॥१३॥ पांचसै टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी। जतन करी पहुंचाडे थानिक, प्रतिमा गुण संभारैजी (एम०) ॥१४॥ तुझने होसी बहु फल दायक, भाई गोठीने सुणाजे जी। पूजीस प्रणमीश तेहना पाया, प्रह उठीने थुणाजे जी (ए०) ॥ १५ ॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थांनक पहुंतो जी। पाटण मांहें सारथवाहु, हीडै तुरकने जोतो जीः (ए०) ॥१६॥ तुरकै जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडै जी। संकेत पहुतो साचो जाणि, बोलावै बहु लाडै जी (ए०) ॥१७॥ मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपुं, पास जिणेसर केरी जी। पांचसै टका जो मुझ आपै, मोल न मांगु फेरी जी (ए०) ॥१८॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंतो रंगै जी। केसर चन्दन मृगमद

घोली, विधसुं पूजा रंगे जी (ए०) ॥ १९ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखै जी। अनुक्रम आव्या परिकर माहें, श्रीसंघने सुर साखै जी (ए०) ॥ २० ॥ उच्छव दिन २ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी। ठाम २ ना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी (ए०) ॥२१॥ (दूहा) ॥ इक दिन देखै अव-धसुं, परिकर पुरनो भङ्ग। जतन करूँ प्रतिमा तणो, तीरथ अछै अभङ्ग ॥ २२ ॥ सुहणो आपै सेठने, थल अटवी उज्जाड। महिमा थास्यै अति घणी, प्रतिमा तिहां पहुंचाड ॥ २३ ॥ कुशल खेम तिहां अछे, तुझनें मुझने जाणि। संका छोड़ी काम करि, करतो मकरि संकाणि ॥२४॥ (ढाल) ॥ पास मनोरथ पूरा करै, वाहण एक वृषभ जोतरै। परिकरथी परियाणों करै, एक थल चढ़ि बीजो उतरै ॥२५॥ बारै कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चालै तेतलै। गोठी मनह

विमासण थई, पास भुवन मंड़ावुं सही ॥ २६ ॥
आ अटवी किम करूं प्रयाण, कटको कोइ न
दीसे पाहाण। देवल पास जिनेसर तणो, मं-
डावुं किम गरथें विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्री·
संघ रहस्यै किहां, सिलावटो किम आवे इहां।
चिन्तातुर थयो निद्रा लहै, यक्षराज आवीने
कहैं ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ
घणो जाणीजे तिहां। स्वस्तिक सोपारीने ठाणि,
पाहण तणी उत्कटस्यै खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल
सजल तिहां किल जूओ, अमृत जलनो सरसो
कूओ। खारा कुवा तणो इह सैनाण, भूमि
पड्यो छैं नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सी-
रोही वसै कोड पराभवियो किसमिसे। तिहां
थकी तुं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मान-
गे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो, सिला-
वटने सुहणो दियो। रोग गमीने पूरूँ आस,
तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे

मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो नैण । गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवै सूरमो, जिमें खीर खाँड घृत चूरमो । घडै घाट करै कोरणी, लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ २ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली । रङ्ग मंडप रलियामणों रसै, जोतां मानवनो मन वसै ॥ ३५ ॥ नोपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मांडे आवास । दिवस विचारी इंडो घड्यो ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥३६॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पव्वासण बेटा श्रीपास । महिमा मोटी मेरु समान, एकलमिल वगडे रहैवान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी मैं सांभली, तवन मांहि सूधी सांकली । गोठी तणा गोतरिया अछै, यात्रा करीने परने पछै ॥ ३८ ॥ (दोहा) ॥ विघन विडारन यक्त जगि, तेहनो अकल सरूप । प्रीत करे श्रीसङ्घने, देखाडै निज रूप

॥ ३९ ॥ गरुओ गौडी पास जिन, आपे अरथ भंडार । सांनिध करै श्री सङ्घने, आसा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणै नील हय, नीलो थई असवार । मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल) वरण अढार तणो लहै भोग, विघन निवारे टालै रोग । पवित्र थई समरै जे जाप, टालै सगला पाप संताप ॥४२॥ निरधननो घरि धन नो सुत, आपै अपुत्रीयाने पुत्र । कायरने सूरापण धरै, पार उतारै लच्छी वरै ॥ ४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग; पग विहू-णाने आपै पग । ठाम नहीं तेहने द्यै ठाम, मनवंछित पूरें अभिराम ॥ ४४ ॥ निराधार ने द्ये आधार, भवसायर उतारे पार । आरतियानी आरत भंग, धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समस्यां सहाय दीयै यत्त राज, तेहना मोटा अछै दिवाज । बुद्धि हीण ने बुद्धि प्रकाश, गूंगाने वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुख-

नो दातार, भय भंजण रंजण अवतार । बंधन तूटे वेणी तणा, श्री पार्श्व नाम अक्षर स्मरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा) श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल । हस्त जूथ दूरे टलै, दुद्धर सिह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा भय चूकवे, त्रिष अमृत उडकार । विष धरनो विष ऊतरे, संग्रामें जय जय कार ॥ ४९ ॥ रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पलाय । परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (कडखानी चाल) उंजितु २ उंज उपसम धरी, ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री पार्श्व अक्षर जपंते । भूत ने प्रेत झोटिंग व्यन्तर सुरा, उपसमे वार इकबीस गुणंते (उं) ॥ ५१ ॥ दुद्धरा रोग सोगा जरा जंतने, ताव एकान्तरा दुत्तपंते । गर्भबन्धन व्रणं सर्प विच्छू विषं, चालिका बालमेवा झखंतै (उं०) ॥ ५२ ॥ साइणी डाइणी रोहिणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते । दाढ उंदर-

तणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकराल दंते ॥ ५३ ॥ (उं०) धरणेंद्र पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटवी अटंतै । लखमी लोदुं मिलैं सुजस वेला उलै, सयल आस्या फलै मन हसंतै (उं०) ॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरें कानपीड़ा टलै, ऊतरै सूल सीसग भणंते। वदत वर प्रीतसुं प्रीतिविमल प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्तै (उंजितु) ॥ ५५ ॥ इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्ध स्तवनं समाप्तम्

॥ श्री गौतम स्वामिजी का रास ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कय वासो; पणमिवि पभणिसु सामीसाल, गोयम गुरु रासो। मण तणु वयण एकंत करिवि, निसुणहु भो भविया; जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि

भरह खित्त, खोणी तल मंडण; मगह देस सेणिय नरेश, रिऊ दल बल खंडण। धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा; विप्प बसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इन्दभूइ, भूवलय पसिद्धो; चाउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो। विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर; सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज जल पाडिय; तेजहिं तारा चन्द सूरि, आकास भमाडिय। रूवहि मयण अनंग करवि, मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिंधु, चंगम चय चाडिय ॥४॥ पेक्खवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय; एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्या सिंजिय। अहवा निच्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय; रंभा पउमा गउरी गङ्ग, तिहां विधि वंचिय ॥५॥ नय बुध नय गुरु कविण

कोय, जसु आगल रहियो; पंच सयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो । करय निरंतर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय; अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजान ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चोविह संघ पइट्ठा जाणी । पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ।८। देवहि समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे । त्रिभुवन गुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा । देव दुंदुभि आगासे वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि अरचे तिहां देवा,

चउसठ इंद्रज मागे सेवा। चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवरजग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वर वरसंता; जोजन वाणि व-खाण करंता। जाणिवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥१२॥ कंत समो-हिय जलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता। पेक्खवि इन्दभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता। तो अभिमाने गोयमजंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले। मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह संसारतारण, तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु सुक्ख कारण, जिण-वर जग उज्जोय करै, तेजहि कर दिनकार

सिंहासण सामी ठव्यो, हुओ तो जय जयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्दभूइ भूयदेव तो, हुंकारो कर संचरिय, कवणसु जिणवरदेव तो । जोजन भूमि समोसरण, पेक्खवि प्रथमारंभ तो, दह दिस देखे विबुध वधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंभ ध्वज, कोसीसे नवघाट तो, वइर विवर्जित जंतुगण, प्रातीहारिज आठ तो । सुर नर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो, चित्त चमक्किय चिंतवए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो; एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्रजाल तो । तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंद्रभूइ नामेण तो; श्रीमुख संसय सामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥१६॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतिहिं नाम्यो सीस तो, पंच सयांसुं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो । बंधव संजम सु-

णिवि करे, अगनिभूइ आवेय तो; नाम लेई आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो, तो उपदेशे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो। बिहुं उपवासें पारणो ए, आपणपे विहरंत तो; गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइ चढियो वहुमान, हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो; जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत तो; बोधिबीज संजाय मनें, गोयम भवहि विरत्त, दिक्खा लेई सिक्खा सही, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिमा पुण्य भरो, दीठा गोयम सामि, जो निय नयणें अमिय सरो। समवसरण मझार, जे जे संसय ऊपजे ए, ते ते पर उपगार कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जीहां २ दीजें दीख, तीहां केवल ऊपजे ए; आप कनें अण-

हुंत, गोयम दीजें दान इम। गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय; एणिछल केवल नाण,, रागज राखे रंग भरे॥ २४॥ जो अष्टा-पद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण, आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सो ज मुनि। इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय, तापस पन्नर सएण, तो मुनि दीठो आवतो ए॥ २५॥ तप सोसिय निय अंग-अम्हां संगति न उपजे ए, किम चढसे दृढ़ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए। गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए, तो मुनि चढियो वेग, अलंबवि दिन-कर किरण॥ २६॥ कंचण मणि निप्फन्न, दं-डकलस ध्वजवड सहिय, पेखवि परमाणन्द, जिणहर भरतेसर महिय। निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब, पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय॥ २७॥ वयर-सामीनो जीव, तिर्यक्

जृंभक देव तिहां प्रतिबोध्यो पुडरीक, कंडरिक अध्ययन भणो। वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥२८॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे, गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे। पंच सयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे, साचा गुरु संयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २६ ॥ पञ्च सयां जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय, पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे। जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम, जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसे, उप्पन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवि जगगुरु वयण, तिहि नाण अप्पाण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेव, छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥३१॥ भास ॥

समियो ए वीर जिणन्द, पूनमचन्द जिम उल्लसिय. विहरियो ए भरहवासम्मि, वरस बहुत्तर संवसिय। ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघैं सहिय, आवियो ए नयणानंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेसियो ए गोयम साम्मि, देवसमा प्रतिबोध करे; आपणो ए तिसला देवि, नंदन पुहतो परमपए। वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समो ए, तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आप कनासुं टालियो ए, जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए। अतिभलों ए कीधलो साम्मि, जाणयो केवल मागसे ए, चिन्तव्यो ए बालक जेंम, अहवा केडे लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतिहि भोलेभोलव्यो ए, आपणो ए उचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए। साचो ए वीतराग, नेह न

हेजेंखालिश्रो ए तिणसमे ए, गोयमचित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥३५॥ आवतो ए जो उल्लट्ट, रहितो रागे साहियो ए, केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज ऊमाहियो ए। तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए, गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर बरस पच्चास, गिहवासें संवसिय, तीस बरस संजम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण, बार बरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो बाणबइ बरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चन्दन सोगंध निधि। जिम गंगाजल लहिस्या लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरु

वर कसाय वतंसा, जिम महुयर राजीव वनें, । जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंवर तारा-गण विकसे, तिम गोयम गुरु केवल घनें ॥३९॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुर तरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिस जिम सहसकरो। पञ्चानने जिम गिरिवर राजे, नरवई घरजिम मयगल गाजे, तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए। जिम भूमीपति भुयवल चमके, जिमं जिन मन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुर तरु सारे वंछिय काज, का-मकुम्भ सहु वशि हुआ ए। कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरि ए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहिलो भणीजें, माया वीजो श्रवण सुणीजे, श्रीमिति

सोभा संभवाए। देवां धुर अरहिंत नमीजे, *विनय पहु उवझाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नामो ए ॥ ४३ ॥ पर घर वसतां काय करीजे, देस देसांतर काय भमीजे, कवण काज आयास करो। प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहां परे ए ॥४४॥ चवदय सय बारोत्तर वरसे गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो। आदिहिं मंगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥४५॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए। विनयवंत विद्या भण्डार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए। गोयम सामी रास भणीजे, चउविह संघ रलिया-

---

* यह श्री विनयप्रभ उपाध्या जी श्री जिन कुशल सूरि-जी के जिनका स्वर्गवास वि स० १३८९ में हुआ था, शिष्य थे।

यत कीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडा दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए । तिहां बेसी गुरु देसना देसी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥

इति श्री गौतमस्वामि-रास सम्पूर्ण।

॥ अथ वृद्धनवकार ॥

॥ किंकप्पत्तरुरे अयाण चिंतउ मणभिंतरि, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंघउ, रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघउ ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धउ ए नवकार, सयल काज महियल सरे दुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ केवलि भासिय रीत जिके नवकार आरा है, भोगवि सुक्ख अणंत अंत परम प्पयसा है ॥ इण भाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु पार, इण भाणे देव-

लोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सवे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर भाण मज्झ चिंतवै कमल नर, कंचणमय अठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां बेठा अरिहंतदेव पउमासण फिटकमणि, सेय-वत्थ पहरेवि पढम पय चिंते नियमणि ॥ निव्वा-रय चउ गइ गमण पामिय सासय सुक्ख, अ-रिहंत भाणे तुम लहो जिम अजरामर सुक्ख ॥ ३ ॥ पनर भेय तिहां सिद्ध वीय पद जे आराहे, राते विद्रुमतणे वन्ननिय सोहग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धहिं पुव्वे दिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्र वशीकरण अवर सहू जगधंद, मणमूलो ओषध करे बुद्धि होणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्खिण दिसि पंखडी जपे नमो आयरिआणं, सोवनव-न्नह सीस सहित उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध

कारणे लाभ ऊपर जे ध्यावे, पहरे पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावै ॥ इण झाणे नव निधि हुवेए रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखो चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवझाय सीस पाढंता पच्छिम, आराहिज्जे अंग पुव्व धारंत मणोरम ॥ पच्छिम दिस पंखडीय कमल ऊपर सुहझाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्खे विदुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सव्वे साधु उत्तर विभाग सामला वइठा, जिण धर्म लोय पयासयंत चारित्र गुण जिठा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके झाणै, पंचवन्न तिहां नाण झाण गुण एह पमाणे ॥ अनंत चोवीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमुक्कारो पद दिसिअ गणेहिं, सव्व पावप्पणासणो पद जप-

नेरेहिं ॥ वायव दिसि झाएह मंगलाणं च स-
व्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं
दिसि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल
ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव
खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रभाव धरणिंद हुओ पायालह
सामी, समलीकुअर उपन्न भिल्ल सुर लोयह
गामी ॥ संवल कंवल बे वलद पहुता देवा क-
प्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि
जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय करे जोगी लियो
मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्र-
माण ॥ ९ ॥ छींके बैठो चोर एक आकासे
गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह
नामी ॥ वाछरू आचारंत वाल जल नदी प्रवाहे,
बोध्यों कंटही उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥
चिंत्या काज सवे सरे इरत परत विमास, पा-
लित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥१०॥
चौर धाड संकट टले राजा वसि होवे, तित्थंकर

सो होइ लाख गुण विधिसुं जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सवे नासै एणही मंत, मयणासुदरितणी परे नव पय भाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता बखाणुं, नाणहीण छउमच्छ एह गुण पार न जाणूं ॥ जिम सत्तुंजय तित्थराउ महिमा उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तित्थयंकर गणहर पणिय चवदह पूरव सार, इण गुण अंत न को कहे गुण गिरुवो नवकार ॥ १२ ॥ अड संपय नव पय सहित इगसठ लहु अक्खर, गुरु अक्खर सत्तैव इह जाणो परमक्खर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे सिव सुक्खह, कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु दुक्ख निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवे इक चित्त, पंच परमेष्ठि मंत्रह तणी सेवा देज्यो

नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री कल्याणमन्दिर स्तोत्रम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभय-प्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् । संसारसागरनिम-ज्जदशेषजन्तु-पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय-धूमकेतो-स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप—मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः ? । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवा-न्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ? ॥३॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्तवा-न्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा-न्मीयेत केन जल-धेर्ननु रत्नराशिः ? ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव

नाथ! जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य। बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः?॥ ५॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश!, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः?। जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि॥ ६॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति। तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि॥७॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो! शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः। सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग—मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य॥ ८॥ मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि। गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः॥ ९॥ त्वं तारको

जिन ! कथं भविनां ? त एव, त्वामुद्वहन्ति हृ-
दयेन यदुत्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष
नून-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥
यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि
त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता
हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीतं न किं तदपि
दुर्द्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमा-
णमपि प्रपन्ना-स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये
दधानाः । जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन ?,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥
क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो, ध्व-
स्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ? । प्लोप-
त्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके, नीलद्रुमाणि
विपिनानि न किं हिमानी ? ॥ १३ ॥ त्वां
योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-मन्वेषयन्ति
हृदयाम्बुजकोशदेशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा
किमन्य-दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ?

॥१४॥ ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति। तीव्रानला-
दुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव
धातुभेदाः ॥ १५ ॥ अन्तः सदैव जिन ! यस्य
विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे
शरीरम् ?। एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आ-
त्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुध्या, ध्यातो जिनेन्द्र !
भवतीय भवत्प्रभावः। पानीयमप्यमृतमित्यनु-
चिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरो-
ति ? ॥१७॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः। किं का-
चकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते ?
विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये
सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्य-
शोकः। अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं
। विबोधमुपयाति न जीवलोकः ? ॥ १९ ॥

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ?। त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति। पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः। येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न---सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम्। आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै—श्चामीकराद्रिसिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव। सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ? ॥ २४ ॥ भो

भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन—मागत्य निर्वृ-
तिपुरीं प्रति सार्थवाहम्। एतन्निवेदयति देव!
जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते
॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः। मुक्ताक-
लापकलितोच्छ्वसितातपत्र—व्याजात्त्रिधा धृत-
तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रय-
पिण्डितेन, कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन।
माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भ-
गवन्नभितोविभासि ॥२७॥ दिव्यस्रजो जिन!
नमत्त्रिदशाधिपाना—मुत्सृज्य रत्नरचितानपि
मौलिबन्धान्। पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा
परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥
त्वं नाथ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्ता-
रयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान्। युक्तं हि पार्थि-
वनिपस्य सततस्तवैव, चित्रं विभो! यदसि
[illegible] : ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जन-

पालक ! दुर्गतस्त्वं, किंवाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपि-
स्त्वमीश !। अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥
प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा—दुत्थापि-
तानि कमठेन शठेन यानि। छायाऽपि तैस्तव
न नाथ ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमोभिरयमेव
परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्ज्जदूर्जितघनौघम-
दभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य
जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वके-
शविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड—प्रालम्बभृद्भयदवक्त्र-
विनिर्यदग्निः। प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपोरितो
यः, सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥
धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य—मारा-
धयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः। भक्त्योल्लसत्पु-
लकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो ! भुवि
जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ

मुनीश !, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विप-
द्विषधरी सविधं समेति ? ॥ ३५ ॥ जन्मान्तरे-
ऽपि तव पाद युगं न देव !, मन्ये मया महि-
तमीहितदानदत्तम् । तेनेह जन्मनि मुनीश !
पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्
॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं
विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो
विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः
कथमन्यथैते ? ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महि-
तोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया
विधृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि तेन जनबा-
न्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न
भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल
हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य,
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय, दुःखा-
ङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसङ्ख्य

सारशरणं शरणं शरण्य—मासाद्य सादितरिपु-
प्रथितावदातम् । त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधान-
वन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा
हतोऽस्मि ॥४०॥ देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलव-
स्तुसार !, संसारतारक विभो ! भुवनाधिनाथ ।
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदन्त-
मद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति
नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं कि-
मपि संततिसंचितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य
शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्त-
रेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिज-
नेन्द्र !, सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्षा, ये संस्तवं
तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥४३॥ जननयनकु-
मुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा । ते विग-
लितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।४४।युग्मम्

॥ इति श्रीकल्याणमन्दिर-स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

लघुजिनसहस्रनाम स्तोत्रम्।

नमस्त्रिलोकनाथाय, सर्वज्ञाय महात्मने॥ वक्ष्ये तस्यैव नामानि, मोक्षसौख्याभिलाषया॥ १॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः, निर्विकल्पो निरामयः। निःशरीरी निरातंकः, सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः॥ २॥ निष्कलंको निरालंबो, निर्मोहो निर्मलोत्तमः। निर्भयो निरहंकारो, निर्विकारोथ निष्क्रियः॥ ३॥ निर्दोषो निरुजः शान्तः, निर्भेद्यो निर्ममः शिवः। निस्तरंगो निराकारो, निष्कर्मो निष्कलप्रभुः॥ ४॥ निर्वादो निरुपमज्ञान, निरागो निरघो जिनः। निःशब्द प्रतिमश्लेष्ठ, उत्कृष्टो ज्ञन-गोचरः॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो, नैष्टकः शब्दवर्जितः। अनिंद्यो महपूतात्मा, जगत् शिखरशेखरः॥६॥ निःशब्दो गुणसंपन्नाः, पाप-ताप-प्रणाशनः। सोपि योगात् शुभं प्राप्तः, कर्मद्योतिवलावहः॥ ७॥ अजरो अमरः सिद्ध, अचिंतः अक्षयो विभुः। अमुर्त्तः

अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८ ॥
अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो भवः।
अप्रमेयो जगन्नाथः, वोधरूपो जिनात्मकः ॥९॥
अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान लोचनः।
अछेद्यो निर्मलो नित्यः, सर्वशल्यविवर्जितः॥१०॥
अजेयसर्वतोभद्रः, निष्कषायो भवांतकः।
विश्वनाथः स्वयंबुद्धः, वीतरागो जिनेश्वरः॥११॥
अंतको सहजानंद, अवाङ्मानस गोचरः।
असाध्यशुद्धचैतन्यः, कर्मणोकर्मवर्जितः ॥१२॥
अनंत विमलज्ञानी, स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः।
कर्म्मार्जितो महात्मानः, लोकत्रयशिरोमणिः
॥ १३ अव्याबाधो वरः शंभु, विश्ववेदो पिता-
महः। सर्वभूतहितो देव। सर्वलोकशरण्यकः
॥१४॥ आनन्दरूपचैतन्यो, भगवांत्रिजगद्गुरुः।
अनंतानंतधीशक्तिः, सत्यव्यक्तव्ययात्मकः
॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः, सप्तधातुविव-
र्जितः। गोरवादित्रयादूरः सर्वज्ञानादि संयुतः

॥ १६ ॥ अभया: प्राप्तकैवल्यः, निर्माणो निरपेक्षकः। निष्कलं केवलज्ञानी, मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो, वरंदो ज्ञानपावकः। सर्वेशः सतसुखावासः, जिनेंद्रो मुनिसंस्तुतः ॥१८॥ अन्यूनपरम ज्ञानी, विश्वतत्व प्रकाशकः। प्रबुद्धोभगवान्नाथः, प्रस्तुतः पुण्य कारकः ॥ १६ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः, सर्वज्ञो मदनांतकः । ईश्वरो भुवनाधीशः, सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥२०॥ सदोजातमहात्मानं, विमुक्तो मुक्तिवल्लभः। योगींद्रो नादिसंसिद्धः, निरीहो ज्ञानगोचरः ॥२१॥ सदाशिवां चतुर्वक्रः, सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः । त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः, कल्याणकोष्टमूर्त्तिकः ॥२२॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः, सर्वपापविवर्जितः। सर्वदेवाधिकोदेवः, सर्वभूतहितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं, प्रसिद्धः पापनाशनः। तनुमात्रचिदानंद, चैश्चैत्यदैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव ।

मुक्तिस्थो महतांमहः । मुक्तिकार्याय संतुष्टो, निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महादेवो महावीरो, महामोहविनाशकः । महाभावो महादर्शः, महामुक्तिप्रदायकः ॥२६॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः । महर्द्धिको महावीर्यो, महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महा पूज्यो महावंद्यो, महाविघ्नविनाशकः । महासौख्यो महापुंसो । महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोधः, एकानेकविनिश्चलः । सर्वबंधविनिर्मुक्तो, सर्वलोकप्रधानकः ॥ २९ ॥ महाशूरो महाधीरो, महादुःखविनाशकः । महामुक्तिप्रदो धीरो, महाढ्यो महागुरुः ॥३०॥ निर्मारमारो विध्वंसो, निष्कामो विषयाच्युतः । भगवंतामहाश्रांतो, शान्तिकल्याणकारकः ॥३१॥ परमात्मा परंज्योतिः, परमेष्ठी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानंद. परंपरमआत्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी. सख्यानिर्वाणसंयुतः । ना

कृतिं नाक्षरो वर्णी, व्योमरूपो जितात्मकः ।३३।
व्यक्ताव्यक्त जसंबोधः, संसारछेदकारणः ।
निरवद्यो महाराध्यः, कर्म्मजित् धर्म्मनायकः
॥ ३४ ॥ बोधसत्तु जगद्वंद्यो, विश्वात्मा नर-
कांतकः । स्वयंभूपापहृत्पूज्यः, पुनीतो विभवः
स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातीतः, रूपा-
तीतो निरंजनः । अनंतज्ञानसंपर्णो, देवदेवेश
नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वंसी, योगिनां
ज्ञानगोचरः ॥ जन्ममृत्युजरातीतः, सर्वविघ्न-
हरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् भव्यसंवंद्यः,
पवित्रो गुणसागरः । प्रसन्नः परमाराध्यः,
लोकालोकप्रकाशकः ॥३८॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी,
इंद्रवंद्यः सुरार्चितः, निष्प्रपंचो निरातङ्कोः ।
निःशेषक्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक
संसेव्यो, लोकालोकविलोकनः । लोकोत्तमो
त्रिलोकेशो, लोकाग्रे शिखरस्थितः ॥ ४० ॥
नामाष्टकसहस्राणि, ये पठंति पुनः पुनः ।

ने निर्वाणपदं यान्ति, मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीभद्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रानामकं स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ साधु प्रतिक्रमणसूत्र ॥

चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलिपरणात्तो धम्मोमंगलं चत्तारि-लोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलिपरणात्तो धम्मोलोगुत्तमो चत्तारिसरणंपवज्जामि अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्धेसरणंपवज्जामि साहूसरणंपवज्जामि केव-लिपरणात्तं धम्मंसरणंपवज्जामि इच्छामि पडि-क्कमिउं। पगामसिज्जाए। निगामसिज्जाए। संथाराउवट्टणाए। परियट्टणाए। आउंटण पसारणाए। छप्पइयसंघट्टणाए। कुइए। कक्करा-इए। छीए। जंभाइए। आमोसे। ससरक्खामोसे। आउलमाउलाए। सोअणवत्तियाए। इत्थीवि-प्परियासिआए। दिट्ठीविप्परियासिआए।

मणविप्परिआसियाए। पाणभोअणविप्परिआसिआए। जो मे देवसिओ अइयारो कओ। तस्समिच्छामि दुक्कडं। पडिक्कमामि। गोअरचरिआए। भिक्खायरिआए। उग्घाड कवाड उग्घाडणाए। साणावच्छादारा संघट्टणाए। मंडीपाहुडिआए। बलिपाहुडिआए। ठवणापाहुडिआए। संकिए सहस्सागारे। अणेसणाए। पाणेसणाए। आणभोयणाए। पाणभोयणाए। बीअभोयणाए। हरियभोयणाए। पच्छाकम्मियाए। पुरेकम्मिआए। अदिट्ठहडाए। दगसंसट्ठहडाए। रयसंसट्ठहडाए। पारिसाडणिआए। पारिठावणिआए। ओहासणभिक्खाए। जं उग्गमेणं ओप्पायणेसणाए। अपरिसुद्धं पडिग्गहिअं। परिभुत्तं वा। जं न परिठविअं तस्स मिच्छामिदुक्कडं। पडिक्कमामि चाउक्कालं सज्झायस्स अकरणयाए। उभओकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए। अप्पमज्जणाए

दुप्पमज्जणाए । अइक्कमे । वइक्कमे । अइयारे । अणायारे । जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं । पडिक्कमामि एगविहे असंजमे ॥ १ ॥ पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं । रागबंधणेणं दोसबंधणेणं । पडिक्कमामि ॥ २ ॥ तिहिं दंडेहिं । मणदंडेणं । वयदंडेणं । कायदंडेणं । पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं मणगुत्तीए । वयगुत्तीए कायगुत्तीए । पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं । मायासल्लेणं । नीयाणासल्लेणं । मिच्छादंसणसल्लेणं । पडिक्कमामि । तिहिं गारवेहिं । इढ्ढीगारवेणं । रसगारवेणं । सायागारवेणं । पडिक्कमामि । तिहिं विराहणाहिं । नाणविराहणाए । दंसणविराहणाए । चरित्तविराहणाए । पडिक्कमामि । चउहिं कसाएहिं । कोहकसाएणं । माणकसाएणं । मायाकसाएणं । लोभकसाएणं । पडिक्कमामि । चउहिं सण्णाहिं । आहार सण्णाए । भय सण्णाए । मेहुणसण्णाए ।

परिग्गहसएणाए। पडिक्कमामि। चउहिं विकहाहिं। इच्छिकहाए। भत्तकहाए। देसकहाए। रायकहाए। पडिक्कमामि। चउहिं झाणेहिं। अट्टेणं झाणेणं। रुद्देणं झाणेणं। धम्मेणंझाणेणं। सुक्केणं झाणेणं। पडिक्कमामि। पंचहिं किरियाहिं। काइयाए अहिगरणियाए। पाउसियाए। पारतावणिआए। पाणाइवायकिरियाए। पडिक्कमामि। पंचहिं कामगुणेहिं। सद्देणं। रूवेणं। रसेणं। गंधेणं। फासेणं। पडिक्कमामि। पंचहिं महव्वएहिं। पाणाइवायाओ वेरमणं। मुसावायाओ वेरमणं। आदिन्नादाणाओ वेरमणं। मेहुणाओ वेरमणं। परिग्गहाओ वेरमणं। पडिक्कमामि। पंचहिं समिइहिं। इरिआसमिइए। भासासमिइए। एसणासमिइए। आयाणभंडमत्तनिखेवणा समिइए। उच्चारपासवण खेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिइए। पडिक्कमामि। छहिं जीवनिकाएहिं।

पुढविकाएणं। आउकाएणं। तेउकाएणं। वाउ-काएणं। वणस्सइकाएणं। तससकाएणं। पडि-क्कमामि। छहिं लेसाहिं। किण्हलेसाए। नीलले-साए। काउलेसाए। तेउलेसाए। पउमले-साए। सुक्कलेसाए। पडिक्कमामि। सत्तहिं भय-ट्ठाणेहिं। अट्ठहिं मयट्ठाणेहिं। नवहिं बभचे-रगुत्तीहिं। दसविहे समणधम्मे। एगारसहिं उवासगपडिमाहिं। बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं। तेरसहिं किरियाठाणेहिं। चउद्दसहिं भूअगा-मेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं। सोलसहिं गाहासोलसएहिं सत्तरसविहे असंजमे। अट्ठार-सविहे अबंभे। एगुणवीसाए नायज्झयणेहिं। वी-साए असमाहिठाणेहिं। इक्कवीसाए सवलेहिं। बावीसाए परीसहेहिं। तेवीसाए सुअगडज्झय-णेहिं। चउवीसाए अरिहंतेहिं। पणवीसाए भावणाहिं। छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेहिं। सत्तावीसाए अणगारगु-

णेहिं । अट्ठावीसाए आयारपकप्पेहिं । एगुणतीसाए पावसुअपसंगेहिं । तीसाए मोहणीअट्ठाणेहिं । इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं । बत्तीसाए जोगसंगहेहिं । तित्तीसाए आसायणाएहिं । अरिहंताणं आसयणाए । सिद्धाणं आसायणाए । आयरिआणं आसायणाए । उवज्झायाणंआसायणाए । साहूणं आ० । साहूणीणं आ० । सावयाणं आसायणाए । सावियाणं आ० । देवाणं आसायणाये । देवीणं आ० । इहलोगस्स आ० । परलोगस्स आ० । केवलिपण्णत्तस्सधम्मस्स आ० । सदेवमणुआसुरस्सलोगस्स आ० । सव्वपाणभूअजीवसत्ताणं आ० । कालस्स आ० । सुअस्स आ० । सुअदेवयाए आसा० । वायणारिअस्स आ० । जंवाइद्धं वच्चामेलिअं हीणक्खरं । अच्चक्खरं । पयहीणं । विणयहीणं । घोसहीणं । जोगहीणं । सुट्ठुदिन्नं, दुट्ठु पडिच्छिअं । अकाले कओ सज्झाओ

काले न कओ सज्झाओ । असज्झाए सज्झाइयं । सज्झाइए न सज्झाइयं । तस्स मिच्छामि दुक्कडं । णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइमहावीर-पज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं । सच्चं । अणुत्तरं । केवलियं । पडिपुन्नं । नेआ-उअं । संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मु-त्तिमग्गं । निज्जाणमग्गं । निव्वाणमग्गं । अवितहमविसंधि । सव्वदुक्खपहीणमग्गं । इ-च्छंठियाजीवा । सिज्झंति । बुज्झंति । मुच्चंति । परिनिव्वायंति । सव्वदुक्खाणमंतंकरंति । तं-धम्मं सद्दहामि । पत्तियामि । रोएमि । फासेमि । पालेमि । अणुपालेमि । तं धम्मं सद्दहंतो । पत्ति-अंतो । रोअंतो । फासंतो । पालंतो । अणुपालंतो । तस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स । अभुट्ठिओमि । आराहणाए । विरओमि विराहणाए । असंजमं । परिआणामि । संजमं उवसंपज्जामि । अबंभं परिआणामि । बंभंउवसंपज्जामि । अकप्पं परि-

आणामि । कप्पं उवसंपज्जामि । अन्नाणं परिआणामि । नाणं उवसंपज्जामि । अकिरिअं परिआणामि । किरिअं उवसंपज्जामि । मिच्छत्तं परिआणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । अबोहिं परिआणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गं परिआणामि । मग्गं उवसंपज्जामि । जं संभरामि । जं च न संभरामि । जं पडिक्कमामि । जं च न पडिक्कमामि । तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अइयारस्स पडिक्कमामि । समणोहं । संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो । मायामोसविवज्जिओ । अड्ढाइज्जेसु । दीवसमुद्दे सु । पन्नरससुकम्मभूमीसु॥ जावंतिकेविसाहु । रयहरणगुच्छ पडिग्गहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, । अट्ठार सहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायार चरित्ता । ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि । खामेमि सव्वजीवे,सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं

न केणई ॥१॥ एवमहं अलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंच्छियंसम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणेचउव्वीसं ॥२॥ इति श्री साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पख्खी सूत्र ॥

तित्थंकरे अ तित्थे, अतित्थसिद्धे य तित्थसिद्धे अ । सिद्धे यजिणेअ रिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जे अ इमं गुण रयणसायर, मविराहिऊण तिण्णसंसारा । ते मंगलं करित्ता, अहमवि आराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मोअ । खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥३॥ लोगंमि संजया जं करंति, परम रिसि देसियमुआरं ॥ अहमवि उवट्ठिओ तं, महव्वय उच्चारणं काउं ।४। सेकिंतं महव्वय उच्चारणा । महव्वय उच्चारणा पंचविहा पण्णत्ता ॥ राई भोयण वेरमणछट्ठा । तंजहा । सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥१॥

सव्वाओ मूसावायाओ वेरमणं ॥२॥ सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥३॥ सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥४॥ सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥५॥ सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं॥६॥

तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाओवेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा । नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायंतेवि । अन्नेनसमणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से पाणाइवाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ । दव्वओणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु । खित्तओणं पाणाइवाए सव्वलोए कालओणं पाणाइवाए दियावा

गओवा। भावओणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा। जंपिय मये इमस्स धम्मस्स केवलि पणणत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चा-हिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहि-रणसावणियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभ-चेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि-त्तीलक्खणस्स पञ्चमहव्वयजुत्तस्स असंनिहि-संचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिआए अणभि-गमेणं अभिगमेण वा पमाएण रागदोस पडिव-द्धआए बालयाए मोहयाए मंदयाए कि-ड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचिंदिओवसट्टेणं पडुपुन्नभारियाए सायासोक्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गह-

णेसु पाणाइवाओ कओवा कारिओवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुपन्नं सवरेमि सव्वं अणागयंपच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिओहिं नेव सयंपाणे अइवाइज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणिज्जा तं-जहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं भवइ भिक्खूवा भिक्खूणीवा संजयविरय पडिहय पच्चक्खाय पाव-कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्स-वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसं सत्ताणं अदुक्खणायाए असोण-याए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महा-

गुणं महाणुभावे महापुरिसाणु चिन्ने परमरि-
सिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए
मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए
त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पढमे
भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवा-
याओवेरमणं ॥ १ ॥ अहावरेदोच्चे भंते
महव्वए मुसावायाओवेरमणं सव्वं भंते
मुसावायं पच्चक्खामि से कोहावा लोहावा भयावा
हासावा नेवसयं मुसंवइज्जा नेवन्नेहिं मुसंवा-
याविज्जा मुसंवयंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंन-
समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदा-
मि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । से मुसावाए
चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ
कालओ भावओ दव्वओणं मुसावाए सव्व-
दव्वेसु खित्तओणं मुसावाए लोएवा अलोएवा

कालओणं मुसावाए दियावा राओवा भावओणं मुसावाए रागेणवा दोसेणवा जम्मए इमस्स धम्मस्स केवलिपणत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीप्पहाणस्स अहिरणसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वितिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसावइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाएमोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुणभारियाए सायासुक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासि

ओंवा भ.सावित्र्आवा भासिज्जंतो वा परेहिं समगुन्नाओ नं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुपन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयं मुसंवइज्जा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवायंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा तंजहा आरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खुणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए

गणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
सुक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्ग
हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घि-
प्पंतंवा परेहिं समणुन्नाओ तं निन्दामि गरि-
हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं
अ इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं प-
च्चक्खामि सव्वं अदिन्नादाणं जावज्जीवाए अ-
णिस्सिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेव-
न्नेहिं अदिन्नं गिण्हा विज्जा अदिन्हंगिण्हंतेवि
अन्नेनसमणुजाणिज्जा तंजहा अरिहंतसक्खियं
सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पस-
क्खियं एवंहवइ भिखूवा भिक्खूणीवा संजय वि-
रय पडिहयपच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा
एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा
एस खलु अदिन्नादाणस्स वेरमणे हिएसुहे खमे
निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं
पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-

त्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजू-
रणयाए अतिप्पणयाए अपीडणाए अपरियाव-
णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणु-
भावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे
तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहि-
लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं
विहरामि तच्चं भंते महव्वए अणुट्ठिओमि स-
व्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥ अहा-
वरे चउत्थे भंते महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं
भंते मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वंवा माणुसंवा
तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेव-
न्नेहिं मेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनस-
मणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि
करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडि-
क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि
से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खि-

त्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवेसहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उढ्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहूणे रागेणवा दोसेणवा जंमए इमस्स धम्मस्स केवलिप- णत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स वि- णयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसोवणिय- स्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अप्पय- माणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निर- ग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुण- गाहियस्स निव्वियारस्स निव्वत्तीलख्खणस्स पं- चमहव्वयजु तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवा इयस्ससंसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्ज- वसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदया- ए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं

पंचविहिओवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाए सायासोक्ख
मणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु
मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहिं
समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं ति-
विहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं निंदामि
पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चख्खामि सव्वं
मेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेहु
णंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवं-
तेवि अन्नं न समणुजाणामि तंजहा अरिहंतस-
ख्खियं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं
अप्पसख्खियं एवं हवइ भिख्खूवा भिख्खुणीवा
संजय विरय पडिहय पच्चख्खाय पावकम्मे दियावा
राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्ते वा जाग-
रमाणेवा एसखलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे
निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं-
पाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं
सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरण-

त्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवेसहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उढ्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहूणे रागेणवा दोसेणवा जंमए इमस्स धम्मस्स केवलिपणत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वत्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजु तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्ससंसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं

पंचेंदिओवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाए सायासोख्ख
मणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु
मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहिं
समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं ति-
विहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि
पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं
मेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेहु
णंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवं-
तेवि अन्नं न समणुजाणामि तंजहा अरिहंतस-
क्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं
अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खूणीवा
संजय विरय पडिहय पच्चख्खाय पावकम्मे दियावा
राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जाग-
रमाणेवा एसखलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे
निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं-
पाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं
सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरण-

याए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणि-
याए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे
महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंदु-
क्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिला-
भाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं
विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि
सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥४॥ अहावरेपंचमे
भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते
परिग्गहं पच्चक्खामि से अप्पंवा बहुंवा अणुंवा
थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परि-
ग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं परिगि-
ण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणु-
जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि
अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । से परि-
ग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ

कालओ भावओ दव्वओणं परिग्गहे सचित्ता-
चित्तमीसेसु दव्वेसु खित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा
नगरेसुवा रन्नेसुवा कालओणं परिग्गहे दियावा
राओवा भावओणं परिग्गहे अपग्घेंवा महग्घेवा
रागेणवा दोसेणवा जंमए इमस्स धम्मस्स
केवलिपण्णत्तस अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठि-
यस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरण्णसो-
वण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स
अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खोसंब-
लस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदो-
सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तील-
क्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स अविसंवाइयस्स
संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसा-
णफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबो-
हियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं
रागदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंद-
याए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओव-

गएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सा-
यासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा
भवग्गहणेसु परिग्गहो गहिओवा गाहाविओवा
घिप्पंतोवा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरि-
हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं
अइयं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्च-
क्कामि सव्वं परिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-
ओहं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरि-
गिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणु-
जाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं
साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ-
भिक्खूवा भिक्खूणीवा संजयविरयपडिहय पच्च-
क्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परि-
सागओवा सुत्ते वा जागरमाणेवा एसखलु मेहु-
णस्सवेरमणे हिए सुए खमे निस्सेसिए आणु-
गामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं-
भूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्ख-

णयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणयए त्तिकट्टु उवसंपज्जिनाणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओपरिग्गहाओवेरमणं ॥५॥ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए राइभोयणाओवेरमणं सव्वं भंते राईभोयणं पच्चक्खामि से असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविज्जा राइंभुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से राई भोयणे चउव्विहेपण्णत्त तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं राईभोयणे

असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तओणं राईभोयणे समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभोयणे तित्तेवा कडुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंमए इमस्स धम्मस्स केवलिपणत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खोसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निब्वियारस्स निब्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाये अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगा-

खगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं-वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तं-वा भुंजावियंवा भुज्जंतंवा परेहिंसमणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं राइ भोयणं जावज्जी-वाए अणिस्सिओहं नेवसयं राईभुंजिज्जा नेव-न्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुंज्जंतेवि अन्नं न समणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-सक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पस-क्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणीवा संजय-विरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा रा-ओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागर-माणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुए-खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वे-सिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं

सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि छठे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चइयाइं पंचमहव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। अप्पसत्थायजेजोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥१॥ तिव्वगगायजाभामा तिव्वदोसातहेवय मुसावायस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गहंअजाइत्ता अविदिन्नेअउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दारूवारसागंधा फासाणंपावआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्ते

अइक्कमे ॥ ४ ॥ इच्छापुच्छायगेहीय कंखालोभे-अदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरयामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे बीयंवयमणुरक्खे विरियामोअलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे तइयंवयमणुरक्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विरयामोमेहुणाओ ॥ ६ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे पंचमंवयमणुरक्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छट्ठंवयमणुरक्खे विरयामोराईभोयणाओ ।११। आलियविहारसमिओ जुत्तागुत्तोठिओसमणधम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरियामोपाणाइवायाओ।१२।

आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-धम्मे बीयंवयमणुरक्खे विरियामोअलियवयणाओ ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिओजुत्तोगुत्तोठिओ-समणधम्मे तईयंवयमणुरक्खे विरियामोअदि-न्नादाणाओ ॥ १४ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विरियामोमेहुणाओ ॥ १५ ॥ आलियविहारस-मिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे पंचमंवयम-णुरक्खे विरयामो परिग्गहाओ ॥ १६ ॥ आलि-यविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे छट्ठंवयमणुरक्खे विरयामोराईभोयणाओ ।१७। आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-धम्मे तिविहेणपडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिच्छत्तं एगमेवअ-न्नाणं परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥१९॥ अणवज्जजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २० ॥

दोचेवरागदोसे दुण्णियझाणाइं अट्टरुद्दाइं
परिवज्जंत्तोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥
दुविहंचरित्तंधम्मं दुन्नियझाणाइंधम्मसुक्काइं
उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥
किण्हानीलाकाउ तिन्नियलेसाऊअप्पसत्थाओ
परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २३ ॥
तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाओसुप्पसत्थाओ उव-
संपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥
मणसामणसच्चविउ वायासच्चेणकरणसच्चेण
तिविहेणविसच्चविओ रक्खामिमहव्वएपंच ।२५।
चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय
परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥
चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहंसंवरंसमाहिंच
उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥
पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिव-
ज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचें-
दियसंवरणं तहेवपंचविहमेवसज्जायं उवसंपन्नो-

जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनि-
कायवहिं छप्पियभासाओ अप्पसत्थाओ परिव-
ज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥ छवि-
हमब्भिंतरियं वज्जंपियछव्विहंतवोकम्मं उवसं-
पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्त-
भयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविब्भिंगा परिवज्जं-
तोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसण-
पाणेसण उग्गह सत्ति कया महज्झयणा उवसंप-
न्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥ अट्ठम-
यट्ठाणाइं अट्ठयकम्माइं तेसिंबंधिंच परिवज्जंतो
गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अट्ठयपवय-
णमाया दिट्ठाअट्ठविहनिट्ठिअठेहिं उवसंपन्नो-
जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनि-
याणाइं संसारत्थायनवविहाजीवा परिवज्जंतो-
गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ नवबंभचेर-
गुत्तो दुनवविहंबंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो
क्खामिमहव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदस-

विहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिट्ठाणा दसचेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ आसायणंचसव्वं तिगुणं एक्कारसंविवज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरओ तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो तिविहेण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबलंववसाओ साहणट्ठोपावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निज्जूहणा राहणा गुणाणं संवरजोगो पसत्थभ्झाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमट्ठो उत्तमट्ठो एसखलुतित्थं करेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिओ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय संजमं उवइसिउं तिल्लुक्क सक्कयंठाणं अब्भुवगया नमोत्थु ते सिद्धबुद्ध मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय

नमोत्थुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुते-
अरहओ नमोत्थुते भगवओ तिकट्टु इच्चेसा
खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं
काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिं इमंवाइयं
छव्विहमावस्सयं भगवंतं तंजहा सामाइयं च-
उवीसत्थओ वंदणयं पडिक्कमणं काउसग्गो
पच्चक्खाणं सव्वेहिं विएय मि छव्विहे आवस्सए
भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए
ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं
भगवंतेहिं पन्नतावा परूवियावा तेभावे सद्दहा-
मो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपा-
लेमो तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं
फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स
अंतोचउमासीए अंतोसंवच्छरस्स जंवाइयं प-
डिढयं परियट्ठियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालि-
यं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए
बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जि-

त्ताणं विहरामि अंतोपक्खस्स जंनवाइयं नपढि-
यं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपा-
लियं सतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे
तस्सआलोएमोपडिक्कमामो निंदामो गरिहामो
विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो
अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्झामो तस्स-
मिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइ
मंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा
दसवेआलियं कप्पियाकप्पियंचुल्लकप्पसुयं महा-
कप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं जीवाभिगमो
पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं दे-
विंदथुओ तंदुलवेआलियं चंदाविज्झयं पमायप्प-
मायं वीयरागसुयं विहारकप्पो चरणविसोही
आउरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सव्वेहिंपिए
यंमि अंगबाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते
सअत्थे सगंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जे-
गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता-

वा परूवियाया तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रो-
एमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्दहं-
तेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं अणुपालं-
तेणं अंतोपक्खस्स जंवाइयं पढियं परिअट्टियं
पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्ख-
याए कम्मक्खयाए मोइक्खयाए बोहिलाभाए
संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि
अंतोपक्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं
न पुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले
संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलो-
एमो पडिक्कमामी निंदामी गरिहामी वउट्टेमो-
विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो आहारिहं
तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्झामो तस्समिच्छा-
मिदुक्कडं नमोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवा-
इयं अंगवाहिरियं उकालियं भगवंतं तंजहा
उत्तरज्झयणाइं दसाओकप्पोववहारो इसिभा-
सियाइं महानिसीहं जंबुद्दीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती

चंदपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमाण-
परिभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलि-
या वंगचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरु-
णोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए वेलंधरो-
ववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए
नागपरियावलियाओ निरयावलियाओ कप्पि-
याओ कप्पवडिंसयाओ पुप्फियाओ पुप्फचुलि-
याओ वह्नीदसाओ आसीविसभावणाओ दि-
ट्ठीविसभावणाओ चारणसुमिणभावणाओ म-
हासुमिणभावणाओ ते अग्गिनिसग्गाणं सव्वे-
हंपिएयंमि अंगबाहिरए उक्कालिए भगवंते
ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तोए ससंगह-
णीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं
पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तिया-
मो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते
भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंते-
हिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जंवा-

इयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपक्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोयमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहंतवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं नमोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो सूयगडो ठाणो समवाओ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइअदसाओ पराहावागरणं विवागसुयं दिट्ठिवाओ सुदिट्ठिसुहाओ सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे

सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपक्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोयमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगं गणिपिडगं भगवंतं

सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टंति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ सुय देवया भगवइ, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिंसुयसायरेभत्ती १ इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं

देववन्दन तथा प्रातःकाल और सायंकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुतियें ॥

॥ द्वितीया की स्तुति ॥

महीमंडणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केव-लनाणगेहं । महानंद लच्छी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भवस्संति ते सव्व भव्वाण ताया । तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा,सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥२॥ दुरुत्तार संसार कुव्वारपोयं, कलंकावली पंक पक्खाल तोयं । मणोवंछियच्छे सुमंदारकप्पं,जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥३॥ विकोसे जिणंदाणणं भोजलीणा, कलारूवलावण्ण सोहग्ग पीणा । वहं तस्स

चित्तं णिच्चं पि झाणं, सिरी भारई देहि मे सुद्धनाणं ॥४॥ इति श्रीसीमंधरजीकी स्तुतिः ॥

॥ पंचमी की स्तुति ॥

पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिव्यपदवी वश्याय मन्त्रोत्तमम् । येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनः सतनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः । कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधीशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं पंचेषु पंचत्वदम् । दीपाभं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या

पंचदिव्यं व्यधात् । प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न पश्चालिका, पंचम्यादितपोवतां भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥४॥ इति पंचमीस्तुतिः

॥ अष्टमी की स्तुति ॥

चउवीसे जिनवर प्रणमुं हुं नितमेव, आठम दिन करियें चन्द्रप्रभुनीसेव। मूरति मन मोहे जाणे पूनिम चंद, दीठां दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इन्द्र पूजे प्रभु जीन पाय, इन्द्राणी-अपछरा कर जोड़ी गुण गाय। नन्दीश्वर द्वीपें मिलि सुरवरनी कोड। अठाई महोच्छव, करता होडा होड ॥२॥ शेत्रुंजा शिखरें जाणी लाभ अपार, चउमासें रहिया गणधर मुनि परिवार। भवियणने तारे देई धरम उपदेश। दूध-साकरथी पण वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो-पडिक्कमणुं करिये व्रत-पच्चक्खाण, आठम तप करतां

आठ करमनी हाण। आठ मङ्गल थाये दिन-दिन कोडि कल्याण॥ जिनसुखसूरि कहे इम जीवत जनम प्रमाण॥ इति अष्टमी स्तुति॥

मौन एकादशी की स्तुति।

—०—

अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलम् तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपलं केवलमलम्। वलक्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः॥ १॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्यागमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गस्येवाहमहमिकया यत्र सलयं। जिनानामप्यायुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ०॥ २॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये। अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुबहुमु दः, क्षि०॥ ३॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचन्द्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः।

तपो यत्कर्त्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृदः, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौन एकादशी स्तुति ॥

॥ चौदश की स्तुति ॥

प्रथम तीर्थंकर आदिजिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गच्छ चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह । तेहने पाखी चउदस कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम जिम संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिन पूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चौदस जोवो चतुर सुजान । इण पर ठाम ठाम तुम देखो चौदस पाखी होय, भूला कांई भमो तुम प्राणी सांचो जिनधर्म जोय ॥२॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रे केरी साख, भविक जीव इक आराधो टीका चूर्णी भाष्य । आवश्यकसूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद-पुरवधर इनपर बोले ते निश्चय मन

राखो ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो मन वांछित फल होय, जे जे आज्ञासूधी पाले ज्यानों विघन हरेय। सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतर गच्छ मंडण कुमति विहंडण माणिक्यसूरि गुरुराय ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वनाथजीकी स्तुति ॥

हरिगीत च्छंद।

॥ द्रें द्रें कि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकिधर धप धोरवं, दोंदों किं दों दों दाग्डिदि दाग्डिदिकि द्रमकिद्रण रण, द्रैणवं। झंझि-झूंकि झूं झूं झणण रणरण, निजकि निजजन, रञ्जनम्, सुरशैल शिखरे भवतु सुखदं पार्श्वजिनपतिमज्जनम् ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थों-गिनि किटति गिगड्दां धुधुकि धुटनट पाटवम्, गुणगुणण गुणगण रणकि णेंणें गणण गुणगण, गौरवम्। झंझि झूंकि

झं झं, झणण रण रण, निजकि निज-जन, सज्जना, कलयन्ति कमला, कलितकल-मल मुकल मीश महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठं कि ठं ठं ठहिंक ठहिक ठहिं क ठहिंपट्टा ताड्यते, तललोंकि लोंलों, त्रेंषि त्रेंषिनि, डेंषि डेंषिनि वाद्यते। उँ उँ कि उँ उँ, थुंगि थुंगिनि, धोंगि-धोंगिनि कलरवे। जिनमतमनंतं महिम तनुतां नमति सुरनर मुत्तमम् ॥ ३ ॥ षुंदांकि षुंदां षुषुड्दि षुंदां षुषुड्दि दोंदों अम्बरे। चाचपट चचपट रणकि णोंणों डणण डें डें, डेंम्बरे॥ तिहां सरगमपधुनि निधपमगरस सस-ससस सुर सेवता, जिननाट्यरङ्ग कुशल-मुनि शं दिशतु शासन देवता ॥ ४ ॥

॥ आंबिलकी स्तुति ॥

—०—

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण

आगर शुभ समता रस धामी जी । श्रीसिद्ध-चक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रङ्गे जी, ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर सङ्गे जी ॥ १ ॥ अरिहन्त सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवन्ता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवन्ता जी ॥ एहनुं ध्यान धरन्तां लहियें, अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥ इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥ विमल कमलदल लोयण सुन्दर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद सेवक भविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ नायक सद्गुरु, श्रीजिन भक्ति

मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरिपभणे, श्री जिनलाभ सूरिंदा जी ॥ ४ ॥

॥ पर्युषण की स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाऊँ जिनवर वीर, जिनपर्व पजुसण दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूंती दिन पंचास, संवच्छरी पडिक्कमणुं करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करियें भलें भावें भरियें पुण्य भंडार ॥ वलि चैत्य प्रवाडें फिरतां लाभ अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परभावना धूप अगर उक्खेव, इम भवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मीवच्छल करियें वारंवार, केइ भावना भावे केइ तपसी शीलधार॥ अडदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥

॥ श्रीनेमिनाथजी की स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्ल-अक्षोभितं, घन सघनश्याम शरीर सुन्दर शंख लंछन शोभितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन भविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदें श्री-आदिजिनवर वीरजिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपा पुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिनवर तेह वंदूं सयल संघें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, छ छेद ग्रंथ प्रसत्त्थ अत्त्था चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन मत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी भाष्य पेंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ दुहुं दिसें बालक दोय जेहने सदा भवियण सुखकरू, दुख हरें अंबा लुंब सुन्दर दुरिय दो-हग अपहरू ॥ गिरनार मंडण नेमि जिनवर

चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुने सदा मंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥

॥ दीपमालिका की स्तुति ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्रभुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्त्तिकदर्शनागकरणे तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥ १ ॥ यद्गर्भागमनोद्भव व्रतवरज्ञानाक्षरासिक्षणे, संभूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिभवादिवीरचरमास्ते श्री जिनाधीश्वरा; संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यने नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयांचक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैक समये सम्यग्दृशां भूस्पृशां, भूयाद्भावुककारक प्रवचनं चेतश्चमत्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभावपरा सिद्धायिका देवता, चंचच्चक्रधरा

सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन चंद्रगिरस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥

॥ वीस विहरमान की स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरणकमल तसु नामूं सीस । अह-निस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंच मेरुपासे झलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर छे जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निस-दीस ॥ २ ॥ गणहर कहिय दुवालस अंग। थांनक वीस भणया तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे आणे रंग । ते नर पामे सुक्ख अभंग ॥ ३ ॥ जिनशासनदेवी चउवीस। पूरे मुझ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे । तिहुअण जन मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिनकी स्तुति ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं, सकलकेवलनि-

मंलसद्गुणं । नगरजेसलमेरविभूषणं, भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरेश्वरनम्रपदांबुजाः, स्मरमहीरुहभंगमतंगजाः । सकलतीर्थंकराः सुख कारका, इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिनशासनं, विपुलमंगलकेलिविभासनं । प्रबलपुण्यरमोदयधारिका, फलति तस्य मनोरथ मालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी, जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी । नरनरेश्वरकिन्नरसेविता, जयतु सा जिनशासनदेवता ॥ ४ ॥

॥ आदिनाथजीकी स्तुति ॥

वरमुत्तियहारसुतारगणं, वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं । पंकय छप्पयदेवगणं, सिरिअब्भुय वंदू आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसियपायजुआ, घणमोहमहीरुहमत्तगया । परिपालिअनिच्चलजीवदया, मम हुंति जिनागमसुक्खसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं, कल्लाण

पयोरुहवुढ्ढिकरं । सुहमग्गकुमग्गपयासकरं, पणमामि जिनागममन्हिकरं ॥३॥ सिरइन्दसमुज्ज-लगायलया, सुहझाणविणम्मियएगलया । असु-रिंदसुरेंदसुरप्पणया, मम वाणि सुहाणि कुणे-सुसया ॥ ४ ॥

॥ आदिजिन की स्तुति ॥

प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमातमपद धारीजी । प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिन राज जगत गुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोक-दिनेसर, आतमसंपद भूपोजी ॥ १ ॥ पांच भरत वलि पांचे एरवत, पंच विदेह मझारोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव पद सारोजी। वलिय अनागत काल अनंता, थास्ये इणही प्रकारोजी। संप्रति काले वीस विदेहे, वंदु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूथ्यां श्रीगणधारोजी । अंग दुवालस अतिसे

उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय भंग प्रमाणे, जिहां षट्द्रव्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्यां, तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुन्दर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरिदेवीजी । श्रीजिनशासन सानिध करणी द्यो, वंछित नित सेवीजी ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजिनचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥४ इति॥

॥ अजितनाथजी की स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्रणमे देव अने देविंद ॥ भवलहरी गहरी सव मन धरी अमंद । श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिशय वलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस अगणित ऋद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंदु जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुत्र अरथ अनोपम जिन भापित सिद्धांत । स्याद्वाद नया-

दिक हेतुयुक्ति नवि भ्रांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सहनाणी। सुणिये नित भविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ शासननी साची देवी सानिधकारी। दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुख-कारी ॥ साचे मन समरे ते सुख लाभ अपारी। जिनलाभ पयंपे होज्यो जय-जय कारी ॥ ४ ॥

॥ श्रीमहावीर स्वामी की स्तुति ॥

यदंह्रिनमतादेव, देहिनः संति सुस्थिताः। तस्मै नमोस्तु वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १॥ सुरपतिनतचरणयुगान्। नाभेयजिनादिजिनपति। नौमि यद्वचनपालनपरा जलांजलिंददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ वदंति वृन्दारुगणाग्रतो जिनाः, सदर्थतो यद्रचयंति सूत्रतः। गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे, तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥ ३ ॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः, सर्वज्ञशासनसुखाय-समुद्यताभिः श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान्। भव्यान् जनान्नयतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥

॥ लघ्वी स्त्रोछंदसि वीर स्तुतिः ॥

वीरं देवं नित्यं वंदे १

जैनाः पादा युष्मान् पांतु २

जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै ३

सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यम् ॥ ४ ॥

श्रीवीरजिन स्तुति ।

मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मांन, दिन-दिन सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद, कामित भरपूरण अभिनव सुरतरुकंद ॥ भवियणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवा वीस ॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत, गणधर ते गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके एकांत,समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र-सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे

विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥ अहनिसि कर जोडी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिन लाभ सूरिंद ॥ ४ ॥

॥ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुति. ॥

नाभेयं संभवं तं, अजियसुविहयं, नंदणं सुव्वयव्वा ॥ सुप्पासं पउमनाहं, सुविघशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं धर्मशातिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं, नमिमविनमिसौ, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गब्भे हाणेसु जम्मे, वय गहणावणे, केवले लोयकाले, पत्थाणिव्वाणठाणे, पगवण समए, संथुआ भावसारं ॥ देवेहिं, भवणावणासए, विंतरे किंन्नरोहिं, तं मभ्भं दिंतु मोक्खं, सयलजिनवरा, पंच कल्याण एसु ॥ २ ॥ हेऊं तित्थंकराणं, जमिहअणवमं, भावतित्थंकरंतं । सव्वन्नूणं च पासा, अहमविनियमा, जायए सव्वकालं ॥ अन्नुन्नप्पत्तिएहिं, यममहणं, वीयअंकूररूवं । अव्वाबाहं जिणाणं

जयउ पवयणं, पंच कल्याण एसु ॥३॥ गोरीगंधा रोकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहव्वा। सव्वछा माणमंबा, वरकमलकरा, रोहिणीवत्तअंबा ॥ पन्नत्ती वत्तपउमा, धणइसरणई, खित्तगेहाइवासा। संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच कल्याण एसु ॥४॥ इति श्रीचतुर्विंशतिजिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ श्रीशत्रुंजयको स्तुति ॥

सेत्रुंजामंडण आदिदेव। हूं अहनिस समरूं तास सेव॥ रायणतल पगलां प्रभूतणा। पूजि सफल फल सोहामणा ॥ १ ॥ तेवीस तीर्थंकर समवसरया। विमलाचल ऊपर गुण भरया॥ गिरि कडणे आया नेमनाथ। ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम सांमी उपदिस्या। जंवुगणधरने मन वस्या॥ पुडरगिरि महिमा जे मांह। ते आगम समरूं मनउच्छाह ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुख कवडयक्ष। मन वंछित पूरण कल्पवृक्ष।

सिद्धक्षेत्रसिहरे सहदेवता । भणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥४॥ इति श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥

॥ नेमिनाथजीकी स्तुति ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण। दीक्षा वर केवल ज्ञान अने निरवांण ॥ जसु तीन कल्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु भवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ २ ॥ अठावय चंपा पावापुर शुभ ठाण आइम बारम जिण चउवीसम जिणभाण ॥ अजितादिक वीसे पुहता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमु अधिक उल्हास ॥ २ ॥ जिनवर मुख हूंती सुणि त्रिपदी ततकाल । गणधारक गूंथ्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयभंग पदारथ सत्त २ नव तत्त । भवियणने तारे सायर जिम बोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केसरि अंबा पउमादेवी प्रत्यक्त । श्रीसंघ मनोरथ पूरे वासुरवृत्त ॥ ध्यावे सुख पावे श्रीजिनलाभ सूरी । जिनवर सुप्रसादे आस फले सुजगीस ॥४॥

॥ श्री शितलनाथजी की स्तुति ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दृढरथ नृप राणी नंदाकेरो नंद ॥ भद्दिलपुर स्वामी फेडे भवना फंद । चित चोखे नमिये श्री शीतलजिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अनंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहु भवणे ठवणा सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविध । नयभंग निक्षेपा स्याद्वाद मितसिद्ध ॥ भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासे कोडि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक्ष असोका सासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥ चिंता दुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिनलाभसूरिश ॥ ४ ॥

॥ समवसरण विचारगर्भित स्तुति ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगडो सार

अढी गाउ उंचो पिहुलो जोंयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पद्मासन सुखकार । श्रीतीरथनायक बैसे चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन छत्र सिरोवर चामर ढोले इंद । देवदुंदुभि वाजे भांजे कुमति फंद ॥ भामंडल पूंठे ऊलके जांण दिनंद । तिहुअण जन भवि मन मोहे सयल जिनंद ॥२॥ द्रव्यभाव सुठवणा नाम निक्षेपा च्यार । जिण गणहर भाख्या सूत्र सिद्धांत मझार ॥ जिनवरनी पडिमा जिन सरखी सुखकार । शुभ भावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥ दुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । भवच्छेद कृपाणी मीठो अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिबूझो भवि प्राणी । सुयदेवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री चैत्री पूणिमाकी स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजागिरि नमिये ऋषभदेव पुंडरीक । शुभ तपनी महिमा सुण गुरुमुख निरभीक ॥ शुद्ध

मन उपवासे विधिसुं चैत्य वंदनीक। करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥१॥ शक्रस्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस। अक्षत गिणतीसे चढता तिम चालीस॥ पंचासनी पूजा भापइ इम जगदीस। तेहिज नित प्रणमुं स्वामी जिन चोवीस ॥२॥ सुदि पञ्चनी पूनम चेत्र मास शुभ वार। विधिसेती लहिये आगम साख्र विचार॥ इम सोले वरसलग धरिये ज्ञान उदार। करतां नर नारी पामे भवनो पार ॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद। चक्केसरीदेवी सेविय नर सुरवृंद॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद। जंपे गणनायक श्रीजिनलाभसूरिंद ॥ ४ ॥

॥ नवपदजी की स्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद। जिण नवपद महिमा भाषी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नवदीस। नव आंबिल

करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरिहंत वलि सिद्ध आचारज उवझाय। मुनि दरसण तिम वलि नाण चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हज्जार। सहु जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥२॥ बारस अडवत्तीस पण वीस सग वीस सार। सडसठ इक्कावन सीतर पच्चास प्रकार ॥ इण संख्या काउसग परदत्ता परिणाम। आगम भाषित विधि इम कीजे अभिराम ॥ ३ ॥ चक्केसरिदेवी तिम विमलेसर जक्ख। श्रीपालतणीपर पूरे वंछित सुक्ख ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र भविप्राणी। जिनहर्ष बढ़े नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥४॥ इति ॥

॥ वीस स्थानककी स्तुति ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अभिनव कामीजी। ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामिजी ॥ थानक वीसे आगम भणिया वीतराग गुण भुक्ताजी। जे नर अंतर

आतम ध्यावे शिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन सूरि थिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र ब्रह्मचा-रज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्रो नाण श्रुत तित्थ भूपोजी । ए पद निज भविभावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपोजी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी । द्रव्य-भावसें विधि परकासे तीर्थंकर पद खासोजी ॥ तीजे भव वर वीस थांनकनी सेव करे भव्य प्राणी जी । समकित वीजे जे निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरु सम तप फल हे मोटो श्रीसुरदेवि सहाईजी । खरतर गच्छ जिन आज्ञाधारी पाटोधर वरदाईजी ॥ जिन सौभा-ग्यसूरिंद पसायैं हंस सूरिंद गुण गावेजी । संघ सकलकूं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ।४।

॥ वीस स्थानक की स्तुति ॥

अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज थिवराण ।

उवझाय साहू नाण दंसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम जिनभाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो बीसे ठाण ॥ १ ॥ उत्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । वलि काल जघन्ये जिनवर वीस गंभीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक बे वेला जिनवंदन त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग गुण स्तवना पूजा प्रभावना सार । इम शासन वच्छल करतां भवनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जरक जरकणी सुरपती वेयावच्च कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे मन रंग । देवचंद्र आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥

॥ नवपदजी की स्तुति ॥

अनुपम गुण आगर सुरक सागर वंदित सुरनर वृन्दाजी ॥ नवपदमांहे मुख्य वखाण्या

ऋषभादिक जिनचंदाजी। भाव धरी ने जे भवि वंदे वेदे कर्म निकंदाजी। नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो पावो सुरक अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया सकल मुनि सुखकारीजी। दंसण-नाण-चरण-तप नवपद धारे चित संसारीजी। नवमें भव भवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी। वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे भाखीजी ॥ २ ॥ द्वादस आठ छत्तीसे गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी। सडसठ इक्कावंन वलि जैती सितर पच्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम थी नव दिहसेंजी। तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंविल नव विहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयक्ष चक्केसरीदेवी रिध-सिध वंछित दाताजी। उली नव-विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी। खरतर गच्छ जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद मुक्ताजी। जिन सौभाग्य सूरिंद पसाये हंससूरिंद गुण उक्ताजी ॥ ४ ॥

॥ शत्रुजय की स्तुति ॥

विमलाचल मंडन जिनवर आदिजिणंद। निरमम निरमोही केवलज्ञान दिणंद। जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद। सेत्रुंजागिरिसिखरे समवसरया सुखकंद ॥ १ ॥ इण चउवीसीमां ऋषभादिक जिनराय। वलि काल अतीते अनंत चोवीसी थाय॥ ते सवि इण गिरवर आवी फरसी जाय। इम भावी काले आवस्ये सवि मुनिराय ॥ २ ॥ श्रीऋषभना गणधर पूंडरीक गुणवंत। द्वादस अंग रचना कीधी जेण महंत ॥ सब आगम मांहे सेत्रुंज महिम महंत। भाखी जिन गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुह कवड पमुह सुर सार। जसु सेवा कारण थापे इन्द्र उदार॥ देवचंद्रगणि भाखे भविजनने आधार। सब तीरथमांहे सिद्धाचल सिरदार॥४॥

॥ श्रीशांतिनाथजी की स्तुति॥

शांति जिनेसर जग अलवेसर अचिरा उदर

अवतरियाजी । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हथ
णापुर सुख करियाजी ॥ ईतउपद्रव मारि विकारी
शांति करी संचरियाजी । जे भवि मंगल कारण
ध्यावे ते हुय गुण-गण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्त्तमान
जिन सव सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी ।
वारे चक्री नव नारायण नव प्रतिचक्री आनंदोजी ॥
रामादिक जे पुरप सलाका वंदत पाप निकं-
दोजी । द्रव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे भव
भय छंदोजी ॥ २ ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा
श्रीजिन सरखी भाखीजी । द्रव्य भाव विहुं भेदे
पूजा महानिशीथे साखीजी ॥ विपय निवृत्ती सत्
आरंभे विनय तपी ते जाणोजी । शुभयोगे नहि
आरंभकारी भगवइ अंग प्रमाणोजी ॥३॥ थापना
सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने सुखकारीजी ।
कारणथी सव कारज सीझे जिनवर आज्ञा
धारीजी । श्रीजिनकीर्त्ति सूरीश्वर गच्छपति पा-
ठक श्रीऋद्धिसारीजी । समकितधारी देव सहाई
सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥

॥ श्रीसीमधरजिन की स्तुति ॥

॥ मन सुद्ध वंदो भावे भवियण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी । श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृषभलंछन सुखदायाजी । विजय भली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस विख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ मोह मिथ्यात तिमिर भव नासन अभिनव सूर समाणीजी । भवोदधि तरणी मोक्ष निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचागुली माईजी । विघन विदारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिभुवनमोहनी अंतर

जामनी जग जस ज्योति सवाईजी। सांनिध-
कारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सहाईजी ॥४॥

॥ श्रीज्ञानपंचमी की स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति
दातार। उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक
भाव अपार। श्रीपंचानन लांछन लांछित वंछित
दान सुदत्त। श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो
भविजन पत्त॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक
बोधक भव्य उदार। पंच अनुव्रत पंच महाव्रत
विधि विस्तारक सार। जे पंचेंद्रिय दम सिव
पहुता ते सगला जिनराय। पांचम तप धर भवि-
यण उपर सुथिर करी सुपसाय॥ २ ॥ पंचाचार
धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण। पंच ज्ञान
विचार विराजित भाजत मद पंच बाण। पंचम
काल तिमरभरमांहे दीपकसम सोभंत। पांचम
तपफल मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत॥ ३ ॥
पंच परम पुरुषोत्तम सेवाकारक जे नरनार।

निरमल पांचम तपना धारक तेहभणी सुविचार।
श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुक्ख अमंद।
श्रीजिनलाभ सुरिंद पसाये कहे जिनचंद
मुणिंद ॥ ४ ॥

॥ श्रीमौन एकादशी की स्तुति ॥

अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान।
श्रीमल्लि जनम व्रत केवलज्ञान प्रधान । इग्या-
रस मिगसर सुदि उत्तम अवधार। ए पंच-
कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे
अनुपम एक अधिक गुण धार। इग्यारे बारे
प्रतिमा देसक धार। इग्यारे दुगुणा दोय अधिक
जिनराय। मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट
जाय ॥ २ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उप-
वास। वलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुविलास।
जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान। इक
चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर
असुर भुवण वण सम्यग् दरसणवंत। जिनचंद्र

सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ सकलमें आ-
राधक वहु जाण। जिनशासन देवी देव करो
कल्याण ॥ ४ ॥

॥ श्रीरोहिणीतप की स्तुति ॥

जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत।
रोहिणी तपनो फल भाख्यो श्रीभगवंत। नर-नारी
भावे आराधो तप एह। सुख संपत लीला लच्छी
पामे नेह ॥ १ ॥ ऋषभादिक जिनवर रोहिणी
तप सुविचार। जिनमुख परकासे वेठी परखदा
वार। रोहिणी दिन कीजे रोहिणीनो उपवास।
मन वंछित लीला सुन्दर भोग-विलास ॥ २ ॥
आगममें एहनो वोल्यो लाभ अनंत। विधसुं
परमारथ साधे सुधो संत। दुख-दोहग तेहनो
नासि जाय सव दूर। वलि दिन-दिन अंगे वाधे
अधिको नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिणी
तप-फल जाण। सौभाग्य सदा जे पामे चतुर
सुजाण। नित घर-घर महोच्छव नित नवला

सिणगार। जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ चतुर्दशी की स्तुतिः ॥

अविरल कमल गवल मुक्ता फल कुवलय कनक भासूरं। परिमल वहुल कमलदल कोमल पदतललुलितनरेश्वरं ॥ त्रिभुवन भवन सुदीप्र-दीपक मणिकलीका विमल केवलं। नवनव युगलजलधि परमित जिनवरनिकरं नामाम्यहं ॥१॥ व्यंतर नगर रुचिक वैमानिक कुल गिरि कुंडस-कुंडले। तारक मेरुजलधि नंदीसर गिरि गजदं-तसुमंडले ॥ वक्षस्कार भवन वन जोत्तर कुरुवै-ताढ्य कुंजिगा। त्रिजगति जयति विदितशा-श्वतजिननतिततिरिहमोपारगा ॥२॥ श्रुत रत्नेक जलधि मधु मधु मधुरिम रसभर गुरु सरोवरं। परमततिमिरकिरणहरणोध्दुर दिन कर किरण सहोदरं ॥ गमनयहेतुभङ्गगंभीरिमगणधरदेव ं। जिनवर वचन मवनिमवतात् सुचिदि-

शतु नतेषु संपदं ॥३॥ श्रीमद्वीर चरम तीर्थाधिप मुख कमलाधि वासिनी। पार्वण चंद्र विशद वदनोज्जवल राज मराल गामिनी ॥ प्रदिशतु सकल देव-देवी-गण परिकलिता सतामियं विच कल-धवल कुवलयकल मूर्त्तिः श्रुतदेवी श्रुतोच्चयं ॥४॥

॥ बीजकी स्तुति ॥

मनसुध वंदो भावेभवियण श्रीसीमंधर राया जी। पांचसे धनुष प्रमाण विराजित कंचन-वरणी कायाजी॥ श्रेयांस नरपति सत्यकी नंदन वृषभ लंछन सुखदायाजी। विजय भली पुख-लाइव विचरे सेवे सुरनर पायाजी॥ १ ॥ काल अतित जे जिनवर हूवा होस्ये जेह अनंता जी। संप्रतिकाले पंचविदेहे वरतवीस विख्याताजी॥ अतिशयवंत अनंत गुणाकर जग बंधव जगत्राता जी। ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिव सुख सताजी ॥२॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी। मोहमिथ्यात्व तिमिर-

भरनाशन अभि नव सूर समाणीजी ॥ भवोदधि तरणी मोक्ष नीसरणो नयनिक्षेप सोहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भविप्राणी जी ॥३॥ शासनदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचांगुली माईजी । विघन विडारणी संपत्तिकारणी सेवक जन सुखदाईजी ॥ त्रिभुवनमोहनी अंतरजामनी जगजस ज्योतिसवाईजी । म्हानिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सुहाईजी ॥ ४ ॥

॥ पञ्चमीकी स्तुति ॥

पंच अनंत महंत गुणाकर पंचमि गति दा- तार । उत्तम पंचमि तप विधि दायक ज्ञायक भाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांछन लांछित बांछित दानसुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिणंदसु वंदो आणंदो भविपक्ष ॥१॥ पूरण पंचमहाश्रव रोधक बोधक भव्य उदार ॥ पंच अणुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दमि शिव पुहता ते सगला जिनराय । पंचमी तप धर भवियण ऊपर

सुथिर करो सुपसाय ॥२॥ पंचाचार धुरंधर युगवर पंचम गणधर वाण। पंचज्ञान विचार विराजित भाजित मद पंच वाण ॥ पंचम काल तिमिरभर-मांहे दीपक सम सोभंत। पंचम तप फल मूल प्रकाशक ध्यावो जिनसिद्धांत ॥३॥ पंच परम पुरु-षोत्तम सेवा कारक जे नर-नार। वलि निरमल पंचमी तप धारक तेहभणी सुविचार ॥ श्रीसिद्धा-यिका देवी अहनिस आपो सुख अमंद। श्रीजि-नलाभ सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ४

॥ ग्यारसकी स्तुति ॥

अरनाथ जिनेसर दीक्षा नमीजिन ज्ञान। श्रीमल्लिजन्म व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार। ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥१॥ इग्यारे अनुपम एक अ-धिक गुणधार। इग्यारे वारे प्रतिमा देशक धार। इग्यारे दुगणा दोय अधिक जिनराय। मन सुध सेव्यां सब संकट मिटजाय ॥ २ ॥ जियांवरस

इग्यारे कीजे व्रत उपवास । वलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगम वाणी जाणी जगत प्रधान । एक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥३॥ सुर असुर भुवणवण सम्यगदरसन वंत ॥ जिनचंद्र सुसेवक वैयांवच्च करंत ॥ श्री संघ सकलमें आराधक बहुजाण । जिन शासन देवी देव करो कल्याण ॥ ४ ॥

॥ श्री महावीर स्वामीकी स्तुति ॥

महावीर जिनेश्वर प्रणमु वारंवार ।
सर्वज्ञ निरंजन करुणारस भंडार ॥
जगनाथ दिवाकर सुखकर हितकर जान ।
जो भविजन सेवे पावे केवलज्ञान ॥ १॥
तीर्थंकर शंकर सकल विश्व आधार ।
अगणित गुण वरिया आतम ज्ञान उदार ॥
शिवपद जग उत्तम आनन्द अनुभव सार ।
पदपंकज सेवा सुख सम्पत्ति दातार ॥ २ ॥
श्रुतज्ञान जगतमें करता बहु उपकार ।

शिरताज वखाण्या अनुयोगद्वार मझार ॥
अमृत रस पीवो जिन आगम सुखकन्द।
जो नित प्रति ध्यावे पावे परमानन्द ॥ ३ ॥
जिन आणा मीठी प्रेम धरी चित लाय।
निजगुरु प्रसादे दुःख दुर्गति मिट जाय ॥
आनन्द मनरंगे भवसागर तिरजाय।
श्रुतदेवी सानिध निज करणी हुलसाय ॥४॥

॥ वर्धमानजिन स्तुति ॥

मूरति मन मोहन कंचन कोमल काय। सिद्धारथ नन्दन त्रिशलादेवी सुमाय॥ मृगनायक लंछन सातहाथ तनुमान। दिनदिन सुख दायक स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद। कामित भर पूरण अभिनव सुरतरु कंद॥ भवियणने तारे प्रवहण सम निशि दीस। चौवीशे जिनवर प्रणमुं विसवा वीस ॥२॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत। गणधरने गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत॥ सुरगुरु पण महिमा

कहि न सके एकंत । समरुं सुखसायर मनशुद्ध सूत्र-सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघन विशेष । सहु संकट चूरे पूरे आश-अशेष ॥ अह निश कर जोड़ी सेवे सुर नर इंद । जंपे गुणगण इम श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥

॥ श्रीसीमंधरजी की स्तुति ॥

वंदू जिनवर विहरमांण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला कांत दांत, करुणारस धामी ॥ १॥ कांचनगिरि सम देह, कांति वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥२॥ पूर्व विदेह विराजता ए, पुंडरीकनी भांण ॥ प्रभु द्यो दरसन संपदा, कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥

॥ समेतशिखरजीकी स्तुति ॥

पूरव दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिखर समेतको ॥ चाहूं दरसण चित्त ॥१॥ प्रथम चरम बारम प्रभु । बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सु ज-

गीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें। जिनवर गणधर वांण ॥ भविजन भेटो भगतसुं। तीरथ करण कल्याण ॥ ३ ॥

॥ जिनस्तुति ॥

दर्शनाद्दुरितध्वंसी, वंदनाद्वांछितप्रदः ॥
पूजनात्पूरकः श्रीणां, जिनःसाक्षात्सुरद्रुमः ॥

॥ श्रीआदिनाथजी की स्तुति ॥

सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं. प्रलंबबाहुं सुविशाल लोचनम् ॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं. नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥

॥ शांतिनाथजी की स्तुति ॥

सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवा शिरनामी ॥ कंचन वरण शरीर कांति. अतिशय अभिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन. नरपति कुलचंद ॥ मृगलंछन धर पद कमल. सेवे सुर-नर वृन्द ॥ जुगमां अमृत जे हवी ए. जास अखंडित आण ॥ एक मनें आराधतां. लहियें कोडि कल्याण ॥ ४ ॥

॥ श्रीनेमिनाथजी की स्तुति ॥

ग्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥
यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समु-
द्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥
सुन्दर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ
गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अभिराम ॥
तास त्तमा कल्याण मुनि, निशिदिन नमत
कल्याण ॥ ५ ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथजी की स्तुति ॥

पुरसाद्दाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥
नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥
कामित पूरण कलप साख, वामासुत सार ॥ श्री
गौडीपुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभु-
वन पति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥
ध्यान धरंतां एह नुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥

॥ श्रीमहावीर प्रभुकी स्तुति ॥

वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥

जन्म जरा मरणादि रूप. भव-ताप निवारण ॥
श्री सिद्धारथ तात-मात, त्रिशला ननुजात ॥
सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥
अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥
क्षमाप्रमुख कल्याणमुनि. आपो करि सुपसाय ॥७॥

॥ सरस्वती की स्तुति ॥

अवामा वामादे सकलमुभयः कालघटना । द्विधा भूतं रूपं भगवदभिधेयं भवतिय ॥ त्तदंतमंत्रं मे स्मरहरमयं सेंदुममलं निराकारं शस्वज्जप नरपते सिव्यतु सने ॥ १ ॥ अविरलशब्दघनोघा। प्रक्षालितसकलभूतलकलंका ॥ मुनिभिरुपासितचरणा । सरस्वती हरतु मे दुरितं ॥ २ ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य. दर्शनं पापनाशनं । दर्शनं स्वर्गसोपानं. दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां. साधूनां वंदनेन च । न तिष्ठति चिरं पापं. छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं. नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापे-

भ्यो, जिनेंद्र ! तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

हत्था जेह सुलक्खणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत १ वाडी चंपो मोगरो, सोवन्न कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसां, पांचू आंगलियांह ॥१॥ जीवड़ा जिनवर पूजिये, पूजाना फल होय ॥ राजा नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलाकरे बागमें, बैठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंद्रमा, त्यूं सोभें महाराज ॥४॥ जगमें तीरथ दो वड़ा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि ऋषभ समो सरया, उण गिरि नेमकुमार ॥५॥ मोहनी मूरत पासकी, मो मन रही लोभाय ॥ ज्यूं महदीके पातमें, लाली लखी न जाय ॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढ़ी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अजहु न वावडे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां, वसे जो गढ़ गिरनार ॥ चूंच भरे फल फूलसुं, चाढ़े नेमकुमार ॥ ८ ॥ श्रीकेशरि-

यानाथकूं, नमन करूं थित चाय ॥ ऋद्धि-वृद्धि मोहे दीजिये, दिन-दिन अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेसरियानाथके, केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लाडले, वसे पहांडां बीच ॥ १० ॥ इस रागको नाम कल्याण हे, प्रभुजीको नाम कल्याण ॥ सकल सभा कल्याण हे, जब प्रगटी राग कल्याण ॥११॥ सोरठ राग सुहामणो, मुखां न मेलो जाय ॥ ज्यूं-ज्यूं रात गलंतडी, त्यूं-त्यूं मीठी थाय ॥१२ धंदा कर धन जोडियो, लाखां उपर कोड़ ॥ मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड़ ॥ १३ ॥

दया गुणांरी वेलड़ी, दया गुणांरी खांण ॥ अनंत जीव मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया सुगति-तरु वेलडी, रोपी आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंडन भई, सींची सब जिनंद ॥२

भ्यो, जिनेंद्र ! तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

हत्था जेह सुलक्खणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत १ वाडी चंपो मोगरो, सोवन्न कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसां, पांचू आंगलियांह ॥१॥ जीवड़ा जिनवर पूजिये, पूजाना फल होय ॥ राजा नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलाकरे बागमें, बैठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंद्रमा, त्यूं सोभें महाराज ॥४॥ जगमें तीरथ दो वड़ा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि ऋषभ समो सर्या, उण गिरि नेमकुमार ॥५॥ मोहनी मूरत पासकी, मो मन रही लोभाय ॥ ज्यूं महदीके पांतमें, लाली लखी न जाय ॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढ़ी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अजहु न वावडे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां, वसे जो गढ़ गिरनार ॥ चूंच भरे फल फूलसुं, चाढ़े नेमकुमार ॥ ८ ॥ श्रीकेशरि-

यानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ ऋद्धि-बुद्धि मोहि दीजिये, दिन-दिन अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेसरियानाथके, केसर हंदा कीच ॥ मरुदे-वाके लाडले, वसे पहाडां बीच ॥ १० ॥ इस रागको नाम कल्याण हे, प्रभुजीको नाम कल्याण ॥ सकल सभा कल्याण हे, जब प्रगटी राग कल्याण ॥११॥ सोरठ राग सुहामणो, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं-ज्यूं रात गलंतडी, त्यूं-त्यूं मीठी थाय ॥१२ धंदो कर धन जोडियो, लाखां उपर कोड़ ॥ मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड़ ॥ १३ ॥

दया गुणांरी वेलड़ी, दया गुणांरी खांण ॥ अनंत जीव मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगति-तरु वेलडी, रोपी आद जिनंद ॥ श्रावक कुल-मंडन भई, सींची सर्व जिनंद ॥२
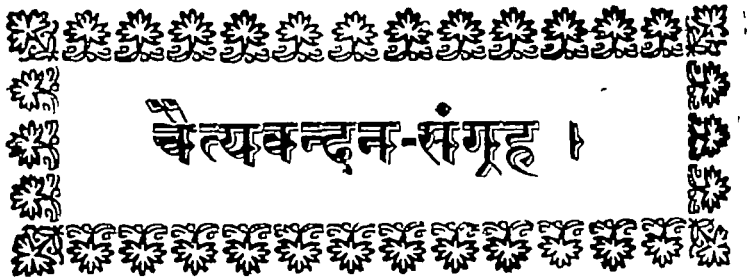
॥ सिद्धाचलजी का चैत्यवंदन ॥
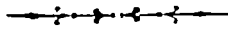
सिद्धो विज्जाइ चक्की नमि विनमी । मुणी पुंडरीओ मुनिंदो ॥ वाली पज्जुन्न संबो भरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो कोडी पंच द्रविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विमलगिरिमहं तित्थमेयं नमामि ॥ १ ॥

॥ श्रीस्तंभन पार्श्वनाथजी का चैत्यवंदन ॥

श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंभणपुर ठांम ॥
सुरतरु सम सिरि पास सांम, राजे अभिरांम १
विबुधेसर सिरि अभय देव संठवियाणं दिय
थुइ जलसिरिय नील वर्ण, फण पल्लव मंडिय २
सुर-नर सुह कुसुमावलीए, शिवफल दायक

जांण ॥ आराहओ जदि एग मण, पावो पद कल्यांण ॥ ३ ॥

॥ नवपदजी का चैत्यवंदन ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुन्दर रूप, सेवो सिद्ध अनंत संत आतम गुण भूप ॥ आचारज उवझाय साधु समतारस धाम, जिन भाषित सिद्धांत शुद्ध अनुभव अभिराम ॥ १ ॥ बोध-बीज गुण संपदा ए, नाण-चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परभव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि सम जास जोग बहु पुन्ये लद्धो ॥ तिहुअण सार अपार एह महिमा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संभारो ॥३॥ सिद्ध चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद स्वरूप ॥ अमृतमय कल्याण-निधि प्रगटे चेतन भूप ॥ ४ ॥

॥ सीमंधरजिन-चैत्यवंदन ॥

सीमंधर परमातमा, शिवसुखना दाता ॥

पुक्खलवइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १॥
पूर्व विदेह पुंडरी गिणी, नयरी ए सोहे ॥ श्रीश्रे
यांस राजा तिहां, भविअणनाँ मन मोहे ॥ २ ॥
चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकी राणी मात ॥
कुंथु-अरजिन अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥
अनुक्रमे प्रभु जनमीया, वली यौवन पावे ॥
मात-पिता हरखे करी, रुकमिणी परणावे ॥ ४ ॥
भोगवी सुख संसारनां, संजम मन लावे ॥ मुनि-
सुव्रत नमि अंतरे, दीक्षा प्रभु पावे ॥ ५ ॥ घाती
कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवलनाण ॥ ऋषभ
लंछने शोभता, सर्व भावना जाण ॥६॥ चोरासी-
जस गणधरा, मुनिवर एकसो कोड ॥ त्रण भुवनमां
जोअतां, नहिं कोइ एहनी जोड़ ॥ ७ ॥ दश
लाख कह्या केवली, प्रभुजीनो परिवार ॥ एकस-
मय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥८॥ उदय
पेढाल जिनांतरेए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जस-
विजय गुरु प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥९॥

सीमंधरजिन-द्वितीय चैत्यवंदन ॥

श्रीसीमंधर जगधणी, आ भरते आवो ॥
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥
सकल भक्त तुमे धणीए, जो होवे अम नाथ ॥
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहीं मेलुं हवे साथ २
सयल संग छंडी करीए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय
तमारा सेवीने, शिवरमणी वरिशुं ॥ ३ ॥ ए अ-
लजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव ॥ इहां
थकी हुं वीनवुं, अवधारो मुझ सेव ॥ ४ ॥

श्रीसिद्धाचलजी का चैत्यवंदन ॥

विमलकेवलज्ञानकमला, कलित त्रिभुवन
हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुतचरणपंकज, नमो आदि
जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमलगिरिवरशृङ्गमंडण, प्रवर-
गुणगणभूधरं ॥ सुरअसुर किन्नर कोडि सेवित ॥
नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण, गाय
जिन गुण मनहरं ॥ निर्जरावली नमे अहनिश ॥
नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी,

कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरिवर शृङ्ग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पातालनरसुरलोक मांही, विमलगिरिपरतो परं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवरशिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईये ॥ निजशुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाइये ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपदस्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥

॥ सिद्धाचलजी का दूसरा चैत्यवंदन ॥

श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र दीठे दुर्गति वारे ॥ भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाण रिखवदेव, ज्यां ठविआ प्रभुपाय ॥ २ सूरजकुंड सोहामणो, कवडजक्ष अभिराम ॥

नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥३॥

सीद्धाचल जीका चैत्यवंदन ॥

परमेसर परमातमा, पावन परसिद्ध ॥
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे में दिट्ठ ॥ १ ॥
अचल अकल अविकारसार, करुणारस सिंधु ॥
जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥
गुण अनंत प्रभु ताहरा, किमही कह्या न जाय ॥
राम प्रभु जिनध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ।६।

कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गि
शृङ्ग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य
सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्ति
णी वर्या रंगे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पातालनरसु
मांही, विमलगिरिपरतो परं ॥ नहि अधि
रथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम
गिरिवरशिखर मंडण, दुःख विहंडण
निजशुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति
॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा
स्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवाकर
ज्ञविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥

॥ सिद्धाचलजी का दूसरा चैत्य

श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र दीठे
भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल ती
पूर्व नवाण रिखवदेव, ज्यां ठविआ
सूरजकुंड सोहामणो, कवडजक्ष

पण प्रभु लग पहुंचीजें तेह नही पग दोड़ ॥३॥
आडा डुंगर अति घणा विच वहे नदिया पूर,
किम मुझथी अवराये प्रभुजी एटली दूर ॥ आं-
खडली उलझो करे जोयवा मुख जिनराज,
पांख डली पाई नही ते विन किम सरे काज ॥४॥
वाटड़ली वहतो कोई न मिले संगू साथ, काग-
लियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणुं
शशहर साथें कहुं संदेशा जेह, पण अलगो थई
ऊपरि वाडे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें
प्रभुजी तुमथी एथ अवाय, तो इण भरतना
वासी भविजन पावन थाय ॥ साहिबनी तो सुन
जर सघले सरखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू
फल प्रति जोय ॥ ६ ॥ अलगो छं पण माहरे
तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हिय-
डे खिण-खिण चित्त ॥ हुं छूं सेवक तुं छे मा-
हरो आतमराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि
ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे दिलथी मुझशुं धरजो

॥ पञ्चतिर्थी का स्तवन ॥

सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक जगगुरु मुझ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय भली पुष्कलावई नाम, जिहां विचरे जिनवर जी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥ धन ते लोक सुणे जे जोजन गामिनी वाण, धन ते महियल चरण धरें जिहां जिनवर भाण ॥ धन ते भविजन जे रहे प्रभु ताहरे परसंग, वदन कमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांभल कान, मिलवाने उलसे मन माहरुं धरुं एक ध्यान ॥ भगति जुगति करवानी छे मुझ सघली जोड,

पण प्रभु लग पहुंचीजें तेह नही पग दोड़ ॥३॥ आडा डुंगर अति घणा विच वहे नदिया पूर, किम मुझथी अवराये प्रभुजी एटली दूर ॥ आंखडली उलझो करे जोयवा मुख जिनराज, पांख डली पाई नही ते विन किम सरे काज ॥४॥ वाटड़ली वहतो कोई न मिले संगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणुं शशहर साथें कहुं संदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि वाडे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एथ अवाय, तो इण भरतना वासी भविजन पावन थाय ॥ साहिबनी तो सुनजर सघले सरखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय ॥ ६ ॥ अलगो छं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हियडे खिण-खिण चित्त ॥ हुं छूं सेवक तुं छे माहरो आतमराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे दिलथी मुझशुं धरजो

अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एक मन भगति किम करूं त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगडे, रीश चढ़को चढ़े लोभ वयरी नडे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयडे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवसने राति हियड़े अनेरो धरूं, मूढ मन रीझवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहंत किणने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुक्ख करि सामि सीमंधरा ॥५॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्म सही ॥६॥ धण कणाय माय पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो

धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि महिर अछेह ॥ दूसम काल तणो दुःख टालो दीन दयाल, पालो बिरुद संभालो निज सेवकशुं कृ-पाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर छतां नवि थाय निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसेछे दूर, राज महिरनी रीतें सकलने जाणे हजुर ॥ ९ ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजें एक पलक जो थाये प्रभु तुझ संग, लाभ उदय जिन चंद्र लहे नित प्रेम अभंग ॥ १० ॥

॥ पंचतीर्थीका दूसरा स्तवन ॥

सफल संसार अवतार ए हु गुणुं, सामि सीमंधरा तुह्म भगते भणुं ॥ भेटवा पायकमल भाव हियडे घणो, करिय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥१॥ तुह्मशुं कूड अरिहंत शुं राखयें, जिस्यो अछे तिस्यो कर जोडि करि भांखियें ॥

अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एक मन भगति किम करूं त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगडे, रीश चट-को चढ़े लोभ वयरी नडे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयडे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवसने राति हियड़े अने-रो धरूं, मूढ मन रीझवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहंत कि णने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुक्ख करि सामि सीमंधरा ॥५॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्म सही ॥६॥ धण कणाय माय पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोलयो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो

जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुह्म समोवड नहिं अवर वाल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणि सदा सांभलुं, बारवर परषदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय उलगुं, किम करुं ठाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ भोलिड़ा भगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामे मन वयण तन उल्लसे, दूरथी ढूकडा जेम हियड़े वसे ॥ ९ ॥ भल भलो एणि संसार सहू ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछें ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले; देखियें नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे तेहशुं नेह जे वात तुह्म जी कहे ॥ तुह्म पद भेटवा अति छणो टलवलुं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आभ कागल करुं, चीरसागर तणां दूध खड़िया भरुं ॥ तुह्म मिलवा तणां सामि संदेशड़ा, इन्द्र

पण लखिय न शके अछे एवड़ा ॥ १२ ॥ आपणो रंग भरि वात मुख जेटली, उपजे सामि न क-हाय मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा लाड़ने कोड़ प्रभु पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुब्वे भवि मोह वश नेह हुवे जेहने, समरियें पणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल भम-रो रमें, तेम अरिहंत तू चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरु अरिहंतनु ध्यान हियड़े वस्यु, बापडु पाप हिव रहिय करशे किस्युं ॥ ठाम जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पापमें क्रज्ज सावज्ज सहु परिहरी सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चा-रित्र कहिये प्रभु पालशुं, दुःख भंडार संसारमय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवड़ी मारी भगति जाणी करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलस ॥ एम ऋद्धि-वृद्धि,

समृद्धि कारण, दुरित वारण, सुख करो ॥ उवझाय वर श्री, भक्तिलाभें, थुणयो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी सामि, मया घणी ॥ कर जोड़ि वलि वलि, वीनवुं प्रभु पूर आशा मन तणी ॥ १८ ॥

॥ पंचमी वृद्ध स्तवन ॥

प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल ज्ञान उपाय॥ पांचमि तप भणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥१ चउवीसमो जिनचंद, केवल ज्ञान दिणंद ॥ त्रिगडे गहगह्यो ए, भवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ ज्ञान वडूं संसार, ज्ञान मुगति दातार ॥ ज्ञान दीवो कह्यो ए, साचो सर्दह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश ॥ ज्ञान विना पशु ए, नर जाणे किस्युं ए ॥४॥ अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण ॥ ज्ञानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ ज्ञानी श्वासोछ्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही ए,

कोड़ वरस कही ए ॥ ६ ॥ ज्ञान तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझार ॥ किरिया छे सही ए, पण पाछें कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ज्ञान हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें भरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार ॥ भगवंत भांखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ६ ॥

॥ दूसरी ढाल कालहरा की देशी ॥

पांचमि तप विधि सांभलो, जिम पामो भवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, भवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ़ वैशाखो रे ॥ इण षट मासें लीजियें, शुभदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥३॥ बे कर जोडी भावशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पडिक्कमणो करो, पढो पंडित गुरु पासो

रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन आरंभ टालो रे ॥ पांचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुभ दृष्टि रे ॥ पा० ॥ ६ ॥

॥ तीसरी ढाल उल्लाला की देशी ॥

हिव भवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयें काउस्सग्ग रली ॥ त्रण ज्ञान-दरिसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजियें, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वीटांगणां, पांच पूठां रे मखमल सूत्र प्रमुख

तणां ॥ पांच डोरा रे लेखण पांच मजीसणा, वासकूंपा रे कांबी वारू वतरणां ॥ उल्लालो ॥ वतरणां वारू वलीह कमली पांच झिलमिल अति भली, स्थापनाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पड-पाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल पंच नवकर वालियां, इण परें श्रावक करे पांचम उजमणं उजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजियें, घर सारू रे दान वली तिहां दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल ढोवणुं ढोइये, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥ जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलशभृंगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घन-सार केशर अगर सुखड अंगलूहणुं दीस ए, पंच-पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशं पच्चवीश ए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सवं जिमा-डियें, रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाडीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें, ज्ञान दरिसणरे

उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोकमें नर लोक मांहे ज्ञानवंत ते आगलो ॥ अनुक्रमे केवल ज्ञान पामी सासतां सुख जे लहे, जे करे पांचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे ॥४॥ कलश॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो॥ में थुणयो श्री अरिहंत भगवंत, अतुल वल अल-वेसरो ॥ जयवंत श्री जिन चन्द सूरिज, सकल-चन्द नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय सुन्दर, भगति भाव, प्रशंसियो ॥ ५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ पार्श्वजिन अथवा लघुपञ्चमी का स्तवन ॥

पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञानने पछें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥१॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति-श्रुत-अवधि अने मनःपर्यव-केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥२॥

मति अठावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि छ असंख्य प्रकार रे॥ दोय भेद मनःपर्यव दाख्युं केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥ चंद-सूरज ग्रह-नक्षत्र तारा, तेशं तेज आकाश रे॥ केवलज्ञान समु नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो भेद रे॥ पं० ॥ ५ ॥

॥ पार्श्व प्रभुका स्तवन ॥

॥ अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गोडी पास॥ सेवा सारे जेहनी सुर-नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोभागी साहिब मेरा वे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ ए आंकणी सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहा-य ॥ पलक पलकमें पेखतां मानुं नव नविय छ-विय देखाय ॥ २ ॥ सोभा० ॥ अ० ॥ भव-दुःख भंजन जन-मनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥

श्रवण सुणी गुण ताहरा-माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिडे नहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० प्रभु मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥ किसके हरि हर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें तुं वसे साहिब, शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु श्रीअश्वसेन नरेस ॥ जनमपुरी वणारसी, धन-धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सतरेश बावीशें, वदी वैशाख वखाण ॥ आठम दिन भले भावशुं, मारी जात्र चढी परिणाम ॥ सो० ॥ अ० ॥८॥ सानिध्यकारी विघ्ननिवारी पर उपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारता, मोरी सफल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ विमलनाथजी का स्तवन ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फल्यो जी, कवण कनक फल खाय ॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल जिन म्हारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिल्याजी, हियडुं हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खड खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण ल्ये रांक मनाय ॥ वि० ३ रत्न छते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी ऊठिनें जी, बावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज भवो भवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ ॥

॥ मौन-एकादशीका स्तवन ॥

॥ समवसरण बेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदा बैटी जुड़ी, मागशिर शुदि इग्यारश बड़ी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन

कल्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रूवड़ी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनुं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणिक हुवे तिम हीज, पंचासनी संख्या परगड़ी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढशें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जेवड़ी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाभ अनंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखड़ी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परी व्रत इम पड़ी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो लीजियें, चोविहार विधिशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घडी ॥ मा० ॥८॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक उल्हास ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावड़ी ॥ मा० ॥९॥ ऊज-

मणुं कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इ-
ग्यार ॥ करो काउसग्ग गुरु पाये पड़ी ॥ मा० १०
देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी पूजीजें मन
रली ॥ मुगतिपुरी कीजें ढूकड़ी ॥ मा० ॥ ११ ॥
मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहि-
यें सर्व ॥ व्रत पच्चक्खाण करो आखड़ी ॥ मा०
॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशी समे, कीधुं स्तव
न सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो चाहड़ी
मा० ॥ १३ ॥

॥ श्रीशांतिनाथजी का स्तवन ॥

श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं
त्रिभुवनके स्वामी ॥ संतहि संत जपै सब कोई,
जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शांति जपी
ने कीजै कांमा, सोई कांम हुवै अभिरामा ॥
शांति जपी परदेश सिधावै, ते कुशले कमला ले
आवे ॥ २ ॥ गर्भथकी प्रभु मारि निवारी, शांत-
हि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति तणा

गुण गावै, ऋद्धि अचिंती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सुहाई, ता नरकूं कुछ आरति नांही ॥ जो कछु वंछै सोही पूरै, दालिद्र दोष मिथ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकासी, घट घट के भीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नवि जावै, कहितां मो मन अचरज थावै ॥ ५ ॥ ढार दिया सबही हथियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवसु रंग राचै, राज तज्या पिण साहिब साचै ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजै देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ऋद्धि सहू प्रभु पास लहीजै, भिक्षा हारी नांम कहीजै ॥७॥ निंदक पूजक हे सम भायक, पिण सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह भए जग नायक, नाम अतीत सबै विध लायक ॥८॥ शत्रु-मित्र सम चित्त गिणीजै, नांम देव अरिहंत भणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहीजै, सेवक ंिण महा पद दीजै ॥ ६ ॥ सायर जैसा होय

गंभीरा, दूषण नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अ-
चल जिन अंतरजामी ॥ पिण न रहै प्रभु एकण
ठांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखै, पिण
सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीस विना बावीस परी
सह, सैन्या जोती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन
बिना जग आंण मनावै, माया बिना सबसु मन
लावै ॥ लोभ विना गुणरास ग्रहीजै, भिक्षु भये
त्रिगडो सेवीजै ॥ १२ ॥ निग्रंथपणौ सिर छत्र
धरावै, नांम जती पिण चमर ढुलाव ॥ अभय
दान दाता सुखकारण, आगै चक्र चलै अरि दा
रण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजै, कर्म
सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ
थापै, लक्ष घणी देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनय
वंत भगवंत कहावै, ना किसही कूं सीस नमावै ॥
अकिंचनको बिरूद धरावै, पिण सोवन पंकज
पगधावै ॥ १५ ॥ तजि आरंभ निज आतम
ध्यावै, शिवरमणीकूं साथ चलावै ॥ राग नही

सेवग पिड़ तारे, द्वेष नहो निगुणा संग वारै ॥१६॥ तेरी महिमा अद्भुत कहिये, तेरे गुणाको पार न लहिये ॥ तुं प्रभु समरथ साहिब मोरा, हुं मन मोहन सेवक तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुं लोकतणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन दयाला ॥ तुं शरणागत राखण धीरा, तुं प्रभु तारक छै वड़-वीरा ॥ १० ॥ तुम जेसें वड़भागज पायो, तो मेरो कारज चड्यो सवायो ॥ कर जोडी प्रभु वीनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥२० जनमण मरण निवारो तारो, भवसायरथी पार उतारो ॥ श्रीहथणापुर मंडण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे ॥ २१ ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायैं, श्रीगुणसागरके मन भाये ॥ जे नर-नारी इक चित गावै, मन वांछित फल निश्चै पावै २१

इति श्रीशांतिनाथ-स्तवनं ॥
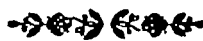
॥ चौरासी आशातनाओंका स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिलि ॥ देशी ॥

जय जय जिण पास जगत्र धणी, सोभा ताहरी संसार सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण तणी ॥१॥ धन धन जे न पडे जंजाले, उपयोगसुं वैसे जिन आलै ॥ आशातना चउरासी टालै, साश्वता सुख तेहिज संभालै ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि कला सीखण दूकै, कुरलो तंबोल भखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वडी लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदीनी नाखै चांमडियां ॥ ४ ॥ दालण ने वमन पिये कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण विसरावै, अज गज पशु ने दामण दावै ॥ ५॥ सिर नासा कान दशन आखै, नख गाल वपुषना मल नखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विह चन अपणो कर

धन धरणों ॥ ६ ॥ वैसे पग ऊपर पग चढियां, थापै छाणा छडे दुंढणियां ॥ सूकवै कप्पड पप्पड वडियां, नासीय छिपै नृप भय पडियां ॥ ७ ॥ शोके रोवै विकथा ज कहै, इहां संख्या वैतालीस लहै ॥ हथियार घडेने पशु बांधे, तापै नांणो परखै रांधै ॥८॥ भांजी निस्सही जिनगृह पेसे, धरै छत्र ने मंडपमें वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अने पनही, चामर वींझै मन ठांम नही ॥६॥ तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, भूषण तज आप कुरूप थियै ॥ दरस-णथी सिर अंजली न धरै, इगसाडै उत्तरासंग न करै ॥ ११ ॥ छोगो सिरपेच मोड जोडै, दडिये रमनें वेसै होडै ॥ सयणासुं जुहार करे मुजरो, करे भंड चेष्टा कहै वचन बुरो ॥ १० ॥ धरे धर-णो झगडे उल्लंठी, सिर गूंथै बांधे पालंठी ॥ पसारे पग पहरे चावडियां, पग झटक दिरावै दु-खड़ियां ॥ १२ ॥ करदम लूहै मैथुन मंडै, जू आवलि अंठ तिहां छंडै ॥ उघाड़े गुह्य करै वयदा,

काढे व्यापार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरै, अंघोले पीवा ठाम भरै ॥ दूषण जिनभवनमें ए दाख्या, देववंदनभाष्यमें जे भाख्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानी श्रावक सगति छतां, आशातन टालै वारसतां, परमाद वसै कोई थायै, आलोयां पाप सहू जायै ॥ १५॥ तंबोल ने भोजन पांन जूआ, मल मूत्र शयन स्त्री भोग हुआ ॥ भूषण पनही ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर मांहि वसै ॥ १६ ॥ द्रव्यत ने भावत दोय पूजा, एहनाहिज भेद कह्या दूजा ॥ सेवा प्रभुनी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम भव्य प्रांणी भाव आंणी, विवेकी शुभ वातना ॥ जिनबिंब अरचै परी वरजै, चोरासी आशातना ॥ ते गोत्र तीर्थंकर अरजै, नमें जेहने केवली ॥ उवझाय श्री ध्रमसींह वंदे, जैन शासन ते वली ॥ १८ ॥

॥ चौवीस तीर्थंकरोंके देह-प्रमाणका स्तवन ॥

प्रणमुं ऋषभ जिनेसर पाय, धनुष पांचसै उंचो काय ॥ बीजो अजित जिन मुझ मन वसै, मांन धनुष साढाच्यारसै ॥ १ ॥ तीजो संभव सुख दातार, उंची काय धनुष सो च्यार ॥ अभिनंदन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमतिनाथ भगवांन, धनुष तीनसो देही मांन ॥ पदम प्रभू पूरैं मन आस, देह धनुष दोयसे पच्चास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तम होय, देह प्रमांण धनुष सो दोय। चंद्राप्रभु जिन मुज मन वसै, देह प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, उंच प्रमांण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमें जग सवे, देह प्रमांण धनुष जसु निवै ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं उल्लासी, उंच प्रमांण धनुष तनु असी। वासपूज्य बारमें जिन चंद, मान धनुष

सित्तर सुखकंद ॥६॥ विमल विमलगुणाकर गंभीर, साठ धनुष जसु मान सरीर। अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमांण धनुष पच्चास ॥७॥ पनरम धरमनाथ जगदीस, मांन धनुष जस पेंतालीस ॥ शांति करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोभंति ॥८॥ सतरम कुंथु जगदाधार, मांन धनुष पेंत्रीस उदार ॥ अर अठारम दीनद-याल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ६ ॥ मल्लिनाथ जिन उगणीसमो, मांन पच्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम मुनिसुव्रत अरिहंत, वीस धनु तनु मांन कहंत ॥ १० ॥ इकवीसम नमिजिनरा जान, धनुष पनरे तसु रूप निधान। बावीसम श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपै जांण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ। चोवीसमा जिनवर श्री वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥१२॥ इण परि ए जिनवर चोवीस, प्रणमें प्रह शम धरिय जगी-

स ॥ तां घर ऋद्धि सिद्धि उछ रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥

॥ चौवीस तीर्थंकरोंके आयुष्य-प्रमाणका स्तवन ॥

ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय, लाख चोरासी पूरब आय ॥ बीजो अजित जसु सूत्रै साख, आउ बहुत्तर पूरब लाख ॥ १ ॥ तीर्थंकर संभव तीसरो, आउ लाख पूरव साठरो अभिनन्दन पूरे मन आस, आउ लाख पूरव पच्चास ॥२॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस, आउ लाख पूरब चालीस ॥ श्री पद्मप्रभूनी ए थितजांण, लाख तीस पूरब परिमांण ॥ ३ ॥ श्री सुपाश्व लाख पूरब वीस, दस लख पूरव चंदप्रभु ईस ॥ सुविधिनाथ लख पूरव दोय, इक लख पूरव शीतल थित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख । लाख बहुत्तर वरसां तणो, वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥५॥ विमल आयु लख

साठ वरीस, वरस अनंत तणो लख तीस॥ लाख वरस दस धरम दिणंद, लाख वरस श्री शांति-जिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पच्याणवै, श्री कुंथुंनाथ तणी संभवै ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि सहस पचावन भणी ॥७॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनिसुव्रत परमाउ उदार। वीस सहस नमिजिन थित भणी, वरस सहस नेमीसरतणी ।८। पास वरस एक सो सुखकंद, वरस वहुत्तर वीरजिणंद ॥ ऋषभतणा तेरे अवतार, सात चंद्र शंतीसर बार ॥ ६ ॥ सुव्रत भव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्तावीस ॥ त्रिहुं २ भव सतरे जगदीस, सगला भव एकसो अड़तीस ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन्न, गणधर चवदेसै बावन्न ॥ सहुनें मुनि लख अठावीस, सहस ऊपरै अडतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल छयाल हजार, षडधिक सहु साधवी सो च्यार ॥ श्रावक लाख पचावन धुरै, अड़तालीस सहस

ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोडि श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस अड़तीस ॥ ए संघ चतुर्विध सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥

॥ तिरसठ शलाका-पुरुषों का स्तवन ॥

॥ ढाल १ ॥ धरेम महारथ सारथ सारं एदेशी ॥

सद्‌गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं पभणसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लियै निसतारं, आपण सफल हुवैं अवतारं पामीजै भव पारं ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्मप्रभु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंद्रप्रभूने सुविध शीतल जिन श्रेयांस, वासुपूज्य जिन सुरमणि, विमल गुणोंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुंथुनाथ अर मल्लि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम॥ पार्श्व वीर ए जिन चोवीस ॥ जग वच्छल जगगुरु जगदीस, प्रणमीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥

॥ ढाल दूसरी ॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो एदेशी ॥

प्रथम भरत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद, मघवा तीजो उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्कीस छठो कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संभूमि सनाथ ॥ ५ ॥ नवमो पद्म नरेस, हरिषेण दसमो कहेस इग्यारम जयनांम, बारस ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र भरत सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरग मझार ॥ ७ ॥ सभूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल तीसरी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ एदेशी ॥

पहिलो त्रिपृष्टि जांण, द्विपृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंप्रभु जाणिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगडो, पुरुषसिंह परमांणिये ए ॥ ९ ॥ छठो पुरुष पुंडरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांमे आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा,

प्रह ऊठी ए पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला पांच छठी गया ए ॥ सातमो पंचमी नैर, चोथी आठमो, नवमो तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें भद्र, सुप्रभु सुदर्शन, आनंद नंदन शुभ मती ए ॥ रामचंद्र बलभद्र, बलदेव ए नव, आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलभद्र ब्रह्म देवलोक, काल उसप्पणी, जास्यै सिव कृष्ण सासने ए ॥ अथवा विपुलाक नाम, तीर्थंकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत भणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणै प्रभु रहतां काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशंभ वलय प्रहलाद, रावण जरासिंधु जिसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक गति गामिया ए, ते पिण भावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥१४॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नें कुंथु अरि एह भव एकही, चक्रधर

तीर्थंकर दोय पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत भव जूजूआ, देह तिणसाठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५॥ वासुदेव वलीय बलदेव केरा पिता, एकहिज थाय नव एण लेखै छता ॥ तीन चक्रधर तणा मिलिय बारै टल्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवत्ततणी टाल दीजे इसै, गाय सहुनी थई साठ लेखे इसै॥ एह नररयणनो ध्यांन नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोक्ष पदवी वरै ॥ १७ ॥

॥ कलश ॥

इम थुण्या तीर्थंकर चक्कीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥

॥ सिद्धगिरी का स्तवन ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरी-

हंत ॥ जुगला धर्म निवारणो, भय भंजण भगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुझ मन ऊलट अति घणो, सो दिन सफल गिणेस ॥ स्वामी श्री रिसहेसरू, जब नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसर्‍या, पूरब निन्नाणूं वार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥ इण गिर चउमासे रह्या थिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४॥ पांमे शिव सुख शास्वता, गणधर श्री पुंडर-गिरि तिण कारणें, भगति करो निरभीक । श्री । ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू, विद्याधर बल-वंत ॥ सेत्रुंजा शिखर समोसर्‍या, जे गरुआ गुण वंत ॥ श्री० ॥६॥ थावच्चा मुनिवर सुक, सहस २ परिवार ॥ पंथग वयणे जागियो, सो सेलग अ-णगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांडव पांच महाबली, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सीधा सिद्धाचलै, नर करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा

इण डूंगरै, मुनिवर कोड़ाकोड़ ॥ पाय चढंता सांभरै, ते प्रणमूं करजोड़ि ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जे वाघण प्रतिबूझवी, ते दरवाजै जोय ॥ गोमुख यक्ष कवड मिली, सानिधकारी होय ॥श्री० १०॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील विलास श्री० ॥ ११ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजी का स्तवन ॥

॥ देशी गरबानी ॥

श्री सिद्धाचल मंड़ण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजांमी रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीड़ा जात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥ श्रीऋषभ जिनेसर राया रे, जिहां पूरव निनाणं आया रे, प्रभु समवसस्था सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चेत्री पूनम दिन वखाणो रे, पांच कोडिसुं पूंडरीक जांणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, बे-बे कोड़िसुं साध

संघाते रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥४॥
काती पूनम कर्मने तोड़ी रे, जिहां सीधा मुनि
दस कोडी रे, ते वंदो बे कर जोडी ॥ या० ॥५॥
इम भरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु थिर थाटे
रे, पांम्या मुगति तणी ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥
दोय सहस मुनी परवारे रे, थावच्चा सुत सुख-
कारे रे, सय पंच सेलग अणगार ॥ या० ॥ ७ ॥
देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा बहु यादववंसे
रे, ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥८॥ पाचे
पांडव इण गिर आया रे, सीधा नव नारद ऋषि-
राया रे, वली संब प्रज्जुन कहाय ॥ या० ॥ ९ ॥
ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते
रे, इम भाष्यो श्रीभगवंत ॥ या० ॥१०॥ उज्जल
गिर सम नही कोइ रे, तीरथ सगला मे जोइ रे,
जे फरस्यां पावन होइ ॥ या० ॥ ११ ॥ एकाहारी
ने सचित्त पहारी रे, पदचारी ने भूमि संथारी
रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम

छह री जे नर पाले रे, बहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम-मरण भय टाले ॥ या० ॥ १३ ॥ धन २ ते नर ने नारी रे, भेटे विमलाचल इक तारी रे, जइये तेहतणी वलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजि- नचंद्र सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ या० ॥ १५ ॥

॥ श्रीऋषभदेवजी का स्तवन ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब, बीनतड़ी अवधारो रे ॥ जगना तारू ॥ मुझ तारो जी कृपानिध स्वांमी, जग जसवाद प्रगट छै ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥ निज गुण भोक्ता पर गुण लोप्ता, आतम शक्ति जगायो रे ॥ज०॥ अविनासी अविचल अविकारी, वासी जिनराया रे ॥ ज० ॥२॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयो रे ॥ ज० ॥ तुम रीझावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ मु० ॥ काल अनंत रह्यो

एकेंद्री, तरु साधारण पामी रे ॥ ज० ॥ वरस संख्याता वलि विकलेंद्री, वेष धर्या दुख धामी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर-नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंद्रीपणो धात्यो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि भमियो, अब तो हूँ पिण हार्यो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ भव नाटक नित करतो नव नव, हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज० समरथ साहिब सुरतरु सरिखो, निरखी तुझने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझया, तो मन वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझया तो मुख भाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं दुखडा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता सेती सूँम भलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ज० ॥८॥ मु० तुझ सरिखा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥ तो मुझ करमतणी गति अवली, दोस न कोइ तुमारो रे ॥

ज० ॥ मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अठारै गुणतालीसै, ज्येष्ट सुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन भेटया, बीकानेर मझारो रे ॥ ज० ११ ॥ मु० ॥

॥ महावीरस्वामी का स्तवन ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोड़ी हुँ कहुं मननी वात ॥ वालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो, तूं त्रिभुवन तात ॥ वी० ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं भम्यो, भव मांहे हो स्वामी समुद्र मझार ॥ दुक्ख अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तूं प्रभू, दुख भंजे हो जग दीनदयाल ॥ तिण तोर चरणे हूं आवियो, सामी मुझने हो निज नयण निहाल ॥ वो० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण उधरया, तें कीधी हो करुणा मोरा स्वांम ॥ हुंतो

परम भक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनो काम ॥ वी० ॥४॥ सूलपाण प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझने उपसर्ग ॥ डंक दियो चंड़कोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५॥ गोशालो गुणहीन घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इंद्रजालियो, इम कहतो हो आयो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, ते झगड्या हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनो पाल ॥ तिरती मूंकी काछली ॥ तें तार्यो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥६॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूको हो चारितथी अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार ॥

वी० ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे रह्यो, मूंकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण ऊधस्यो, सुर पदवी हो दीधी अति सार॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते पिण आर्द्र कुमारनें, तें तास्यो हो तोरी एह जगीस ॥ वी०॥ १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु-साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नहो नही आखडी, नहीं पोसा हो नही आदर दीख॥ ते पिण,श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी० ॥ ॥ १४॥ इम अनेक तें ऊधस्या, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥वी० ॥१५॥ सूधो संजम नहि पलै, नहो तेहवो मुझ दरसण ज्ञान ॥ पिण आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरु निश्चलध्यान वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे

हो सम त्रिखमी ठांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥१७॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख जायै दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नांमे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलश ॥ इम नगर जेसलमेरु मंडन, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ शासना-धोश्वर सिंह लंछन, सेवतां सुरतरु समो ॥ जिन-चंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुणयो त्रिभुवन मिलो ॥ १९ ॥

॥ चौवीस दंडक का स्तवन ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अर दास जी ॥ तारण तरण विरुद तुझ सांभलि, आयो हूं धर आस जी पू० ॥ १ ॥ इण संसार समुद्र अथागै, भमियो भवजल मांहिजी ॥ गिल गिलिया जिम आयो गिडतो, साहिब हाथे साहि

जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तो पिण तुझ आगै, वीतक किहिये वात जी ॥ चोवोसे दंडक हूं भमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरक तणो इक दंडक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावरनें तीन विकलेन्द्री ॥ उगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्री तिर्यञ्चने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी नें वैमाणिक, इम दंडक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच अने नर, पर्याप्ता जे होय जी, ए चोविह देवामें ऊपजै, इम देवां गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आऊखै नर तिरि. निहचै देवज थाय जी ॥ निज आंऊखै सम के ओछै, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपतीके व्यंतर तांई, समूर्च्छिम तिर्यंच जी ॥ सगर आठमां तांइ पोहचै, गरभज सुकृत संच जी ॥ पू० ॥ ८ ॥ आउ संख्यातै जे गरभज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ वादर पृथवो

नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ६॥ पर्याप्ता इण पांचे ठामे, आवि ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा माहे पिण आगै, अधिकांई कहुं हेव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथको मांडी सुर, एकेंद्री नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला, मांनवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देशी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव भमै संसार ॥ दोय गति नें दोय आगत जांणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ संख्याते आयु परजापता, पंचेंद्री तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहिज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० प्रथम नरक लग जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सोमा सापणी, छठी लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के माछलो ऊपजै, गरभज आय ॥ न०

॥ १५ ॥ नरकथकी आवे विहुं दंडकै, तिरयंचके नर थाय ॥ ते पिण गरभज ने परयापता ॥ संख्याती जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरया, जे फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्ट भांगे करते कहूं, पिण निश्चै नहीं कोय ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवै, बीजो हरि बलदेव ॥ तीजो लग तीर्थंकर पद लहै ॥ चोथी केवल एव ॥ न० ॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सरवविरति लहै, छठी देसविरत्त ॥ सातमी नरकना समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करमपरीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

मानव गति विन मुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार ॥ आउ संख्याते नर सहु दंडके रे, आवी लहे अवतार ॥ मा० ॥ २० ॥ तेउ वाऊ दंडक बे तजी रे, बीजा जे बावीस ॥ तिहांथी आया थाये मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस ॥

मा० ॥ २१ ॥ नर तिरजंच असंखो आउखै रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरिनें मनुष्य हुवे नही रे अरिहंत भाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव तथा वली रे, चक्रवर्त ने अरिहंत ॥ सरग नरगना आया ए हुवै रे, नर तिरथी न हुवंत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चोविह देव थकी चवि ऊपजै रे, चक्रवर्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थंकर एं हुवै रे, वैमानिकथी वेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीवभमें इण पर भव मांहे करम विशेष ॥ आउ संख्यातो जे नर तिर्यंच विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं हेव ॥ पंचेंद्री तिर्यंच संख्यातै आऊखै जेह, ते मरी चिहुंगतिमां जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्री आठ

कहावे, तिहांथी आउ संख्याता नर तिरयंचमें आवे ॥ विकल चवीलहै सरवविरति पिण मुगति न पावैं, तेउ वाउथी आयो तेहने समकित नावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगला ही जीव संसार, पृथवी आउ वनस्पतीमांहि लहै अवतार ॥ ए ती नें इहांथी चवि आवै दसे ठाने. थावर विकल तिरी नरमांहे उतपत पामै ॥ २८ ॥ पृथवीकाय आद देई दस दंडके एह, तेउ वाऊ मांहे आवी ऊपजे तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाउ वे जावैं, विकलेन्द्री ते दसमांहि जावै पूठाही आवै ॥ २६ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी जीव ए-कंत. वनस्पती माहे तिहा रहियो काल अनंत ॥ पुढवी पाणी अगनि अनैं चोथो वलि वाय. का, लचक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बे-इन्द्री तेइन्द्री अने चोरिंद्री मझारैं, संख्याता वर सां लगै भमियो करम प्रकारैं ॥ सात आठ भव लगि तो नर तिरयंचमें गहियो. हिव मांनवभव

मा० ॥ २१ ॥ नर तिरजंच असंखो आउखै रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरिनें मनुष्य हुवे नही रे अरिहंत भाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव तथा वली रे, चक्रवर्त ने अरिहंत ॥ सरग नरगना आया ए हुवै रे, नर तिरथी न हुवंत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चोविह देव थकी चवि ऊपजै रे, चक्रवर्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थंकर एं हुवै रे, वैमानिकथी वेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीवभमें इण पर भव मांहे करम विशेष ॥ आउ संख्यातो जे नर तिर्यंच विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं हेव ॥ पंचेंद्री तिर्यंच संख्यातै आऊखै जेह, ते मरी चिहुंगतिमां जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्री आठ

कहावे, तिहांथी आउ संख्याना नर तिरयंचमें आवे ॥ विकल चवीलहै सरवविरति पिण मुगति न पावैं, तेउ वाउथी आयो तेहने समकित नावे ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगला ही जीव संसार. पृथवी आउ वनस्पतीमांहि लहे अवतार ॥ ए ती नें इहांथी चवि आवे दसे ठाने. थावर विकल तिरी नरमांहै उतपत पामैं ॥ २८ ॥ पृथवीकाय आद देई दस दंडके एह, तेउ वाऊ मांहे आवी ऊपजै तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाउ वे जावैं, विकलेन्द्री ने दसमांहि जावैं पूठाही आवे ॥ २६ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी जीव ए-कंत, वनस्पती माहे तिहा रहियो काल अनंत ॥ पुढवी पाणी अगनि अनैं चोथो वलि वाय, का-लचक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ वे-इन्द्री तेइन्द्री अने चोरिंद्री मझारै, संख्याता वर सां लगै भमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ भव लगि ताँ नर तिरयंचमें रहियो, हिव मांनवभव

लहिनें साधुनें वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेष छूटे नही किम हुवै छूटकबार, पिण छै माहरै मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण मैं त्रिकरण सुद्धे अरिहंत लाधो, हिव संसार घणो भमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो मैं नवनिध सिद्ध पांमी ॥ अवर न कांइ इच्छू इण भव तूं हिज देव, सूधै मन इक होज्यो भव-भव ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जैसलमेर महिमा दिन दिनें ॥ संवत सतर उगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद समान वाचक, विजय हरष सुसीस ए ॥ श्री पासना गुण एम गावै, धरमसी सुजगीज ॥ ३४ ॥

॥ इरियावही मिच्छामिदुक्कड संख्या-स्तवन ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देशी ॥

पद पंकज रे प्रणमो वीर जिनंदना. त्रिकरण शुद्ध रे करि मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्तं रे पड़िक्कमी जिम इरियावहीं, श्री वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लालो ॥ सरदही वाणी मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिच्छामिदुक्कड़ तणी संख्या, कहिसुं जिम कहे केवली ॥ भू दग जलण तिम वाउ, वणसइ विगल पण इंद्री तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, दुर ते करिवा भणी ॥१॥ चाल ॥ पुडवि दगरे वाउ तेउ वणस्सइ, पण थावर रे बादर सुहम दसे थई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह थया, बावीसे रे पज्जत्तग अपज्जत्तया ॥ उल्लालो ॥ पज्जत अपज्जत्तग वखाणया, विगल तिय छह भाल ए ॥ जल-थल-खेचर भुयंग दुइ, पण इंद्रिय तिरि अडयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुडवी, नारकी तिहां सात जे ॥

ते चबद् भेदे करी जाणो, पज्जत्तय अपजत्त जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनहर विध रे सुरगण परमा हम्मिया, किलविषिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंभिय दस रे नव लोकांतिक जांणिये, सो लह विधरे व्यंतर देव वखाणिये ॥ उल्लालो ॥ वखाणियै दस विध भुवनपतिना, तार रवि ससि रिसिगहा ॥ चर थिर दसै विध जोइसी सुर, वखाणया जिनवर जिहां ॥ बारह विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीवेके नव भणया ॥ पज्जत्त अपजत्तग अठाणूं, अधिक सत संख्या गिणयां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचभरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए ॥ खेत्र ए पनरह करम भूमि जाणीयै असि कसि मसिही आजीविकाए ॥ हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत सहीए मेरूपिणा पावती चारि २ खेत्र दस कुरु अकरम भूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिमगिर सिहरीय दाढ ची-

यांरि लवण समुद्रमांहि विस्तरी ए ॥ सात २ अं तर दोय पासै दीप छप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दो-इसै भेद दुइ आगला जांणी मणय पज्जत अप ज्जतयाए ॥ एक सौ एक समुच्छिम भेद तीन-सै तीन मणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ए ॥ देशी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसहूं छे एह अभिहय आदिक दस गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस छ-सै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥ ते रागे दोसै दुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ हुइ सहस इग्यारह दुइसय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणी हितउर आण ॥ मनवच.काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सातअसी निःशंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किद्ध ॥ इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्र-सिद्ध ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल जे थइयविराधना तिणि त्रिगुण संभाल ॥ ८ ॥ तीन

लाख सहस च्यार बेसै अधिक ते थाय ॥ अरिहंत प्रमुख छह साखै छगुण भाय ॥ इम लाख अठारह वलि सहस चउवीस ॥ इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिच्छामि दुक्कडंदेई भविक तस्या भवजल निधिकेई ॥ तरै अछै वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम करि निरमल ॥ सें मुखभाषै वीर जिणेसर ॥ सूत्रकरि गूंथै ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पडिक्कमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसोस केवल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै ॥ मानव जनम सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो ॥ तियलोय सामि सिद्धगामी

सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवझाय लच्छी किति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लच्छिवल्लभ तवन करि इम संथुणयो भावै करी ॥ १३ ॥

॥ पांच समवाय का स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज ॥ वस्तुतत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्त भंग रचना विना, वंधन वेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे ठाम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुपे एह गज, ग्रहो अवयव अनेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्णगज, अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नयें करी, जुगति योग शुद्ध वाद ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध

रुप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अभंग अनूप रे ॥ ६ ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥ कालै ऊपजै विणसे कालै, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ श्री० ॥ कालै गर्भ धरै जग वनिता ॥ कालै जनमे पूत रे ॥ कालै बोलै कालै चालै, कालै झालै घरसूत रे ॥ ८ ॥ कालै दूधथकी दही थायै, कालै फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावे, अंत करे बेवाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसै बार चक्कवै, वासुदेव बलवंत रे ॥ कालै कविलत कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥१० ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्प्पिणी आरा, छै छै जूजूये भांते रे, षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ भिन्न २ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री० ॥ कालै बाल बिलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुढ्ढपणे हुय वलि वली दुर्बल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुत्रा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तव स्वभाववादी वदै जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वभावे नीपजे जी, विणसै तिमज निस्संक ॥ १३ ॥ सुविवेक विचारी जुत्रो २ वस्तु स्वभाव ॥ ए आंकणी ॥ छते योग योवनवती जी, वांझणि न जणै वाल ॥ मूछ नही महिला मुखै जी, करतल ऊगै न वाल ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण स्वभाव नवि संपजै जी, किमह पदारथ कोय ॥ अंव न लागै नींवडै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपंछ कुण चीतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सव जीवना जी, सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा वोर वंवूलना जी, कुणें अणियाला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वस जी, मणि हरै विस ततकाल, परवत थिर चल वायरा जी, ऊरध अगननी झाल ॥ १८ ॥ सु० ॥ मच्छ

तुंब जलमां तिरै जो, बूडै काग पाहाण ॥ पंख जाति गयणे फिरे जी ॥ इण परै सहिज विनाण ॥ १६ ॥ सु० ॥ वाय सुंडथी उपशमें जी, हरडे करै विरेच ॥ सोझै नही कण कांगडो जी ॥ सकल स्वभाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी, भुंयमां थायै पाखाण ॥ संख अस्थि नो नीपजे जी, क्षेत्र स्वभाव प्रमांण ॥ २१ ॥ सु० रवि तातो शसी सीयलो जी, भव्यादिक बहु भाव ॥ छए द्रव्य आपापणा जी, न तजै कोइ सुभाव ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

काल किसुं करै बापडो रे, वस्तु स्वभाव अकज्ज ॥ जो न होय भवितव्यता जी, तो किम सीजै कज्ज रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म करो मन जंजाल, ए तो भावी भाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए आकणी ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जो, कोडि यतन ै कोय ॥ अणभावी होये नही जी, भावी होय

ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आंबै मोर वसंतमां जी, डालै केइ लाख ॥ खस्या केइ खांखटी जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ बाउल जिम भवतव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय, परवस मन मानसतणो जी, तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसै पिण चितव्यूं जी, आवी मिलै ततकाल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्यो जी नियत कर विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुभूमिते जी, समुद्र पड्यो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरै गोवाल रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करै जी, किम राखीस रे प्रांण ॥ आहेड़ी सर ताकियो जी, ऊपर भमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ आहेडी नागे डस्यो जी, बांण लग्यो सींचाण ॥ कोकूहो ऊडी गयो जी, कोउ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३०॥ शस्त्र हणया संग्राममां जी, रात पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जी, राख्याहो न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वभाव नियत मति रूड़ो, करम करे ते थाय ॥ करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव भवंतरै जाय ॥ ३२ ॥ चैतन चेतज्यो रे, करम न छूटै कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें राम वस्या वन वासै, सीता पामी आल ॥ कर्म लंकापति रावण नुं राज्य थयों विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्मैं कोड़ी कर्मे कुंजर ॥ कर्मे नर गुणवंत ॥ कर्मे रोग सोग दुख पीड़ित, जमन जायै विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्मे वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्मे जिननें जोउ निमारै, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ चे० ॥ कर्मैं एक सुखपाले वैसे, सेवक सेवै पाय ॥ एक हय गय चढ्या चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मांनी अंधतणी पर, जंग हींडै हाफुतो ॥ कर्मवली ते लहै सकल फल, सुखभर सेजैं सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके कीधो उद्यम ॥ क-रंडीया करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो भूखो,

नाग रह्यो डमडोलै ॥ ३८ ॥चे०॥ विवर करी मूपक तसु मुखमां, दीयै आपणं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधार्या, कर्म मर्म जोत्रो एह ॥ चे० ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चढियो धन मान गजे ॥ ए देशी ॥

हिव उद्यमवादी भणे ए, ए च्यारै असमच्छ तो ॥ सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्थ तो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए, स्युं नवि सीझै काज तो ॥ रामें रयणायर तर्यो ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां सत्व न होय तो ॥ देवल वाघ मुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय तो ॥४२॥ विन उद्यम कीम निकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी उंची चढै ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इक समें ए, जेह न सीझै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वांज तो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि ऊभ्यां विना ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आंवी न पडै

कोलियो ए, मुखमां क्षेपे जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्म्मनो मर्म्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंभ तो ॥ उद्यमथी खट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपै २ सरवर भरै ए, कांकरे २ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ़ नीपजे ए, उद्यम सकल निहाल तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंदुउ ए, करे पाहाणमां ठाम तो ॥ उद्यमथी विद्या भणै ए, उद्यम जोडै दांम तो ॥ ४६ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ ए छिडी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवै ॥ अमिय रसै जिन वयण सुणीनें, आणंद अंग न मावै रे ॥ ५० ॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जांणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समवाय मिल्यां विन, कोई काज न सीझै ॥

अंगुल जोगै कवल तणी पर, जे वूझे रे ॥ प्रा०॥ ५१ ॥ आग्रह आणी कोइ एकनें, एहमां दियै वड़ाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणांगण, जीते सुभट लड़ाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वभावे पट उपजावै, काल क्रमें वणाई ॥ भवितव्यता होय ते नोपजे, नही तो विघन घणाई रे ॥प्रा०॥५३॥ तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सवल सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी रे ॥ प्रा० ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीकलियो ॥ पुण्यें मनुज भवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे ॥प्र०॥ ५५ ॥ भवथितनो परपाक थयो तव, पंडित वीर्य उल्लसियो ॥ भव्य स्वभावै शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवै, शासन नायक गावो ॥ संघ सकल सुखदाई छेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संथुण्यो ॥ सय सतर संवत वहि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सुरिंद पटधर, विजयप्रभ मुणिंद ए ॥ कीर्ति विजय वाचक सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥

॥ चउदह गुणठाणों का स्तवन ॥

॥ थंभणपुर श्रीपास जिणदो ॥ ए देशी॥

सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार, आणी भाव अपार ॥ चवदै गुण थानक सुविचार, कहिस्युं सूत्र अरथ मन धार, पांमे जिम भव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंणो, तीजो मिश्र वखाणं ॥ चोथो अविरत नांम कहाणो, देशविरति पंचम परमांणो, छट्ठो प्रमत्त पिछाण ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अष्टम अपुरव करण कहीजै, अनित्ति नांम नवम्म ॥ सुखम

लोभ दसम सुविचार, उपशांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह बारम्म ॥३॥ तेरम सयोगी गुणधांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणुं प्रथम विचार कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणठाणै, तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल मसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पक्ष थापी रहै. प्रथम एकांत मिथ्यामतो ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणें, संसयी नाम मिथ्यात चोथो भणें ॥ ६ ॥ समझ नही काय निज धंद रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अनंत अभव्यनें, करिय अनादि थिति अंतसुभव्यनें ॥ ७॥ जेम नर खीर घृत खंड जिमनें वमें, सरस रस पाय वलि स्वाद केहवो गमें ॥ चौथ पंचम छठे ठाण चढ़ने पड़े, किणहि कषाय वस आय पहलै अड़ै ॥ ८ ॥ रहै

विच एक समयादि षट आवली, सहीय सासादनें थिति इसी सांभली ॥ हिव इहां मिश्र गुणठाण तीजो कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमहुरत लहै ॥९॥

॥ ढाल ॥ ३ बे कर जोडी तांम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकिती, कैतो सादि मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर दहणा बेऊं छती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि, मरण लहै नही, आउ बंधनपड़ै नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकित लहै, मति रसखी गति परभवै ए ॥११॥ च्यार अप्रत्याख्यान, उदय करी लहै, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत गुणठाण, तेत्रीस सागर, साधिक थिति एहनी भणी ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥ सहु जिन वचन प्रमांण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुद्गल

अरधतां, उत्कृष्टा भवमें रहै ए ॥ केइएक भेदो गंठि, अंतरमहुरत्ते, चढ़ते गुण शिवपद लहै ए ॥ १४॥ च्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उपशम समकित धणी ए ॥१५॥ जिण साते च्चय कीध, ते नर च्चायकी, तिणहिज भव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि वांध्यो आऊ, तातें तिहां थकी, तीजै चोथे भव तिरै ए ॥१६॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥ ए देशी ॥

पंचम देसविरति गणठाण, प्रगटै चोकड़ी प्रत्याख्यान ॥ जेण तजैवा वीस अभक्त, पाम्यो श्रावकपणो प्रत्यच्च ॥ १७ ॥ गुण इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संभारै ॥ पूजादिक षट् कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८॥ आर्त्त रौद्र ध्यान ह्वै मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥ आठ वरस ऊणी पुव्वकोड़, पंचम गुणठाणे थित जोड़ ॥ १९ ॥ हिव आगे साते

गुणयान, इक २ अंतरमहुरत मांन ॥ पंच प्रमाद वसै जिण ठाम, तेण प्रमत्त छठो गुणधांम ॥२०॥ थिवरकलप जिनकलप आचार, साधै षट् आवश्यक सार ॥ उद्यत चोथा च्यार कषाय, तेण प्रमत्त गुणठांण कहाय ॥ २१॥ रूधो राखै चित्त समाधै, धरम ध्यान एकांत आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासै, अपरमत्त सत्तम गुण भासै ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ नदी यमुनाके तीर उडै दोय पंखिया ॥ ए देशी ॥

पहिले अंसे अष्टम गुणठाणातणें, आरंभे दोय श्रेण संख्येपै ते गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, क्षपकश्रेणि क्षायक प्रकृति दस क्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढ़ता परिणाम अपूरव गुण लहै, अष्टम नांम अपूरव करण तिणें कहै ॥ सुकल ध्यांनको पहिलो पायो आदरै, निर मल मन परिणांम अडिम ध्याने धरै ॥ २४ ॥

अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणियै, जिहां

भाव थिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मांन ने माया संजलण हणें, उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम लोभ कांइक शिव अभिलखै, ते सूखम संपराय दसम पंडित अखै ॥ संत मोह इण नांम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण ठांम सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किणही परै, तो थायै अहमिंद्र अवर गति नादरै ॥ च्यार वार समश्रेणि करै संसारमें, एक भवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पड़ै, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुद्गल रड़ै ॥ क्षपकश्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही, दशमथकी बारम्म चढै ध्यांने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो बारस जाण, मोह खपायो नेडो आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात, हिव आगे

तेरम गुणथांन तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकडो क्षय गई रहोय अघातीय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहने जूना कप्पड जेम॥ दरसण ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान प्रगट थयो विचरै श्रीभगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी छानी परगट वात, महिमावंत अढारै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे ऊणी कही इक पूरवकोडि, उत्कृष्टै तेरम गुणठाणें ए थिति जोड़ि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करण निरूध्या मन वच काय, तेण अयोगी अंत समय सहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊचरता जेहनो मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चउदम गुणथान ॥३२॥ त्रीजे बारमें तेरमें मांहे न मरै कोय, पहिलो बीजो चोथो परभव साथे होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाभै पहिला च्यार, धुरला पांच तिरी मांहे मणु ए सर्व्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर वाहड मेरू मंडण, सुमति जिन सुपसाउलै ॥ गुणठाण चवद विचार वरण्यो, भेद आगमनें भलै ॥ संवत सतरैसै छत्तीसै,श्रावण वदि एकादशी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध, कहै मुनि इम धमसी ॥ ३४ ॥

॥ नव तत्त्व भाषा-गर्भित स्तवन ॥

दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव तत्त्वनी, गाथा भासा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधै, कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निज्जर बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल बयासी वलि बायाल, सत्तावन बारै चौ नव क्रम भेदनी माल ॥ १ ॥ इग दु ति

नाणांतराय दस कनव बीजा नीचंअसाय, मित्थं थावर दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरि-यंच दुग एकेंद्री बि ति चोरिंद्री तेय, कूखगई उप-धा अपसत्तथ वगण चौ भेयं ॥११॥ पढम संघयण विना संघेणा तेम संठाण, एम बयासी प्रकृति पाप ततनी ए जाण ॥ थावर सुहम अपज्ज साहा रण अथिरै गेय, असुभ दुभग दू सरणा इज्ज अ-जस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय इंदी कसाय अव्वय तिम जोग बायालीस सेष पच्चीस क्रिया संजोग ॥ काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरंभकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिच्छादेसण वत्ती तेम, अपच्चखाणकी दिठ पुठ पाडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणिय ने सत्थि सहत्थै जेह, आज्ञा-पनको वेयारण अणभोगा तेह ॥ १४ ॥ अणव कंख पच्चयना उवउगी समुदाय, प्रेम द्वेष इरि-ावही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परि

सहज इ धम्म भावरण चारित्त, परणतिग बावीस दस बारै परण संवर तत्त ॥ १५ ॥ इरिया भाषा एषरणा सुमतीना भेद होय, आदान भंड उच्चार निस्केवरण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती काय-गुत्तो त्रिरण जांरण, हिव आगे बावोस परिसह कहूं हित आरण ॥ १६ ॥ भूख पिपासा सीत उसन डांसा निरवत्थ, अरति जोषा चरिआ नैषिद्या सिज्जा सत्त ॥ अक्कोसवहजायरण अलाभ रोग त्रिरण भास, मल सक्कार यन्ना अन्नारण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम सम्म, सत्यं शौच अकिंचन बंभचेरज इ धम्म ॥ पढम अनित्य असरण संसार एग अन-त्त, अशुचि आश्रव संवर निज्झर भवि भावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुभाव बोध दुरलभ इग्या-रम गाम, धरम साधक अरिहंत ए बारै भावना भाव ॥ सापायक छेदोपस्थापन बीजो सोय, परिहार विशुद्ध सूखम संपराय चउत्थो जोय १६

२५

तिम अहक्खाय चरित्त सरब जिय लोग प्रसिद्ध,
जेह सुविधि आचरणें के जिय पांम्या सिद्ध॥
बारैं विध निर्ज्जर तत्व बंधना च्यार प्रकार, प्रकृ-
ति ठिई अनुभाग प्रदेश भेदें निरधार॥ २०॥
अणसण उणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, का
य कलेस सल्लीनता बाहिर तप षड़ भाग॥ पाय
च्छित विनय वेयावच्च तेम सिज्झाय, ध्यान का-
उसग अभ्यंतर तप षड़ विध थाय ॥ २१ ॥ प्र-
कृति सुभाव काल अवधारण थित निरवंच, अनु
भागै रस तेम प्रसेदे दलनो संच॥ पट प्रतिहार
धार तरवार मद्य वलि तेम, निगड चित्र कर
कुंभकार भंडारी जेम ॥२२॥ अनुक्रम आठ ना-
मना भाष्या जे जे भाव, तिम ज्ञानावरणादिक
अड़ना एह सभाव॥ इम संसेपे विवरण कीना
आधे तत, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्युं हिव मोख
तत्त ॥ २३ ॥ संत पदै परूपणा द्रव्य नें खेत्र प्र-
माण, फरसन काल पांचमो छठो अंतर जाण॥

भाग सातमो भाव आठ तिम अलप बहुत्त ॥
ए नव भेदें भावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥
मोक्ष एक पदवी छै जे पदे अविनाभाव, व्योम
कुसुम तिम ससिक शृंग जिम नहीय अभाव ॥
एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण द्वार, विवरण
कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥
संमत्तै क्षायक सन्नी असन्नी येसन्नी, अणाहारी
आहारी अणाहारी ऊपन्न द्रव्य प्रमाणे सिद्ध
जीव ॥ द्रव्य होय अनंत, लोग असंखम भाग
एग सिद्ध होय अणंत ॥ २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी
अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती
थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां भावै
नहि सिद्धां अंतर जोय, सरव जीवथी भाग अ-
नंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७ ॥ दंशण नाण जे-
हने बे ते क्षायक भाव, जीवत जेहनें वलि पर-
णामक भाव समाव ॥ सहुथी थोड़ा वेद नपुं-
सकथी जे सिद्ध, तेहथी थीनर अनुक्रम संख

गुण सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक नव तत्त तस सम्मत्तं, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव जिनेसर मुखथी भाष्या वयण ज हत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत निच्चल तत्थ ॥ २६ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत, अर्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंते इग पुग्गल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३० ॥ इम नव तत्त भेद पड़िभेदे विवरण कीध, श्रावक आग्रह कीन सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण सुभ सदन प्रकास नदी उपमांन, श्रीजिनलाभचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अज्ञानादिक करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वड़ साखानी पड़िसाख ॥ ग्यानसार ते पड़िसाखानी सूखम डाल; ए नव पद नव रयणे बिनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवच्छर निश्चय नय विगई प्रवचन माय, परम सिद्धि पद वाम गतें

ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन ससि वार मेरू तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा भज नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व भाषा-गर्भित स्तवनम् ॥

॥ दंडक भाषा-गर्भित स्तवन ॥

दोहा ॥ ऋषभादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥ दंडक रचनायें तवुं, संखेपे निर-धार ॥ १ ॥ नरक सात दंडक प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ बी ति चौरिंदी गब्भधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणि या, ए दंडक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं हिवै, गणनाये ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाहण संघयणेंसणा संठांण, कोहा ई लेसिदिय दो समुग्धाय प्रमाण ॥ दिट्ठी दंसण

नाण जोग तिम वलि उवयोग, उपपात वलि चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केंदिसिनो आ हार सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा दुगनो ए अरथ कह्यो संक्षेव ॥ हिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुची हुं तेहथी कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ देशी सूरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

चौ गब्भय तिरि वाऊ कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांच दंडक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जघन्य उक्कोसे देह प्रमाण, भाग असंख्यात इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो जघन्य स्वभावक अंगुल भाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने विख्यात ॥ सुरनो सात हाथ गब्भय तिरि वणस्सय काय, जोयण सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाउ बेइंदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंद्री देह उंचै आकार ॥ आरंभ कालै

वैक्रिय देहनो ए परिमाण, भाग एक इग आंगु-
लनो संख्यातम जांण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक
इक लाख जोयण इक लाख, नवसै जोयण तिर-
यंचने ए सूत्रे साख ॥ साभावकथा दुगणो नार-
क वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि
च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पक्ष एक उक्कोसविउ-
व्वण काल, विगल संघयणी थावर सुर नारकनी
माल ॥ गब्भय तिर तिरनें षड़ विगलनें छेवठ
एक, सरव जीवनें च्यार दसेसगणाये लेष ॥ ५ ॥
नर तिरनें षड़ सुरनें समचौरंस संठाण, हुंडग
इग नारग विगलेंद्री सूत्र प्रमाण, नाणाविह धय
सूई मसूरनो चंद्र आकार, वणसइ वाऊ तेऊभू
वुद्वुद् अप्पाकार ॥ ६ ॥ सहूनें च्यार कसाय
गब्भय षड़ नर तिरि दोय' वेमाणिय नागर तेउ
वाउ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा
सेस रह्याने च्यार, दार इंद्रियनो सुगम तेहनो
स्युं विसतार ॥ ७ ॥ समुद्घात सग नरनें पण

गब्भय तिरि देव, नरग वायुनें च्यार सेसनें तीनुं भेव ॥ दिट्ठी दोय विगलमें थावरने मिथ्यात, सेसने तीन दिट्ठी जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावर वितिनें एक अचक्खु दंसण होय, चौरिंद्री ते चक्खु अचक्खु दंसण होय ॥ मनुजने च्यार सेस दंडगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर नारगनें लीन ॥ ६ ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण, गब्भय मण नें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें तेरै जोग, मनुजने परै च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥ वाऊकायनें पांच तीन थावर संयोग, मनुजने बार नगर तिरदेवनें नव उपयोग ॥ विगल दुगै पण षड़ चौरिंद्री थावर तीन, उववाय इग चवण दार दोनुं समकीत ॥ ११ ॥ एग समै संख्यात असंख्या चवण पपात, गब्भय विकलेंद्री नायर सुरनी ख्यात ॥ मणुआ अथावर वणस्सइ

संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात दीन दस व रस सहस उक्किठ, वसणई च्यारनें तीन दिवसे तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पल्य सुर नागर अयर तेतीस, व्यंतर पल्य अधिक लख वरष पल्य जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें ऊणा दोय पल्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणचास दिवस छम्मास ॥ अंतमुहुत्तजहन्नें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥ भुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पल्य तेना अडंस वेमाणिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें षट थावरनें च्यार ॥ विगलनें पंच पज्जत्ती ए अधरम दार ॥ १५ ॥ सरब जीवनें होय छए दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मझार, दोह कालकी चौविह सुर नागर तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पणसा सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गब्भय म-

णजनें दीह कालकी सन्ना होय, केइक आचा-
रज कहे दिठिवाय थी दोय ॥ निच्चय पज्जत्ता
पंचिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आवी
ऊपजै तेह ॥ १७ ॥ संखाउपज्जत पंचेंदी तिरि
नर तेम, पज्जत्ता भू दग पत्तेय वणस्सई जेम ॥
ए सबरमें निश्चै सुरनी आगयि हुंति, पज्जत
संख गब्भय तिरि नर सब नरके जंत ॥ १८ ॥
नरक उद वरत्या नर तिर उपजै न हुवे सेस,
भू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजै असेस ॥
पुढवाई दस पयमें भू आऊ वणजंति, पुढवाई
दस पयमें तेउ वाऊ उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊ
नो गमण पुढवी पद नवमें हुत, पुढवाई दस
पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति
आगति मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मरीने
जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ श्रीपुरसै चोविह
सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल नारकनें
एक नपुंसक भेद ॥ पज्जता मण वादर अगन

वेमाणिक तेम भवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम ॥ २१ ॥ बेइन्द्री तेइन्द्री पृथवीने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥ हे जिन ए सहु भावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंडगमें ते गति संयोग,लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेश आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेश, तेहथी तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गच्छ भट्टारक श्रीजिनलाभ सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तसु सीस, तेण तव्या तेवीस दार दंडग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम

चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ श्रावक आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अठ्ठम चौमासो कर जैपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चौवीस-दंडक स्तवनम् ॥

॥ जीवविचार भाषा-गर्भित स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ भुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥ कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देशी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव दु भेद, सत्ता भिनै सिद्ध अनंते रूप अभेद ॥ संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार, भु अप वाउ तेउ वणस्सइ थावर धार ॥१॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ भोडल तूरी उस भूमि पाहण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय

विछेद ॥ भूमि आकास उस हिम करग आऊना भेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं अर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा झाला भोभर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक अगनि जीव विख्यात उब्भामग उक्कलिका मंडल वलि मुख वात, सुद्ध गूंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ख्यात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सई जीव दु भेय, एग सरीर अनंत जीव साधारण नेय ॥ कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि जंबाल, भूंफोड़ा अद्दत्तिय सरवे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत सिरा सांधा गांठो भांजे सम भाग ॥ काटी डाल भूंमिमें रोप्यां पल्लव थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरी रे एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल छाल फल मूल काठ बीजैं जिय एक ॥ वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक

अंतमु हुत्तै आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय, लोका लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय ॥ कवडी संख गंडोला लहिगा लटनी जात, चंदन काअलसी मेहर जोका विख्यात ॥ ८ ॥ माय बाहाक्रम पौरादिक बेइन्द्री होय, गोमी मांकिण जूआ कीडा कीडी दोय ॥ दीपक ईली घीवेली गोगीडा जात, चरम जूका गादहिया गोवर कुम उतपात ॥ ६ ॥ धनकीडा जिम चोरकीड़ा गोवालो तेह, ईली कंथुक इन्द्र-गोप तेइंद्री एह ॥ वीछू ढंकण भमरा भमरी इन्द्री च्यार, तीड़ा माखी डांस मच्छर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवडडोला मांकड़िय पतंग इत्यादिक भेद, नारक तिरि मणु देव पंचेंद्री च्यार विच्छेद ॥ धम्मा वंसा सेला अंज रिठा त्तात, मघा माघवई नारग ए नामे सात ॥ ११ ॥ जल चारो थलचारी नभचारी तिरयंच, मच्छ कच्छ सुसमार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय उरपरी

भुजपरी साप भु चारी लेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम देय ॥ १२ ॥ खेचर चरम रोम पंखी चमचेड़ कपोत, मनुजलोकथी बाहिर समुग विगय पंख होत ॥ सरबे जल थल खेचर समुच्छम गब्भय दोय, कम्म अकम्म भूमि अंतर दीवा मण जोय ॥ १३ ॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अद्ध, जोइस पंच वेमाणिय दुविहासु तें दिध ॥ पनरे भेदे सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार ॥ १४ ॥ देह आउखो एक सरीरे थितनो मांन, प्रांण जेहने जेता तिम वलि योन प्रमाण अंगुल भाग असंख सहू एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सई काय १५ बो ति चउरेंद्री अनुक्रम उक्किठदेह ऊंचास, बारै जोयण तीन गाउ इग जोयण भास ॥ सत्तमना नेरइया धणु सय पंच प्रमाण, तेहथी अरध २ ऊणा अनुक्रम रयणाण ॥ १६ ॥ जोयण सहस

गब्भधर मच्छ उरगनो देह, गाउ धणुश्र पुहत्त भूचारी पंखी जेह खेचर नव घण उरग भुयंग जोयण नव होय, नव गाऊ परिमाण समुच्छम चौपथ सोय ॥ १७ ॥ खड़ गाउ ऊंचास चउप्प य गब्भय मांण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमांण ॥ भुवन व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणांत, सात हाथ उक्कोसै ऊंचपणै तणु हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेंद्रै षड़ ब्रह्म लांतक पांच शुक्र सहस्रारे उक्कोस च्यार कर वांच ॥ आण-त प्राणत आरत अच्युत हाथें तीन, नवग्रैवेयक दोय पंचाणु तरइग लीन ॥ १९ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस्सें आय भू आऊवाऊ व-णती दिन तेऊकाय ॥ बार वरस गुणचास दि-वस तिम वलि छम्मास, अनुक्रम बेइंद्री तेइंद्री चौरिंद्री रास ॥ २० ॥ सुर नागर तेतीस अयर उक्कोसें आय, चोपय तिरिय मनुजनों तीन पल्योपम थाय ॥ जलचर उरपर भुजपर उक्कासे

पुव्वकोडि, पंखीने इग भाग असंख्य पल्यनो जोड़ ॥ २१ ॥ सरब सूखम साधारण समुच्छिम मणुं जेह, जहन्न उक्कोसें अंतमुहुत्त नियम थिति

उगाहण आख्यो संखेपै अधिकार, जे वलि इत्थ विसेस २ सूत्रसूं धार ॥ २२॥ असंख्य उसप्पिणी सहु एगिंद्री आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ॥ संख्याता संवच्छर विगल आपणी देह, सात आठ भव पंचेद्री तिरि मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उद् वरती जीव नरक नवि जाय, देव चवीने ते वलि देवपणै नवि थाय ॥ इन्द्रीय सासोसास आउ बल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ इग दु ति चौरिद्रीय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेंद्री दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथकी जेवि प्रयोग जिय मरणें होय ॥ भीम सायर संसार अपार अनंती वार, भमियो जीव धरम विन जीण अ-सोनें च्यार ॥ २५ ॥ सग सग सग सग दस

चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद लख सूत्रें साख ॥ भू आप तेउ वाऊ वण पत्तेय साधारण, बिति चौपण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत भंग जिन आगम थित विख्यात ॥ रोग न सोग न भोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपुंसक पुरसतणा नही अंग-उपांग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धा-तै सिद्ध कहंत ॥ इम ए जीवविचार गाथाथी भाषारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम-सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गच्छ भट्टारक श्रीजिन-लाभ सूरीस, रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस वारण ससिहर धर सिरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री जीवविचार-स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ समवसरण-विचार-गर्भित स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ श्रीजिनशासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥ प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चो सठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवे तिहां, त्रिगडो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहू अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकिती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥ सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देशी ॥

आप अरिहंत भलै आविया जी, गावै अपछरह गंधर्व ॥ समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥ भुवनपति वीस इंद्रै मिल्याजी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस दु दस वेमाणिय जुडया जी, चौसठ इन्द्र सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुर पूंज परमारजै जी, भूमि योजन सम भाउ ॥ मेघकुमर रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिड़काव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अ-

गर कपूर सुभ धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार वाण-व्यंतर हिव वेगसूं जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण उरध मुखै जो, वरषए जाणू प्रमाण ॥ भवणवइ देव त्रिगडो भलो जी, करय ते सुणाउ सुजांण ॥ आ० ॥८॥ रचय गढ़ प्रथम रूपातणोजी, सोव्रन कांगरै सार ॥ रवि-ससि-रयण कोसीसकोजी, कनकनो वोच प्रकार ॥ आ० ॥ ६ ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी, रचय वेमाणि सुरराज ॥ भलो त्रीजो गढ भीतरे जी, जिहां विराजै जिनराज ॥ आ० भींत उंची धणुं पांचसै जी, सवातेतीस विसतार ॥ धनुषसे तेर गढ आंतरो जी, प्रोल पचास धण च्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावडी वीस हजार ॥ थाक श्रम नहिय चढतां थकां जी, एक कर उच्च विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणू सहस पृथवी थकी जी, उच्च रहे त्रिगढ आकास ॥ तेह तल सहू यथा-

स्थित वसै जी, नगर आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहु २ दिस तिहां जी, नीलमणि मोर निरमांण ॥ दुसय धणु मध्य मणि पीठका जी, उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां चिहुं दिसे जी, मोतीयें भाक-भमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें जी, देव-च्छंदो सुविशाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवदुंदुभि नाद उपदिसे जी, जिन गुण गावसो तेह ॥ अह्म जिम आइ सिर ऊपरे जी, गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल ससारनी ए देशी ॥

पुव्व दिसि आमणे आय वेसे पहू, सुर कृत चौमुख रूप देखै सहू ॥ दीपै असोक तस वार-गुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविशाल ए, रूप चिहुं २ दिसें चामर ढाल ए ॥ योजनगा-मनी वांण श्रीजिनतणां, भगवंत उपदिसै बार

परषद् भणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अगनि-कुणौं करी. गणधर साधवी तिम वेमाणिय सुरी ज्योतषी भुवणनी विंतरी स्त्रीपणें, नैऋतकूण जिनवांण उभी सुणे ॥ त्रिहूंतणा पति वायव-कूंणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए ॥ बारह परखदा मद मच्छर छोड ए, भूख त्रिस विसरै सुणै कर जोड ए ॥ ॥ १९ ॥ पूठ भामंडल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज उं च आकास ए, झलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहु वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहु धरिय पहिले गढै, होय पग-चार नर नार उंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सु-णि जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुन्यवंत पुरुष ते परषद् बारमें सुणैं जिनवाणि धन गणिय अवतारमें ॥ चौ-विह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांहिलो ल माहे वसै ॥ २२ चिहुं दिसि वाटली वावि

चौजाणियै, विदिसि चौ कूण दोय २ वखाणि-ये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए, स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अपराजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंबरु पुरुष खट्टंग अचिंमाल ए, रजत-गढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो त्रिगडो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्द्धिक रचै तिण ठांम ए ॥ करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही होय ए ॥२५ जिण समवसरणनी ऋद्धि दीठी जियै, तेह धन धन्न अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो, हिव मुझ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्या ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै ऋद्धि वरणै सहू जिनवर सारखो ॥ सरदहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखो ॥ प्रकरण सिद्धांत गुरु परंपरा

सुणी सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार-गर्भित स्तवनं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री ऋषभदेवजीका स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरजी पाटियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजामी, हूं तो अरज करूं सिरनांमी ॥ कृसानिध विनती अवधारो, भवसागर पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ कृ० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति मोहनगारी, निरख्यां हरषै नर नारी, जाउ वारी हुं वार हजारी ॥कृ०॥ २॥ हिव किसिय विमासण कीजै, मुझ ऊपर महिर धरीजै, दिल रंजन दरसण दीजै ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया, भव २ ना पातिक टलिया, प्रभु जो मुझसे मुख मिलिया ॥ कृ० ॥ ४ ॥ समस्या संकट टलि जावै, नव नव नित मंगल थावै, मुझ आतम पुन्य भरावै ॥ कृ० ॥ ५ ॥ करजोडी

वीनती कीजै, केसर चंदन चरचीजै, दिन धन २ तेह गिणीजै ॥ क्रू० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीठा चंद चकोरो ॥ क्रू० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरै, वीस माहा भय संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ क्रू० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर कांई, वाधै संपत शोभ सवाई ॥ क्रू० ॥ ६ ॥ नाभिराय कुलं वर चन्दा, भव जन मन नयण आनंदा, उलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ क्रू० ॥ १० ॥ जयकारीऋषभ जिनंदा, प्रह सम धर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन भक्ति सूरिंदा ॥ क्रू० ॥ ११ ॥

॥ पार्श्वनाथजी का बडा स्तवन ॥

॥ ढाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवडीपुर मंडण गुण निलो ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥ नयरी नांम

वणारसी ए, सुरनयरी जिण ऋद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी छै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु घर नार ए तसु गुणहि न लब्भै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए, तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए, अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए, पूछै भूपतिनें कह्या ए, करजोड़ि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै वृषभ ऊदार, धरणी जिण धर्यो भार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान, जसु बल कोय न मांन ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी ॥ ६ ॥ पांचमें पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छठै दीठो ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सो-

हती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कूंभ, भरियो निरमल अंभ ॥ देखि सरोवर दसमें, मनह थयो अति विसमें ॥ ६ ॥ समुद्र इग्यारमें ठांमें, खीरजलधि इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धून गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी रासि, दह दिसी ज्योति प्रकासो ॥ सुपन चवदमें ए दीठो, पातिक धूमनीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो भूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै उदय हमारै ॥ ११ ॥

॥ दूहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणो, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण, आवी मंदिर भक्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

वणारसी ए, सुरनयरी जिण श्रच्छे हसी ए ॥ तेण पूरी छै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु घर नार ए तसु गुणहि न लब्भै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए, तसु अ-तिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए, अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए, पूछै भूपतिनें कह्या ए, करजोड़ि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै वृषभ उदार, धरणी जिण धर्यो भार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान, जसु बल कोय न मांन ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी ॥ ६ ॥ पांचमें पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छठै दीठो ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो अंध कार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सो-

हती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कूंभ, भरियां निरमल्ल अंभ ॥ देखि सरोवर दसमें, मनह थयां अति विसमें ॥ ६ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धून गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी रासि, दह दिसी ज्योति प्रकासो ॥ सुपन चवदमें ए दीठा, पातिक धूमनीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो भूप उदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै उदय हमारै ॥ ११ ॥

॥ दूहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणो, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण, आवी मंदिर भक्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगां दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर पहुता आपणे, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरु जगत्र थयो जयकार, खिण इक नार कियें पायो सुक्ख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध, कर थांनक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥१६॥ तिणहीज निसि चोसठ इन्द्र मिली तिहां आवै, लेइ निज भक्तैं सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ करी जनम महोच्छव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल द्वीप नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार, घर २ गाई जैकीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिलो सहू परिवार, तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥१८॥ प्रभु वाधै दिन २ कला करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजित रूप जिसो देविंद ॥ गुणकला विचक्षण विद्यातणो निधांन, जोवनवय आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदै प्रभु रहतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणावै अवसरू ए, देइ संवच्छरी दान याचक जन सुखकरू ए ॥ २० ॥ स्वामी संजम लेय इन्द्रादिक सब मिलया ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदलया ए, पांमीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गौडीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह परलोग सुवंछित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवडीपुर जावै, चोर धाड संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरण-राय पउमावइ जास वहे सिर आंण, आंमल वरण सुसोभित नव कर काय प्रमांण ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि कांमगवी सम तोलै, श्री गुणशेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥

॥ अजित शांतिजिन-स्तवन ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु अजित जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर प्रणमेव ए, बिहु गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यभंडार भरेसु ए, मानव भव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोडहि लाख पचास ए, सागर जिनशासन भास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, उवझाय सरोवर हंस ए ॥३॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां गाजियो ए॥ विजया तसु घरनार ए, बिहुं रमयति पासा सार ए ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ उयर वस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ बिहुं जण मन अणंदियो ए, सुत नांम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण सयल उच्छाह ए, क्रम २ बाधे जगनाह ए ॥६॥ हंस धवल सारिस तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए॥

मलपति चालै गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो संसार ए, वलि ज्ञान विवेक विचार ए ॥ गुण देखो गज गह गह्यो ए, लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥८॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधै सब काज ए, प्रभु पालै पुहवी राज ए ॥ ६ ॥ हिव हथणापुर ठाम ए, विश्वसेन नरेश्वर नांम ए, राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे वेव ए ॥ १० ॥ चवदह सुपनें परवस्यो ए, अचिरा उयरें सुत अवतस्यो ए ॥ मांनव देव वखाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जांणियो ए ॥११॥ देस नयर हुय संत ए, तिण नांम दियो श्रीशांत ए ॥ जिन गुण कुल जांणै कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु उपम नहो ए ॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिर-ण लोए, वन सिंहे बीहे एकलो ए ॥ नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥१३॥ गीतहि राग सु रंग ए, पिण पभणै लोक

कुरंग ए ॥ तो उलग्यां ससि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४॥ इण पर मृग अति खलभल्यो ए, भय भंजण सांमि सांभल्यो ए॥ आणंदियो मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंछन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति परणे घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल छल आवै यण जोगवे ए, पीय राज भली पर भोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर तणें मंडल समें ए, पंचास सहस वरसां गमे ए ॥ तो तेजै दिणयर जिसो ए, ऊपन्नो चक्करयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधो भरह छखंड ए, वरतावो आण अखंड ए ॥ चवद रयण नव निहि सही ए, वसु सोल सहस जक्खै अही ए ॥ १८ ॥ सहस बहुत्तर पुर वरा ए, बत्तीस मौडबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोड ए, छिन्न वे नमें बे कर जोड ए ॥ १९ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, बत्तीस सहस नाटिक रमें

ए ॥२०॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण लावण्य लीला भरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सहस अतेऊरी ए ॥२१ ॥ अवरज ऋद्धि प्रकार ए, मणि कंचण रयण भंडार ए॥ ते कहिवा कुण जांण ए, वपुवपु रे पुण्य प्रमांण ए ॥ २२ ॥ इम चक्रीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥२३॥ इण पइ बिहु तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज त्रिविह परा ए॥ जाणी अवसर ए सार ए, बिहु लीधो संजम भार ए ॥ २४ ॥ बिहु खम दम धीरज धरी ए, बिहु मोह मयण मद परिहरी ए ॥ विहु जिन झाण समाण ए, बिहु पांम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ विहु देवहि कोडहिमहि ए, बिहु चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहु ठाण ए, बिहु योजनबाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेऊरी ए, बिहु आगलि इन्द्र अंतेउरी ए ॥

टिगमिग चोवे जग सहू ए, रंगहि गुण गावै सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर छत्र चमर विमल, बिहुं पग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिन-तणों विहार ए, नवि रोग न सोग न मारि ए ॥ ॥ २८ ॥ बिहुं उवयार भुवन भरी ए, बिहुं सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं भंजी भव फंद ए, बिहुं उदयो परमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सो-लमो ए, जांणे चिंतामण सुर तरु समो ए ॥ थुणि अति संझ विहाण ए, तिहां इह परभव नवि हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं उच्छव मंगल करण, बिहुं संघ सयल दुरिय हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज भुवण रयण ॥ ३१ ॥ इम भगते भोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति जिण थुय भणि ए॥ सरण बिहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन उवझाय ए ॥ ३२ ॥
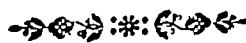
॥ मुहपत्ती पडिलेहण का स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान क्रिया जिण उपदिसि जी, सब सुख तणो उपाय ॥ भविक जनधर श्रीजिन उपदेस, छूटे कर्म कलेस ॥भ०॥ ए आंकणी॥ पडिलेहण मुहपत्ती तणी जी, भाखी छै पचवीस ॥ तिहां ए भाव विचारिये जी, इम भाखे जगदीस भ० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये जी, सूत्र अरथनी दृष्टी ॥ ए पडिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी पुष्टि ॥ भ० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो त्याग ॥ काम-राग स्नेहरागनें जो, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ भ० ॥ सीष वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव अखोड़ा आदरो जी, नव पखोडा गमाउ ॥ ५ ॥ भ० ॥ देवतत्व गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी,

तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ भ० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी, संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अवधार ॥ भ० ॥७॥ मन वच कायानी सदाजी, गुपति गृहीजे शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जांणनें जी, तीनें दंड विशुद्ध ॥ भ० ॥ ८ ॥ पड़िलेहण पचवीस ए जी, मुंहपत्ती नी सार ॥ हिव पड़िलेहण अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ भ० ॥ ६ ॥ हास्य अरति रति धोयनें जी, शुद्ध करो वांम वाह ॥ तज भय शोक दुगंछना जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥भ० धुरली लेस्या तीन ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्ध रस साता गारवोजी, करि मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ भ० ॥ काढ सल्य तीन उरथकी जी, माया नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करी घात ॥ १२ ॥ भ० ॥ तज षटकाय विराधना जी, चरण चिन्हे शुद्ध होय ॥ ए पड़िलेहण अंगनी जी, पचवीसे तू जोय १३

भ० ॥ इम पड़िलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै करै जी, पांमैं सुक्ख अनेक ॥ १४ ॥ भ० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-वरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांभली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहाणी, सुणो भवियण मन रली । उवझाय वर श्रीलब्धिकीरत, मुखथकी ए संग्रही ॥ मुंहपतो पड़िलेहण तणो विध, लब्धिकीरत गणि कही ॥ इति श्रीमुहपत्ती पड़िलेहण स्तवनम् ॥

॥ आलोयण-स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन शासन वीर जिनवरतणौ, जास पर-साद उपगार थायै घणौ ॥ सूत्र सिद्धांत गुरुमुख-थकी सांभली, लहिय समकित अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप खप करै, जिणथकी जीव संसार-सागर तिरै ॥ दोष लागा जिके गुरुमुख आलोइयै, जीव निर्मल हुवै वस्त्र जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे तिके

पवास नें छठ विचार ॥ साध समक्षें लोक समक्षें राज समक्ष, कुड़ा आल दियां दुइ चौथरु छठ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंडायां तेम मरा यां वीस, इक लख असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूत्रावड़ना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधां बहु असतीने पोस ॥ करीय दुवालस बार हजार गुणो नवकार, मिच्छादुक्कड़ देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणां, पड़िकमणा विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै भणया, इक २ आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निवी आंबिल, भांगै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आ अनुक्रमे ए ॥

१६ ॥ उपवास भंग उपवास, आंबिल ऊपरां, अधिको दंड वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, भंग कियां वली, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग, चूलै घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी छूरी आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री भोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परद्रोह चींतव्या, उपवास एक २ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमांदान, नियम करी भंग, मद्य मांस माखण भख्या ए ॥ आलोयण उपवास, संकप्पादिक, चिहुं भेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोल्या मिरखावाद, अदत्तां दांन त्युं, जघन्य एकासण जाणीये ए ॥ अति उत्कृष्टी एण, जांण आलोयण, उपवास दस २ आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लांल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत भागे अतीचार, जघन्य छठ

पवास नें छठ विचार ॥ साध समक्षं लोक समक्षं राज समक्ष, कुड़ा आल दियां दुइ चौथरु छठ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंडायां तेम मरा यां वीस, इक लख असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूत्रावड़ना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधां बहु असतीने पोस ॥ करीय दुवालस बार हजार गुणो नवकार, मिच्छादुक्कड़ देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणां, पड़िकमणा विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै भणया, इक २ आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निवी आंविल, भांगै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच पट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥

१६ ॥ उपवास भंग उपवास. आंबिल ऊपरां, अधिको दंड वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, भंग कियां वली, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग, चूलै घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी छूरी आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री भोजन, जल तिरणो खेंलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परद्रोह चीं तव्या, उपवास एक २ जूजूआ ए ॥ १६ ॥ पनरे करमांदान, नियम करी भंग, मद्य मांस माखण भण्या ए ॥ आलोयण उपवास, संकप्पादिक, चिहुं भेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोल्या मिरखावाद, अदत्तां दांन त्युं, जघन्य एकासण जाणीये ए ॥ अति उत्कृष्टी एण, जांण आलोयण, उपवास दस २ आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लांल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत भागे अतीचार, जघन्य छठ

आलोयण धार ॥ मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे भंग ॥ च्यार शिक्षा व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी नववाड़ि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधु अने श्रावक पोसीध, एकेंद्री सचित्त संघट्टे कीध ॥ वीसर भोले सचित्त जल पीध, दंड एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धायां विण लूह्यां पात्रै, एकासण तिम पुरिमड्ढ मात्रै ॥ गइ मुहपत्ती आंबिल सारो, तिम उघै अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार छोंड़ो राखै, व्रत पच्चखांण करै षट् साखै ॥ दोषे मिच्छामिदुक्कड़ दाखै, आलोयण लेतां अभिलाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहितां नावै पार ॥ तोपिण संक्षेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां विस्तार

॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमो, जसु आगम वचने विधि पांमी ॥ जोतकल्प ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सव आलोयनें ॥ ए कांत पूछै गुरु वतावै, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एह करसी तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीध्रमसिंह कीधो, चौपने फल वधी पुरै ॥ ३० ॥

॥ नंदीश्वर द्वीपका स्तवन ॥

नंदीसर बावन जिनालय, शास्वता चोमुख सोहेरे ॥ ऋषभानन चंदानन वारिषेण, वर्द्धमांन मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अद्भुत, वलयाकार विराजै रे ॥ तेहने मध्य चिहुं दिस शोभित, अंजन गिरिवर छाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण सहस चोरासी ऊंचा, ऊंच पणे अभिरामा रे ॥ मूलै प्रथुल सहस दस जोय

ण, उवरी सहस कर विसाला रे ॥ नं० ॥ ३ ॥ ते ऊपर प्रासाद प्रभूना, अति उत्तंग उदारा रे॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदे विविध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यै ए इकसो चोवीस, बिंब संख्या सब दाखो रे ॥ ध्यावो सेवो भविजन भगते, सुध आगम कर साखी रे ॥ नं० । ५ ॥ ऊंचपणै सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण आयामा रे ॥ पिहुल पणे पचासे जोयणाना, प्रभू प्रासाद सुठामा रे ॥ नं० ॥६॥ धनुष पांचसै आयत प्रभुनी, विविध रतनमई काया रे ॥ जिन कल्याणक उच्छव करवा, सुरपति भक्ते आया रे ॥ नं० ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उवरै, चोमुख च्यार विसाला रे वाव २ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चोसठ सहस जायण उत्तंगै, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहूं दिसि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ।। ६ वाव २ नें अंतर विदसें, रतिकर परवत रू

डारे ॥ दोय २ संख्या जगदीसै कह्या नही ए कूडा रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सहस मांन दस ऊंचा, दस २ सहस विस्तारारे ॥ झल्लरि सम संठाण जगत गुरु, निश्चय ए निरधास्या रे॥नं० ॥ ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण, अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपडिमानी संख्या तेहिज, श्री-जिनराज वखाणै रे ॥ नं० १२ ॥ इम प्रासाद प्रभूना बावन, नंदीसर वर दीपे रे ॥ द्रव्य भाव विधि पूजा करतां, मोह महा भड़ जापै रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणें, जीवाभि-गमें जाणो रे ॥ इम अधिकार छै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आणो रे ॥ नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुभव इहाल्या-वोरे ॥ ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचंद्र गुण गावो रे॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनम् ॥

॥ अढाइ द्वीपै वीस विहरमाण-स्तवन ॥

॥ वंदु मनसुध विहरमाण जिणेसर वीस,

द्वीप अढीमें विचरै जयवंता जगदीस ॥ केवल-ग्याननै धारै तारै कर उपगार, किण २ ठामे कुण २ जिन कहस्यूं सुविचार ॥ १ ॥ पैंतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र प्रमाण, वलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्रै सोहै द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमाभूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूद्वीप समै विच थाल आकार, लांबो पिहुलो इक लख जोयणनें विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नांमें मेर, तिणथी दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥३ मेरुथकी दक्षण दिसि एह भरत सुभ क्षेत्र, पांचसे छव्वीस जोयण छ कला तेहनो क्षेत्र ॥ उत्तरखंडमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण चिहु करमांभूमी छए आरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस छसे चोरासी जोयण जाण, च्यार कला ए महाविदेह विखंभ वखाण ॥ बावीससै तेरे जोयण एक विजय पहुलाण, एहवी बत्तीस विजय

विराजै जेहने ठाण ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरब पश्चिम दोय विभाग, सोलै २ विजय तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारै श्रीअरिहंत, एहवे महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरव विदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठांम, पुंडरीकणी नगरी तिहां श्रीसोमंधरस्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पच्छिम विदेह बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७॥ तिमहिज नवमी वच्छविजय वलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥ नलिनावर्त्त चोवीसमी पच्छिम विदेह वखाण, वीतशोका नगरी तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥८॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप मझार, महाविदेह सुदरसण मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा गढ जेम गिरिंद, खाई रूपै दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन २ धातकी खंड ॥ पिहुलो चिहुं लख जोयणे, मंडल रूपे मंड ॥१० ॥ दी० ॥ दोय भरत दोय एरवत, दोय वलि महाविदेह ॥ करमभूमि षट छै जिहां, उणहिज नांमें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरब पश्चिम धातकी, खंड गिणीजै दोय, विजयमेरु पूरब दिसै, पच्छिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥ इक २ मेरुने अंतरे, करमभूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुथी मांडिने, लेलो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० श्री सुजात जिन पांचमो, छठो स्वयंप्रभु ईस ॥ ऋषभानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस ॥१४॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥ पूरब धातकी खंडमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली बिहुं जिननी परे, विजयनगर दिसी ठाण, ॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें, विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर

प्रभु नमूं, दसमो देव विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥ दी० ॥१७ बारमो चंद्राननै जिन, पच्छिम धातकी मांहि ॥ विचरै च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उच्छाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी खंड ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालोदधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींट्यो चूडी जेम विचाल ए ॥ सोलह लख जोयण विसतार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए०॥ उलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आधै पगै ॥ विच पड्यो परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहा लगै तिण आधिकर अठ लाख योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमभूमी छ ए कहीजै, धातकी खंड जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधै पुष्करनें पूरब दिसै, मंदिर नांमे मेरु तिहां वसै ॥ पच्छिम वि-

ज्जुमाली मेर ए, इहां किण इतरो नांमे फेर ए ॥ उ० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामेको नही ॥ एक २ मेरे तीन तीने, करमभूमि तिहां कही ॥ इम भरत एरवत माहाविदेहे, नांम सरखो हेत ए॥ तिणहीज नांमे विजय सगली, सासता धर्म खेत ए॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंडै तिम पुष्कर सही, इहां क्षेत्रानी रचना विध कही बार २ कहतां ए विसतार ए, पहिला पर लेज्यो सुविचार ए ॥उ०॥ सुविचार ए वाकी तेह सगलो, नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पच्छिम जेहनी ते, तेह तिमहीज अनुक्रमें ॥ श्रीचंद्रबाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थंकरा, पूरवे पुष्कर अरध मांहे, सरब जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन सतरमो, श्रीमहाभद्र अठारम नित नमो ॥ देवजता उगणीसम देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ उ० ॥ जिण च्यार पुष्कर अरध माहे, कह्या पच्छिम भाग ए, तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं

दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरब लाख वरसां, आउ इक २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरण सुहामणो २३ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए ॥ हिव उत्कृष्टै भेद कहीस ए ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहै, पांचे भरते जिम पांचे लहै ॥ उ० ॥ जिण लहै पांचै तेम पांचै, एरवत मिल दस हुवा इक २ विदेहे बत्तीस विजया, तिहां पिण छै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोड़ि नव सय केवली, नव सहस कोड़ी अवर मुनिवर, वंदियै नित ते वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां भरते एरवतें आज ए, पंचम आरै नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसै जिन गुणगेह ए ॥ उ० ॥ गुणगेह दोष अढार वरजित अतिसयां चोतीस ए ॥ चौशठि इंद नरिंद सेवित, नमूं ते निसदीस ए ॥ तिहां आजे तारण तरण विचरै, केवली दोय कोड़ ए ॥ दोय सहस

कोड़ी सुसाधु बीजा, नमुं वे कर जोड़ ए ॥ २५
कलश ॥ इम अढो द्वीपे पनर करमा भूमी चेत्र
प्रमांण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह भाख्या वीस वि
हरमांण ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुण
तीसै समै, सुखविजय हरख जिनंद सानिध नेह
धरि धमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप-स्तवन
संपूर्णम् ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंड ३ आधापु-
ष्करद्वीप एवं २॥ द्वीपमें ५ भरत ५ एरवत ५ म
हाविदेह १५ कर्मभूमीमें विचरता साश्वता २०
विहरमानको मेरा नमस्कार हो ॥

॥ आबूजी तीर्थ का स्तवन ॥

जात्रीड़ाभाई आबूजीनी जात्रा करज्यो,
जात्रा भणी ऊमहेज्यो, तुम्हे नरभव लाहो लीज्यो
रे ॥ जात्रो० ॥ पंच तीरथी मांहे छाजै, आबू
मारूडै देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे लागो,
उंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो
देवानो वास कहावै, निरखंता त्रिपति न थावे रे

जा० ॥ एतो डुंगरियानो राजा, एहनी छै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ छह ऋतु वास वणायो, एतो चंपला अंबला छायो रे ॥ जा० ॥ सरवर झरणा झाझा, जिहां तिहां वनवेल्या आझा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ भार अढारे वणराई, एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै फूलड़ानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर भूमि विसाला, देवल दीठा रलियाला रे ॥ जा० विमलमंत्री वरदाई, चक्केसरि देवी सहाई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवाड वंस वदीतो, जिण दलपति सौंहि जी तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाहण आरास मंडायो रे ॥ जा० ॥ ६ । झीणी २ कोरणी झेरयो, दल माखण जेम उकेरयो रे जा० ॥ नवी २ भांति वणाई, जिहां तिहां कोरे-णिया झिणाई रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ उत्तरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥ आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकारी रे ॥

जा० ॥ ८ ॥ उगणिस कोड सोनइया, द्रव्य लागत करि जस लीया रे जा० ॥ करजोड़ीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ पुछै चढिया हाथी, मंडाणा पति साह साथी रे ॥जा० इण देवल समवड़ कोई, भूमंडल मांहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ वलि तिण वंस विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमी ऋद्धि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते हवो जिणहर पासै, बार क्रोडनी लागति भासै रे ॥ जा० ॥ देराणी जेठाणी, आलानी अजब कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥ इहां देवल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल वाडो दीठो, ते तो लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥जा० १४॥ त्रिण गाउ आगल जाइयै, देवल देखी सुख ल-

हिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा च्यारो, आदि-
नाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥१५॥ सोवनमें साते
धातो, झिगमिग रही दिनने राती रे ॥ जा० ॥
मण चवदेसै चम्मालौ, जिण बिंबनो भाव नि-
हालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली भोम सोभागी,
जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥जा०॥ एहनी करणी
वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे॥जा०॥१७॥
इण डुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन भावी रे ॥
जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच
करावै रे ॥ जा० ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो,
जिनवरना जस गुण गावो रे ॥ जा० साहमी व-
च्छल कीज्यो, जातड़लोनो जसलीजो रे ॥ जा०
॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अच-
रज वाली रे ॥ जा० ॥ सुणिये छै जे कोई, अहि
नांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥ २० ॥ ए तीरथथी
गुण गावै, जात्रानो फल ते पावै रे ॥ जा० ॥ ए
तीरथ समतोले. कुण आवे रूपचंद बोले रे ॥
जा० ॥२१॥ इति आबूजी स्तवनम् ॥

॥ सकल शास्वता चैत्य-नमस्कार-स्तवन ॥

॥ ऋषभानन वर्द्धमान, चंद्रानन जिन, वारिषेण नांमे जिणा ए ॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिभुवन सासता, प्रणमुं विंव सोहामणा ए ॥ २ चेइहर सग कोडि, लाख वहुत्तर, चेंइय प्रतिमा सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोडि, साठ लाख सुन्दर, भुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४॥ बारे देवलोक प्रासाद, चौरासी लाख, सहस छिन्नू नें सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

हिवै नवग्रीवेकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रण सय त्रेवीसा सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अडत्रीस सहस सत साठ अछै गुण खाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंडल रुचक वखाण चउ २ चेईहर साठ सवे त्रिहुं ठांण ॥ इकसो चोवीसै गुण प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसै चालिसात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसै

सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार २ इखूकार, असो अति सुन्दर वत्न सकार मझार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी द्रह सुजगीस कंचन गिर वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ वैताढ्य, वीस सत रसो आढ्य ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दस रुक्ख, इग्यारैसै सत्तर सुक्क ॥ कुंड त्रणसय असी ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ४ ॥

॥ त्रिण सहस सो एक नित्राणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं, वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थंकर प्रतिमा थुणियै ॥१२॥ त्रिण लाख सहस वलि त्र्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरवालें सव मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजें ॥ १३ ॥ आठ कोडि सत्तावन लक्खारे, दोयसैं

निव्यासी कयरुक्खा ॥ हिव प्रतिमा ग्यान कहीजै रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै वेता लीस कोडी रे, अड़वन लख अधिके जोड़ी ॥ छत्तीस सहस अधिक कहीयै रे, प्रतिमा सगली सरद्दहियै ॥ १५ ॥

॥ ढाल ५ ॥

जोइस वितर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥ पायकमल तेहना नित प्रणमियै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुन्दर सकल सरूपो जी, पूजै प्रतिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर भूपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिनप्रतिमा बोली जिन सारखी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥ भवियणने भव-सायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाभिगम प्रमुख मांहि भाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥ सांभलतां भणतां सुख संपदा, हियडै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुण्या जिनवर तणा, चिहुं नाम जिनचंद तणा त्रिभुवन सकलचन्द सुहावणा ॥ वाचनाचारिज समयसुन्दर गुण भणें अभिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो सदा मुझ परणाम ए ॥ ५ ॥

॥ सूरत शहर शीतल जिन-चैत्यप्रतिष्टा स्तवन ॥

भविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानन्दन चन्द ॥ प्रभूजी विराजै रे सूरत विन्दरै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ भ० ॥ जगहितकारी रे जिनजी अवतर्या रे, श्रीदृढरथ नृप गेह ॥ श्री वच्छ सोहे रे लांछन सूंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रभु देह ॥ २ ॥ भ० ॥ विपह निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घनाघन जिम धर्म वरसता रे, विचरया त्रिभुवन भाण ॥ भ० ३ वदनी प्रमुख जे शेप रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं

शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ भ० ॥ संप्रति कालै रे श्री जिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिविंब ॥ प्रतिदिन लहियै रे प्रभु सुप्रसादथी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ भ० ॥ श्रीजिनवरनो विंब विलोकतां रे, दुष्कृत दूर पुलाय ॥ इन्द्रिय निग्रह सुग्रह संपजै रे, समकित पिण दृढ थाय ॥ ६ ॥ भ० ॥ श्रीसद्गुरुना मुखथी सांभल्या रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे निज चित्तमें धरया रे, नेमी सुत भाईदास ॥७ भ०॥ चैत्य कराव्युं रे सुंदर सोभतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो रे बिंब भरावियो रे, सहसफणा वलि पास ॥ ८ ॥ भ० ॥ वरस अठारह सत्तावीसमें रै, माधव मास मझार ॥ उज्जल द्वादशी दिवसे आवियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ९ ॥ भ० ॥ एकसो इक्यासी सहु मेले थया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतीष्ठा ते दिन तेहनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥१० ॥ भ० ॥ श्रीजिनलाभ सूरीश्वर दीपता रे, श्री-

खरतर गच्छ भाण ॥ तास पसायमें शीतल जिन थुण्या रे, विवुध क्षमा कल्याण ॥ ११ ॥ भ० ॥

॥ श्रीधरमनाथ स्वामी का स्तवन ॥

हारे हूं तो भरवा गइथी तट जमुनाके तीर जो ॥ ए चाल ॥

हांरे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवड़लो ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हांरे मुंने थास्यै कोइयक समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातड़ली तव थास्यै महारी सवि वगेरे लो ॥ १ ॥ हांरे कोइ दुर्जननो भंभेस्यो माहरो नाथ जो, उलवस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हांरे मारे स्वामी सरिखो कुण छै दुनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्या करी रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध जो, ठाली रे सी करवी तेहथी गोठड़ी रे लो ॥ हांरे कांइ झुठूं खाई ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतड़ी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु अंतरजांमी जीवन प्राणाधार

जो,वाणयो रे नवि जायो कलियुग वायरो रे लो, हॉरे मोरा लायक नायक भगत वच्छल भगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ हांरे प्रभु लागी मुझने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी होइ उभोगलो रे लो ॥ हांरे कुण जाणें अंतर गतिनी विण माहाराज जो, हेजे रे हसी बोलो छंडी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हांरे तारे मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखडली अणियाली कामणगारीयूंरे लो ॥ हांरे मारे नहणा लंपट जोवे खिण २ तुझ जो, राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा ते पिण जांणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रै बलिहारी हूं जाउं वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो, गिरुआ थइ मन आंणो उलट अति घणो रे लो ॥

॥ राणपुराका स्तवन ॥

राणपुरै रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर

देव, मन मोह्यु रे ॥ उत्तंग तोरण देहरु रे लाल निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥ रा०॥ १ ॥ चोवीस मंडप चिहुं दिसे रें लाल, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवड नहीं संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल, मांडयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें जुहारथा भोयरा रे लाल, सूतां ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो देस मेवाड ॥ म० ॥ लक्ख नवाणुं लगाविया रे लाल, घन धन्नो पोरवाड ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० खरतर वसई खंतसू रे लाल, निरखंता सुख थान ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल, जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे लाल. दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल छियंतरे रे लाल. मिगसिर मास म-

झार ॥ म० ॥ राणपुरै यात्रा करी रे लाल, सम-
यसुन्दर सुखकार ॥ म० ॥७॥

॥ दर्शनद्वार-श्रीआदिजिन-स्तवन ॥

समकित द्वार गुंभारै पैसतां जी, पाप पडल
गयां दूर रे ॥ मोहन मारूदेवीनो लाड़लो जी,
दीठो मीठो आनन्द पूर रे ॥ स० ॥ १ ॥ आयू
वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोड़ाकोड़ी
हीण रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी,
बीरज अपूरबनो घर लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ भुं-
गल भांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात मोहन
सांकल साथ रे ॥ बार ऊघाड़ा सम संवेगना जी
अनुभव भवनें बेठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण
बांधू जीवदया तणूं जी, साथियो पूरो सरधा
रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना जी, द्वि-
गुज मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर
पाणी अंग पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम
ध्यान रे ॥ आतम गुण रुचि मृगमद महमहे जी,

पंचाचार कुशम परधांन रे ॥ ५ ॥ स० ॥ भाव-पूजानें पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पूण्य पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजै जी, क्षमा विजय जिन आगम रीत रे ॥ ६ ॥ स०

॥ श्रीआदीश्वर जिन-स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजै, मोहन महिर धरीजै रे ॥ दिलरंजन प्रभु दरसण दीजै, म्हारो मनडो रीझै रे ॥ आ० ॥ १ ॥ प्रभु दरसन लहिवो जग दुरलभ, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥ जे दरसण विन किरिया पालै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥ आ० ॥ २ ॥ नय एकांते दरसन थापै, पिंड भरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति आलापैं, ते भूला भव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्याद्वादनें संगे, जे ग्रहे आत्म उमंगे रे ॥ आनन्दघन उपजै तसु अंगें. सिद्धरमणने रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ भव कोडाकोडीमें भमतां. तुझ दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख.

आज भले हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी म हिर लहिरनो लटको, जो जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण उपजा उंरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानन्दन जग वंदन, स्वामी दरसण दीजै रे ॥ लाभउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीझै रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ श्री अजितनाथजी का स्तवन ॥

॥ अनत जीन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुझ अनंत अपार, ते सांभलतां ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥ तारज्यो दीनदयाल, अ० ॥ ता० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कारण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिल्यारे, होय निमित्तम भोग ॥ अ० ॥ ता० ३ ॥ अज कुलगत केरीस

लहे रे, निज पद सिंह निहाल ॥ तिम प्रभु भक्तें भवि लहे रे, आतम शक्ति संभाल ॥ अ० ता० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्तापणें रे, करि आरोप अभेद ॥ निज पद अर्थी प्रभुथकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥ अहवा परमातम प्रभु रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसो रे, अमल अखंड अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, भास्यो अव्यावाध ॥ समस्यो अभिलाखीपणो रे. कर्त्ता साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव ॥ कारणता कारज दसार, सकल ग्रह्यु निज भाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा भासन रमणता रे. दानादिक परिणाम ॥ सकल थमा सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता० ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माहणों रे. वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद्र सुख सागरू रे, भावधर्म दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥

॥ आलोयरा-वृद्ध स्तवन ॥

॥ बे कर जोड़ी वीनवूं जी, सुणि स्वामी सुविदीत ॥ कूड़ कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वीत ॥१॥ कृपानाथ मुझ विनती अवधार, ए आंकणी ॥ तू समरथ त्रिभुवन धणी जी, मुझने दुत्तर तार ॥ कृ० ॥ २ ॥ भवसागर भमतां थकां जी, दीठां दुख अनंत ॥ भागसंयोगे भेटियो जी, भय-भंजरा भगवंत ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणा जी, तेहनें कहिये दुक्खं ॥ परदुख भंजण तूं सुणयो जी, सेवगने द्यो सुक्ख ॥ कृ ॥ ४ ॥ आलोयरा लीधां पखै जी, जीव रुले संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुणयो अधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकालै दोहिलो जी, सूधो गुरु संयोग ॥ परमारथ पीछै नहीं जी, गडरप्रवाही लोक ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिरा तुझ आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय बाप आगल बोलतां जी, बालक केहो लाज ॥ कृ० ॥७॥

जिन धर्म २ सहू कहै जी, थापै अपणी जो वात ॥ समाचारी जुइ जुइ जो, शंसय पड्यां मिथ्यात ॥ कृ०॥८॥ जाण अजांणपणे करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग उडावता जी, हार्यो जनम निटोल ॥ कृ० ॥ ६ ॥ भगवंत भाष्यो ते किहा जी, किहां मुझ करणी एह ॥ गज पाखर खर किम सहे जी, सवल विमासण तेह ॥ कृ० ॥१० आप परूंपुं आकरो जी, जांणे लोक तहंत ॥ पिण न करूं परमादियो जी, मासाहस दृष्टांत ॥ कृ० ॥ ११ ॥ काल अनंते में लह्या जी, तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पाड़िया जी, किहां जइ करूं पुकार ॥ कृ० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अविहार ॥ धीरज जीव धरे नहीं जी, पोते वहु संसार ॥ कृ० ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरो जी. न गमें भूंडी वात ॥ परनिंद्या करता थकांजी, जाये दिननें रात ॥ कृ० ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी,

आलस आणे जीव॥धरम पखै धंदे पड्यो जी,नरकै करसो रीव ॥ कृ० ॥ १५ ॥ अणहूंता गुणको कहे जी, ता हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख भली दियै जी, तो मन आणूं रीस ॥ कृ० ॥१६॥ वादभणी विद्या भणी जी, पररंजण उपदेश ॥ मन संवेग धर्यो नही जी, किम संसार तरेस ॥ कृ० ॥ १७॥ सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणता करम विपाक ॥ खिण इक मनमांहे ऊपजै जी, मुझ मरकट वैराग ॥ कृ० ॥ १८ ॥ त्रिविध २ कर उच्चरूं जी, भगवंत तुम्ह हजार ॥ वार २ भांजू वली जी, छूटकबारो दूर ॥ कृ० ॥ १६ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा आरंभ कोड़ ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर छोड़ ॥ कृ० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्यॉ अनरथ दंड ॥ कूड़ कपट बहु केवली जी, व्रत कीधा सत खंड ॥ कृ० ॥ २१ ॥ अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण

लागा घणा जो, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कृ० ॥२२॥
चंचल जीव रहे नहीं जी, राचे रमणी रूप ॥
काम विटंवन सी कहूं जी, ते तूं जाणे सरूप ॥
कृ० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो
अधिको लोभ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न
चढी संजम सोभ ॥ कृ० ॥ २४ ॥ लाग्या मुझनें
लालचें जी. रात्रीभोजन दोप ॥ में मन मूक्यो
मोकरो जी. न धर्यो धरम संतोप ॥ कृ० ॥२५॥
इण भव परभव दूहव्या जी. जीव चोरासी लाख ॥
ते मुझ मिच्छामिदुक्कडं जी. भगवंत तोरी साख
॥ कृ० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी. प्रगट
अठारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी. वगस
र माइ वाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुझ आधार छे
एतला जी, सरदहणा छे शुद्ध ॥ जिनधम मीठो
जगतमें जी. जिम साकरने दूध ॥ कृ० ॥ २८ ॥
ऋषभदेव तूं राजियो जी. सेत्रुंजागिर सिणगार ॥
पाप आलोयां आपणा जी. कर प्रभु मोरी सार ॥

कृ० ॥ २६ ॥ मर्म एह जिनधर्मनो जी, पाप आ-लोयां जाय ॥ मनसुं मिच्छामिदुक्कड़ं जी, देतां दूर पुलाय ॥ कृ० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, भव २ ताहरी सेव ॥ कृ० ॥ ३१ ॥

॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंजा चरण भेट्या नाभिनंदन जिन तणा, करजोड़ि आदिजिनंद आगै पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंदसूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणों, गणि सकलचंद सुशिष्य वाचक समयसुन्दर गणि भणें ॥ ३२ ॥

आनंदघनजी कृत स्तवन

॥ श्री ऋषभदेव स्वामीका स्तवन ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए चाल ॥

ऋषभ जिनेसर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहूं रे कंत ॥ रीज्यो साहिब संग न पहिरे रे, भांगे सादि अनंत ॥ ऋ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाइरे जगमां

सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत सगाई रे निरूपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ट भक्षण करे रे. मिलसुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहिये संभवे रे, मेलो ठाम न ठांय ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ कोइ पति रंजन अति घणो तप तपे रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति रंजन में नवि चित धर्‌यु रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीलारे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥ दोष रहितने लीला नवि घटे रे. लीला दोष विलास ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंडित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ऋ०॥६॥

॥ श्री अजितनाथ स्वामीका स्तवन ॥

मारुं मन मोह्युं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथडो निहालूं रे वीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥ जे तें जीत्यारे तेणे हुं जीतियो

रे, पुरुष किस्युं मुझ नांम ॥ पं० ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, भूलो सयल संसार । जेणें नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अभिमते वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य नयणतणे रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसु रे, ए आस्या अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जांणज्यो रे, आनंदघन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥

॥ श्री संभवनाथजी का स्तवन ॥

॥ रातड़ी रमिने किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रभू

भेद ॥ सेवन सेवन कारण पहली भूमिका रे. अभय अद्वेप अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥ भय चंचलता हो जे परिणामनी रे. द्वेप अरोचक भाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकियें रे. दोप अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे. भव परिणति परिपाक ॥ दोप टले वली दृष्टी खुले भली रे, प्रापति प्रवचन वाक ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातक साधसूं रे. अकुशल अप चय चेत ॥ ग्रन्थ अध्यातम श्रवण-मनन करी रे. परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण जोगे हो कारज नीपजे रे. एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज साधिये रे. ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदर रे. सेवन आगम अनूप ॥ देजो कदाचित सेवक याचना रे. आनंदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥

॥ श्रीअभिनंदन स्वामी का स्तवन ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसियै, दरसण दुर्लभ देव ॥ मत २ भेदे रे जो जइ पूछिये ॥ सहु थापै अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिसण दोहलूं, निरणाय सकल विशेष ॥ मदमें घेर्यो रे अंधो किम करे, रवि-शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥ आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विखवाद ॥ अ० ॥ ३ घाती डूंगर आडा अतिघणा, तुझ दरिसण जगनाथ ॥ धीठाइ करी मारग संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिसण २ रटतो जो फिरूं, तो रणरोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो अमृत पाननी, किम भाजै विष पान ॥ अ० ॥५॥ तरस न आवे हो मरण-जीवन तणो, सीझे जो दरसण आज ॥ दरिसण दुलभ सुलभ कृपाथकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ श्रीसुमतीनाथ स्वामी का स्तवन ॥

॥ राग वसंत तथा केदारा ॥

॥ सुमति चरण पंकज आतम अरपणा, दरपण जिम अविकार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांणिये, परि सरपण सुविचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आतमा, वहिरातम धुरि भेद ॥ सु० ॥ बीजा अंतर आतम तीसरो, परमातम अविच्छेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्रह्यो, वहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो सा खीधर रह्यो, अंतर आतम रूप ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू. इय परमातम साध सुग्यानो ॥ सुम० ॥ ४ ॥ वहिरातम तज अंतरआतमा, रूप सुग्यानी थइ थिर भाव ॥ परमातमनृ हो आतम भाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५

आतम अरपण वस्तु विचारतां, भरम टलै मति दोय ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥

॥ श्रीशीतलनाथजी का स्तवन ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मोहे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥१॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्षण रे ॥ हाना दाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षण रे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इच्छा करुणा, तीक्षण परदुख रीझे रे ॥ उदासीनता उभय विलक्षण, एक ठांमे केम सीझे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अभयदान ते मल क्षय करुणा, तीक्षणता गुण भावे रे। प्रेरण विण कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन भुता, निग्रन्थता संयोगे रे ॥ योगी भोगी वक्ता

मौनी, अनुपयोगी उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा, आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥

॥ श्रीकुंथुनाथ स्वामी का स्तवन ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनडो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम २ जतन करीनें राखूं, तिम २ अलगो भाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसती ऊजड़, गयण पायालें जाय ॥ सांप खायने मुखड़ं थोथुं, ए ओखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा अभिलाषी तपिया, ज्ञाननें ध्यान अभ्यासें ॥ वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम धरनें हाथे, नावे किण विध आंकू ॥ किहां कणे जो हठ करी हटकूं, तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो

ठग कहूं तो ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांह ने सहुथी अलगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंडित जन समभावै, समभै न माहारो सालो हो ॥ कुं० म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजो वातें समरथ छै नर, एहने कोई न भेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण सगलूं साध्युं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानूं, ए कहि वात छे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनहुं दुराराध्य तें वस आणं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो, तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ९ ॥

॥ प्रतिक्रमणमें कहने योग्य पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन ॥

॥ पहला पद ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै, भवना

संचित पाप परा सब मेटिये॥ मन धर भाव अ-
नंत चरण युग सेवतां, अणहूंने एक कोड़ि चतुर
विध देवता॥ १॥ ध्यांन धरूं प्रभू दूरथकी में
नाहरो,जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो॥
भव २ तुमहीज देव चरण हूं सिर धरुं, भवसा-
यरथी तार अरज आहीज करूं॥ २॥ भूख
त्रिपा तप सीत आतप ए. ना सहे, तप जप संज-
म भार तणी नवी निरवहे॥ पिण जिनवरजीना
नांमतणी आसत घणी, एहिज छै आधार जगत
गुरु अम्ह भणी॥ ३॥ तुम्ह दरिसण विण स्वां-
म भवोदधि हूं फिर्यो, सहीया दुक्ख अनेक न
कारज को सर्यो॥ मिलिया हिव प्रभु मुझ सदा
सुख दीजिये, चौ गइ संकट चुर जगत जस
लीजिये॥ ४॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति
हरी. सेन्या कीध सचेत जरा दूर करी॥ परचा
पूरण पास रयण जिम दीपतो. जयवंतो जिण-
चंद सयल रिपु जीपतो॥ ५॥

॥ दूसरा पद ॥

मनमोहन महाराज, तीन भुवन सिरताज ॥ आछेलाल, नगर ब्रहानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल सुगुण निधान ॥ आछेलाल, वामासुत वडभागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनी संभाल, करिय खरी ततकाल ॥ आछेलाल, संकट सहु प्रभु परिहर्या जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रगट्यो आनंद पूर ॥ आछेलाल, वाट विषमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद वीता सहु विखवाद ॥ आछेलाल, मन वंछित मुझ सहु फल्या जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप, मिलिया छो प्रभु आप ॥ आछेलाल, देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, शिष्य क्षमाकल्याण ॥ आछेलाल, वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥

॥ तीसरा पद ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादाणी रे ॥ वामा-

सुत वरदाय, निरमल नांणी रे ॥ १ ॥ पांच क-
मल प्रभु अंग, निरुपम निरख्या रे ॥ तीन कमल
मुझ संग, आतम हरख्यारे ॥ २ ॥ वदन महो-
दय देख, चंद लजाणूं रे ॥ गगन भमे निस-
दीस, इम मन आंणूं रे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सु-
खकार, नयण विराजे रे ॥ हृदयकमल सुविलास,
थाल ज्युं छाजे रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चरण विलोक,
पंकज हास्यारे ॥ ततखिण निज संवास, जलमें
धास्या रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार, श्रीजिनराया
रे ॥ साचें पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥
प्रभुगुण अनुभव नीर, सांग सुरंग रे ॥ टाल्यो
पातिक पंक, आतम संगेरे ॥ ७ ॥ वरस अढार
चोतीस, वदि वैसाखे रे ॥ मनुहर पांचम दीस,
सहु संघ साखे रे ॥ नगर महेवा मांहि, पास जु-
हास्या रे ॥ श्रीजिनचन्द मुणिंद, वांछित सा-
स्यारे ॥ ८ ॥

-०-

॥ चौथा पद ॥

वालेसर मुझ वीनती गोडीचा, अलवेसर अवधार हो गोडीचाराय ॥ प्रगट थई पातालथी गोडीचा, सेवक जिन साधार हो गो० ॥वा०॥१॥ आंख थई ऊतावली, गो० ॥ दरसण देखण काज हो ॥ गो० ॥ पांणीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महाराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो छै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति करवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवडो, गो० ॥ सगली भाति सदीव हो, गो० ॥ उंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणां ही देवलै, गो० ॥ दीठां ते न सुहाय हो ॥ गो० इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां उलहाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कालै वाल्है माहरे, गो० ॥ कीधो खरी सभीड हो ॥ गो० ॥ दरसण

देवानी नकी, गो० ॥ पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं करे, गो० राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर संभारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥

॥ पांचवा पद ॥

अरज सुणीजे अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, त्रिभुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण गिरवा गोडीचा स्वामी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ भव अटवी वन घन विच भमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीनदयाल दया कर दीजे, अनुभव गुण अभिरामी रे ॥ अ० ॥ चरण कमल सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥

॥ छट्ठा पद ॥

प्यारो पासको, देखी मूरत मो मन भाय ॥

॥ चौथा पद ॥

वालेसर मुझ वीनती गोडीचा, अलवेसर अवधार हो गोडीचाराय ॥ प्रगट थई पातालथी गोडीचा, सेवक जिन साधार हो गो० ॥वा०॥१॥ आंख थई ऊतावली, गो० ॥ दरसण देखण काज हो ॥ गो० ॥ पांणीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महाराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो छै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति करवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवडो, गो० ॥ सगलो भाति सदीव हो, गो० ॥ उंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणां ही देवलै, गो० ॥ दीठां ते न सुहाय हो ॥ गो० इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां उल्हाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ काले वाल्हे माहरे, गो० ॥ कीधो खरी सभीड हो ॥ गो० ॥ दरसण

देवानी नकी, गो० ॥ पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं करै, गो० राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर संभारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥

॥ पांचवां पद ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, त्रिभुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण गिरवा गोडीचा स्वामी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ भव अटवी वन घन विच भमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, अनुभव गुण अभिरामी रे ॥ अ० ॥ चरण कमल सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥

॥ छठा पद ॥

प्यारी पासकी, देखी सूरत मो मन भाय ॥

प्या० ॥ अश्वसेन वामाज़ीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मनमोहन निरख्यो, नाथ गोडीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेवगकी येही अरज हे, भवदुख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥

॥ सातवां पद ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाइ प्रभूजी, थांरी सांवली सूरत म्हानु प्यारी लागे राज़ ॥ वामाजी नंदन वांदवा, चितड़ामें लागी छै चूंप ॥ सवाइ प्रभूजी ॥ १ ॥ अणिया-ली प्रभू आंखडी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां० ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उल्हास ॥ स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नूप अश्वसेननो, करुणा निधि करतार ॥ स० थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीयो, दिल रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ तो दिन सफलो जांणियै, सो-

य घड़ी सुप्रमांण ॥ स० ॥ भगतवच्छल भल भेटियै, जिनवर चतुरसुजाण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४॥ जालम जेसलगढ जयो, श्रीचिंतामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंद्रनी, अविचल पूरो जी आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥

॥ आठवां पद ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम विन देख्यां एक घडी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे अमारा हीयडलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास छियै निरधार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि० ॥ चंद चकोरा जलधरनें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितड़ो लीधो जिम तिम करि नें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारी मानो मोटा देव रे, जि० ॥ आपो भव २ चरणकमलनी सेव म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरीनें आवे जे तुह्म

पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास म्हारा जि० ॥ मोटानी तो मोटी थाये बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणिने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥ ४ ॥ राखज्यो मुझ ऊपर निविड सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी छिटक न देज्यो छेह ॥ म्हारा जि० ॥ खरतर गच्छपति श्रीजिनलाभ सूरिंद रे, जि० ॥ तासु पसायें पभणें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥

॥ नवां पद ॥

सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं छै प्रभूजी म्हारो अंतरजामी, पूरब पून्यै थांरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तुझनें जाण्यो छै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभुजीस्युं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी ताहरो दिलमांहे

वसियो, रात दिवस थारा गुणानो छूं रसियो राज ॥ सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर छूं खासो, कदिय न मेलूं प्रभुजी पलभर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महरे राज मोटा कहीजै, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहीजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्युं प्रभुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि २ हूं तुम पाये जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगूं राज ॥ सु० ॥ श्रीजिनचंद्र सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे भवजल तारो राज ॥ सु० ॥५॥

॥ दसवा पद ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीठा आवे दाय, मो० ॥ जिम २ सूरत देखियै प्रभु, तिम २ वाधे प्रीत ॥ तन मन मारा उलसै कांइ, रूडी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥

नयण कमलदल पांखडी प्रभु,मुखड़ो पूनमचन्द ॥ दीपशीखासी नासिका काइ, दीठा परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ कांने कुंडल झिगमिगे प्रभु, कंठै नवसर हार ॥ चंपकली सोहे भली कांइ, मुखडै ज्योत अपार ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं छै जगनो वाल हो प्रभु, थारे सेवग कोड ॥ म्हारे तूंहिज साहिबो कांइ, वंदू बेकर जोड, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ सब फल्या, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा कांइ,सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥

॥ ग्यारहवां पद ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजै ॥ दीजै २ जी महाराज, कारज सगला सीझै ॥ ए आंकणी ॥ मुझ मन भमरतणी पर मोह्यो, छोड़ायो नवि छूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण, ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभू तुमने, नहिय विसारुं दिल-

सुं॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जाणूं जइ मिलुं तुमसुं॥ जि०॥२॥ पूरव पुण्यथकी में पायो, ए अवसर आजूणो॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिन्तामण, साहिब सहज सलूणो॥ जि० ॥३॥ थारे तो सेवग छै बहुला, मो सरिखा लख ग्याने, माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे॥ जि०॥४॥ आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही भाखूं॥ अमृत जेम लही गुणरस, खारो जल किम चाखूं॥ जि०॥५ मोहन ए मुद्रानी महिमा, कहतां पार न आवे॥ सायर लहर मालानें गिणतां, कहो कुण मति उपजावै॥जि०॥६॥ भगतपणै किंचित गुण भाखूं,हूं म्हारी मति सारू॥ निरुपमा अनुपम तुझ गुण लायक, त्रिभुवन जीवन सारू॥ जि०॥७॥ वरस अढार वली इकताले, मिगसर पख उजवाले॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे, यात्रा करी सुविशाले॥ जि०॥८॥ जेसलगिरि श्रीसंघ

जुगतसुं, मेलो तिहां मंडायो ॥ लाभ उदय जिनचन्दने प्रभुजी,वांध्यो प्रेम सवायो ॥ जि० ॥६॥

॥ वारहवां पद ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यांन धरूं पल २ में ॥ पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करूं छिन २ में ॥ तूं० ॥ १ ॥ काहूको मन तरुणीसें राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रभु तुमहीसे राच्यो, ज्युं चातक चित्त घनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जांणै, अलख निरंजन छिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर तूंही, साहिब तीन भुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥

॥ निर्वाण-कल्याणक-स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ भाव दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे ॥ हिव इण भरतमां, कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणां सैन्य ज्यं

रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अथड़ाय ॥ वीर विहूणा जीवड़ा रे, आकुल व्याकुल थायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक भव समुद्रनो रे, भव अटवी सत्थवाह ॥ ते परमेसर-विण मिल्यांरे, किम वाधे उत्साहो रे ॥वीर०॥६॥ वीर थकां पण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो भविजना रे, जिन पड़िमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे,देवचंद्र पद लीधा रे ॥वीर०॥६॥

॥ श्रीतीर्थ मालाका स्तवन ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें गया रे नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ भरतें भराव्यां बिंब ॥ ती० आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वइस वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्व दिशें पावापुरी, ऋद्धें भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अं-

जावरो, अमीझरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे ॥ रुचक कुंडल चारू चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे ॥ समयसुन्दर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ महावीर स्वामीके पारणाको स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥ मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनुमोदना, करतो जीरणसेठ ॥ श्रावक अच्युत गति लहे, नवग्रैवेका हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ विशालापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इग्यारमी जी,

विचरत साहसधीर ॥ विशालापुर बाहरे जी, आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिशलानंदन जी, भले में भेटया श्रीजिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे भाग्य अनोपम माय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो छे देहरो जी, तिहां प्रभु काउसग्ग लीध ॥ पच्चक्खाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिण ओलख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन सर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अछे उपवासीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान काले सही प्रभु जीमस्ये जी, से हाथे देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, होसी सफल मुझ आस ॥ पक्ष मास गिणतां थकां जी-पूरी थइ चोमास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइयार ॥ प्रभुनो मारग देखतो जी, बेठो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घर आवे छे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रभुजी

कां न पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८॥ पीछे करस्युं पारणो जी, हूं प्रभूने पडिलाभ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय विन वरसे आभ ज० ॥९॥ अवसर ऊठ्या गोचरी जी, श्रीसिद्धार्थपुत्त ॥ विशालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत्त ॥ ज० ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेड़ी प्रते इम कहे जी, कांइक भिक्षा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू भरने बाकला जी, प्रभूने आंणी दीध ॥ नीरागी तेही लिया जी, तिहां प्रभू पारणो कीध ॥ ज० ॥१२॥ देव बजावे दुंदुभि जी, जय बोले कर जोडि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढीबारे कोडि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहो सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर- लोकां प्रते इम कहे जो, में वहिराइ खीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजादिक सहू ए कहे जी, धन २ पूरण सेठ ॥ ऊँची करणी तें करी जी, अवर सहू तुझ हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तवे जी,

वाजित दुंदुभि-नाद ॥ अन्यत्र कियो प्रभु पारणो जी, मनमें थयो विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अभागियो जी, मेरे न आया सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमीये जी, मारूमंडल ठाम ॥ज०॥ १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांहि ॥ ॥ निरधन जिम २ चिंतवे जी, तिम २ निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८॥ स्वामी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ज०॥ १६ विशालापुर राजियो जी, लोकास्युं आणंद ॥ राय प्रश्न पूछे इस्यो जी, सुगुरु चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अछे जी, जीव पुण्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे केवली जी, पूरण दीनो दान ॥ हेमवृष्टि फल

तेहने जी, अवर न कोई प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण बारमें जी, जीरण घाल्यो बंध ॥ विना दान दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज० ॥ २४ ॥ घडी एक सुर दुन्दुभि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहितो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठांम ॥ ज० ॥ २५ ॥ राजा जीरणने दियो जी, अधिक मान सनमान ॥ मुक्तनगरमें थापियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ २६ ॥ दान दियो सुपात्रने जी, ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदान अनुमोदना जी, जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना जी, दान सुपात्र रसाल ॥ दान देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे मुनि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥

॥ श्रीगौड़ी पार्श्व जिन-वृद्ध स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ वाणी ब्रह्मा वादिनी, जागे जग विख्यात ॥ पास तणां गुण गावतां, मुझ मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे अहमदावादे

पास॥ गोडीनो धणी जागतो, सहूनी पूरे आस॥२॥
शुभ वेला शुभ दिन घड़ी, महुरत एक मंडाण॥
प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जांण॥ ३॥

॥ढाल १॥ गुणहि विशाला मंगलीक माला
वामानो सुत साचो जी॥ धण कण कंचण मणि
माणक दे, गोडीनो धणी जाचो जी॥ गु०॥ ४॥
अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा, तुरकतणे घर हूंती
जी॥ अश्वनी भूमि अश्वनी पीड़ा, अश्वनी वालि
विगूती जी॥ गु०॥ ५॥ जागंतो जक्ष जेहने
कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी॥ पास जिनेसर
केरी प्रतिमा, सेवग तुझ संतापे जी॥ ६॥ गु०
प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी॥
अधिकम लेजे उछो मले जे, टका पांचसे लेजे
जी॥ ७॥ गु०॥ नहि आपिस तो मारीस मुर-
डिस, मोर बंध बंधास्ये जी॥ पुत्र कलत्र धन हय
गय हाथी तुज, लच्छीघणी घर जास्थे जी॥ ८॥
गु० मारग पहिलो तुझने मिलस्ये, सारथवाह जे

गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोट्या, वस्तु वहे तसु पोठी जी ॥ ६ ॥

॥ दूहा ॥ मनसुं बिहतो तुरकडो, माने वचन प्रमाण ॥ बीबीने सुहणा तणो, संभलावे सहिनाण १० बीबी बोले तुरकने, वडा देव हे कोय ॥ अवस ताव परगट करो, नहितर मारे सोय ११ पाछली रात परोडिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणा मांहे सेठने, संभलावे यक्ष-राज ॥ १२ ॥

॥ढाल॥ एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणे जी ॥ पास तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥ पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी पहुंचाडे थांनक, प्रतिमा गुण संभारे जी ॥ ए० ॥ १४॥ तुझने होसी बहु फल दायक, भाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना पाया, प्रह ऊठीने थुणजे जी ॥ ए० ॥ १५ ॥ सुहणो देइने सुर चाल्यो, आपणे थांनक पहुंतो जी ॥

पाटणमांहे सारथवाह, हींडे तुरकने जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जातो दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडे जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लाडे जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुझ घर प्रतिमा तुझने आपूं, श्रीपास जिनेसर केरी जी ॥ पांचसे टका जो मुझ आपे, तो मोल न मांगू फेरी जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पहुतो रंगे जी, केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० १६ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आंव्या परिकर मांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥२०॥ उच्छव दिन २ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी ॥ ठांम २ ना दरसण करवा, आवे लोक प्रभातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ इक दिन देखे अवधिसुं, परिकर पुरनो भंग ॥ जतन करूं प्रतिमा तणो, तीरथ अछे अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल अट-

वी ऊजाड़ ॥ महिमा थास्ये अति घणी, प्रतिमा तिहां पहुंचाड़ ॥ २३ ॥ कुशल क्षेम तिहां अछे, तुझने मुझने जांण, संका छोड़ी काम कर, करतो म करी संकांणि ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृशभ जोतरे ॥ परिकरथी परियाणो करे, एक थल चढ़ि बीजो उबारे ॥२५॥ वारे कोस आव्यां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ, पास भवन मंडावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कटको कोइ न दीसे पाहाण ॥ देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम घरथे विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निद्रा लहे, यक्षराज आवी इम कहे ॥ २८ ॥ गहूंली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां ॥ स्वस्तिक सोपारीने ठाणी, पाहण तणी उलटस्ये खांणी ॥ २९ ॥

श्रीफल सजल तिहां किल जुओ, अमृत जल नि-
सरिस्ये कूओ ॥ खाराकूआ तणो इह सैनांण, भूमि
पड्यो छे नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरो-
ही वसे, कोढ पराभवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी
तूं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥३१
गोठीनो मन थिर थापियो, शिलावटने सुहणो
दियो ॥ रोग गमीने पूरुँ आस, पास तणो
मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मांन्यो तें वेण,
हेम वरण देखाड्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ
हुआ, सिलावटने गया तेड़वा ॥ ३३ ॥ सिला-
वटो आवे सूरमो, जीमे खीर खाँड घृत चूरमो ॥
घड़े घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी
॥ ३४ ॥ थंभ २ कीधी पूतली, नाटक कौतुक
करती रली ॥ रंग-मंडप रलियामणो रचे, जोतां
मानवनो मन वसे ॥३५॥ नीपायो पूरो प्रासाद,
स्वर्ग समो मंडे आवास ॥ दिवस विचारी इंडो
घड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥

शुभ लगन शुभ वेला वास, पंचासण बेठा श्री पास ॥ महिमा मोटो मेरु समान, एकलमिल वगडे रहे वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥ गोठीतणा गोतरिया अछे, यात्रा करीने परणे पछे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥ विघन विडारण जक्ष जगि, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे श्रीसंघने, देखाड़े निज रूप ॥ ३९ ॥ गिरुओ गौड़ीपास जिन, आपे अरथ भंडार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्सा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार ॥ मारग चूका मानवी, वाट दिखा-वणहार ॥ ४१ ॥

॥ढाल ४॥ वरण अढार तणो लहे भोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ पवित्र थइ समरे जे जाप, टाले सघला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो धरे, पार उतारे लच्छी वरे ४३

दोभागीने दे सोभाग, पग विहूणाने आपे पाय ॥ ठांम नहीं तेहने द्ये ठांम, मन वंछित पूरे अभिराम ॥ ४४ ॥ निरधाराने द्ये आधार, भवसायर ऊतारे पार ॥ आरतियानी आरत भंग, धरे ध्यांन ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समर्‌यां सहाय दिये जक्षराज, तेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि प्रकाश, गूंगाने द्ये वचन विलास ॥४६॥ दुखियाने सुखनो दातार, भय भंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेड़ीतणा, श्री पर्श्व नाम अक्षर स्मरणतां ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥ श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध दूरे टले, दुद्धर सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चौरतणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार ॥ विषधरना विष ऊतरे, संग्रामे जय-जयकार ॥ ४९ ॥ रोग-शोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ ढाल ५ ॥ चाल कडखा की ॥

ॐ जततू २ ॐ ज उपशम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर जपंते ॥ भूतने प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते ॥ ५१ ॥ ॐ० ॥ दुष्ट रोग शोग जरा जंतरा, ताव एकंतरा दुत्तपंते ॥ गर्भबंधन व्रणं सर्प विछू विषं, चालिका बाल मेवाभखंते ॥ ५२ ॥ ॐ० ॥ साइणी डाइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी, श्वान सियाल विकराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ० ॥ धरणेंद्र पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस वेला वले ॥ सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्ट महाभय हरे कानपीड़ा टले ॥ ऊतरे शूल सीसग भणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नाम अभिराम मंते ॥ ५५ ॥

॥ मंगलीक-स्तोत्र ॥

धम्मो मंगल मुक्किठं, अहिंसा संजमो तवो । देवा वित्तं नमं संति, जस्स धम्मे सयामणो ॥१॥ जहा दुम्मस्स पुष्फेसु, भमरो आवइ रसं । नय पुष्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एवमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो । विहंगमाइ पुष्फेसु, दाणभत्ते सणेरया ॥३॥ वयं च वि त्तिं लब्भामो । नहि कोइ उव हम्मइ । अहागडे सुरीयंति, पुष्फेसु भमरो जहा ॥४॥ महु-कार समा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया । ना-णापिंडरयादिंता, तेण वुच्चंति साहुणो तिब्बेमि ॥ ५ ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व्व कल्याण कारणं । प्रधानं सव्वधर्माणां, जैनं जयति शास-नम् ॥ १ ॥ मंगलं भगवान्वीरो, मंगलं गौतमः प्रभु । मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जनोधर्मोस्तु मंगलम्

॥ नवकार महात्म्य ॥ (छंद)

॥ सुखकारण भवियण समरो नित नवकार,

जिनशासन आगम चवदे पूरव सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोड़, भूयमंडल विचरे तारे भवियण कोडि ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत,पहिले पद नमिये अरि गंजन अरिहंत ॥२॥ जे पनरे भेदे सिद्ध थया भगवंत, पंचमि गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छभार धुरंधर सुंदर शशि-हर शोम, कर शारणावारण गुण छत्तीसे थोम ॥ श्रुत जांण शिरोमण सागर जेम गंभीर, तीजे पद नमिये आचारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावे सार, तप विध संयोगे भाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुत्ता ते कहिये उवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुण

धारी वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लो-कमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमूं परमारथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण डाइण भूत वेताल, सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समर्यां संकट दूर टले ततकाल, जंपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ श्रीसंखेश्वरा पार्श्वनाथ-स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सेवो पास संखेसरो मन शुद्धे, नमूं नाथ निश्चे करी एक बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शु नमो छो, अहो भव्य लोको भुला कां भमो छो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो छो, पड्या पाश मे भूतड़ांने भजो छो ॥ सुराधेनु छंड़ी अजाने अजो छो, महापंथ मंकी कुपंथे व्रजो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण रशभने हस्ति साटे ॥ सुरद्रुम ऊपाड़ने आक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरोने ज किहां मेरु शृंग, किहां केशरीने किहांते

कुरंग ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेहना दुक्ख दालिद्र दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पांमी मानुषीने वृथा क्यु गमो छो, कुशीले करी देहने कां दमो छो, नहि मुक्ति वासं विना वितरागं ॥ भजो भगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदय रत्न भाखे महा हेत आणी, दयाभाव कीजे मोहि दास जांणी ॥ मोरे आज मोतीअडे मेह छूठा, प्रभु पास संखेसरो आप तूटा ॥ ७ ॥

गौतम स्वामीका छोटा रास।

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नांम जपो निश दीश ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यांन, ते घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नांमे गिरवर चढ़े, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नांमे नावे रोग, गौतम नांमे सर्व संजोग ॥२॥ जे वैरी

विरुश्रा वंकड़ा तस नामे नावे ढुंकडा ॥ भूत प्रेत नवी मंडे प्राण,ते गौतमना करूं वखाण ॥३॥ गौतम नांमे निरमल काय,गौतम नांमे वाधे श्राय॥ गौतम जिनशासन सिणगार, गौतम नांमे जय२ कार ॥४॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंछित कप्पड तंबोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नांमे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो श्रविचल भांण, गौतम नाम जपो जगजाण ॥ मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नांमे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोड़ानी जोड़, वारू विलसे वंछित कोड़ि ॥ महियल मांने मोटा राय, जो पूजे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम सरसी संगत मिले ॥ गौतम नांमे निर्मल ज्ञान, गौतम नांमे वाधे वान ॥८॥ पुण्यवंत श्रवधारो सह, गुरु गौतमना गुण छे बह ॥ कहे लावण्य समय कर जोड़ि, गौतम पूजा संपत को कोड़ि ॥ ९ ॥

॥ सोलह सतीओं का छंद॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए ॥ प्रभात ऊठी मंगलीक काजे, सोले सती नाम लीजिये ए ॥१॥ बालकुमारी जग हितकारो, ब्राह्मी भरतनी बहिनड़ी ए ॥ घट २ व्यापक अक्षररूपे, सोल सती माहि जे वड़ी ए ॥ २ ॥ वाहुबल भगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे ऋषभ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिभुवनमांहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणेथी, शीलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ उड़दना बाकला वीर प्रति लाभ्या, केवल लहि व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धूआ धारणी, नंदन राज्यमती नेम वल्लभा ए ॥ योवन वेशें कामने जीती, संजम लेइ देव दुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपदा नाम वखाणिये ए ॥ एकसो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणिये ए ॥ ६ । दशरथ नृपनी नारि निरोपम,

कौशल्या कुलचंद्रिका ए ॥ शीयल सलूणी राम जनीता, पुरायतणी प्रणालिका ए ॥ ७ ॥ कौशांबिक ठांमे शतानिक नांमे, राज्य करे रंग राजियो ए ॥ तस घर घरणी मृगावती नामे सुरभुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शील न काची, राची नही विषयारसें ए ॥ मुखड़ो जोतां पाप पुलाये, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ६ ॥ राम रघुवंशी जेहनी कामण, जनक सुता सीता सती ए ॥ जग सहू जांणे धीज करंता, अनल शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी बांधी, कूवाथकी जल काढियो ए ॥ कलंक उतारवा सतिय सुभद्रा, चंपा बार उघाड़ियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित, शिवा शिवपद गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये, बलिहारी तसु नामनी ए ॥१२॥ हस्तिनागपुर पांडवरायनी, कूंता नामे कामनी ए ॥ पांडव माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पद-

मनी ए ॥१३॥ शीलवती नामें शीलव्रत धारिणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए॥ नाम जपतां पातिक जाए, दरसन दुरित निकंदि ए ॥१४॥ निषधान-गरी नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी ए॥ संकट पड़ियां शीलज राख्यो, त्रिभुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥१५॥ अनंग अजीता जगजन जीता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए॥ विश्व विख्याता कामित दाता, सो-लमी सती पद्मावती ए ॥१६॥ वीरे दाखी शास्त्र छे साखी, उदयरत्न भाखे मुदा ए॥ प्रह ऊठीने जे नर भणसे, ते लहिस्ये सुख-संपदा ए॥ १७॥

॥ श्रावक-करणी की सज्झाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तूं ऊठे परभात, चार घड़ी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे भव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं छे कुलकर्म ॥ कवण अमारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे

बुध ॥ पडिक्कमणं करे रयणी तणुं, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तें करे पच्चक्खाण, सूधि पाले जिननी आण । भणजे गणजे स्तवन सझाय, जिणहुंतो निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाई जुहारे देव, द्रव्यभावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषालें गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ । स्वामीवत्सल करजे घणां, सगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया हीण दीना देखि, करजे तास दया सुविशेष ॥७॥ घर अनुसारे देजे दान, महोटाशुं म करे अभिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखड़ी, धर्म न मूकोश एके घड़ी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ओछा अधिकानो परिहार ॥ म भरिश केनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म भांख ॥ ६ ॥ अनंतकाय कहिये बत्रीश, अभक्ष्य बाविशे विश्वा वीस ॥ ते भक्षण

नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे।१०।
रात्रिभोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष.॥
साजी साबू लोहने गुलो, मधु धावडी मत वेचो
वलो ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण
घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार,
अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां
करजे यत्न, पातक छंडो करजे पुण्य ॥ छाणां
इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय।१३।
घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश
चोर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला
टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी
परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अनरथ दंड,
मिथ्या मेल म भरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकि-
त शुद्ध हेडे राखजे, बोल विचारिने भांखजे ॥
पांच तिथि म करो आरंभ, पालो शीयल तजो
मन दंभ ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूधने दहि,
ऊघाड़ां मत मेलो म्हही ॥ उत्तम ठामें खरचो

वित्त, पर उपगार करो शुभवित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चौविहार, चारे आहार तणो परि-हार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम भांजे सघला संताप ॥१८॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण भव भवें ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, भेटीश हुं धन धन अवतार ॥२०॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाये भवनो छेह ॥ आठे कर्म पड़े पातलां, पाप तणा छूटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुर धाम ॥ कहे जिन-हर्ष घणे ससनेह, करणी दुःखहरणी छे एह ॥२२॥

॥ गौतम स्वामीका बड़ा रास ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि पभणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ मणतण वयणे एकंद करवि निसु-

गहु भा भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण
गण गह गहिया ॥१॥ जंबुदीव सिरि भरहखित्त
खोणी तल मंडण, मगहदेस सेणिय नरेस रिउ-
दल बलखंडण ॥ धणवर गुव्वर गाम नाम जि-
हां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तत्थ तसु
पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरइंद भूय भूव-
लयपसिद्धो, चवदह विज्जा विविहरूव नारी रस
लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह
मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण देह रूवहि रंभा
वर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पंक-
ज्जलपाड़िय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास
भमाड़िय ॥ रूवहि मयण अनंग करवि
मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर
सिंधु चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरु-
वम रूव जास जण जंपे किंचिय, एकाकी किल
भीत्त इत्थ गुण मेल्या संचिय ॥ अहवा निच्चय-
पुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय रंभा पउमा

गव्वरि गंग रतिहां विधि वचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय सर कविण कोय जसु आगल रहियो, पंच सयां गुण पात्र छात्र हींडे परवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासम्मी खोणी तल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ, सुंदर तसु पुहवि भज्जा सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जा निलो, गोयम अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिनेसर केवलनाणी, चौविहसंघ पइट्ठा जाणी ॥ पावापुरसामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां किजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मदपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव दुन्दुभि आगासें

वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग महु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वरवरसंता, जोजनवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इन्द्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अमयज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥ मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुर सुरमहिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु

सुक्ख कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, ते-
जहि कर दिन कार सिंहासण सामी ठव्यो,हुओ
तो जयजयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो
घणमाण गजे, इन्दभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो
करसंचरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन
भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ ॥ तो दह-
दिसि देखे विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥१७॥
मणिमय तोरणदंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥
वयर विवर्जित जंगुगण, प्रातीहारिज आठ तो ॥
सुर नर किन्नर असुरवर, इन्द्र इन्द्राणी राय तो ॥
चित्त चमक्किय चिन्तव ए, सेवंतां प्रभु पाय तो
॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ
रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो
ए इन्द्र जाल तो ॥ तो बाला वइ त्रिजग गुरु, इन्द्र-
भूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे, फेड़े
वेद पएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे,
भगतहिं नाम्यो सीस तो ॥ पंच सयांसं व्रत

लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव सं-
जम सुणवि करे, अगनि भूइ आवेय तो ॥ नाम
लेइ आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २०॥
इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार
तो ॥ तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार
तो ॥ बिहुं उपवासें पारणो ए, आपणपें विरहंत
तो, गोयम संयम जग सयल, जय जय कार
करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इन्द्रभूइ इंद्रभूइ चढि-
यो बहुमान हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहु
तो तुरंतो ॥ जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेड़े
फुरंतता ॥ बोधबीज सज्जायमनें, गोयम भवहि
विरत्त ॥ दिक्ख लेई सिक्खा सही, गणहरपय-
संपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण,
आज पचेलिमां पुण्य भरो ॥ दीठा गोमय सा-
मि, जो नियनयणें अमिय झरो ॥ समवसरण
मझार, जे जे संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार,
कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजें

दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कनें अण-
हुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरु
भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणाचल केवल
नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टा-
पद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम ल-
ब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देस
णा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस
परसएण, जा मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥
तपसो सियनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे
ए ॥ किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गा
ज़तो ए ॥ गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन
चिन्तवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि
द्रिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न,
दंड कलस ध्वज वड सहिय ॥ पेखवि परमाणंद,
जिणहर भरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्र-
माण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब ॥ पणमवि
मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥२७॥

वयर सामिनो जीव, तीर्यकजृंभक देव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंडरीक, कंडरीक अध्ययन भणी ॥ वलतां गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ, चाले जिम जथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमीय वूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचसयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २६ ॥ थंचसयां जिणनाह, सम वसरण प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसें, उपन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेव. छेह जाय आ-

पण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्लसिय ॥ विहरियो ए भरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठव तो ए कणय पउमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नयनानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखियो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए त्रिशलादेवि, नंदन पुहतो पर मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मनविखवाद, नादभेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिभलो ए कीधलो सामि, जाणयो केवल मांगसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केड़ें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतहिं भोलें भोलव्यो ए ॥ आपणो ए उँचलो नेह, नाह न

संपे साचव्यो ए॥ साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए॥ तिणसमे ए गोयम चित्त, राग वैरागें वालियो ए॥ ३५॥ आवतो ए जो उल्लट्ट, रहितो रागें साहियो ए॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए॥ गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए॥३६॥ वस्तु॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें संवसिय तीसवरससंजम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ॥ ३७॥ भास॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चंदन सौगंधनिधि॥ जिम गंगाजल लहिर्यां लहके. जिम कणयाचल तेजें झलके, तिम गोयम सोभागनिधि॥ ३८॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा.

जिम सुरतरुवइ कणायवतंसा, जिम महुयर राजीववनें ॥ जिम रयणायर रयणं विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम भूमीपती भुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलब्धें गह-गह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंभ सहु वशि हुआ ए ॥ काम गवी पूरे मन कामी, अष्टमहा-सिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरो ए ॥ ॥ ४२ ॥ प्रणव अक्षर पहिलो पभणी जें, माया बीजो श्रवण सुणी जें ॥ श्रीमिति साभा संभवो

ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहू उवझाय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥४३॥ परघर वसतां काय करीजे, देस देसांतर काय भमी जें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीझे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पभणीजें, परव महोच्छव पहिलो दीजें, रिद्धि-वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीक्खियो ए ॥ विनयवंत विद्या भंडार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास भणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजं, रिद्धि-वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चन्दन छडो दिवरावो, माणक मोतीना चोक

पूरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए ॥ तिहां बेठो गुरू देशना देशी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीका रास संपूर्ण ॥

राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ भूख्यां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ॥ जे गुरु गौतम समरिये, मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंडरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठोनें प्रणमता, चवदेसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धि संपण्णं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसामी ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ ॥ इति पदम् ॥

श्री शत्रुंजय का रास।

दूहा ॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास भणूं रलियामणो, सेत्रुंजानो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हुआ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुञ्जा माहातम कियो, शिला दैत्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समवसख्या, सेत्रुञ्जा ऊपर जेम ॥ इंद्रादिक आगल कह्यो, सेत्रुञ्जा महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंजा तीरथ सारिखो, नही छे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सगला जाय ॥ ४ ॥ नांमे नव निध संपजे, दीठा दुरित पुलाय ॥ भेटंता भव भय टले, सेवंता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंवू नामे द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

पहली ढाल—राग रामगिरी।

॥ सेत्रुंजोनें श्रीपुण्डरीक, सिद्धक्षेत्र कहूं

तहतीकः॥ विमलाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुं-
जैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरिने महागिरि
पुण्यरास, श्रीपदपर्व्वत इंद्रप्रकाश ॥ महातीरथ
पूरवे सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वतने
दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति ॥
पुष्पदन्त महापद्म सुठांम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वी
पीठ सुभद्र कैलाश, पातालमूल अकर्मक तास ॥
सर्व काम कीजे गुणग्रांम ॥ ए० ॥४॥ श्रीशत्रुंजयना
इकवीस नांम, जपेज वेठा अपने ठांम ॥ शत्रुंजय
जात्रानो फल ते लहे, महावीर भगवन्त इम
कहे ॥ ए० ॥ ५

॥ दूहा ॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण
परिमांण ॥ पिहुलो मूल उंचपण, छव्वीस
जोयण जांण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जांणवो,
बीजे अरे विसाल ॥ वीस जोयण उंचो कह्यो,
मुझ वन्दना त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे
अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण उंचो

सही, ध्यांन धरूं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण, चोथे अरे मझार, उंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम आरे, मूलतणे विसतार ॥ दो जोयण उंचो अछे, सेत्रुञ्जो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ छठे आरे, पिहुलो परवत एह ॥ उंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

दूसरी ढाल ।

केवलनांणी प्रमुख तीर्थंकर, अनन्त सीधा इण ठांम रे ॥ अनन्त वली सिझस्ये इण ठामे, तिण करूं नित परणाम रे ॥१ ॥ शत्रुञ्जय साधू अनन्ता सीधा, सीझसी वलिय अनन्त रे ॥ जिण शत्रुञ्जय तीरथ नही भेट्यो, ते गरभावास कहन्तरे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे ॥ रायणरूंख समोसर्या स्वांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पुनम दिन, इण सेत्रंज-

गिरि आय रे ॥ पांच कोडीसुं पुंडरीक सीधा, तिण पुंडरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमी राजा विद्याधर, बे बे कोडो संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमुं परभात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्रमास वदि चौदसने दिन, नमीपुत्री चउसट्ठि रे ॥ अणसण कर शत्रुं-जयगिर ऊपर, ए सहु सीधा एकट्ठि रे ॥ से० ॥६॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्रावड ने वारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोडी मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांडव इण गिर सीधा, नव नारद ऋषिराय रे ॥ संब प्रज्जून्न गया इहां मुगते, आठू कर्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तिर्थंकर, समवसर्या गिरिशृङ्गरे ॥ अजित शान्ति तीर्थंकर बेहूं, रह्या चोमासे सुरङ्ग रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चासुत साथ रे ॥ पांचसें साधुसुं सेलग मुनिवर, शत्रुंजय शिवसुख लाध

रे॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि शत्रुंजय सीधा, भरतेसरने पाट रे ॥ राम अने भरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालि मयालीने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोडि रे ॥ साधु अनंता शत्रुंजय सीधा, प्रणमुं बे कर जोडि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

तीसरी ढाल—चौपाइकी ।

॥ शत्रुंजयना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार ॥ सुणतां आणंद अङ्ग न माय, जनमरना पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी, समवसर्या स्वामी हित करी ॥ भरत गयो वन्दणने काज, ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहे मोटा अरिहन्त देव, चोसठ इंद्र करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, भरत सुणीने मन गहगह्यो ॥ भरत कहे ते किम पांमिये, प्रभु कहे शत्रुंजय जात्रा

किये ॥ ४ ॥ भरत कहे संघवीपद मुझ, थे आपो हूं अंगज तुझ ॥ इन्द्रे आणया अच्तवास, प्रभु आपे संघवीपद तास ॥ ५ ॥ इन्द्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा बिहुंने माल ॥ पहिरावी घर संप्रेडीया, सकल सोनाना रथ आपिया ॥६॥ रिषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ भरते गणधर घर तेडिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देस, भरत तेडायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ भक्ति कीधी अतिघणी, संघ चलायो शत्रुंजय भणी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कोड साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तिनी सघली ऋद्धि, भरते साथे लीधी सिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥ संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी

मननी आस ॥ ११॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजाराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय॥ तिण ठांमे रही महोछव कियो, भरते आणंदपुर वासियो ॥१२॥ संघ शत्रुंजय ऊपर चढ्यो, फरसंता पातिक झड़ पड्यो ॥ केवलग्यानी पगला तिहाँ, प्रणम्यां राय-णरूंख छे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र नि-मित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी, भरतें दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश,इंद्रे वलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, भरत करार्या गुरिसे-हरो ॥१५ ॥ सोनानो प्रसाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मनरंग ॥ भरते श्री आदिसरतणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली॥ ब्राम्ही सुन्दरि प्रमुख प्रसाद, भरते थाप्या नवला नाद ॥१७ ॥ इम अनेक प्रतिमा प्रसाद, भरते क-राया गुरु सुप्रसाद ॥ भरततणो पहिलो उद्धार, सगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

चौथी ढाल—राग सिंधूडो आशावरी।

भरततणे पाट आठमें, दंडवीरज थयो रायो जी॥ भरततणी पर संघ कियो, सेत्रुंजा संघवी कहायो जी॥१॥ शत्रुंजय उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्रीकारो जी॥ असंख्यात बीजा वली, तेन कहुं अधिकारो जी॥ से०॥ २॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिंब सारो जी॥ मूलगो बिब भंडारीयो, पछिमदिसि तिण बारो जी॥ से०॥३॥ शत्रुंजयनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी॥ दंडवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी॥ से०॥ ४॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरज थी जीवाडो जो। इशानेन्द्र कराविया, ए तीजो उद्धारो जी॥ से०॥ ५॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी॥ तिण सेत्रुंजानो करावियो, ए चोथो उद्धारो जी॥ से०॥ ६॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकितधारो जी॥ तिण सेत्रुंजानो करावियो,

ए पांचमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपती इंद्रनो कियो, ए छठो उद्धारो जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदन पासे सुण्यो, शत्रुंजयनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइंद्र कराविथो, ए आठमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ चंद्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चंदशेखर नाम मल्हारो जी ॥ चंद्रयशराय कराविथो, ए नवमो उद्धारोजी ॥से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥चक्रधरराय कराविथो, ए दशमो उद्धारो जी ॥से० ॥११ ॥ दशरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वामी वारो जी ॥ श्रीरामचंद्र कराविथो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांडव कहे अमे पापिया, किम छूटा मोरी मायो जी ॥ कहे कुंती शत्रुंजयतणी, जात्रा कियां पाप जायो जी ॥ से० १३॥ पांचे पाण्डव संघ करी, शत्रुंजय भेट्यो अपारो जी, काष्ठ चैत्य बिंब लेपना, ए

बारमो उद्धारोजो ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनो, प्रतिमा सुन्दर सरूपो जी ॥ श्रीशत्रुंजयनो संघ करी, थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥१५ ॥ अट्ठोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाड जावड करावियो, ए तेरतेरमो उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत बार तिडोतरे, श्रीमाली सुविचारो जी, वाहडदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारोजी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर सत्यासिये, वैसाख वदि शुभ वारो जी ॥ करमे दोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारो जी ॥ नित नित कीजे वन्दना, पांमीजे भवपारो जी ॥ २० ॥ से० ॥

॥दूहा॥ वलि शत्रुंजय महातम कहूं, सांभलो

जिम छे तेम ॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ भगवन्तनो भेष मांनतो, लाभ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंजा ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तिनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढिने करे उपवास ॥ नारकी नो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परव मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोड़ि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे छोड़ ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक भणी, भो जन पूण्य विशेष ॥ शत्रुंजय साधु पड़िलाभतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

बारमो उद्धारोजो ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनो, प्रतिमा सुन्दर सरूपो जी ॥ श्रीशत्रुंजयनो संघ करी, थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥१५ ॥ अट्ठोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाड जावड करावियो, ए तेरतेरमो उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत बार तिडोतरे, श्रीमाली सुविचारो जी, वाहडदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारोजी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर सत्यासिये, वैसाख वदि शुभ वारो जी ॥ करमे दोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारो जी ॥ नित नित कीजे वन्दना, पांमीजे भवपारो जी ॥ २० ॥ से० ॥

॥दूहा॥ वलि शत्रुंजय महातम कहूं, सांभलो

जिम छे तेम ॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ भगवन्तनो भेष मांनतो, लाभ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंजा ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार॥ चक्रवर्त्तिनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५॥ काती पूनम सेत्रुंजे,चढिने करे उपवास ॥ नारकी मो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोड़ि ॥ ब्रह्म स्त्री वालक हत्या, पापथी नाखे छोड़ ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पूण्य विशेष ॥ शत्रुंजय साधु पड़िलाभतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

पांचमी ढाल।

शत्रुंजय गयां पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंजा चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥२॥ वस्तुतणी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंजा चढी, एक करे उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणे जी ॥ सात दिवस पुरिमढ्ढ करे, तो छूटे गिरि एणे जी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर नारो जी ॥ आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टङ्क शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥ से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते भेटे सिद्धक्षेत्रो जी ॥ सेत्रुंजा तलहटी साधुने, पड़िलाभे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ स्त्राभरण जिणे हरया, ते छूटे इण मेलो जी ॥

आदिनाथनी पूजा करे, ग्रह ऊठी बहू वेलो. जी ॥ से० ॥७॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध थाये एमो जी ॥ अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो जी ॥ से ॥ ८ ॥ गाय भेंस घोड़ा मही, गज ग्रह चोरणहारो जी ॥ द्ये ते वस्तु तीरथे, अरिहन्त ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नामो जी ॥ छूटे छम्मासी तप कियां, सामायक तिण ठामो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजका, सधव अधव गुरुनारो जी ॥ व्रत भांजे तेहने कह्यो, छम्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक ऋषि, एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप कर तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

छट्ठी ढाल ।

संप्रति काले सोलमो ए, ए वरते छे उद्धार ॥ शत्रुंजय यात्रा करूं ए, सफल करूं

अवतार ॥१॥ से० छह री पालतां चालिये ए सेत्रुंजा केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, सङ्घ मिलया वहु थाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्तानी वावि ॥ तिहां विसरांमो लीजिये ए, वड़ने चोंतरे आवि ॥ ३ ॥ से०॥ पालीताणे पाजड़ी ए, चढिये ऊठ परभात ॥ सेत्रुंजानदिय सोहामणी ए, दूरथकी देखन्त ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये हिङ्गलाजने हडे ए, कलि-कुंड़ नमिये पास ॥ बारीमांहे पैसीये ए, आणी अङ्ग उल्लास ॥ से० ॥५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहरू ए, गज चढी मरुदेवी माय ॥ शान्तिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंस पोरवाडे परगड़ो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघवी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चोमुख प्रतिमा चरचिये ए, भम-तीमांहे भला बिंब ॥ पांचे पांडव पूजिये ए, अद्-भुत आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही

खंतसूं ए, बिंब जुहारुं अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ६ ॥ धरम दुवारमांहिं नीसरूं ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आउं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमूं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, भमतीमांहे भमंत ॥ से० ॥ ११ ॥ शत्रुंजय ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कलश अठोतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगले ए, पुंडरीक गणधार ॥ रायण तल पगला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥१३ से० ॥ रायण तल पगला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजो भूमि बिंबावली ए, पुंडरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंड निहालिये ए, अति भली उलकाझोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध शिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर पाजे उतरूं ए, सिद्धवडलूं वि-

सराम ॥ चैत्यप्रवाड़ी इण पर करी ए, सीधा वंछित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करो सेत्रुं-जातणी ए, सफल कियो अवतार ॥ कुसल खेमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से० ॥ १७ ॥ शत्रुंजय रास सोहामणो ए, सांभलज्यो सहू कोय ॥ घर बेठां भणे भावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत सोल बयासिये ए, श्रावण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजातणो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १६ ॥ गिरुवो गच्छ खरतर तणो ए, श्रीजिनचंद सूरीस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकलचंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जांणिये ए, समयसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवडो ए, सुणतां आणंद थाय ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीशत्रुंजयरास संपूर्णम् ॥

सम्मेत शिखरजीका रास ।

दुहा ॥ वादी वीस जिनेसरू, रचस्युं रास रसाल । तीरथ शिखरसमेतनी, महिमा बड़ी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले, प्रगट्यो शिखरसमेत । कोड़ाकोड़ी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥ २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्या पाप पुलाय । भविजन भेटो भावसुं, ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी, कहि न सके कवि कोय । गुण अनंत भगवंतना, तिम ए तीरथ होय ॥ ४ ॥

पहली ढाल चोपाई की ।

गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब जग होय । वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरीने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी भली, तिहां जितशत्रु नरेसर वली । विजयाराणीने सुत जांण, अजितकुमर

सहु गुणनी खाण ॥ २ ॥ जसु इन्द्रादिक सेवा करे, इन्द्राणी अति उच्छव धरे। तीर्थंकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनुक्रम इम भोगवतां भोग, पुन्य प्रसाद मिल्यो सहु जोग। अवसर दे संवत्सरी दान, संजम लीनो आप सुजांण ॥ ४ ॥ कर्म खपावी पाम्यो, ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधान। विचरे पुहवीमंडलमांहि, भव्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥ ५ ॥ सिंहसेनादिक गणधर भया, पंचाणवे संख्या सहु थया। एक लाख मुनिवर परिवस्या, श्रावक श्रावकणी सहु कस्या ॥ ६ ॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधवियां जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस अठ्ठाण सही, दोय लाख संख्या गहगही ॥ ७ ॥ पांच लाख पेंतालीस हजार, श्रावकणी संख्या सुविचार। बहुत्तर लाख पूरबनो आय, कंचनवरण सरीर सुहाय ॥८॥ साढ़ीच्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गंभीर।

गज लांछन प्रभुजीने जांण, अमृत सम जसु मीठी वांण ॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत । सहस मुनिवरने परिवार, मासखमण अणस ॥ कर सार ॥ १० ॥ चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे । भूचर खेचर किन्नर सुरी, इन्द्रादिक सहु उच्छव करी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथ मोटोमही, अठाइ महोच्छव कियो सही । ए तीरथनी जात्रा करे, ते भवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

दूहा ॥ श्रीसंभव जिनराज जी, गए इहां निर्वांण । शिखरसमेत सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जांण ॥ १ ॥

दूसरी ढाल—सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधर स्वाम—ए देशी ।

सावत्थीनगरी भरी धन संपद बहु थोक, जैतारि नृप राज करै सुखिया सब लोक । सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खाण, जेहने सुत श्री संभव जनम्या सकल सुजाण ॥ १ ॥ कंचनवरण

सरीर मनोहर प्रभुनो जांण, लंछन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधान। साठ लाख पूरवनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उच्च पणै प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय। तीन लाख श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तोस, भूमंडल विचरे प्रभु श्रीसंभव जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणूं श्रावकलोक, षट लख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्या थोक। त्रिमुखयत्त अरु दुरितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रभु सकल संघमें जय २ कार ॥ ४ ॥ सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण कीनी निजपद हेत। इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण, तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजांण ॥५॥

दुहा ॥ अभिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवांण। शिखरसमेत सोहामणो, भेटो तथ सुजाण ॥ १ ॥

तीसरी ढाल—सहस श्रमणसु सुक संजमधरो—ए देशी ।

नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संबर राजा सोहे मन रली । सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नंद ए, अभिनंदन जिन प्रगट्या चंद ए ॥ उल्लालो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंछन ते नित वसे । पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मुनि छ लाख आर्या सहस त्रिंसत् सोल ए, ॥ १ ॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी दो लख श्राद्धनी, संख्या चौलख सत्तावीसनी ॥ श्रावकणयांरी संख्या जाण ए, नायकयत्त कलिका ठाण ए ॥ उल्लालो ॥ ठाण ए शिखरसमेत ऊपर मास एक संलेषणा, इक सहस साधू परवस्या प्रभु मुक्ति पहुंचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवो मात सुमंगला, श्रीसुमति जिनवर भए नंदन सदा होत सुमंगला ॥ २ ॥ चाल ॥ सोवन वर्ण धनुष

तसु तीनसे, लंछन क्रौंच सोहै सुभगे हसै ॥ पूरब लाख पच्यासी आउ ए, इकसौ गणधर गुण गण भाउ ए ॥ उल्लालो ॥ भाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहे सहस वीस प्रमांण ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख सोले सहस तुम्बरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात संख्या सहस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेषणा प्रभु मुक्ति पुहता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनृप तात सुसीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमलतणो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई सै तनु कहौ, तीन लाख पूरब थित कहावै एकसो गणधर लहो ॥ लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साधवी दोय लख सहस हतर श्रावक संख्या सार ए ॥ ४ ॥ चाल ॥

पॉच लाख वलि पॉच हजार ए, श्रावकयांरी संख्या सार ए ॥ कुसम देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लालो ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास संलेखन प्रभुनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपद्म प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिर शिखर महिमा भई, ॥ तसु चरण पंकज वालवं दे हृदय आनंद गहगही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ भविजन भ्रमरसु सेवतां, पामे वंछित कांम ॥ १ ॥

चौथी ढाल—श्रीसीमधर साहिबा—ए देशी।

नगर वणारसी सोभता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ देवी पृथवी मात जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व जिनंद जी, वीस पूरब लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसै देहनो, कंचनवरण सुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पचा-

णवे गणधर कह्या. साधू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस साधवियां जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहस सतावन लच्चनी, श्रावक संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस श्रावकणी भाय लालरे ॥४ ॥श्री० मातंगयच्च शांतासुरी, पांचसे मुनि परवर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार लालरे ॥ ५ ॥ नगर चंद्रपुर इण परे, राजा तात महसेन लालरे ॥ देवी माता लच्चमणा, सुत चंद्रा-प्रभु वेस लालरे ॥६॥ श्रीचंद्राप्रभु वंदिये, चंद्रव-रण तनु जेह लालरे ॥ लंछन चंद्रतणो भलो, धनुष दोढसे देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ भवि-ककमल प्रतिबोधतां, सेवे सुर नर यक्ष लालरे ॥ दस लाख पूरव आउखो. तेणवे गणधर दक्ष लालरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचा-सवे. मुनि श्रमणी तीन लक्ष लालरे ॥ असी स-हस संख्या कही. श्रावक वलि दोय लक्ष लालरे

॥ ९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्राविका चउ लक्ष धार लालरे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजोना परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटोसुरी, सहस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता मुक्ति मझार लालरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥ जय श्रीसुविधि जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ समेतशिखर मुगते गया, भविजनके प्रतिपाल ॥ १ ॥

पाचमी ढाल—श्रीविमलाचल सिरतिलो—ए देशी ।

नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवो रामा माता सुत, भए सुविध सुभ जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु सत, धनुष एक परिमांण ॥ दोय लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या भए, गणधर परम प्रधान ॥ लख दोमुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय लक्ष श्रावक कह्या,

अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लख सहस, श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सानिधकार॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥ मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा महियलै, प्रगटी च्यारुं ओर ॥ ६ ॥ इमहिज शितलनाथनो, हिव सुणज्यो अधिकार ॥ भद्दिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥७ लंछन सुभ श्रीवच्छनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयुप्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सूजांण ॥ ९ ॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या ओर ॥ सहस तयांसी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्ख चौ, श्रावकणी सुविचार ॥ देवी अशोका ब्रह्म यक्ख, सहु संघ सानि ...र ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने

परिवार ॥ मुक्तिगए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

छट्ठी ढाल—धन-धन सप्रति साचो राजा—ए देशी।

सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी; कचनवरण श्रेयांस प्रभूजी, उपज्या विष्णु सुमातजी ॥ १ ॥ नमोरे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, खडग लंछन प्रभु पाय जी ॥ धनुष असी देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर बहुत्तर सहस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सहस वलि सहस गुणयासी, श्रावक पुण दो लक्ख जी ॥ ३ ॥न०॥ अड़तालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सारजी ॥ जक्ष अमर सूरी मांनवी जांणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥ न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेतजी ॥ मास संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥ ५ ॥ हिव कंपिलपुर तात भूप-

ति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्यामादेवी अंगज़ ऊपना, विमलनाथ जगतात जी ॥न० ॥ ६ ॥ सूकर लंछन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन-जी ॥ साठ लाख वच्छरनो आयु, शिष्य सताव-न जान जी ॥ न० ॥७॥ साठ सहस मुनि अड-सय इक लख, श्रमणी श्रावक जांण जी ॥ आठ सहस दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आ-णजी न० ॥ ८ ॥ षणमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार साधु परि-वारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न०॥ ९ ॥ नग-री नाम अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत जायो, प्रभुजी अनंत-कुमार जी ॥ न० ॥१०॥ लंछन श्येन सोवन सम काया, धनुष पच्चास प्रमांण जी ॥ तीस लाख वच्छरनो आयु, गणधर पचवीस आंण जी ॥ न० ॥ ११ छासठ सहस मुनीवर सोहे, बासठ मणी हजार जी ॥ छ हज्जार लाख दोय श्रावक,

श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख वलि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके सानिध कारी, नित प्रति जाय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनिवरनै परिवारै, शिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि ऊपर, पुहता पद निरवांण जी न० ॥ १४ ॥

॥ दूहा ॥ ऐसे धर्म जिणेसरू, पुहता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत गिरिंद पर, नमो २ जगभांण ॥ १ ॥

सातमी ढाल—जगतगुरु त्रिशलानंदन जी—ए देशी ॥

रत्नपुरी नगरी धणी जी, भानुराय सुजाण ॥ राणी सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिनेसर सार, धनुष पैंतालीस तनु कह्यो जी ॥ वज्र लंछन सुखकार ॥२॥ ज० चोतीस गणधर मुनि कह्या जो, चौसठ सहस प्रमांण ॥ श्रमणी बासठ सहसस्यूं जी, श्रावक दोय

लक्ष मांन ॥ ३ ॥ ज० ॥ च्यार सहसवलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार॥ श्रावकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार॥ ४ ॥ ज० ॥ किन्नर सुर यक्षा सुरी जी, एक सहस परिवार॥ समेतसिखर मुगते गया जी, वांदू वार हजार॥ ५ ॥ ज० हथणापुर विश्वसेनना जी, अचिरा मात उदार॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन जय२कार॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥ मृग लांछन सोवन समो जी,देहो धनुष चालीस॥ आयु वरष इक लाखनो जी, छत्तीस गणधर सीस॥ ज० ॥ ७ ॥ बासठ सहस मूनि छसै जी, इगसठ श्रमणी हजार॥ दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार॥ ८ ॥ सहस त्रयाणुं श्राविका जी, तीन लाख परिवार॥ गरुडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥ ९ ॥ नवसै मुनि परवार स्युं जी, आया सिखरमेत॥ मासखमण कर मुगतिमें जी, पुहता निजपद

हेत ॥ज० ॥ १० ॥ असें हथणापुर भलो जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन तनु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ छाग लंछन पैंतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सहस पंच्याणव वरस नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥ १२ ॥ ज० पैंतीस गणधर दीपताजी, साठ सहस मुनि जांन ॥ छसै साठ सहस्र वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनी जी, श्रावक संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका संख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवस्था जी, देवी बला गंधर्व ॥ कुंथुनाथ मुगते गया जी, मास संलेखण सर्व ॥ज०॥१५॥

॥ दुहा ॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्रोता सुणज्यो प्रेम धर, थास्यै लाभ अपार ॥ १ ॥
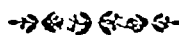
आठमी ढाल—देसी विछियानी ।

हांरे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू—ए देशी ॥

हांरे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंदरे लाला ॥१॥ श्रीअ०॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुष देहीनो मांन रे लाला ॥ कंचन वरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला ॥ २ ॥ श्री अ० ॥ इक लाख श्रावक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जांणरे लाला ॥ सहस बहुत्तर तीन लच्च श्राविका संख्या जांणरे लाला ॥ श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभु, कर मास संलेखण सार रे लाला ॥श्रीअ०॥४॥ मिथिला नगर प्रभावती, मात पिता श्री कुंभ राय रे लाला ॥ लंछन कलस पचीसनो, वपु धनुष सोवन सम कायरे लाला ॥ श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू ॥ ५ ॥ सहस

पचावन वर्षनो,थित गणधर अट्ठावीसरे लाला ॥ भविक कमल प्रति बोधता, जगनायक श्रीजग-दीस रे लाला ॥ ६ ॥ श्री म० ॥ चालीस सहस मूनीसरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस त्रयासी लक्षनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ श्राविका सित्तर सह-सनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सहसमुनि परवारस्युं,गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ राजग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्याम वरण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामीजी ॥ ९ ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वच्छर तीस हजार रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १० ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या बहुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष पचास हजार रे

लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ वरुणयक्ष देवी भली, नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ विजय पिता विप्रा मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिनेसरू ॥ १३ ॥ दस हज्जार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥ श्रीन० ॥१४॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन लक्ष सहस वलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ विचरंता भूमंडले, आया सिखर समेत मझार रे लाला ॥ भृकुटी यक्ष गंधारी सुरी, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥

॥ दूहा ॥ परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत

विख्यात ॥ शिखर शिरोमणि सहस फण, जग जीवन जगतात ॥ १ ॥

नवमी ढाल—आदर जीव क्षमागुण आदर—ए देशी ॥

जय २ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥ सांवरिया साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय २ सिखर समेत शिरोमणि, श्रीसाँवरिया पास जी ॥ ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ज०॥ काशी देस वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामा माता जग विख्याता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंछन नील वरण छवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे, गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ जय० ॥ सोल सहस मुनिवर अरु श्रमणी, कही अडतीस हजार जी ॥ भूमंडल विचरे भवि जनकूं, बोध बीज दातार जी ॥ ५ ॥ जय० ॥ चोसठ सहस लाख इक श्रावक, गुण-

चालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी संख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ जय० ॥ वीस जिनेसर मुगते पुहता, महिमा थइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जगमें, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ जय० ॥ छह री पाले जे नर भावै, भेटे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सुर तरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ जय० ॥ बहु विध संघतणी करै भक्ति, संघपति नांम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ जय० ॥ परभव सुरनर संपद पामे, जात्रा करे गहगाट जी ॥ साधर्मी वच्छल मुनिभक्ति, पूजा उच्छव थाट जी ॥ १० ॥ जय० ॥ टूंक २ पर चरण प्रभूना, पूजो भविजन भाव जी ॥ ध्यांन धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उच्छाव जी ॥११॥ जय० ॥ रास रच्यो श्रीसिखर गिरीनो, सुणतां नवनिध थाय जी ॥ तिण ए भविजन भाव धरीने, सुण-

ज्यो मन थिर लाय जी ॥ १२ ॥ जय० ॥ खर-तर गच्छपति महिमाधारी, कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौभाग्य सूरीश्वर, अमृत वचन सुगात जी ॥ १३ ॥ जय० ॥ तासु पसायें रास रच्यो ए,अमृत समुद्रने सीस जी ॥ बालचंद्र निज मति अनुसारे, सोधो विबुध जगीस जी ॥ १४ ॥ जय० ॥ संवत उगणीसै सितडोत्तर, सुदि वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, भणतां मंगल माल जी ॥ १५ ॥ जय० ॥

इति श्रीसिखर गिरी-रास संपूर्णम् ॥

मुनि-मालिका

पहली ढाल ॥

ऋषभ प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिव-सुख दायक मनह उल्लास ॥ पुंडरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल विकास ॥ १ ॥ ग्रह सम सूधा साधु नमुं नित,भावै श्रमण सु-गुरु भगवंत ॥ नाम ग्रहण करी पाप पखालूं, पर-

मानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ प्र० भरत महा-
मुनि प्रथम चक्कीसर, बाहूबल उपशम भंडार ॥
सूरयसादिक आठ मुनिसर, पांम्यो विमलाचल
भवपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ ऋषभवंस जे अनुक्रम
हुवा, मुनिवर कोडी लाख असंख ॥ श्रीशत्रुंजय
शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कंख ॥
४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति,
साधु महाबल संजम सींह ॥ अचलादिक बल-
देव अष्टमुनि, राम ऋषीसर नवम अबीह ॥५॥
प्र० श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख छ वसुन्दर, श्रीमल्लिनाथ
पूरबभव मित्र ॥ पहुंता परम ऋषीसर शिवपुर,
पाली श्रीजिन आंण पवित्र ॥६॥ प्र० ॥ वंदु वि-
ष्णुकुमार लबधि निधि, खंदक सूरीना सीस
सव पंच ॥ कार्त्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रम-
ण सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० श्रीयदुवंस
अक्षोभ सुसागर, प्रमुख आठ अणगार प्रधान ॥
श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव, निरमल गुणगण र-

यण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालिने उवयाली, पुरससेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संब अने अनिरुद्ध ऋषीसर, सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ६ ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक षट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ ढंढण ऋषि श्रीथावच्चासुत, सहस साधु संज तसु कृपाल ॥ १० ॥

दूसरी ढाल—राग धन्याश्री ॥

सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलग मुनिवरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंडरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥ उल्लालो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोह ए, अंतर प्रकासे तिमिर नासे, भविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुध्ध नारद मुनि प्रमुख पेंताल ए, दमदंत महाऋषि कुंजवारे साधु नमुं त्रिहुं काल ए ॥११॥चाल॥ रंग रिषभदत्त रतनत्रय मुणी, समरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांडव प्रणमुं मुनिपति, केसपएसी वोधक जिनमती ॥उल्लालो॥

जिनमती बालक पुत्र मेहल थिवर आणंद रक्खियो, अणगार कासव धर्म भाख्यो सोधि सिवपुर सक्खियो ॥ कालासवेसी पुत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रीपुंडरीक महामुनीसर प्रणमिये शुभ संयमी ॥१२॥ चाल ॥ वंदु वलकलचीरो केवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू दुमह नमि निग्गया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लालो ॥ श्रीजुवा ए वृषभादि [illegible] थया वड़ वइरागिया, संजमसिरि भज मोहनिद्रा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध. थया एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३ ॥ चाल ॥ खंतै चुल्लकुमारसु ध्याइये, लोहच्चा मुनि चरणे लय लाइये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम शुद्ध जयंती साहूणी ॥ उल्लालो ॥ साहूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया ॥ श्रीश्रमणभद्र सुभद्र सुन्दर अचल आतमरामिया ॥

श्रीसुप्रतिष्ठय तीस सुव्रत, साधु सुव्रत सेहरो ॥
चारित्र रिष गुणवंत गोभद्र गरुओ गरिमा सागरो
१४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय ऋषीसर वंदिये,
दसारण भद्र नमुं दुख छंदिये ॥ अर्जुनमाली
सुख संजमधरो. सुदृढप्रहारी सिवरमणी वरो ॥
उल्लालो ॥ सिवरमणी वरो श्रीकूरगडू क्षमावंत
प्रसिद्धउ, कोडिन्न दिन्न अनै सेवाली पनर सत-
क तिडोत्तरा ॥ गोतम प्रवोधत सिद्ध पुहता नमुं
चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥ गिरुआ श्री
गुणसागर गाईये, प्रथवीचंद्र प्रणम्यां सुख पाइ-
यै ॥ खंदकुमार सदा अभिनंदिये, नमिह भरह
मित्र मन आणंदिये ॥ उल्लालो ॥ आणंदिये
मेतार्य मुनिवर भगत्तसुं समरी करी,रुषी इलापुत्र
चिलापुत्र मृगापुत्र हीयै धरी ॥ श्रीइन्द्र नाम
नग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र
सुवुद्धि वोध तसु जितशत्रु मुनीसरो ॥ १६ ॥
चाल ॥ उदय २ कर जगि २ जसतणो, श्रमण

सुदंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आर्द्र-
कुमार ए, चित्त चतुर नर चित्त चमकार ए ॥
उल्लालो ॥ चमकार सार सुजात ऋषिवर देव-
सांनिध जस घणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजै
सुजिन पालत हित धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस
धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥ श्रीकपिल ऋषि
हरिकेशव बल मुनि, नित नमु निरलेव ए॥१७
चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषै जुओ,सेवुं श्रु-
तधर श्रीदेवलसुओ॥ श्रीइखुकार नृपति कमला-
वती, रांणी भृगुसु प्रोहित सुभमती ॥उल्लालो॥
सुभमती जेहनी जसाभार्या पुत्र दोय वखाणिये,
ए छहूं लेइ चारु चारित्र मुगति पहुता जाणिये॥
क्षत्रिय मुनिसर साधु संजम धर्मरुचि महाव्रती,
निर्ग्रन्थनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसंयती ॥
१८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमु केवल कल्पो,
विधसु शीतल सिवकमला मिल्यौ ॥ धन धन
धन्यो सूरगिरी धीर ए, वीरप्रशंस्यो तप गुण

वीर ए ॥ ३० ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहुभद्र नंदकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥ श्रीचंडरुद्र सुसीस खं-दग क्षमानिधि कहिये इण कालै, कुरुदत्त सुत तीसग सरोरुह रिष नम्यां आस्या फले ॥ १६ ॥ चाल ॥ अंग प्रमुख रिष च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अभयकुमार मुनि अभ-यंकरो, हल्ल विहल्लसु आतम हितकरो ॥उल्लालो॥ हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आरा-धियै, सुनक्षत्र नै सर्वानुभूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने उदायन चरम रा-जरुषीसरो, श्रीसालभद्र सुधन्न मुनिवर समरंता मंगलकरो ॥ २० ॥

तीसरी ढाल—राग धन्यासरी ॥

वडवेरागी वर नमुं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रभव सिय्यंभव परगड़ो, सुजस जसोभद्र स्वां-मि ॥ महामुनिसर नित नमुं जी, नामे घर नव

निध्ध वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ २२ ॥ जग संभूति विजय जयो, भद्रबाहु कृतभद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर श्रीथूलभद्र ॥ २३ ॥ म० भद्रबाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य मुनिराय ॥ सीत परीषह जिणसह्या, सार्या२ आतम काज ॥ म० ॥ २४ ॥ अज्जमहागिरि जांणिये, अज्जसुहत्थि विशाल ॥ संप्रति नृप पडिबोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० २५ ॥ आरिजसांमियसंसियो, अज्जसुभद्र मुनीस ॥ अज्जमंगु महिमानिलो, सोंहगिरी समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि थिवर महामुनी, श्रीवयरस्वामी मुनिराय ॥ अरहदिण्ण मुनि अपहर्यो, भद्रगुपति निरमाय ॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरू, श्रीरत्तत गुरु दत्त ॥ पुस मित्र गुण गहगह्यो, प्रभु दुरबलका पत्त ॥ म० ॥ २८ ॥ विंझ साधु सुविधइ भर्यो, ठिंडिल सुविहट्ठ ॥ सूत्रअरथ रतने भर्यो, त्त- श्रमण देवड्ढ ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल म-

हामुनी, श्रीदुपसै सूर दयाल ॥ शुद्ध क्रिया खर-
तर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल ॥ म० ॥ ३० ॥
इम पनर कर्मभूमी जिके, हुआ होस्यै अणंत ॥
वर्त्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रइ गुणवंत ॥ म० ॥
३१ ॥ ब्राह्मी सुन्दरि रायने, साहुणी चंदनबाल ॥
आदिक सीलवती सती, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल
॥ म० ३२ ॥ संवत सोल छत्तीस ए, श्रीविमल-
नाथ सुरसाल ॥ दिक्षा कल्याणक दिने, गूंथी
श्रीमुनिमाल ॥ म० ३३॥ रिणी पुरैं रलियामणो,
श्रीशीतल जिनचंद ॥ सूरि विजय राजै सदा,
संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्रीमतिभद्र
सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ
वखाणियै, सदा २ जयकार ॥ म० ॥ ३५॥ मन-
हर श्रीमुनिमालका, गुणगण परिमल पूर ॥ कंठ
ठवे उत्तम जिके, पामे सूख भरपूर ॥ म० ॥ ३६
महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्ट
महासिद्ध घरे फले, सदा २ कल्याण ॥ म० ॥३७॥

छिन्नुं जिन-स्तवन।

॥दोहा॥ वरतमांन चौवीसी वंदू, मन सूधै नित मेव री माई॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम प्रभु सेव री माई॥ व०॥१॥ श्रीसुपार्श्व चंद्र प्रभु प्रणमुं, सुविध शीतल श्रेयांस री माई॥ वासुपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री माई॥ व०॥२॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी पास जिनन्द री माई॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमानंद री माई॥ व०॥३॥

दूसरी ढाल—ग्रह सम सूधा साधु नमुं नित—ए देशी।

नित २ अतीत चोवीसो नमियै, जेहना नांम प्रगट ए जांण॥ केवलज्ञानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण॥४॥ नि०॥ सर्व्वानुभूति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वांमि॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, नेमीसर नांम॥५॥ नि०॥ अनिल

यशोधर तेम कृतारथ, श्री जिनेसर सुद्धमति सुजगीस, सिवकर स्यंदन संप्रति नांमे. वंदीजे जिनवर चोवीस ॥ ६ ॥ नि० ॥

तीसरी ढाल—सफल संसारनी—ए देशी ॥

जे भविस्संतिअणागए काल ए, तेह चौविस प्रणमीस त्रिहुं काल ए। प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए, श्रीपद्मनाभ प्रणमीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुसीजिन बीय सुरदेव सुप्रकाश ए। श्रेणिक सुत उदाइ नरिंद ए, तीसरा तेह सुपास जिणंद ए ॥ २॥ शिष्य श्रीवीरना पोट्टला साध ए, चोथो स्वयंप्रभू नांम आराधि ए। दृढायुष जीव सिद्धांतमें जाणियै, पंचम सर्वानुभूति प्रमांणिये ॥३॥ कीर्त्ति इण नाम इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते छठो स्वांमि सलहीजियै। संख श्रावक हुस्यै उदय जिन सातमा, आनंदनो जीव पेढाल जिनआठमा

॥४॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्टल जिणं, सतक श्रावक शतकीर्त्ति दसमो भणूं। देवकी जीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्यकी जीव ते अमम जिन बारमो ॥५॥ वासुदेव जीव निकषाय जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो। पनरमो निरमम देव सुलसा कहो, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥ समाध जिन सतरमो श्राविका रेवती, अढारमो शदालजीव संवर जिनपती। दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोइजीवते विजय जिन वीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीसमो जीव नारदतणो, देव बावीसमो अंबड श्रावक भणु। तेवीसमो अमरजोव अनंत वीरज नमो, स्वातबुधजीव ते भद्र चोवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगामि चोवीस जिन जांणिया, प्रवचनसारोद्धारथी आंणिया। केइ परसिद्ध ने केइअप्रसिद्धकह्या, शास्त्र अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ९ ॥

चौथी ढाल—आज निहेजो रे दीसे नाहलो—ए देशी ॥

विरहमांन जिन वीसे वंदिये,महाविदेह वि-ख्यात ॥ सीमंधर युगमंदिर श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ६॥ स्वयंप्रभु ऋषभानन अनंतवीरजी,सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंद्राननचंद्रबाहुजी,भुजंग ईश्वर नेमिभाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महाभद्र नमुं वली, देवयशा यशोरिद्ध अढीद्वीपमे विचरे आज ए, नाम लियां नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८

पाचमी ढाल—रे जीव जिन धर्म कीजिये—ए देशी ॥

च्यार तीर्थंकर सासता,इणहिज अभिधान ॥ ऋषभानन चंद्रानन, वारिषेण वर्द्धमांन ॥ च्यां० ॥ ९ ॥ अठ कोडी छप्पन्न लाख ए, सत्ताण हजा-र ॥ चउसे छयासो देहरां, त्रिहुं लोक मझार ॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोड़िया, विंव त्रेपन लाख ॥ सहस अठावीस च्यारसै, अठ्यासी भाख ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विभूजिणवर नांम ए, समस्थासुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा,स-मकित शुद्ध थाय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥कलश॥ इम त्रिण चोवीसी वीस विरहमांण चंऊ जिणवर सासता, संथुणया सतरैसै बयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंतामणी-तणी पर प्रबल वंछित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण शुद्ध प्रणमें सदा जिनचंद्र सूर ए ॥ १३ ॥

इति श्री छिन्नूं जिन-स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ मांगलिक सरणां ॥

प्रह ऊठीने समरिजें हो ॥ भवियण मंगलिक सरणा-चार ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ भ० दोलतनो दातार ॥ हियडें राखिजें हो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ भ० ॥ केव-लि भांख्यो धर्म ॥ ए चारू जपतां थकां हो ॥ भ० ॥ टूटे आठुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ एचारूं सु-खकारि हो ॥ भ० ॥ एचारू मङ्गलिक ॥ एचारू उत्तम कह्यां हो ॥भ०॥ ए चारं तहतीकहो ॥हि० गेले घाटें चालतांहो ॥ भ० ॥ समरु वारं वार ॥ गामें नगरें चालता हो ॥ भ० ॥ विघननिवारण

हार ॥ हि० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतड़ा हो ॥ भ० ॥ सिंह चिताने सूर ॥ वैरी दुसमन चोरटाहो भ० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥भ०॥ जे ध्यावे नरनार ॥ परभव जातां जीवने हो ॥भ०॥ सरणांको आधार ॥ हि० ॥६॥ राखो सरणाकी आसता हो ॥ भ० ॥ नेड़ो नहिं आवे रोग ॥ वरते आनंद सुख सही हो ॥ भ० ॥ वालो तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥भ०॥ जीव तणो उद्धार । कमी नहिं काइ वस्तुनी हो ॥भ०॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥ मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ भ० ॥ वरते कोड कल्याण ॥ शुद्धमनें करी समरता हो ॥ भ० ॥ निश्चय पद निर्वाण ॥हि०॥ ९ ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥भ०॥ नाम तणो आधार ॥ ए सरणाकी कीरति कही हो ॥भ०॥ ध्यावो मनह मझार ॥ हि० ॥ ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ भ० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥

चोथमल्ल इम वीनवे हो ॥ भ० ॥ सुणजो वाल गोपाल ॥ हि० ॥११॥इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

सज्झाय-संग्रह ।
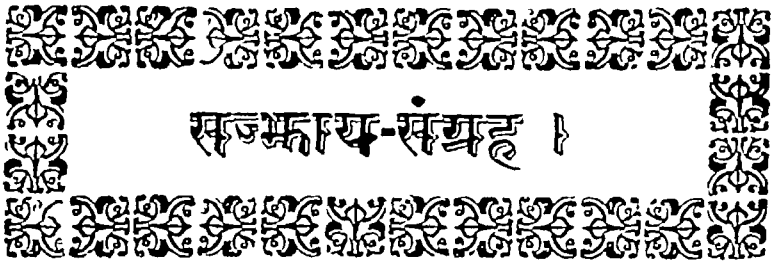
॥ उपदेशमाला पोसह सिज्झाय ॥

जग चूड़ामणिभूत्रो, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलत्रो ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खु तिहुत्रणस्स ॥१॥ संवच्छरमुसभ जिणो, छम्मासे वद्ध माण जिणचंदो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जए ज्जए ओवमाणेणं ॥२॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइं वहुचांई असरिसजणस्स ॥ इय जोयंतकराइं, एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥ न चइज्जइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं वि, मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणत्रो, पढम गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमत्थं, विम्हिय

हियओ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इच्छंति ॥ इय गुरुजण मुह भणियं, कयंजलिउडेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह सुर गणाण इंदो, गहगण तारागणाण जह चंदो। जहय पयाण नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ॥ ७ ॥ वालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ एस गुरु उवमा ॥ जंवा पुरओ काउं, विहरंति मुणी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पडिरूवो तेहस्सि, जुगप्प-हाणागमो महुरवक्को ॥ गंभीरो धिइमंतो, उवए-सपरो य आयरिओ ॥ ९ ॥ अपरिस्सावी सोमा, संगहसीलो अभिग्गहमई य ॥ अविकच्छणो अचवलो, पसंतहियओ गुरू होई ॥ १० ॥ कइ-यावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं पहं दाउं ॥ अयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करेइ माणं, परियच्छइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमग, स्स अभिमुहा

अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेच्छइ आसणगहणं, सो विणओ सव्व अज्जाणं ॥ १३॥ वरसमय दिक्खियाए,अज्जाए अज्जदिक्खिकओ साहू ॥ अभिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुज्जो ॥१४॥ धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिस वर देसिओ पुरिसजिट्ठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो, किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥१५॥ संवाहणस्सरणो, तइया वाणारसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥१६॥ तह विय सारायसिरो, उल्लट्टंत्ती न ताइया ताहिं ॥ उयरट्ठिएण इक्के, ण ताइया अंगवीरेण ॥१७॥ महिलाणसु बहुयाण वि, मज्जाओ इह समत्त घरसारो ॥ सायपुरिसेहिं विज्जइ, जणेवि पुरिसो जहिं नत्थी ॥१८॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह भरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदोय दिघंता ॥१९॥ वेसो विट्ठं अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥२०॥ धम्मं रक्खइ वेसो,

संकइ वेसेण दिक्खिओसि अहं ॥ उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवउ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहट्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं-जं समयं जीवा, आविस्सइ जेण जेण भावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ ॥२३॥ धम्मो मएण हुंतो, तो नवि सीउन्ह वाय-विज्झडिओ ॥ संवच्छरमणसीओ, बाहुवली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिं, तिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तियं.कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥२५॥ अद्धो निगविथारी, अवि-णीओ गव्विओ निरवणामो ॥ साहुजणस्स गर-हिओ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥२६॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारुव्वकेइ वुज्झंति ॥ देह खणपरिहाणी, जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर,विमाण वासीवि परिवडंति सुरा ॥ चिंतिज्ज तं सेसं. संसारे सासयं कयरं ॥

॥ २८ ॥ कहतं भन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स दुक्खमल्लिहियए ॥ जं च मरणा वसाणे, भव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सहस्सेहिं, बोहिज्जंतो नबुज्झई कोई ॥ जह बंभदत्तराया, उदाइनिव मारश्रो चेव ॥३०॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ रायलच्छीए ॥ जीवासकम्म कलि-मल भरिय मरातो पडंति अहे ॥३१॥ वोत्तूणवि जीवाणं, सदुक्करा इंति पावचरियाइं ॥ भयवंजा सा सासा, पच्चाएसो हु इण मोते ॥३२॥ पडि-वज्जिऊण दोसे, नियए सम्भं च पायवडियाए ॥ तो किर मिगाचईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥३३॥

॥ राईसंथारा-पोसह-सज्झाय ॥

निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं, महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमि-मंते ३, कहना, अणुजाणह जिट्ठिज्जा, अणुजा-णह परमगुरु, गुणगणरयणेहिं मंडिअसरीरा ॥ बहु पडिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥

अणुजाणह संथारं, वाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुड पाय पसारण, अन्तरं तु पमज्जए भूमिं ॥ ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्टंतेय काय पडिलेहा ॥ दव्वाई उवओगं, ऊसासनिरुम्भणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय वन्धण, कलहा भक्खाण परपरीवाओ, इरइ रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिच्छत्तं ॥५॥ वोसिरिसु इमाइंमु, क्खमग्ग संसग्ग विग्घ भूआइं ॥ डुग्गइनिवधणाइं, अट्ठारस पावट्ठणाइं ॥६॥ एगो हं नत्थिमे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥७॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ॥ सेसा मे वाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुक्खपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संवन्धं सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह

देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मङ्गलं सिद्धा मङ्गलं, साहू मङ्गलं, केवलि पन्नतो धम्मो मङ्गलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मङ्गलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता कत्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मङ्गलं मज्झ सिद्धाय मज्झ देवया ॥ सिद्धाय कत्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ॥ २ ॥ आयरिया मङ्गलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥३॥ उवज्झाया मङ्गलं मज्झ, उवज्झाया मज्झ देवया ॥ उवज्झायां कित्तिअत्ताणं, वोसि-

रामित्ति पावगं ॥४॥ साहूणो मङ्गलं मज्झ, साहूणो मज्झ देवया॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किक्के सत्त जोणि लक्खाओ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लक्खाउ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्खा यमणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ. निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वन्दामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धहसाख आलोयणह, मज्झह वेर न भाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु. चउदह राज भमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मज्झवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥

निन्दावारक-सज्झाय ।

निंदा म करजो कोइनो पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणोरे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ दूर बलंती कां देखो तुह्मे रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगडांरे- कहो केम ऊजला होयरे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु भर्यां रे, केहनां नलीयां चूए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधूं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेमछुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णापरें सुख पामशो रे समयसूंदर कहे सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

सती सीताकी सज्झाय ।

जल जलती मिलती घणी रे, झाली झाल अपार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खैर अङ्गार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल, ॥ शील तणे परि माण रे ॥सु० ॥ लच्मण राम खुशी थया रे लाल-निरखे राणा राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासें आय रे ॥सु० ऊभी जाणे सुरांगना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय र ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां र लाल, ऊभाकरे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ भस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वांछ्यो हुवे रे लाल,सुपनेहां नहिं काय रे ॥ सु०॥ तो मुझ अगन प्रजालजो र लाल. नहिं तो पाणी हाय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमें रे लाल. तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलशं भर्यो

रे लाल, झोले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु०॥ सीता धीजें ऊतोरी रे लाल, साखभरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थयां रे लाल, सघले थया उछरंग रे ॥ सु०॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥सु०॥ कहे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे सु० ॥ ९ ॥

अनाथी मुनिकी सज्झाय ।

श्रेणीकरयवाडो चढयो, पेखियो मुनि एक ंत ॥ वर रूपकाते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निग्रंथ ॥ तिणमें लोधारे साधुजीनो पंथ ॥श्रे०॥ ए आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे,मुझपिता परि गल धन्न ॥ परवार परें परवस्योहुछूं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे०२॥ इक दिवस मुझ वेदना,ऊपनी ते न खमा-

य ॥ मात पिता सहु जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मन ओरडी अबला नार ॥ कारड़ी पीडा में सही, नहिं कीधी रे मोर डी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ वहराजवैद्य बुलाइया, कीधला कोड़ीउपाय ॥ बावनाचंदन लेईया, पण तोहो रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥५॥ वेदना जो मुझ उपशमे, तो लेउं संजमभार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लोधो रे हरख अपार ॥ श्रे० ॥६॥ जगमांहे को केहनो नहिं, तेभणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागनो धरम म्हाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥श्रे०॥७॥ कर जोड़ी राजा गुण स्तवे,धन धन तुं अनगार ॥ श्रेणिक समकित तिहां लहे,वांदी पहुंचे रे सरग मझार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोड़ी ॥ गणि समयसुंदर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोड़ी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

प्रति क्रमणाको सज्झाय ।

कर पडिक्कमणो भावसूं, दोय घड़ी शुभ जांण लालरे॥ परभव जातां जीवनें, संबल साचुं जांण॥ लालरे॥ १॥ कर पडिक्कमणो भावसुं॥ ए आंकणो॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध॥ ला०॥ लाख खंडी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान॥ ला०॥ २॥ कर०॥ लाख वरस लग ते वली,एम दीये द्रव्य अपार॥ ला०॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार॥ ला०॥ ३॥ कर०॥ सामायिक चउविसत्थो,भलुं वंदन दोय दोय वार॥लालरे॥ व्रतसंभारो रे आपणां, ते भव कर्म निवार॥ लालरे॥४॥ कर०॥ कर काउसग्ग शुभध्यान थी. पञ्चक्खाण सूधूं विचार॥ लालरे॥ दोय सज्झायें ते वली, टालो टालो अतिचार॥ लालरे॥ ५॥ कर०॥ सामायिक परसादथी,लहीयें अमर विमान॥ लालरे॥ धरमसिंह मुनिवर कहे,सुगति तणुं ए निदान॥ लालरे॥ ६॥

ढंढण ऋषीकी सज्झाय ।

॥ ढंढण ऋषिजीने वन्दना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार, रे हूवारी लाल, अभिग्रह लीधो एहवो, हुं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहाररे ॥ हूं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हुं० ॥ न मिले शुद्ध आहाररे ॥ हुंवा० मूल न ले अणसूझतो हुं० ॥ पञ्जर कीधो गातरे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूछे श्रीनेमने हूं०.मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुंवा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हूं० ॥ मुझनें कहो विचार रे ॥ हूंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद रे हूंवा० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदावा हुं० ॥ धन जादव कुलचन्द रे हूंवा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या हुं०, वांद्या कृष्ण नरेस रे हूवा० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखने हुं०, आण्योभाव विसेसरे हुं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधजी हुं०. ल्यो मोदक छै शुद्धरे हूं० ॥ मुनिवर विह-

प्रति क्रमणको सज्झाय ।

कर पडिक्कमणो भावसूं, दोय घड़ी शुभ जांण लालरे॥ परभव जातां जीवनें, संबल साचुं जांण ॥ लालरे ॥ १ ॥ कर पडिक्कमणो भावसुं ॥ ए आंकणो ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंडी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते वली,एम दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसत्थो,भलुं वंदन दोय दोय वार ॥लालरे॥ व्रतसंभारो रे आपणां, ते भव कर्म निवार ॥ लालरे ॥४॥ कर० ॥ कर काउसग्ग शुभध्यान थी, पच्चक्खाण सूधूं विचार ॥ लालरे ॥ दोय सज्झायें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लालरे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी,लहीयें अमर विमान ॥ लालरे॥ धरमसिंह मुनिवर कहे,मुगति तणुं ए निदान ॥ लालरे ॥ ६ ॥

ढंढण ऋषीकी सज्झाय ।

॥ ढंढण ऋषिजीने वन्दना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार, रे हूंवारी लाल, अभिग्रह लीधो एहवो, हुं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहाररे ॥ हूं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठ गोचरी हुं० ॥ न मिले शुद्ध आहाररे ॥ हुंवा० मूल न ले अणसूझतो हुं० ॥ पञ्जर कीधो गातरे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूछे श्रीनेमने हूं०,मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुंवा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हुं० ॥ मुझनें कहो विचार रे ॥ हूंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद रे हूंवा० ॥ कृष्ण ऊमाह्यो वांदावा हुं० ॥ धन जादव कुलचन्द रे हूंवा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या हुं०, वांद्या कृष्ण नरेस रे हूंवा० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखने हुं०, आणयोभाव विसेसरे हुं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधजी हं०, ल्यो मोदक छै शुद्धरे हूं० ॥ मुनिवर विह-

रीने पांगुरया हुं०, आया प्रभुजीने पास रे हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुझ लबधै मोदक मिलया हुं०, कहोने तुम्हे किरपाल रे हुं० ॥ लबध नही वच्छ ताहारी हूं०, श्रीपति लबधि निधान रे हूं० ॥७॥ ॥ ढं० ॥ एलेवा जुगतो नही हुं०, चालया परठन काज रे हूं० ॥ इंट निवा हे जायने हुं० चुरे करम समाज रे हुं० ॥ ८ ॥ ढं० ॥ आंणी च्रढती भावना हुं०, ॥ पांम्यो केवल नाण रे हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं०, ॥ कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ धन्नाऋषीको सज्झाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना,अमिय समाणी मोरा नन्दन, मनडै तो मांनी रे नन्दनताह रै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना, धरमनो रागी मोरा नन्दन, महारो तो मनडो रे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस दसी दीसे रे धन्ना, तो बिन सूनी मोरा नन्दन, अनुमति देतां रे जीभ वहे नही

॥ ३ ॥ वत्तीसै नारी हो धन्ना, अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो वोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ वालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मन्दिर हो धन्ना, ए सुख सज्या, मो० ॥ कोड वत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणा रे धन्ना, वय पिण जांणी, मो० ॥ भागवि लेज्यो रे भोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेला, मो० ॥ सुगम नही छे रे साध कहावणो ॥ ८ ॥ घर २ भिक्षा हो धन्ना, गुरु तणी शिक्षा, मो० ॥ कहाणी रे रहणी नही छे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आगम भणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो दुकर जोगछै ॥ १० ॥ वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसह सहणा, मो० ॥ कोमल केसा रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें भाख्यो हे अम्मा, झूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ दुक्कर मारग जननी

दाखियो ॥१२॥ सुख अभिलाषी हे अम्मा, झूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग जननी दाखियो ॥१३॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा, नही परमारथि मोरी अम्मा, वीर वखाणयो परखदा सहु सुणयो ॥१४॥ में इम जाणयो हेअम्मा, वीर वखाणयो मोरी अम्मा, ए धन जोवन आयु थिर नही ॥१५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा,ढील न किजै मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अनुमति आपी हो अम्मा, जीव सुख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो रे मनमां गहगही ॥१७॥ छट्ठ २ पारणे हे अम्मा, विगय निवारण मोरी अम्मा, वीर वखाणयो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख संजम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ रूडा भणै ॥१९॥ संजम पाल्यो हे अम्मा,नव पखाडे मोरी अम्मा, मास संथारे सरबारथसिद्ध ह्यो ॥२०॥ इति धन्नाऋषि-सज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ कर्मकी सज्झाय ॥

देव दानव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सघला ॥ करम तणे वस सुख दुख पाया, सवल हुआ महा निवला रे प्राणी,कर्म समो नहि कोई ॥१॥ आदीसरजीने करम अटाख्या, वरस दिवस रह्या भूखा ॥ वीरने वारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखे रे प्राणी ॥क०॥२॥ साठ सहस सुत माख्या एकण दिन, जांघ जुवान नर जेसा ॥ सगर हुआं महा पूत्रनां दुखियां, कर्म्मतणा फल एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥३॥ बत्रीस सहस देसां-रां साहिव, चक्री सनतकुमार ॥ साले रोग सरी-रमे ऊपना, कर्म्मे कीयो तनु छार रे ॥प्रा०॥४॥ कर्म्म हवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांणी ॥ वारे वरस लग माथे आणयो, नीचतणे घर पाणी, रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी वेटी, चावी चंदनवाला ॥ चौपद ज्यूं चहुटामें वेची, करमतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥

संभूम नामे आठमो चक्री, कर्म्मे सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जक्ष उभा देखे, पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री, कर्म्मे कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो भविप्राणी, कर्म्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० क० ॥ ८ ॥ छपन्न कोड जादवरो साहिब, कृ-ष्ण महाबल जांणी ॥ अटवी मांहि मूंओ एक-लडो, बिल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९॥ पांडव पांच महा झूझारा, हारी द्रोपदा नारी ॥ बारे बरस लग बन रडवडिया, भमिया जेम भि-ख्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस भुजा दस मस्तक हंता, लखमण रावणमारयो ॥ एकलडै जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्मसुं हार्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम महा वल-वंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म्म प्रमाणे सुख दुख पांम्या, वीतक वहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारो श्रेणिक राजा, बेटे

बांध्यो मुसकै॥ धरमी नरने कम धकाया॥ करमसुं जोर न किसका रे ॥प्रा०॥ क० ॥ १३ ॥ सतिय शिरोमणी द्रौपदि कहियै, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी,पूरव कर्म्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आभानगरीनो जे स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकडो, कर्म्मे नाख्यो ते फंद रे ॥ प्रा० ॥क ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, करता पुरुष कहावै ॥ अहनिस महिल मसांणमे वासो, भिक्षा भोजन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये घटतो रे प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें, भांज्या ते पिण साजा ॥ ऋद्धि हरष कर जोडीने विनवै, नमो २ कर्म्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥१८॥

॥ इति कर्म्म सज्झाय समाप्तम् ॥

॥ सात व्यसनोंकी सज्झाय ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण ते-
हनो सुविचार विवेकी ॥ सात नरकना रे भाई
सातेई, आपै दुक्ख अपार विवेकी ॥ सा० ॥१॥
प्रथम जूवाने रे विसन पडयांथकां, पाडव पांच
प्रसिद्ध विवेको ॥ नलराजा पिण इण विसने प-
ड्यो, खोइ सहू राजरिद्ध वि० ॥सा०॥२॥ दूसरे
मांस भक्षण अवगुण घणा,करै पर जीव संहार
विवेकी महासतकनी नारी रेवती,नरक गइ निर-
धार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा
पांन विसन तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥
द्वीपायण रिषि दहव्यो जादवे, द्वारकानो थयो
दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वेस्याघर
वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादि-
कायदो, कुविसने रे काज वि०॥सा०॥५
आहेडे कुविसन साचवै, प्राणी हणियें प्रहार
० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप, गयो पहली

नरक मझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छठे चोरीने विसने करी, जीव लहे दुक्ख जोर वि० ॥ मुंज-देव राजायें मारियो, चावो हुंडक चोर वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो रावण सी-ता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥ इम जांणीने भव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण भव परभव आणंद अतिघणा,कहे धरमसी सुखकार ॥वि०॥सा०॥९॥

॥ वैराग्यकी सज्झाय ॥

भूलो मनभमरा कांइ भमै, भमियो दिवस ने रात ॥ मायारो लोभी प्रांणियो, भमियो पर-मल जात ॥ १ ॥ भू० ॥ कुंभ काचो काया का-रमी, जेहना करो रे जतन्न ॥ विणसतां वार लागे नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ भू० ॥ केहना छोरू केहना वाछरू, केहना माय नै वाप ॥ ओ जीव जासी एकलो,साथे पुण्यनें पाप ॥ ३ ॥ भू० ॥ आस्या तो डूंगर जेवड़ी, मरवो पगला रे

हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ मू० ॥ लखपति छत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी गोखै बैठता, भए जल बल राख ॥ ५ ॥ मू० ॥ भवसायरजल दुख भरयो, तिरवो छे रे जेह ॥ बीचमें बीह सबलो अछै, करमें वाय ने मेह ॥ ६ ॥ मू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो पहिले रे पार ॥ आगल नही हटवांणियो, संबल लेज्यो रे लार ॥ ७ ॥ मू० मूरख कहे धन माहरो, धन केहनो हतो न थाय ॥ वस्त्र विना जाय पोढवो, लखपति लाकड़ माय ॥८॥ मू० ॥ मह मंद कहै वस्त वोरीय, जे कुछ आवे रे साथ ॥ आपणो लाभ उवारियै, लेखो साहिब हाथ ॥ मू० ॥ ९ ॥

॥ बाहूबलजीकी सज्झाय ॥

राजतणा अति लोभिया, भरत बाहूबल झूझे रे ॥ मूठ उपाड़ी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूझे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजथको ऊतरो, ब्राह्मी

सुन्दरी भासै रे ॥ ऋषभ जिनेसर मोकली, वाहूवलनें पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढयां केवल न होइ रे ॥ वी० २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अभिमांनो रे ॥ लघु वांधव वादू नहीं, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे ॥३॥ वी० ॥ वरस दिवस काउसग्ग रह्यो, वेलड़ियां वींटाणो रे ॥ पंखी माला मांड़िया, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी वचन सुणया इसा, चमक्यो चित्त मझारो रे ॥ हय गय रथमें परिहऱ्या, पिण नवि मूंक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५॥ वैरागे मन वालियो.मुंक्यो निज अभिमांना रे ॥ पांव उपाड़ी वांदिवा, ऊपनो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखदा, वाढ वल ऋपिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर वंदे पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अरणिक मुनिकी सज्झाय ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तड़के दाझे

सीसो जी ॥ पाय उवराणा रे वेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर० ॥ १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्यूं, ऊभो गोखने हेठो जी ॥ खरै दुपहरै रे दीठो एकलो, मोही माननी मोठो जी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणे वेधियो, ऋषि थंभ्यो तिण वारो जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली,ओ रिषि तेडी आंणो जी ॥ ३ ॥ अ० पावन कीजे ऋषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी ॥ नवजोवन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रावदनी रे चारित चूकव्यो, सुख विलसै दिन रातो जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगठै, तब दीठो निज मातो जी ॥५॥ अ० ॥ अरणिक २ करती माय फिरे, गलियै २ मझारो जी ॥ कहि किण दीठो रे माहरो अरणलो, पूछै लोक हजा- जी ॥ ६ ॥ अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे नमे, मनमें लाज्यो तिवारो जी ॥ धिग् २

पापी रे माहरा जीवने, एहमें अकारज धार्यो जी ॥७॥अ०॥ अगन धुखंती रे सिल्ला उपरै,अरणिक अणसण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू,मन वंछित फल सीधो जी ॥८॥अ०॥

॥ इलापुत्रकी सज्झाय ॥

नांम इलापुत्र जांणियै, धनदत्तसेठनो पूत ॥ नटवी देखी र मोहियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिया,पूरव नेह विकार ॥ निज कुल छंड़ी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आओ रे नाचवा, उंचो वंस विवेक ॥ तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय पग पहरी रे पावड़ी, वंस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतौ, खेले नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल वजावे रे नाटकी, गावे किन्नर साद ॥ पायतल घूघर घनघन,गाजै अंबर नाद ॥ क० ॥५॥ तिहां राय चिंते रे राजियौ, लुबधो नटवी रे साथ ॥

जो पड़ै नटवो रे नाचतां, तो नटवी मुझ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांन न आपै रे भूपती, नट जांणै नृप वात ॥ हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछै मुझ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियो,धन२ साधु नीराग ॥ धिग् २ विषया रे जीवड़ा, मन आणयो वैराग ॥क०॥८॥ संवरभावै रे केवली,ततखिण कर्म खपाय ॥ केवलि महिमा रे सुर करै, समयसुन्दर गुण गाय ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ मेघकुमार मुनिकी सज्झाय ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वैरागीयौ जो, ए संसार असार रे मायड़ी ॥ अनुमति द्यो मुझ आज ॥ संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछ तूं केणे भोलव्यो रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ उणौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि द्युं आदेश रे जाया ॥ ... म विष० ॥ किम निरबाहिस भार रे जाया ॥ ...न० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुल्यो जी, स-

हिया दुक्ख अणंत ॥ सासोश्वासें भव पूरिया जी, तेह न जांणू अंत हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं वालक अछै जी,जोवंन भर्‍यो रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, भोगवि सुक्ख अपार रे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, दुक्ख न सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मैं सुणियो कांन हे मायड़ी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछ कांछलीयै जीमणो जी, अरस विरस आहार ॥ भुंइ पाला नित हींडणां जी, जाणसि तुझ कुमार रे जाया ॥ हूं नवी० ॥ ६॥ भमतां जीव अनंत भम्यो जी,धम दुहेलो होय॥ जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तव किम करणो होय रे मायड़ी ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोड़े नवसर हार ॥ जोवनभर छोरू नहो जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥८॥ हंसतूलिका सेजड़ी जी, रूप रमणि रस भोग ॥ अतहि सुंहाली देहड़ी जी, किम हुय संजम जोगरे जाया ॥ हूं न० ॥ ६ ॥ स्वारथनो सहू ए

सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय विषम महुरा कह्या जी, किम भोगविये सोय हे मायड़ी ॥ अ० ॥ १० ॥ खमि २ माउ पसाय करी जी, में दीधुं तुझ दुक्ख ॥ दिओ आदेस जिम हुं सुखी जी, वीर चरणों ल्युं दीक्ख हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥ तन फाटे लोयण झरे जी, दुख न सहणां जाइ ॥ वच्छ सुखी हुवो तिम करो जी, में दोधो आदेश रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२॥ मणि मांणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी आठै रड़े जी, हिव अह्म कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥ कुमर भणै सुकुली थिया जी, बहु दुख ए संसार ॥ नेह तुमारो जांणियो जी, जो ल्यो संयम भार रे नारी ॥ संय०॥१४॥ रथ सिविका तब सझी करी जी, कूंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उच्छव करै जी, चारित्र ल्यो रिषिराय रे जाया ॥सं०॥१५॥इम जांणी वैरागियौ जी, वरजै जे नर नारि ॥ कर जोड़ी पूनो भणेजी, ते तरस्यै संसार हे माय ॥ अ० ॥१६॥

॥ गजसुकमालको सज्झाय ॥

संवेगरसमे झीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोहग टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धन २ गजसुकमाल, तेहने करूं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ ए आंकणी ॥ प्रभूपास संयम आदर्यौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जायवा अलजयो, पड़खै न दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो, पिण दिन जावे रे तो छेह दीस ॥ या० ॥३॥ समसांण जाय काउसग्ग रह्यौ, तिण सांझि प्रभुने पूछ ॥ मुनिवर अवर इम चिंतवै, एहनैं साची रै छै मुंह मूंछ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुझ सुता विन अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगड़ी रचि सिर ऊपरै, चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अधिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणठाणें चढयो, मुनिवर पांमी रे केवलज्ञान ॥

या० ॥ ६॥ देवकी जांमणाने थई, ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे प्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूछतां प्रभु मांडी करी, रातिनी वीतग वात ॥ हरि देखी हियड़ो फूटसी, तेणें कीधो रे ऋषिजीनो घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अविचल-राज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्री-जिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ प्रसन्नचंद राजाकी सज्झाय ॥

राज छंडी रलियामणो रे, जांणीं अथिर संसार ॥ वैरागै मन वालियो, कांइ लीधो संजम भार ॥ प्रसन्नचंद प्रणमूं तुमारा पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग्ग रह्यो रे, पग ऊपर पग ठाय ॥ बांह बेउं ऊंची करी, सूरज सांमी द्रष्टी लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसर्यो रे, वीरजीने वंदन जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षिणा, त्रिविध २ खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ दुरमुख दूत वचन सुणी रे,कोप चढ्यो ततकाल ।

मनसुं संग्राम मांडियो, जीव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूछियो रे, एहनी सी गति थाय ॥ भगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नरके जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूछियो रे, सरवारथसिद्धि विमान ॥ वाजी देवनी दुंदुभी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥ ६ ॥ प्रसन्नचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावीरना शिष्य ॥ रिद्धहरष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतच्च ॥ प्र० ॥ ७ ॥

॥ जीवोत्पत्तिकी सज्झाय ॥

उतपत जोय जीव आपणी,मनमांहि विमास ॥ गरभा वासे जीवड़ो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाभी तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नाड़ी छै दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥ आंवतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥३॥ रुधिर श्रवे तिण मांसथी, ऋतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,

तिहां ऊपजे जोव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित दुरगंध ॥ तिण थानक तूं ऊपनो, हिव हूओ अंधमंध ॥ उ० ॥५ ॥ नाड़ी वांसतणी भरियै, घणी रूघाल ॥ ताती लोह सलाकतै, जाले ततकाल ॥ उ० ॥ ६॥ तिम महिलानी जो निमें, छै नव लख जीव ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७॥ ऊपजै नर नारी मिल्यां, पांचेंद्री जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो का-रज एह ॥ उ० ॥८॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टी वार ॥ जीव जघन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥९॥ जीव जघन्य तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ वार वरसनी थिति तिहां, उत्कृष्टी जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरभे कोइ जीवड़ो, जंपे जग दीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥ महिला वरस पिचावनं, कहिये नीरवीज ॥ पिचहत्तर वरसां पछै, थाये पुरुष अवीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै, तिम वांमे नारि ॥ वीच नपुंसक

जांणिये, जिनवचन विचार ॥ १३ ॥ उ० ॥
हिव सामान्यपणै इहां, आयो गरभावास ॥ सात
दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ उ०
॥ १४ ॥ आठ वरस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टै काल ॥
गरभावासै भोगव्या, इम बहु जंजाल ॥ उ० ॥
१५ ॥ कार्मंण कोये कर लियो, पहिलो आहार ॥
शुक्र अने शोणिततणो, नही झूठ लिगार ॥ उ०
॥ १६ ॥ परजापत पूरी नही, तिहां विसवावीस ॥
तिण आहारै तूं थयो, उदारिक मीस ॥ उ० ॥
१७ ॥ पवन अछै उदरै तिको, उपजायै अंग ॥
अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८
॥उ०॥ कठन पणै पृथवी रचै, अवगाह अकास ॥
पांचभूत सरीरमें, इम करै प्रकास ॥ १९ ॥उ०॥
बारै महुरत तां पछै, विलसै नर नारि ॥ गरभ-
तणी उतपति तिहां, नहीं अवर प्रकार ॥ २० ॥
उ०॥ कलल हुवै दिन सातमें,अरबुद दिन सात ॥
अरबुदथी पेसो वधै, घन मांस कहात ॥ २१ ॥
उ० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अडतालिस टांक ॥

प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥२२॥
उ० ॥ सुथिर मास बीजे हुवै, हिव तिज मास ॥
करमतणै वसि ऊपजे, माता मन आस ॥ २३ ॥
उ० ॥ चोथै मासै मातना, प्रणमै सहु अंग ॥
हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४॥
उ० ॥ पित्त रुधिर छठे पडै, सातमें इण संच ॥
नव धमणी नस सातसै, पेसी सय पंच ॥ २५ ॥
उ० ॥ रोम राय पिण सातमें, साढीतीन कोडि ॥
ऊपजे उणै केतलै, इम आगम जोडि ॥ २६ ॥
उ० ॥ आठमें मासें नीपनो, इम सकल सरीर ॥
उंधै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥२७॥ उ० ॥
शोणित शुक्र सलेषमा, लघु ने वडनीत ॥ वात
पित्त कफ गरभथो, थायै नर नीत ॥ २८ ॥ उ०॥
मात तणी संटि लगै, बालकनो नाल ॥ रस
आहार करे तिहां, आवे ततकाल ॥ उ० ॥ २९ ॥
जननी लये आहार ते, जाय नाडोनाड ॥ रोम
ंद्री नख चख वधे, तिम मीजी ने हाथ ॥ उ०॥
३० ॥ सवहू अंगे ऊलस, सरवंग आहार ॥ कव-

ल आहार करे नही, गरभै सुविचार ॥ उ० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने,थाये ज्ञान विभंग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥ उ० ॥ ३२ ॥ कटक करे वैक्रियपणों,झुभी नर के जाय ॥ को जिनवचन सुणी करी, मरी सुर पिण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ ऊंधे मुख गोडा हिये, सहितो बहु पीड ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुट्ठीभीच ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिकँ, ऊपजै आधांन ॥ अथवा विहुं नारी मिल्यां, कह्यो गरभविधान ॥ उ० ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी दुखावास ॥ पुन्य करी तिम नोकलूं, नाऊं गरभ वास ॥ उ० ॥ ३६ ॥ ऊंठ कोडि चांपे सुई, कोई समकाल ॥ तिणथी गरभै अठ गुणो, सहे वेदन बाल ॥ उ० ॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गरभ थकी दुख लख गुणो, जांमें जिण वार ॥ जन्म थयां दुख वीसरै, धिग२ मोह विकार ॥ उ० ॥

३६ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥ पिंड अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लव लेस ॥ उ० ४० ॥ तुरत रुदन करतो थको, जांमैं जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवै, पीयै दूध तिवार । उ० ॥ ४१ ॥ दिन२ दीसे दीपतो, करै रंग अपार ॥ लाड कोड माता पिता,पूरै सुविचार ॥उ०॥ ४२ ॥ श्रोत्र इग्यारे नारिनें, नव नरने जांण ॥ रात दिवस वहिता रहै, चैतो चतुर सुजाण ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा, छै सातसै नाडि ॥ नवसे नाडी पिंडमें, तिम तीनसे हाड ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि एकसो साठ छै, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै, ढांकी छै चरम ॥उ०॥४५॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाब सरीष ॥ ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ उ० ४६ ॥ पित्त टांक चोसठ अछै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्तीस सलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ उ० ॥ इण परिमाणथको यदा, उछो अधिको थाय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥ ४८॥

उ० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान पान भूषण भलां, करे नवनवा अंग ॥ ४९ उ०॥ हिव बीजै दसके भण्यो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसके तेहने, जाग्यो कांम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण थांनक तूं ऊपनो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोड उपाय ॥ ५१ ॥उ०॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा, परणावे तेह ॥ ५२ उ० ॥ छट्ठे दसके प्राणियो, बले परवस थाय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥उ०॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ वल भागो बूढो थयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥उ०॥ आठमें दसके डोसलो, खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावै सिरधुणैं, करे फोगट वात ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्रांणियो, तन सूकत जाय ॥ सांभले वचन वहुआं तणो, दिन झुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपड्यो खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाल हूकुम हाले नही, दीयो परि-

जन छेह ॥ ५७ ॥ उ०॥ आंख गले वे पुड मिले, पडै मुंहडे लाल ॥ बेटा बेटी ने वहू, न करे सार संभाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टाते दोहिलो लह्यो नरभव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो जिम भव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निरमल शील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥ उ० ॥ कोडि रतन कवडी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखै पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम संभार ॥ ६२ ॥ उ० ॥ चवदै राज प्रमांण ए, छै लोक महंत ॥ जनम मरण कर फरसियो, ते बार अणंत ॥ ६३ ॥उ०॥ आप सवारथिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अण पहुंचतै, सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरा न आवे जां लगे, जां लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगै, होय साहसधीर ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज

देस लह्या हिवै, लाधो गुरु संयोग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥६६॥ ऊ० ॥ श्रीनमि रायतणी परै, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहको सगा, कोइ किणरो नांहि ॥६७॥उ०॥ भोग संयोग तजी सहू, थया जे अणगार ॥ धन२ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ०॥ सुरतरु सुरमणि सारखो,सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंदुलबेयाली अछै, एहनो अधिकार ॥ तिणथी उद्धरनैं कह्यो, नही झूठ लिगार ॥ ७० ॥ उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांभलि लिये संजमभार ए, परिशिह केरा सदा पालै नेम निरतिचार ए ॥ संसारना सुख सकल भोगवि ते लहे भव पार ए, श्रीजिनहर्ष सुसीस रंगै इम कहे श्रीसार ए ॥ ७० ॥ उ ॥ इति ॥

॥ स्नात्र पूजा ॥

॥ पांखडी गाथा ॥

चौतीसैं अतिशय जुओ । वचनातिशय संजुत्त । सो परमेसर देखि भवि, सिंघासण संपत्त ॥ १ ॥

ढाल ॥ सिंहासन बैठा जगभाण, देखी भवियण गुणमणि खाण । जे दीठें तुझ निम्मल झाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलिमेलो आदि जिणन्दा ॥ तोराचरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस,सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणन्दा ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । (कुसुमांजलि हाथमें लेकर यह पढ़ते हुए चरणोंमें टीकी लगाना चाहिये)

गाथा ॥ जो निजगुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त । सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥ २ ॥

ढाल ॥ जो निज आतम गुण आनंदी,

पुग्गल संगै जेह अफंदी। जे परमेश्वर निज पद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस, जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्रीशांति जिणंदा ॥ (यह पढ़कर घुटनों पर टीकी लगाना चाहिये) ॥ २ ॥

गाथा ॥ निम्मल नाण पयासकर, निम्मल गुण संपन्न । निम्मल धम्म उवएस कर, सो परमप्पा धन्न ॥ ३ ॥

ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नाणी, भवि जन तारण जेहनी वाणी । परमानंद तणी नीसाणी, तसु भगतें मुझ मति ठहराणी ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्री नेमि जिणंदा ॥ (यह पढ़कर दोनों हाथोंको टीकी लगाना चाहिये) ॥ ३ ॥

गाथा ॥ जे सिद्धा सिज्झन्ति जे, सिज्झिस्सन्ति अणंत । जसु ओलंबन ठविय मन, सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥

ढाल ॥ शिव सुख कारण जेह त्रिकालें, सम परिणामें जगत निहालें । उत्तम साधन मार्ग दिखालें, इन्द्रादिक सु चरण पखालें ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा,तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्रीपार्श्व जिणन्दा ॥ (यह पढ़कर दोनों कंधों पर टीकी लगाना चाहिये) ॥ ४ ॥

गाथा ॥ सम्मदिट्ठी देसजय, साहु साहुणी सार । अचारिज उवझाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥ ५ ॥

ढाल ॥ चौविह संघै जे मन धार्यो, मोक्ष-तणो कारण निरधार्यो । विविह कुसुम वरजात गहेवी,तसु चरणे प्रणमन्त ठवेवी ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो श्रीवीर जिणंदा, तोरा चरण कमल

चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्री वीर जिणंदा ॥ (यह पढ़कर मस्तक पर तिलक करना चाहिये) ॥ ५ ॥

॥ इति पांखडी गाथा ॥

वस्तु ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर नमिय मन रंग । कल्लाणक विह संथविय । करिय सुजम्म सुपवित्त सुन्दर । सय इक सत्तरि तित्थंकर । इक्क समैं विहरंत महियल । चवण समैं इकवीस जिण । जन्म समैं एकवीस । भत्तिय भावें पूजिया । करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

इक दिन अचिरा हुलरावती-ए देशी ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या । जिन भक्तिप्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रिय सुख आसंसना । करि थानक वीसनी सेवना ॥ अतिराग प्रशस्त प्रभावता । मन भावना एहवो भावता ॥ सवि जीव करूं शासन रसी । इसी भाव दया मन उल्लसी ॥ लहि परिणाम एहवुं

भलुं । निपजावी जिनपद निरमलुं ॥ आऊ बंध विचै इक भव करी । श्रद्धा संवेगथी थिर धरी, तिहांथी चविय लहैं नर भव उदार । भरतें जिम ऐरवतेज सार । महा विदेह विजय प्रधान । मभ्क खंडै अवतरे जिन निधान ।

ढाल ॥ पुण्यें सुपना ए देखें । मनमें हर्ष विशेषे ॥ गजवर उज्जल सुन्दर । निर्मल वृषभ मनोहर । निर्भय केसरी सिंह । लखमी अतिह अबीह ॥ अनुपम फूलनी माला । निर्मल शशि सुकमाल ॥ तेज तरणा अति दीपै । इन्द्र ध्वजा जग जीपै ॥ पूरण कलस पंडूर । पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर । देखे माताजी गुण सायर ॥ बारमें भुवन विमान । तेरमें रत्न निधान ॥ अग्नि शिखा निरधूम । देखें माताजी अनुपम ॥ हरखी रायनें भासें । राजा अर्थ प्रकाशें ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होस्यें पुत्र मनोहर ॥ इन्द्रादिक जसु नमस्यें । सकल मनोरथ फलस्यें ॥

वस्तु ॥ पुण्य उदय पुण्य उदय ऊपना जिण नाह । माता तव रयणी समैं देखि सुपन हरषंत जागिय । सुपन कही निज कंतने सुपन अरथ सांभलो सोभागिय। त्रिभुवन तिलक महा गुणी । होस्यें पुत्र निधान ॥ इन्द्रादिक जसु पय नमो । करस्यें सिद्ध विधान ॥

॥ ढाल-चंद्रा उल्लालानी ॥

सोहम पति आसन कंपियो । देई अवधें मन आणंदियो ॥ मुझ आतम निर्मल करण काज । भव जल तारण प्रगट्यो जिहाज ॥ भव अटवि पारग सत्थवाह । केवल नाणाइय गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकुर जेह । कारण उलट्यो आषाढ मेह ॥ हरखै विकसै तब रोम-राय । वलयादिकमां निजतनु न माय ॥ सिंहो-सनथी ऊठो सुरिंद । प्रणमन्तो जिण आनंद कन्द ॥ सग अड़पय पमुहा आवि तत्थ । करि अञ्जलि प्रणमिय मत्थ सत्थ । मुख भाखें ऐ खिण आज सार । तियलोय पहु दीठो उदार ॥

रे रे निसुणों सुर लोय देव। विषयानल तापित तनु समेव॥ तसु शांति करण जलधर समान। मिथ्या विष चूरण गरुड़वान॥ ते देव सकल तारण समत्थ। प्रगट्यो तसु प्रणमी हुई सनत्थ॥ इम जम्पी शक्रस्तव करेवि। तव देव देवि हरखै सुणेवि॥ गावें तव रम्भा गीत गान। सुर लोक हुवो मंगल निधान॥ नर खेत्रें आरज वंश ठाम। जिनराज वधैं सुर हर्ष धाम॥ पिता माता घरे उच्छव अलेख। जिन शासन मंगल अति विशेष॥ सुरपति देवादिक हर्ष संग। संयम अरथी जनने उमंग। शुभ वेला लगने तीर्थं नाथ। जनम्यां इन्द्रादिक हर्ष साथ॥ सुख पाम्यां त्रिभुवन सर्व जीव। वधाई वधाई थई अतीव॥ (यह कहकर फूल और चांवलोंसे वधाना और बादमें:—चैत्यवंदन करके और धूप देना चाहिये)

॥ श्रीशांति जिननो कलश कहिसुं-ए देशी ॥

त्रोटक॥ श्रीतीर्थ पतिनो कलश मज्जन गाइये

सुखकार। नर खेत्त मंडन दुह विहण्डन भविक मन आधार ॥ तिहां राव राणां हर्ष उच्छव थयो जग जय कार। दिसि कुमरि अवधि विशेष जाणी लह्यो हर्ष अपार॥ निय अमर अमरी संग कु-मरी गावती गुण छंद। जिन जननि पासें आवि पोंहती गहगहती आंणंद॥ हे माय तैं जिनराज जायो शचि वधायो रम्म। अम जम्म निम्मल करण कारण करिस सुइय कम्म॥ तिहां भूमि शोधन दीप दर्पण वाय विंजण धार। तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननी मज्जन कार॥ वर राखड़ी जिन पाणि बांधी दियें इम आसीस। जुग कोड़ कोड़ी चिरंजीवो धर्म दायक ईश॥

ढाल इकविसानी॥ जग नायकजी, त्रिभुवन जन हित कार ए। परमातमजी, चिदानन्द घन सार ए॥ जिन रयणीजी, दश दिस उज्जलता धरै। शुभ लगनेजी, ज्योतिष चक्रते संचरै॥ जिन जनम्याजी, जिन अवसर माता धरै। तिण अवसरजी, इंद्रासन पिण थरहरै॥

त्रोटक ॥ थरहरे आसन इन्द्र चिंतें कवण अवसर ए बण्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिही आनन्द ऊपन्यो ॥ निज सिद्ध सम्पति हेतु जिनवर जाणि भगते ऊमह्यो । विकसंत वदन प्रमोद वधते देव नायक गहगह्यो ॥

ढाल ॥ तब सुरपतिजी, घंटा नाद करावए । सुर लोकेंजी, घोषणा एह दिरावए ॥ नर क्षेत्रेंजी, जिनवर जन्म हुवो अछै । तसु भगतेंजी, सुरपति मंदर गिर गछै ॥

त्रोटक ॥ गछै मंदर शिखर ऊपर भवन जीवन जिन तणों । जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि सुर गणों ॥ तुम शुद्ध समकित थास्यें निर्मल देवाधिदेव निहालतां । आपणा पातिक सर्व जास्यें नाथ चरण पखालतां ॥

ढाल ॥ इम सांभलिजी, सुरवर कोड़ी बहु मिली । जिन वंदनजी, मंदर गिर साहमी चली । सोहम पतिजी, जिन जननी घर आविया । जिन माताजी, वंदी स्वामि वधाविया ।

त्रोटक ॥ वधाविया जिनवर हर्षे बहुलै धन्य हूं कृत पुराय ए । त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पुत्र तुमचो मेरु-मज्जन वर करी । उच्छंग तुमचै बलिय थापिस आतमां-पुन्ये भरी ॥

ढाल ॥ सुर नायकजी, जिन निज कर कमलैं ठव्या । पांचरूपेजी, अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विध जी, तव बत्तीस आगल वहै । सुर कोड़ी जी, जिन दरशनणें ऊमहै ॥

त्रोटक ॥ सुर कोड़ कोड़ी नाचती वलि नाथ शुचि गुण गावती । अपछरा कोड़ी हाथ जोड़ी हाव भाव दिखावती ॥ जय जयो तूं जिनराज जग गुरु एम दे आसीस ए । अम त्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥

ढाल ॥ सुर गिरवरजी, पांडुक वनमें चिहुं दिसैं । गिरि शिल परजी, सिंहासन सासय वसे ॥ तिहां आणीजी, शक्रे जिन खोले ग्रह्या । चउसठ जी, तिहां सुरपति आवी रह्या ॥

त्रोटक ॥ आविया सुरपति सर्व भगतें कलश श्रेणि बणावए । सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सव वस्तु अणावए । अच्चुयपति तिहां हुकुम कीनो देव कोड़ा कोड़िनें । जिन मज्जनारथे नीर लाओ सबै सुर कर जोड़िनें ॥ (जलका कलश लेकर खड़े रहैं और पढैं)

॥ शांतिनें कारणे इन्द्र कलशा भरै ए देशी ॥

ढाल ॥ आत्म साधन रसी देवकोड़ी हसी । उल्लसीनें धसी खीर सागर दिशी ॥ पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई । तीर्थ जल अमल लेवा भणी ते गई ॥ जाति अड़ कलश करि सहस अठोत्तरा । छत्र चामर सिंहासणे शुभतरा ॥ उपगरण पुष्फ चंगेरि पमुहा सवे । आगमें भासिया तेम आणि ठवे ॥ तीर्थ जल भरिय करि कलश करि देवता । गावता भावता धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरनें हर्ष उपजावता । धन्य श्रम शक्ति शुचि भक्ति इम भावता ॥ समकितैं बीज निज आत्म आरोपता । कलश पाणी मिसै

भक्ति जल सींचता ॥ मेरु सिहरोवरे सर्व आव्या वही । शक्र उच्छङ्ग जिन देखि मन गहगही ॥

गाथा ॥ हंहो देवा अणाइ कालो । अदिट्ठ-पुव्वो तिलोय तारण । तिलोय बन्धु मिच्छत मोह विद्धंसणो । आणाइतिह्णाविणासणो । देवाहिदेवो दिट्ठव्वो हियकामेहिं ॥

ढाल ॥ एम पभणंत वण भुवन जोईसरा । देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा ॥ केवि कप्प-ट्ठिया केवि मित्ताणुगा । केवि वर रमण वयणेण अइ उच्छगा ॥

वस्तु ॥ तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इन्द्र आदेश । कर जोड़ी सब देवगण लेइ कलश आदेश पा-मिय । अद्भुत रूप सरूप जुय कवण एह पुच्छंत सामिय । इंद्र कहे जग तारणो पारग अम्ह परमेस । दायक नायक धर्मनिधि करिये तसु भिषेक ॥ (इस समय जलकी थोड़ीसी धारा देना)

तीर्थ कमलवर उदक भरीनें पुष्कर सागर आवै-ए देशी ॥

ढाल ॥ पूर्ण कुलश शुचि उदकनी धारा,

जिनवर अंग नामैं । आतम निर्मल भाव करंतां, वधतैं शुभ परिणामैं ॥ अच्युतादिक सूरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत । सामानिक इन्द्राणी पमुहा, इम अभिषेक करंत ॥ पू० ॥

गाथा ॥ तब इशाण सुरिंदो, सक्कं पभणेइ करिस सुपसाउ । तुम अंके महनाहो, खिणमित्तं अम्ह अप्पेह ॥ ता सक्किन्दो पभणइ, साहम्मि वच्छलम्मि बहुलाहो। आणा एवं तेणं, गिरहइ होउ कयत्था भो ॥ (यह कहकर सभी कलशोंके जलसे भगवानको स्नान कराना चाहिये)

ढाल ॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करि न्हवण करे प्रभु अंगै । करिय विलेपन पुष्पमाल ठवि वर आभरण अभंगै ॥ सो० १ ॥ तव सुर वर बहु जय जय रव कर निश्चै धरि आणन्द । मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यों भांजस्युं हि भव न्द ॥ सो० ॥ २ ॥ कोड़ बत्तीस सोवन्न उवारी वाजंतै वरनाद । सुरपति संघ अमर श्री प्रभुन जननीनें सुप्रसाद । आणी थापी एम पयंपे अम्ह

निस्तरिया आज । पुत्र तुमारो धणिय हमारो तारण तरण जिहाज ॥ सो० ३ ॥ मात जतन करि राखज्यो एहनें तुम सुत हम आधार । सुरपति भक्ति सहित नन्दीश्वर करे जिन भक्ति उदार ॥ सो० ॥ ४ ॥ निय निय कप्प गया सहु निर्ज्जर कहता प्रभु गुण सार । दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ५ ॥ खरतर गछ जिण आणा रंगी राज सागर उवझाय । ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक सुगुर तणें सुपसाय ॥ देवचंद निज भक्तें गायो जन्म महोच्छव छंद । बोध बीज अंकुरो उलस्यो संघ सकल आणंद ॥ सो० ॥ ६ ॥ इति ॥

राग वेलावल ॥ इम पूजा भगतें करो, आतम हित काज । तजिय विभव निज भावना, रमतां शिव राज ॥ इम० ॥ १ ॥ काल अनंतें जे हुआ, होस्यें जेह । जिणंद संपई श्रीमंधर प्रभु, केवल नाण दिणंद ॥ इम० ॥ २ ॥ जन्म महोच्छव इण परै, श्रावक रुचिवंत । विरचै जिन प्रतिमा तणों,

तुम जीवो ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ विमलकेवलभासन-
भास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणं। जिनवरं
वहुमानजलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये
॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञान-
शक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिने-
न्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जल
पूजा ॥ यह कहकर जलसे न्हवण कराना ॥

चंदन पूजा।

दुहा ॥ बावना चन्दन कुम कुमा। मृगमद
नें घनसार॥ जिन तनु लेपै तसु टले । मोह
सन्ताप विकार॥ १ ॥ ढाल ॥ सकल संताप
निवारण तारण सहु भविचित्त। परम अनोहा
अरिहा तनु चरचो भविनित्त॥ निज रूपै उप-
योगी धारो जिन गुणगेह। भाव चंदन सुह
भावथी टालै दुरित अछेह॥ २॥ चाल॥ जिन
तनु चरचतां सकल नाकी। कहै कुग्रह ऊष्णता
आज थाकी॥ सफल अनिमेषता आजम्हाँकी।
भव्यता अम्ह तणी आज पाकी ॥३॥ श्लोक॥

सकलमोहतमिश्रविनाशनं, परमशीलभावयुतं जिनं। विनयकुंकुमचंदनदर्शनैः, सहजतत्वविकाशकृतेर्च्चये ॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा २॥ इति चंदन पूजा यह कहैकर केशर और चंदन चढ़ाना चाहिये।

नवअंगि भाव पूजा ।

दुहा ॥ पर उपगारी चरणयुग, अनंत शक्ति स्वयमेव। यातें प्रथम पूजिये, आतम अनुभव सेव (चरणोंमें टीकी) ॥ १ ॥ जानु पूजा दूसरी, समाधि भूमिका जान। आतम साधन ज्ञान ले, शुद्ध दशा पहिचान ॥ (गोडोंको टीकी) ॥ २ ॥ कर पूजा जिन राजको, दिये सम्वच्छरी दान। ते कर मुझ मस्तक ठवूं, पहुंचे पद निर्वाण ॥ (हाथोंमें टीकी) ॥ ३ ॥ भुजवल शक्ति जानके, पूजा करूं चित लाय। रागादिमल हटायके, आतम गुण दरशाय ॥

(कंधोंमें टीकी) ॥४॥ सिर पूजा जिनराजकी, लोक शिरोमणि भाव। चउगति गमन मिटायके, पंचम गति सम भाव ॥ (मस्तकमें टीको) ५ ॥ लिलवट पूजा सार है, तिलक विधि विश्राम। वदन कमल वाणीसुनें, पहुंचे निज गुण धाम ॥ (ललाटमें टीको) ॥ ६ ॥ कंठ पूजा है सातमी, वचनातिशय वृंद। सप्त भेद पंयचिश श्रुत, अनुभव रस नो कंद ॥ (कंठमें टीकी) ॥ ७ ॥ हृदय कमलनी पूजना, सदा बसो चितमांह। गुण विवेक जागे सदा, ज्ञान कला घट छाय (हृदयमें टीकी) ॥८॥ नाभी मंडल पूजके, षोड़श दलको भाव। मन मधुकर मोही रह्यो, आनंद घन हरषाय (नाभीमें टीकी) ॥ ६ ॥ इति ॥

पुनः ॥ दुहा ॥ जल भरि संपुटमां, युगलिक नर पूजंत। ऋषभ चरण अंगूठवे, दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले काउसग रह्या, विचर्या देश विदेश। खड़ा २ केवल लह्या, पूजा जानु

नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दान । करकंडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयूं दो अंशथी, देखी वीर अनंत । पूजा बलें भवजल तर्या, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम । नाभी कमलनी पूजना, करता अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपशम बलें, बाल्यो रागनें द्वेष । हेम दहै वनखंडनें, हृदय तिलोक संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना, कंठ विवर वरतल । मधुर धुनी सुर नर सुनें, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जिन सेवंत । त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्ध शिला गुण ऊजली; लोकांतिक भगवंत । वसिया तिण कारण वही, शिर शिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नवतत्वना, तिम नव अंग जिणंद ो बहु विध भाव थी, कहेसहु वीर मुनिंद । । १० ॥ इति ॥

अथ पुष्प पूजा ॥

दोहा ॥ शतपत्री वर मोगरा, चम्पक जाइ गुलाब । केतकी दमणो बोलसिरि, पूजो जिन भरि छाब ॥ १ ॥ ढाल ॥ अमल अखण्डित विकसित सुभ सुमनी घन जाति, लाखीनो टोडर ठवो आंगी रचो बहुभांति । गुण कुसुमें निज आतम मण्डित करवा भव्य, गुणरागी जड़त्यागी पुष्प चढ़ावो नव्य ॥ २ ॥ चाल ॥ जगधणी पूजतां विविध फूलै, सुरवरा ते गिणें त्रण अमूलें । खन्ति धर मानवा जिनपद पूजै, तसुतणा पाप संताप धूजै ॥ ३ श्लोकः ॥ विकचनिर्मलशुद्धमनोरमैः विशदचेतनभावसमुद्भवैः । सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्वमयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥३ इति पुष्पपूजा ॥ पुष्प चढ़ावे ॥

अथ धूप पूजा ॥

॥ ३ ॥ कृष्णागर मृगमद तगर, अम्बर तुरक लोबान । मेल सुगन्ध घनसार घन, करो

जिननें धूपदान ॥ १ ॥ ढाल ॥ धूपघटी जिम महमहै, तिन दहैं पातिक वृन्द । आर्ति अनादिनी जावै, पावै मन आनन्द । जे जन पूजैं धुपै, भवकूपैं फिर तेह । नावै पावै धुवघर आवै सुक्ख अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिनघरे वासतां धूप पूरै, मिच्छत दुर्गन्धता जाई दूरै । धूप जिम सहज उर्द्धगत स्वभावे, कारिका उच्चगति भाव पावै ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ सकलकर्म्ममहें धनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं । अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूप पूजा ॥ धूप अगरबत्ती खेवै ॥

अथ दीप पूजा ॥

दोहा ॥ मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करी घृत पूर । बत्ती सूत्र कसुंबनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ मंगल दीप वधावो गावो जिन गुणगीत, दो पथकी जिम आलिका मालिका मंगलनीत । दीपतणी शुभज्योती द्योती जिन

मुखचन्द, निरखी हरखो भविजन जिम लहो पूर्णानन्द ॥ २ ॥ चाल ॥ जिन गृहे दीप माला प्रकासैं, तेहथी तिमर अज्ञान नासैं। निजघटै ज्ञानज्योती विकासै, तेहथी जगतणा भाव भासैं ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ भविकनिर्म्मलबोधविकाशकं, जिनगृहे शुभदीपकदीपनं। सुगुणरागविशुद्धसमन्वितं. दधतु भावविकाशकृते जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ इति दीप पूजा ॥ मंगलदीप चढ़ावै ।

अथ अक्षत पूजा ॥

दोहा ॥ अक्षत २ पूरसु, जे जिन आगे सार। स्वतिक रचतां विस्तरै, निजगुण भर बिस्तार ॥ १ ॥ ढाल ॥ उज्जल अमल अखण्डित मण्डित अक्षत चंग, पुञ्जत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावै रंग। निज सत्तानैं सन्मुख उनमुख भावे जेह, ज्ञानादिक गुणठावै भावे स्वस्तिक एह ॥ २ ॥ चाल ॥ स्वस्तिक पूरतां जिनप आगे, स्वस्ति श्रीभद्र कल्याण जागै। जन्म जरा मर-

णादि अशुभ भागै, नियत शिव सर्व रहै तासु आगै ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ सकलमंगलकेलिनिकेतनं, परममंगलभावमयंजिनं । श्रयति भव्यजना इति दर्शयन, दधतु नाथपुरोत्ततस्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । अत्ततं यजामहे स्वाहा ॥६॥ इति अत्तत पूजा ॥ अखण्ड चावल चढ़ावै ॥

अथ नैवेद्य पूजा ॥

दोहा ॥ सरस सुचि पकवान बहु, शालि दालि घृतपूर । धरो नैवेद्य जिन आगलै, त्तुधा दोष तसु दूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ लपनश्री वर घवर मधुतर मोतीचूर, सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदकपूर । साकर द्राख सीङ्घोड़ा भक्ति व्यञ्जन घृतसद्य, करो नैवेद्य जिन आगलै जिम मिलै सुख अनवद्य ॥ २॥ चाल ॥ ढोवतां भोज्य पर भाव त्यागे, भविजना निज गुण भोज्य मांगे । अम्हभणि अम्हतणो सरूप भोज्य, आपज्यो तातजी जगत पूज्य ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ सकलपुद्गलसंगविवर्ज्जनं, सहजचेतनभावविलासकं ।

सरस भोजननव्यनिवेदनात्, परमनिर्वृतिभाग-महं स्पृहे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥ मिठाई पकवान चढ़ावे ॥

अथ फल पूजा ॥

दोहा ॥ पक्व बीजोरूं जिन करै, ठवतां शिवपद देइ। सरस मधूर रस फल गिणों, इह जिन भेट करेइ ॥ १ ॥ ढाल ॥ श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंबा सार, अंज़ीर वंजीर दाड़िम करणा षट्बीज सफार । मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आनन्दित जेह, वर्ण गन्धादिक रमणीक बहुफल ढोवै तेह ॥ २ ॥ चाल ॥ फलभर पूजतां जगत स्वामी, मनु जगति ते लहै सफल पामी । सकल मनुष्येय गतिभेद रंगै, ध्यावतां फल समाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ कटुककर्मविपाक-विनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढौकनं । वहति मोक्ष-फलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः॥ १॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । फलं यजामहे स्वाहा

॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नोला फल प्रमुख चढ़ावे ॥ इति फल पूजा ॥

अथ अर्घ पूजा ॥

दोहा ॥ इम अड़विधि जिन पूजना, विरचै जे थिर चित्त। मानवभव सफलो करै, वाधे समकित वित्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ अगणित गुणमणि आगर नागर वन्दित पाय, श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञानसागर उवझाय। तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन, श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ चाल ॥ सम्वत गुणयुत अचल इन्दु, हर्ष भरो गाइयो श्रीजिनेंदु। तासु फल सुकृत थी सकल प्राणी, लहै ज्ञान उद्योत धन शिव निसाणी ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकल गुणनिधानं देवचन्द्रं स्तुवन्ति। प्रतिदिवसमनन्तं तत्वमुद्भासयन्ति, परमसहजरूपं मोक्षसौख्यं श्रयन्ति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने०। अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ चार कोणें धार दाजे। इति अर्घ पूजा ॥

अथ वस्त्र पूजा ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूलाः, सिंहासनोपरि मितस्नपनावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचन्दनगन्धधूपैः, कृत्वार्च्चनन्तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिनालङ्कारवस्त्रादिकं, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्याहतः । नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ वस्त्र चढ़ावै ॥ इति वस्त्रपूजा ॥

अथ नमक उतारण पूजा ।

अह पड़िभग्गापसरं, पयाहिणं मुणिवयं करिऊणं । पड़इ सलूणत्तण लज्जियंच, लूणंहू अवहरन्ति ॥ १ ॥ पिक्खेविणु मुह जिण वरह दीहर नयण सलूण । न्हावइ गुरु मच्छह भरिय, जलण पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूण उतारिह जिणवरह, तिन्नि पयाहिणि देव । तड़ तड़ शब्द

करन्तिये, विज्जा विज्जजलेण ॥ ३ ॥ जं जेण विज्जव थुई, जलेण तं तहइ अत्थसद्दस्स। जिनरूवा मच्छरेणवि, फुट्टइ लूणं तड़ तड़स्स ॥ ४ ॥ यह कहकर लूण अग्निशरण करे पीछे लूण पाणी लेई, मुखें गाथा कहे ॥ गाथा ॥ सव्ववि मुणवइ जलविजल, तन्तह भमणइ पास। अहवि कयन्तस्स निम्मलउ, निग्गुण बुद्धि पसाय ॥ ५ ॥ जलण अणें विगण जलणहि पास, भरवि कयजल भावहि पास। तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास, जिम जिय छूटै भव दुहपास ॥ ६ ॥ जल निम्मल कर कमलेहि लेविणुं, सुरवर भावहि मुणिवई सेवणुं। पभणई जिणवर तुहपइ सरणं, भय तुट्टइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥ ७ ॥ यह कह कर लूण उतारी जल शरण करे॥ इति नमक उतारण पूजा ॥

अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥

उन्नय पयय भत्तस्स, नियठाणे सणिठय कुणंतस्स। जिण पासै भमिय जणस्स, पिच्छ-

तुह हुयवहे पड़णं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चन्ती। सव्वन्नूण अपासे, जड़स्स भमणं न सङ्कमणं ॥ २ ॥ अच्चन्त दुःकरं पिहू, हुयवह निवड़ेन जड़ेन कयं। आणा सव्वन्नूणं, न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ यह कहकर माला पहनावे ॥

अथ छठी फूल पूजा ॥

उवणेव मंगलेवो, जिणाण मुह लालि संवलिया। तित्थपवत्तम समई, तियसे विमुक्का कुसुमबुट्ठी ॥ १ ॥ यह कहकर प्रभुके सम्मुख फूल उछाले ॥

प्रभातकी आरती ॥

जय जय आरती शान्ति तुमारी, तोरा चरण कमलकी मैं जाउं बलिहारी ॥ टेर ॥ विश्वसेन अचिराजीके नन्दा, शांतिनाथ मुख पूनिम चंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ चालिस धनुष सोवनमय काया, मृग लांछन प्रभु चरण सुहाया ॥ जय० ॥ २ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम सोहै, सो-

करन्तिये, विज्जा विज्जजलेण ॥ ३ ॥ जं जेण वि-ज्जव थुई, जलेण तं तहइ अत्थसहस्स । जिन-रूवा मच्छरेणवि, फुट्टइ लूणं तड़ तड़स्स ॥ ४ ॥ यह कहकर लूण अग्निशरण करे पीछे लूण पाणी लेई, मुखें गाथा कहे ॥ गाथा ॥ सव्ववि मुणवइ जलविजल, तन्तह भमणाइ पास । अहवि कय-न्तस्स निम्मलउ, निग्गुण बुद्धि पसाय ॥ ५ ॥ जलण अणें विणण जलणाहि पास, भरवि कय-ज्जल भावहि पास । तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास, जिम जिय छूटै भव दुहपास ॥ ६ ॥ जल निम्मल कर कमलेहि लेविणुं, सुरवर भावहि मु-णिवई सेवणुं । पभणाई जिणवर तुहपइ सरणं, भय तुट्टइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥ ७ ॥ यह कह कर लूण उतारी जल शरण करे ॥ इति नमक उतारण पूजा ॥

अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥

उन्नय पयय भत्तस्स, नियठाणे सणिठय कुणंतस्स । जिण पासै भमिय जणस्स, पिच्छ-

तुह हुयवहे पड़णं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चन्ती । सव्वन्नूण अपासे, जड़स्स भमणं न सङ्कमणं ॥ २ ॥ अच्चन्त दुःकरं पिहू, हुयवह निवड़ेन जड़ेन कयं । आणा सव्वन्नूणं, न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ यह कहकर माला पहनावे ॥

अथ छूठी फूल पूजा ॥

उवणेव मंगलेवो, जिणाण मुह लालि संवलिया । तित्थपवत्तम समई, तियसे विमुक्का कुसुमबुट्ठी ॥ १ ॥ यह कहकर प्रभुके सम्मुख फूल उछाले ॥

प्रभातकी आरती ॥

जय जय आरती शान्ति तुमारी, तोरा चरण कमलकी मैं जाउं बलिहारी ॥ टेर ॥ विश्वसेन अचिराजीके नन्दा, शांतिनाथ मुख पूनिम चंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ चालिस धनुष सोवनमय काया, मृग लांछन प्रभु चरण
॥ जय० ॥ २ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम

लम जिनवर जग सहु मोहै ॥ जय० ॥ ३ ॥ मंगल आरती भोरे कीजे, जनम २ को लाहो लीजै ॥ जय० ॥ ४ ॥ कर जोड़ी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमर पद पावै ॥ जय० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ नवपद-पूजा ।

अथ प्रथम अरिहंतपद-पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यांन ॥ अरिहंतपद पूजा करो, निज २ शक्ति प्रमांण ॥ १ ॥ काव्य ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडि हेरा सणसंठियाणं ॥ सद्दे-सणाणंदिय सज्जणाणं, नमो२ होउ सयाजि-णाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं, प्रधा-नाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यां-यी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल-.. ॥ २ ॥ कस्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणें, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना

भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीनें ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥४॥ कर्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, भवोपग्रही च्यार छे जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकल्याणके सुख पांमें, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामें ॥ ५ ॥

ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म भावे चरण थिरता वासता ॥ जिन नांमकर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज शोभता, जगजंतु करुणावंत भगवंत भविकजने थोभता ॥ ६ ॥

ढाल ॥ श्रीसीमंधर साहिब आगे ॥ ए-देशी ॥

तीजे भव वर थानक तप करी, जिन बांध्युं जिन नाम ॥ चउसठइंद्रै पूजित जे जिन,

ख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्भवादस्व-रूपा ॥ १६ ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुतामई, आतम संपत भूपो जी ॥ उल्लालो ॥ जे भूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्व-स्वभाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परभणी, मुनिराज मानसरहंस समवड, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ १७ ॥

ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी चरम तिभाग विसेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥ १८ ॥ भ० ॥ पूरब प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, तेसिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ भ० १९ सि० ॥ निरमल सिद्धशिलाने ऊपर जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनि, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ २० भ० सि०॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम

गुण जास ॥ ओपमा विण नांणी भवमांहे, ते सिद्ध दिओ उल्लास रे ॥ भ० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भ० ॥ २१ ॥ सि० ॥

ढाल ॥ रूपातीत स्वभावजे, केवलदंसणनाणी रे ॥ तेध्याता निज आतमा,होय सिद्ध गुण खाणी रे ॥ वी० ॥ ॐ ॥ ह्रीं० इति श्रीसिद्धपद-पूजा ॥

अर्थ तृतीय आचार्य पद-पूजा ।

॥ दूहा ॥ हिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष ॥ मोहतिमिर दूरै हरै, सूझै भाव असेष ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरीणदूरीकयकुग्गहाणं, नमो२ सीरिसमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अखंडछत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वभाजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्यभाजा ॥ षट् वर्गवर्गित गुणै शोभमाना, पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ २ ॥ भविप्राणिनें देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा सूत्र आलै ॥ जिके शासना

धार दिग्‌दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो शुद्ध जल्पा ॥ ३ ॥

ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणछत्ती-सेधामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परभावे निक्कामो जी ॥ उल्लालो ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वरज्ञान दरसन चरण बीरज, साधना व्यापारथी ॥ भवि जीवबोधक तत्वशोधक, सयलगुण संपत्तिधरा ॥ संवर समाधी गत ऊपाधी, दुविधत पगुण आद रा ॥ २५ ॥

ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै, मारग भाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने याचो रे ॥ भ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर छत्तीसगुणौंकरि शोभै, युगप्रधानजगबोहे ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे भ० ॥२७॥ सि०॥ नित अप्रमत्त धरम उव एसे, नहि विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलूस अमल अमाय रे ॥ भ० ॥ २८ ॥

सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचोयण वलि जनने ॥ पटधारी गच्छथुंभ आचारज, ते मान्या मुनि मनने रे॥ भ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदी जे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो रे ॥ भ० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे ॥ वी० ॐ ह्रीं आचार्यपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ अथ चौथी उपाध्यायपद-पूजा ।

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥ उवझायापद अरचिये, अनुभव रसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुतत्थ वित्थारणतप्पराणं, नमो२ वायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणसायराणं, सव्वप्पणावज्जियमच्छराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरिगुणने सुहाया, नमूं वाचका त्यक्त मदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिधानें ॥ २ ॥ धरै

पंचनेवर्गेवर्गितगुणौघा, प्रवादिद्विपोच्छेदनेतुल्य सिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेस्थंभ पूता, उपाध्यायनेवंदियेचित्प्रभूता ॥ ३ ॥

ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ, अज्जव मद्दवजुत्ताजी ॥ सच्चं सोयंअकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥ उल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता शुभधरा ॥ स्याद्वादवादइं तत्वसाधक, आत्मपरविभंजनकरा ॥ भवभीरुसाधन धीरशासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदांनसमरथ, नमोपाठकपदधरा ॥ ३३ ॥

ढाल ॥ द्वादशअंगसिज्झाय करे जे, पारगधारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवझाय उल्लास रे ॥ भ० ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दांनविभागे, आचारज उवज्झाय ॥ भवत्रिणहैं जे लहै शिवसंपद, नमियै ते सुपसायरे ॥ भ० ॥ ३५ ॥ सि० ॥ मुरखशिष्यनीपायेजे प्रभु, पाहणने पल्लव आणे ॥ ते उवझाय सकलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजांणे रे ॥ भ० ॥ ३६ ॥

सि० ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचार-जपद योग, ते उवभ्काय सदा ते नमतां, नावै भवभय सोग रे ॥ भ० ॥३७॥ सि० ॥ बावना-चंदनरस समवयणै, अहिततापसवि टालै ॥ ते उवज्भाय नमिजे जे वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥

ढाल ॥ तप सिज्भायै रत सदा, द्वादश अं-गनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपाठ-कपदे अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थ उपाध्यायपद पूजा ॥

अथ पाँचवीं साधूपद-पूजा ॥

दूहा ॥ मोक्षमारग साधनभणी, सावधांन थया जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदता, निरमल थाये देह ॥ १ ॥ काव्य ॥ साहूण संसाहियसंजमाणं, नमोऽत्थुशुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहिया-णं, मुणीणमाणंदपयट्ठिआणं ॥ करेसेवनासूरि-वायगगणीनी, करूं वर्णना तेहंनीसीमुणीनी ॥

समेतासदापंचसमेतेत्रिगुप्ता, त्रिगुप्तै नहीकाम भोगेषुलिप्ता ॥ ४१ ॥ वलीबाह्यअभ्यंतरैग्रंथटाली, हुइंमुक्तिनेयोगचारित्रपाली ॥ शुभष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ ४२ ॥

ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निष्कामी निस्संगी जी ॥ भवदव ताप समावता, आतम साधन रंगीजी ॥स०॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निमम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर सन ध्यांन अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै परभणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन प्रणामो हितभणी ॥ ४३ ॥

ढाल ॥ जिम तरुफूलै भमरो बेसे, पीड़ा तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषै, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ भ० ॥ ४४ ॥ पांचइन्द्रीनें जे नित जीपे, षट्काया बन्धु प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ भ० ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धोरी, अ-

चल आचार चरित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४६ ॥ नव विध ब्रह्मगुप्त जे पाले, बारे विध तपसूरा ॥ एहवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरव पुन्य अंकूरा रे ॥ भ० ॥ ४७ ॥ सि० ॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन २ चढते वानै ॥ संजम खप करता मुनि नमियै, देशकाल अनुमानै रे ॥ भ० ४८ ॥

ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरषै नवि सोचै रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, स्युं मुंडै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं साधुपंदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

अथ छट्ठी दर्शनपद-पूजा ॥

दूहा ॥ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्वतणी परतीत ॥ ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुभ रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणुत्ततत्तेरुइलक्खणस्स, नमो २ निम्मलदंसणस्स ॥ मिच्छत्तनासाइस-मुग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममहादुमस्स ॥ विपर्या-सहोवासनारूपमिथ्या, टले जे अनादीअछैजे-

कुपथ्या ॥ जिनोक्तै हुइ सहजथीशुद्धध्यानं, कहियैदर्शनंतेहपरमंनिधानं ॥ ५० ॥ विनाजेहथीज्ञान मज्ञानरूपं, चरित्रंविचित्रं भवारण्यकूपं ॥ प्रकृतिसातनेउपसमैक्षयतेहहोवे, तिहांआपरूपैसदाआपजोवै ॥ ५१ ॥

ढाल ॥ सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरूपीजी ॥ जसु निरधार स्वभाव छै, चेतन गुण जे अरूपी जी ॥ चाल ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टलै, निजशुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा उछलै ॥ बहु मांन परणितवस्तु तत्वे अहव सुखकारण पणौ, निज साध्य दृष्टै सरब करणी तत्वता संपति गिणौ ॥ ५२ ॥

॥ ढाल ॥ शुद्धदेव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम ॥ जेह पामीजै तेह नमीजै, सम्यग्दर्शन नांम रे ॥ भ० ५३ सि० ॥ मल उपशम क्षय उपशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग ॥ सम्यगदर्शन तेह नमीजै, जिनधरमै दृढ रंग रे

॥ भ० ५४ सि० ॥ पांच वार उपशम लहीजै, क्षयउपसमीय असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीइं असंख रे ॥ भ० ॥ ५५ सि० ॥ जे विण नांण प्रमाण न होवे, चारित्र तरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जेविण लहिये, समकित दरशन बलिओ रे ॥ भ० ५६ सि० ॥ सडसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञांन चारित्रनूं मूल ॥ समकितदर्शन ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० ५७ सि० ॥

॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, क्षयउशम जे आवै रे ॥ दर्शन ते हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ५८ ॥ ॐ ह्रीं प० दर्शन पदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातवीं ज्ञानपद-पूजा ॥

दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमाह ॥ आराधिजै शुभ मनें, दिन२ अधिक उच्छाह ॥१॥ काव्य ॥ अन्नाण सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सु-

वगारगस्स, सत्ताणसव्वत्थपयासगस्स ॥ होइ जे-हथीज्ञानशुद्धप्रबोधै, यथावर्णनासैविचित्राविबोधै ॥ तिणेंजाणीयेवस्तुषट्द्रव्यभावा, नहोवैविकत्तथा-निजेच्छास्वभावा ॥ ५६ ॥ होइ पंचमत्यादि सुग्यानभेदै, गुरुपासथीयोग्यतातेहवेदइं द ॥ वली ज्ञे यहेयाउपादेयरूपै, लहैचित्त मांजेम ध्यानें प्रदीपै ॥ ६० ॥

ढाल ॥ भव्य नमो गुण ज्ञांननें, स्वपरप्रकाशक भावै जी ॥ पर्याय धरम अनंतता, भेदा भेद स्वभावै जी ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधवास विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंछना ॥ स्याद्वादसंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता, सवि कल्पने अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥६१॥

॥ढाल॥ भक्ष अभक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञांनते सकल आधार रे ॥ भ० ॥ ६२ सि० ॥ प्रथम ज्ञांन नें पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धांतै भाख्युं ॥

ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये शिवसुख चाख्युं रे ॥ भ० ६३ ॥सि०॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित२ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ भ० ॥६४ सि० ॥ पांच ज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाशक तेह ॥ दीपकपर त्रिभुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ भ० ॥ ६५ सि० ॥ लोक ऊरध अधतिर्यग् ज्योतिष, वैमानीकने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुझ शुद्धी रे ॥ भ० ॥ ६६ ॥ सि० ॥

ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म छै, क्षय उपशम तसु थाये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायै रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठवीं चारित्रपद-पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी ऊमेद ॥ पूजत अनुभवरस मिले, पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिया खंडिअ सक्कि-

यस्स, नमो२ संजमवीरिअस्स ॥ सब्भावणासंग विवट्टिअस्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ॥ वलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निरासंसताद्वाररोधे प्रसंगे ॥ भवांभोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरु तेहचारित्रअप्राप्तमूल्यं ॥ ६८ ॥ होइंजासमहिमाथकोरंकराजा, वलिद्वादशांगीभणीहोइताजा ॥ वलिपापरूपोपिनिष्पापथाये, थईसिद्धतेकर्मनेंपारजाये ॥ ६९ ॥

॥ चाल ॥ चारित्रगुण वलि२ नमो, तत्वरमणजसु मूलो जी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥ उल्लालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचिपरम खंति मुनींद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायिकादिक भेद धरमैं यथाख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्वल काम कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥

॥ ढाल ॥ देशविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही यतिने अभिरांम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो,

कीजै तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ ७१ ॥ ॥ सि० ॥
तृण पर जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त पिण
वरिओ, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मन-
मांहि धरिओ रे ॥ भ० ॥ ७२ ॥सि०॥ हूवा रंक
पणे जे आदर, पूजत इंद-नरिंद ॥ अशरण श-
रण चरण ते वारू, वरिओ ज्ञान आनंद रे ॥भ०॥
७३ सि० ॥ बार मास पर्यायै तेहनें, अनुत्तर
सुख अतिक्रमिये ॥ शुक्ल२ अभिजात्य ते ऊपर,
ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ७४ सि० ॥ चय
ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥
चारित्र नांम निरुक्ते भाख्युं, ते वंदू गुणगेह रे
॥ भ० ॥ ७५ सि० ॥

॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निज-
स्वभावमांहि रमतो रे ॥ लेस्या शुद्ध अलंकस्यो,
मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ७६ ॥ ॐ ह्रीं
प० चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नववीं तपपद-पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ट प्रति जालवा, परतिख

अगनि समांन ॥ ते नपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यांन ॥१॥ काव्यं ॥ कम्मद्दु मोन्मूलनकुंजरस्स, नमो२ तिव्वतवोवरस्स ॥ अणेगलद्धीण-नीबंधणस्स, दुसज्झअत्थाणयसाहणस्स ॥ ७७ इयनवपयसीद्धी लद्धि, वीज्जासमीद्धं पयमीय सरवग्गंह्नींतिरेहसमग्गं ॥ दिसिवइसुरसारं खो-णिपीढावयारं, तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कं नमा-

॥ ७८ ॥ त्रिकालिकपणें कर्मकषाय टालै, निकाचितपणें बाधिया तेह बालै ॥ कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर दु भेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे ॥ ७९ ॥ होइ जास महिमाथको लब्धि सिद्धि, अवांछपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होइ सिद्ध सीमंतनी जिम संकेते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवभव शिव जावै देव नर भवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रभावै, सवि दुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥

ढाल ॥ इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अ-

भ्यन्तर भेद जी ॥ आतम सत्ता एकत्वता, पर परणति उच्छेदे जी ॥१॥ उल्लालो ॥ उच्छेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अक्रियता करै ॥ अंतर-मुहूरत तत्व साधै सर्व संवरता करो, निज आत्म-सत्ता प्रगट भावै करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥

ढाल ॥ इम नवपद गुणमंडलं, चउ नि-क्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, सम्यग्ज्ञानें जाणे जो ॥ उल्लालो ॥ निरधारसेता गुणे गुणनो करइजै बहुमांन ए, जसु करण ईहा तत्व रमणें थायै निरमल ध्यांन ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अक्षय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरै ॥ ८३ ॥

कलश ॥ इम सयल सुखकर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लब्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भविक पूजो मन रली ॥ उवझाय वर श्रीराज-सागर ज्ञानधर्मसु राजता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥ ८४ ॥

ढाल ॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते भवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्मखपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ भ० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम निकाचित पिण क्षय जायै, क्षमासहित जे करतां, ते तप नमियै तेह दीपावै, जिनशासन उजमंता रे ॥ भ० ॥ ८६ ॥ सि० ॥ आमोसहीपमुहा बहु लब्धि, होवै जास प्रभावै ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्रगटै, नमियै ते तप भावै रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ भ० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व्व मंगलमांहि पहलो मंगल-वर्णवियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित नमियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ भ० ॥ ८६ ॥ सि० ॥ इम नवपद थुणतो तिहांलीनो, हुओ तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोथेखंडै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ भ० ॥ ६० ॥ सि० ॥

ढाल ॥ इच्छारोधन संवरी, परणित समता योगै

रे॥ तप ते एहिज आतमा, वरते निजगुण भोगे रे॥ वी० ॥ ६१ ॥ आगमनो आगमतणो, भाव ते जांणो साचो रे॥ आतमभावे थिर हूओ, परभावै मतराचो रे॥ वी० ॥ ६२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे ऋद्धि दाखी रे॥ तिम नवपद ऋद्धि जाणज्यो, आतमराम छै साखी रे॥ वी० ६३ ॥ योग असंख्य छै जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जांणो रे॥ एहतणै अविलंबिने, आतम ध्यांन प्रमाणो रे॥ वी० ॥ ६४ ॥

ढाल ॥ बारमी ए हवी, चोथै खंडे पूरी रे॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय न रही अधूरी रे॥ वी० ६५ ॥ ॐ ह्रीं प० तपपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे ॥ इति नवपद-पूजा समाप्त ॥

विधि-संग्रह ।

प्रभातकालीन सामायिक की विधि ।

दो घड़ी रात बाकी रहे तब पौषधशाला आदि एकान्त स्थनमें जा कर अगले दिन पड़िलेहन किये हुए शुद्ध वस्त्र पहिन कर गुरु न हो तो तीन नमुक्कार गिन कर स्थापनाचार्य स्थापे। बाद खमासण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवान्' क
यिक मुहपत्ति पडिलेहुं ?' कहे। गुरुके 'पडिलेहेह' कहनेके बाद 'इच्छं' कह कर खमासमण देकर मुहपत्तिका पडिलेहन करे। फिर खड़े रह कर खमासमण देकर 'इच्छा०' कह कर 'सामायिक संदिसाहुं ?' कहे। गुरु 'संदिसावेह' कहे तब 'इच्छं कह कर फिर खमासमण देकर 'इच्छा०' कह कर 'सामायिक ठाउं ?" कहे। गुरुके 'ठाएह' कहनेके बाद 'इच्छं' कह कर खमासमण देकर आधा अङ्ग नवाँ कर तीन नमुक्कार गिनकर कहे कि 'इच्छाकारि भगवन् पसायकरी सामायिक दण्ड उच्चरावो जी'। तब गुरुके 'उच्चरावेमो' कहनेके बाद 'करेमि भंते समाइयं' इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार गुरुवचन-अनुभाषण-पूर्वक पढ़े। पीछे खमासमण देकर 'इच्छा०' कहकर 'इरियावहियं पड़िक्कमामि ?' कहे। गुरु 'पड़िक्कमह' कहे तब 'इच्छं' कहकर 'इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए' इत्यादि इरियावहिय करके एक लोगस्सका काउस्सग्ग कर तथा 'नमो अरिहंताणं' कहकर उसको पार कर प्रगट लोगस्स कहे। फिर खमासमण-पूर्वक

'इच्छा०' कहकर 'वेसणे संदिसाहु ?' कहे। गुरु 'संदिसावेह' कहे तब फिर 'इच्छं' तथा खमासमण पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'वेसणे ठाउँ ?' कहे। और गुरु 'ठाएह' कहे तब 'इच्छं' कहकर खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'सज्झाय संदिसाहुँ ?' कहे। गुरुके 'संदिसावेह' कहनेके वाद 'इच्छं' तथा खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'सज्झाय करुं ?' कहे और गुरुके 'करेह' कहे वाद 'इच्छं' कहकर खमासमण पूर्वक खड़े-ही-खड़े आठ नमुकार गिने।

अगर सर्दी हो तो कपड़ा लेनेके लिये पूर्वोक्त रीतिसे खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'पगुरण संदिसाहुँ ?' तथा 'पंगुरण पडिग्गाहुँ ?' क्रमशः कहे और गुरु 'संदिसावेह' तथा 'पडिग्गाहेह' कहे तब 'इच्छं' कह कर वस्त्र लेवे। सामायिक तथा पौषधमें कोई वैसा ही व्रती श्रावक वन्दन करे तो 'वंदामो' कहे और अव्रती श्रावक वन्दन करे तो 'सज्झाय करेह' कहे।

रात्रि-प्रतिक्रमण की विधि।

पहले सामायिक लेकर फिर खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'चैत्यवन्द करुँ ?' कहनेके वाद गुरु जब 'करेह' कहे तब 'इच्छं' कह कर 'जयउ सामि जयउ सामि', का 'जय वीयराय' * तक चैत्य-वन्द करे, फिर

*खरतरगच्छमें 'जय वीराय०' की सिर्फ दो गाथाएं अर्थात्

खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह करके 'कुसुमिणदुसुमिणराइयपायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्गं करुँ?' कहे और गुरु जब 'करेह' कहे तब 'इच्छं' कह कर 'कुसुमिणराइयपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं' तथा 'अन्नत्थ ऊससिएणं' इत्यादि कह कर चार लोगस्सका 'चंदेसु निम्मलयरा' तक काउसग्ग करके 'नमो अरिहंताणं' पूर्वक प्रगट लोगस्स पढ़े।

रात्रिमें मूलगुणसम्बन्धी कोई बड़ा दोष लगा हो तो 'सागरवरगम्भीरा' तक काउस्सग्ग करे। प्रतिक्रमणका समय न हुआ हो तो सज्झाय-ध्यान करे। उसका समय होते ही एक-एक खमासमण-पूर्वक "आचार्य-मिश्र, उपाध्याय मिश्र" जगम युगप्रधान वर्तमान भट्टारकका नाम और 'सर्वसाधु' कह कर सबको अलग अलग वन्दन करे। पीछे 'इच्छकारि

"सेवणाआभवमखण्डा" तक बोलनेकी परम्परा है, अधिक बोलनेकी नहीं। यह परम्परा बहुत प्रचीन है।

समस्त श्रावकोंको वंदूं' कह कर घुटने टेक कर सिर नवॉ कर दोनों हाथोंसे मुंहके आगे मुह-पत्ति रख कर 'सव्वस्स वि राइय०, पढ़े, परन्तु 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, इच्छं' इतना न कहे। पीछे 'शक्रस्तव' पढ़ कर खड़े होकर 'करेमि भंते सामाइयं०, कह कर 'इच्छामि ठामि काउ-स्सग्गं जोमे राइयो०' तथा 'तस्स उत्तरी, अन्नत्थ' कह कर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके उसको पारकर प्रगट लोगस्स कह कर 'सव्वलोए अरि-हंत चेइयाणं वंदण०' कह कर फिर एक लोगस्स का काउस्सग्ग कर तथा उसे पार कर 'पुक्खरव-दीवड्ढे' सूत्र पढ़ कर 'सुअस्स भगवओ' कह कर 'आजूणा चउपहरी रात्रिसम्बन्धी' इत्यादि आलोयणाका काउस्सग्गमें चिन्तन करे; अथवा आठ नमुक्कारका चिन्तन करे । बाद काउसग्ग पार कर 'सिद्धाणं बुद्धाणं' पढ़ कर प्रमाजर्नपूर्वक बैठ कर मुहपत्ति पडिलेहण करे और दो वन्दना देवे । पीछे 'इच्छा०' कह कर 'राइयं आलोउॅ?'

कहे । गुरुके 'आलोएह' कहने पर 'इच्छं' कह कर 'जोमे राइयो०' सूत्र पढ़ कर प्रथम काउस्सग्गमें चिन्तन किये हुए 'आजूणा' इत्यादि रात्रि-अति चारोंको गुरुके सामने प्रगट करे और पीछे 'सव्वस्स वि राइय' कह कर 'इच्छा०' कह कर रात्रि-अतिचारका प्रायश्चित्त मांगे। गुरुके 'पडिक्कमह' कहनेके बाद 'इच्छं' कहकर 'तस्स मिच्छामि दुक्कड़' कहे। बाद प्रमार्जन-पूर्वक आसनके ऊपर दाहिने जानूको ऊँचा कर तथा बाँये जानूको नीचा करके बैठ जाय और 'भगवन् सूत्र भणुँ?' कहे। गुरुके 'भणह' कहने के बाद 'इच्छं' कह कर तीन-तीन या एक-एक वार नमुक्कार तथा 'करेमि भन्ते' पढ़े। बाद 'इच्छामि पडिक्कमिउं जोमें राइओ' सूत्र तथा 'वंदित्तु' सूत्र पढ़े। बाद दो वन्दना देकर 'इच्छा०' कह कर 'अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइयं खामेउँ?' कहे। बाद गुरुके 'खामेह' कहनेके बाद 'इच्छं' कह कर प्रमार्जनपूर्वक घुटने टेक कर दो

बाहू पडिलेहन कर बाँये हाथसे मुखके आगे मुहपत्ति रख कर दाहिना हाथ गुरुके सामने रखे, अनन्तर शरीर नवाँ कर 'जंकिंचि अपत्तियं' कहे। बाद जब गुरु 'मिच्छा मि दुक्कड़ं' कहे तब फिरसे दो वन्दना देवे। और 'आयरिय उवज्झाए' इत्यादि तीन गाथाएँ कह कर 'करेमि भन्ते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ' कह कर काउस्सग्ग करे। उसमें वीर-कृत षाड्मासी तप का चिन्तन किंवा छह लोगस्स या चौवीस नमुक्कारका चिन्तन करे। और जो पच्चक्खाण करना हो तो मनमें उसका निश्चय करके काउस्सग्ग पारे तथा प्रगट लोगस्स पढ़े। फिर उकडूँ आसनसे बैठ कर मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वन्दना देकर सकल तीर्थोंको नाम पूर्वक नमस्कार करे और 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण कराना जी' कह कर गुरुमुखसे या स्थापनाचार्यके सामने अथवा वृद्ध साधर्मिकके मुखसे प्रथम निश्चयके अनुसार

पच्चक्खाण करले । बाद 'इच्छामो अणुसट्ठिं' कह कर बैठ जाय । और गुरुके एक स्तुति पढ़ जाने पर मस्तक पर अञ्जली रख कर 'नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्०' पढ़े । बाद 'संसारदावानल' या 'नमोऽस्तु वर्धमानाय' या परसमयतिमिरतरणिं' की तीन स्तुतियाँ पढ़ कर 'शक्रस्तव' पढ़े । फिर खड़े होकर 'अरिहंत चेइयाणं' कह कर एक नमुक्कारका काउस्सग्ग करे । और उसको 'नमोऽर्हत्' पूर्वक पार कर एक स्तुति पढ़े । बाद 'लोगस्स, सव्वलोए' पढ़ कर एक नमुक्कारका काउस्सग्ग करके तथा पारके दूसरी स्तुति पढ़े । पीछे 'पुक्खरवरदिवड्ढे, सुअस्स भगवओ' पढ़ कर एक नमुक्कारका काउस्सग्ग पारके तीसरी स्तुति कहे । तदनन्तर 'सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्चगराणं' बोल कर एक नमुक्कारका काउस्सग्ग पारके 'नमोऽर्हत्'-पूर्वक चौथी स्तुति पढ़े । फिर 'शक्रस्तव' पढ़कर तीन खमासमण पूर्वक आचार्य उपाध्याय तथा सर्व साधुओंको वन्दन करे ।

यहाँ तक रात्रि-प्रतिक्रमण पूरा हो जाता है। और विशेष स्थिरता हो तो उत्तर दिशाकी तरफ मुख करके सीमन्धर स्वामीका 'कम्मभूमीहिं कम्मभूमीहिं, से लेकर 'जय वीयरायय' तक संपूर्ण चैत्य-वन्दन तथा 'अरिहंत चेइयाणं०' कहे और एक नमुक्कारका काउस्सग्ग करके तथा उसको पारके सीमन्धर स्वामीकी एक स्तुति पढ़े।

अगर इससे भी अधिक स्थिरता हो तो सिद्धाचलजीका चैत्यवन्दन करके प्रतिलेखन करे। यही क्रिया अगर संपक्षमें करनी हो तो दृष्टि-प्रतिलेखन करे और अगर विस्तारसे करनी हो तो खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कहे और मुहपत्ति-पडिलेहन, अंव-पडिलेहन, स्थापनाचार्य-पडिलेहन, उपधि-पडिलेहन तथा पौषधशालाका प्रमार्जन करके कूड़े-कचरेको विधिपूर्वक एकान्त में रख दे और पीछे 'इरियावहियं' पढ़े।

सामायिक पारने की विधि।

खमासमण-पूर्वक मुहपत्ति पडिलेहन करके

फिर खमासमण कहे। बाद 'इच्छा' कह कर 'समायिक पारु?' कहे। गुरुके 'पुणो वि कायव्वो' कहनेके बाद 'यथाशक्ति' कह कर खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'समायिक पारेमि?' कहे, जब गुरु 'आयारो न मोत्तव्वो' कहे तब 'तहत्ति' कह कर आधा अंग नवाँ कर खड़े-ही-खड़े तीन नमुक्कार पढ़े और पीछे घुटने टेक कर तथा सिर नवाँ कर 'भयवं दसन्नभद्दो' इत्यादि पाँच गाथाएँ पढ़े तथा 'सामायिक विधिसे लिया' इत्यादि कहे।

संध्याकालीन सामायिक की विधि।

दिनके अन्तिम प्रहरमें पौषधशाला आदि किसी एकान्त स्थानमें जाकर उस स्थानका तथा वस्त्रका पडिलेहन करे। अगर देरी होगई हो तो दृष्टि-पडिलेहन कर लेवे। फिर गुरु या स्थापना-चार्यके सामने बैठ कर भूमिका प्रमार्जन करके बाई ओर आसन रख कर खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुँ?'

कहे। गुरुके 'पडिलेहेह' कहने पर 'इच्छं' कहकर मुह पत्ति पढ़िलेहे। फिर खमासमण पूर्वक 'इच्छा' कह कर 'सामायिक संदिसाहु', सामायिक ठाउं, इच्छं, इच्छकारि भगवन् पसायकरि दंड उच्चरावो जी, कहे। बाद तीन वार नमुक्कार, तीन वार 'करेमि भन्ते' 'सामाइयं' तथा 'इरियावहियं इत्यादि काउस्सग्ग तथा प्रगट लोगस्स तक सब विधि प्रभातके सामायिककी तरह करे। बाद नीचे बैठ कर मुहपत्तिका पडिलेहन कर दो वन्दना देकर खमासमण पूर्वक 'इच्छकारि भगवन् पसायकरि पच्चक्खाण कराना जो' कहे। फिर गुरुके मुखसे या स्वयं किसी बड़के मुखसे दिवस चरिमंका पच्चक्खाण करे।

अगर तिविहाहार उपवास किया हो तो वन्दना न देकर सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करके पच्चक्खाण कर लेवे और अगर चउव्विहाहार उपवास हो तो मुहपत्ति पडिलेहन भी न करे। बादको एक-एक खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह

कर 'सज्झाय संदिसाहुं?, सज्झाय करुं?, तथा 'इच्छं' यह सब पूर्व की तरह क्रमशः कहे और खड़े हो कर खमासमण-पूर्वक आठ नमुक्कार गिने। फिर एक-एक खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'बेसणे संदिसाहुँ?, बेसणे ठाउँ?' तथा 'इच्छं', यह सब क्रमशः पूर्वकी तरह कहे।

इसके बाद यदि वस्त्रकी जरूरत होतो उसके लिये भी एक एक खमासमण पूर्वक 'इच्छा० कह कर 'पंगुरण संदिसाहुँ, पंगुरण पडिग्गाहुँ? तथा 'इच्छं' यह सब पूर्वकी तरह कहकर वस्त्र ग्रहण कर ले और शुभ ध्यान में समय बितावे

देवसिक-प्रतिक्रमण की वीधि ।

पहले यथाविधि सामायिक लेवे बाद 'तीन खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वन्दन करूँ? कहे। गुरूके 'करेह' कहने पर चैत्य इच्छं कह कर 'जय तिहुअण' 'जय महायस' कह कर 'शक्रस्तव' कहे। और 'अरिहंत चेइयाणं' सब पाठ पूर्वोक्त रीति से पढ़ कर काउ-

स्सग्ग आदि करके चार थूइ का देव वन्दन करे। इस के पश्चात् एक एक खमासमण दे कर आचार्य आदि को वन्दन करके 'इच्छकारि समस्त श्रवकोंको वंदू" कहे। फिर घुटने टेक कर सिर नवाँ कर 'सव्वस्स वि देवसिय' इत्यादि कहे। फिर खड़े हो कर 'करेमि भन्ते, इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिओ०, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कहकर काउस्सग्ग करे। इस में 'आजूणा चौपहर दिवस में इत्यादि पाठ का चिन्तन करे। फिर काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स पढ़ कर प्रमाजनपूर्वक बैठ कर मुहपत्ति का पडिलेहन करके दो वन्दना दे। फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोएमि? कहे। गुरु जब 'आलोएह' कहे तब 'इच्छं" कह कर 'आलोएमि जो मे देवसियो०' आजूणा चौपहर दिवससम्बन्धो० सात लाख, अठारह पापस्थान' कह कर 'सव्वस्स वि देवसिय, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्०' तक कहे। जब गुरु

'पडिक्कमह' कहे तब 'इच्छं', मिच्छा मि दुक्कडं' कहे। फिर प्रमार्जनपूर्वक बैठ कर 'भगवन् सूत्र भणुँ ?' कहे। गुरु के 'भणह' कहने पर 'इच्छं' कह कर तीन-तीन या एक-एक वार नमुक्कार तथा 'करेमि भंते' पढ़े। फिर 'इच्छामि पडि-क्कमिउं जो मे देवसियो०' कह कर 'वंदित्तु' सूत्र पढ़े। फिर दो वन्दना देकर 'अब्भुट्ठि-ओमि अब्भिन्तर देवसियं खामेउं, इच्छं, जं किंचि अपत्तियं०' कह कर फिर दो वन्दना देवे और 'आयरिय उवज्झाए' कह कर 'करेमि भंते इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी' आदि कह कर दो लोगस्स अथवा आठ नमुक्कारका काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्सपढ़े। फिर 'सव्वलोए' कह कर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे और उसको पार कर 'पुक्खरवरदी०' सुअस्स भगवओ०' कह कर फिर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे। तत्पश्चात् 'सिद्धाणं बुद्धाणं, सुअदेवयाए०' कह कर एक नमुक्कार का काउस्सग्ग कर तथा श्रुतदेवता की

स्तुति पढ़ कर 'खित्तदेवयाए करेमि०' कह कर एक नमुक्कार का काउस्सग्ग करके क्षेत्रदेवता की स्तुति पढ़े। बाद खड़े हो कर एक नमुक्कार गिने और प्रमार्जनपूर्वक बैठ कर मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वन्दना देकर 'इच्छामो अणुसट्ठिं' कह कर बैठ जाय। फिर जब गुरु एक स्तुति पढ़ ले तब मस्तक पर अञ्जली रख कर 'नमोखमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०' कहे। बाद श्रावक 'नमोस्तुवर्धमानाय०' की तीन स्तुतियाँ और श्राविका 'संसारदावानल०' की तीन स्तुतियाँ पढ़े। फिर 'नमुत्थणं' कह कर खमासमण पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'स्तवन भणु ?' कहे। बाद गुरु के 'भणह' कहने पर आसन पर बैठ कर 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' पूर्वक बड़ा स्तवन बोले। पीछे एक-एक खमासमण दे कर आचार्य, उपाध्याय तथा सर्व साधु को वन्दन करे। फिर खमासमण पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'देवसियपायच्छित्तविसुद्धिनिमित्तंकाउस्सग्ग करु ?-

कहे। फिर गुरु के 'करेह' कहनेके बाद 'इच्छं' कह कर 'देवसिअपायच्छित्तविसुद्धनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०' कह कर चार लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स पढ़े। फिर खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'खुद्दोवद्दवउड्डावणनिमित्तं काउस्सग्ग करेमि, अन्नत्थ०' कह कर चार लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स पढ़े। फिर खमासमण-पूर्वक स्तम्भन पार्श्वनाथ का 'जय वीयराय' तक चैत-वन्दन करके 'सिरिथंभणायट्टियपाससामिणो' इत्यादि दो गाथाएँ पढ़ कर खड़े हो कर वन्दन तथा 'अन्नथ०' कह कर चार लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स पढ़े।

इस तरह दादा जिनदत्त सूरि तथा दादा जिनकुशल सूरि का अलग-अलग काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स पढ़े। इस के बाद लघुशान्ति पढ़े। अगर लघु शान्ति न आतीहो तो सोलह नमुक्कार का काउस्सग्ग करके तीन खमा

समण-पूर्वक 'चउक्कसाय०' का 'जय वीयराय०' तक चैत्य-वन्दन करे। फिर 'सर्वमंगल०' कह कर पूर्वोक्त रीतिसे सामायिक करे।

पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक-प्रतिक्रमणकी वीधि * ।

'वंदित्तु' सूत्र पर्यंत तो दैवसिक-प्रतिक्रमण की विधिकरे। बाद खमासमण दे कर 'देवसिय पडिक्कंता, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय मुहपत्ति पडिलेहुँ ?' कहे। बाद गुरु के 'पडिलेहेह' कहने पर 'इच्छं' कह कर खमासमण पूर्वक मुहपत्ति पहिलेहन करे और दो वन्दना दे। बाद जब गुरू कहे कि 'पुण्णवन्तो 'देवसिय की जगह 'पक्खिय, 'चउमासिय या 'संवच्छरिय पढ़ना, छींक की जयणा करना, मधुर स्वर से प्रतिक्रमण करना, खाँसना हो तो विवर शुद्ध खाँसना और मण्डल में सावधान रहना,

*दैवसिक-प्रतिक्रमणमें जहाँ-जहाँ 'देवसियं' बोला जाता है, वहाँ-वहाँ पाक्षिक-प्रतिक्रमणमें 'पक्खिय' चातुर्मासिकमें 'चउमासिय' और सांवत्सरिकमें 'संवच्छरिय' बोलना चाहिये।

कहे। फिर गुरु के 'करेह' कहनेके बाद 'इच्छं' कह कर 'देवसिअपायच्छित्तविसुद्धनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०' कह कर चार लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स पढ़े। फिर खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'खुद्दोवद्दवउड्डावणनिमित्तं काउस्सग्ग करेमि, अन्नत्थ०' कह कर चार लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स पढ़े। फिर खमासमण-पूर्वक स्तम्भन पार्श्वनाथ का 'जय वीयराय' तक चैत-वन्दन करके 'सिरिथंभणयट्ठियपाससामिणो' इत्यादि दो गाथाएँ पढ़ कर खड़े हो कर वन्दन तथा 'अन्नथ०' कह कर चार लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स पढ़े।

इस तरह दादा जिनदत्त सूरि तथा दादा जिनकुशल सूरि का अलग-अलग काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स पढ़े। इस के बाद लघु-शान्ति पढ़े। अगर लघु शान्ति न आती हो तो सोलह नमुक्कार का काउस्सग्ग करके तीन खमा

समण-पूर्वक 'चउक्कसाय०' का 'जय वीयराय०' तक चैत्य-वन्दन करे। फिर 'सर्वमंगल०' कह कर पूर्वोक्त रीतिसे सामायिक करे।

पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक-प्रतिक्रमणकी वीधि *।

'वदित्तु' सूत्र पर्यंत तो दैवसिक-प्रतिक्रमण की विधिकरे। बाद खमासमण दे कर 'देवसिय पडिक्कंता, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय मुहपत्ति पडिलेहुँ?' कहे। बाद गुरु के 'पडि-लेहेह' कहने पर 'इच्छं' कह कर खमासमण पूर्वक मुहपत्ति पडिलेहन करे और दो वन्दना दे। बाद जब गुरू कहे कि 'पुण्णवन्तो 'देव सिय की जगह 'पक्खिय, 'चउमासिय या 'सं वच्छरिय पढ़ना, छींक की जयणा करना, मधुर स्वर से प्रतिक्रमण करना, खाँसना हो तो विवर शुद्ध खाँसना और मण्डल में सावधान रहना,

*दैवसिक-प्रतिक्रमणमें जहाँ-जहाँ 'देवसियं' बोला जाता है, वहाँ-वहाँ पाक्षिक-प्रतिक्रमणमें 'पक्खिय' चातुर्मासिकमें 'चउमा-सिय' और सावत्सरिकमें 'संवच्छरिय' बोलना चाहिये।

तब 'तहत्ति' कहे । पीछे खड़े हो कर 'इच्छा-कारेण संदिसह भगवन् संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भितर पक्खियं खामेउ ? कहे। गुरु के 'खामेह' कहने पर 'इच्छं', खामेमि पक्खियं' कहे और घुटने टेक कर यथाविधि पाक्षिक प्रतिक्रमणमें 'पनरसण्हं दिवसाणं' 'पनरसण्हं राईणं जं किंचि०' चातुर्मासिक-प्रतिक्रमणमें 'चउण्हं मासाणं अठण्हं पक्खाणं वीसोत्तरसयं राइंदियाणं जं किंचि० और सांवत्सरिक-प्रतिक्रमणमें 'दुवालसण्हं मासाणं चउवीसण्हं पक्खाणं तिन्नि-सयसट्ठि राइंदियाणं जं किंचि०' कहे। गुरु जब 'मिच्छामि दुक्कडं' दे, तब अगर दो साधु उचरते होंतो पाक्षिकमें तीन, चातुर्मासिकमें पाँच और सांवत्सरिकमें सात साधुओं को खमावे। बाद खड़े हो कर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खियं आलोउँ ? कहे । गुरुके 'आलोएह' कहने पर 'इच्छं', आलोएमि जोमे पक्खिओ अइयारो कओ० पढ़े और बड़ा अतिचार बोले।

पीछे 'सव्वस्स वि पक्खिय'को 'इच्छाकारेण सं-दिसह भगवन् तक कहे। गुरु जब पाक्षिक, चातुर्मासिक या सांवत्सरिकमें अनुक्रमसे 'चउत्थेण, छट्ठेण, अट्ठमेण पडिक्कमह' कहे, तब 'इच्छं, मिच्छामि दुक्कडं' कहे। बाद दो वन्दना दे। पीछे इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देव-सियं आलोइय पडिक्कंता पत्तेय खामणेणं, अ-ब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खियं खामेउँ ? कहे। गुरु के 'खामेह कहने के बाद 'इच्छं', खामेमि पक्खियं जं किं चि०' पाठ पढ़े और दो वन्दना दे। पीछे 'भगवन् देवसियं आलोइय पडिक्कंता पक्खियं पडिक्कमावेह' कहे। गुरु जब 'सम्मं पडिक्कमेह' कहे, तब 'इच्छं', करेमि भंते सामा-इयं, इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे पक्खियो, तस्स उत्तरी, अन्नथ' कह कर काउस्सग्ग करे और 'पक्खि सूत्र' सुने।

गुरुसे अलग प्रतिक्रमण किया जाता हो तो एक श्रावक खमासमण पूर्वक 'सूत्र भणुं ?'

दो वन्दना दे और 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् समाप्ति खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खियं खामेउं? कहे। गुरु जब 'खामेह' कहे तब 'इच्छं' खामेमि पक्खियं जं किंचि कहे। बाद 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय खामणा खामुँ?' कहे और गुरु जब 'पुण्णवंतो' तथा चार खमासमण-पूर्वक तीन नमुक्कार गिन कर 'पक्खिय-समाप्ति खामणा खामेह' कहे, तब एक खमासमण-पूर्वक तीन नमुक्कार पढ़े, इसतरह चार बार करे। गुरु के 'नित्थारगपारगा होह' कहनेके बाद 'इच्छं', इच्छामो अणुसंट्ठिं" कहे। इसके बाद गुरु जब कहे कि 'पुण्णवंता पक्खियके निमित्त एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवि, चार एकासना, दो हजार सज्झाय करी एक उपवासकी पेठ पूरना* और 'पक्खिय' केस्थानमें 'देवसिय,कहना,

* चउमासियमें इससे दूना अर्थात् दो उपवास, चार आयंबिल छह निवि,आठ एकासन्न और चार हजार सज्झाय। सवच्छरियमें

कह कर 'इच्छं' कहे और अर्थ चिन्तन पूर्वक मधुर स्वरसे तीन नमुक्कार पूर्वक 'वंदित्तु सूत्र' पढ़े और बाकीके सब श्रावक 'करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ' पूर्वक काउस्सग्ग करके उसको सुनें। 'वंदित्तु' सूत्र पूर्ण हो जाने के बाद 'नमो अरिहंताणं' कहकर काउस्सग्ग पारे और खड़े-हो-खड़े तीन नमुक्कार गिन कर बैठ जाय। बाद तीन नमुक्कार, तीन 'करेमि भंते पढ़ कर 'इच्छामि ठामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खियो०' कहके 'वंदित्तु सूत्र' पढ़ें। बाद खमासमण पूर्वक इच्छा-कारेण संदिसह भगवन् 'मूलगुण-उत्तरगुण-विशुद्धि-निमित्तं काउस्सग्गं करूं ?' कहे। गुरु जब 'करेह कहे, तब 'इच्छं' करेमि भंते, इच्छामि ठामि तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कह कर पाक्षिकमें बारह, चातुर्मासिकमें बीस और सांवत्सरिकमें चालीस लोगस्सका काउस्सग्ग करे। फिर नमुक्कार-पूर्वक काउस्सग्ग पारके लोगस्स पढ़े और बैठ जाय। पीछे मुहपत्ति पडिलेहन करके

दो वन्दना दे और 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् समाप्ति खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खियं खामेउं? कहे। गुरु जब 'खामेह' कहे तब 'इच्छं' खामेमि पक्खियं जं किंचि कहे। बाद 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय खामणा खामुँ?' कहे और गुरु जब 'पुण्णवंतो' तथा चार खमासमण-पूर्वक तीन नमुक्कार गिन कर 'पक्खिय-समाप्ति खामणा खामेह' कहे, तब एक खमासमण-पूर्वक तीन नमुक्कार पढ़े, इसतरह चार वार करे। गुरु के 'नित्थारगपारगा होह' कहनेके बाद 'इच्छं', इच्छामो अणुसंट्ठिं' कहे। इसके बाद गुरु जब कहे कि 'पुण्णवंता पक्खियके निमित्त एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवि, चार एकासना, दो हजार सज्झाय करी एक उपवासकी पेठ पूरना* और 'पक्खिय' केस्थानमें 'देवसिय,कहना,

* चउमासियमें इससे दूना अर्थात् दो उपवास, चार आयंबिल छह निवि,आठ एकासन्न और चार हजार सज्झाय। संवच्छरियमें

तब जिन्होंने तप कर लिया हो वे 'पइट्ठिय' कहें और जिन्होंने तप न किया हो वे 'तहत्ति' कहें। पीछे दो वन्दना दे कर 'अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसियं खामेउँ ?' पढ़े । बाद दो वन्दना देकर 'आयरिय उवज्झाए' पढ़े ।

इसके आगे सब विधि दैवसिक-प्रतिक्रमण की तरह है । सिर्फ इतना विशेष है कि पाक्षिक आदि प्रतिक्रमणमें श्रुतदेवता, क्षेत्रदेवताके आरधनके निमित्त अलग अलग तीन बार काउस्सग्ग करे और प्रत्येक काउस्सग्गको पार कर अनुक्रमसे 'कमलदल०, ज्ञानादिगुणयुतानां० और यस्याः क्षेत्रं०' स्तुतियाँ पढ़े । इसके अनन्तर बड़ास्तवन 'अजितशान्ति' और छोटा स्तवन 'उवसग्गहरं०' पढ़े । तथा प्रतिक्रमण पूर्ण होनेके बाद गुरुसे आज्ञा ले कर 'नमोऽर्हत्०' पढ़े । फिर एक श्रावक बड़ी 'शान्ति'

उससे तिगुना अर्थात् तीन उपवास, छह आयंबिल, नौ निवि, बारह एकासना और छह हजार सज्झाया ऐसा कहते हैं ।

पढ़े और बाकीके सब सुनें। जिन्होंने रात्रि-पौषध न किया हो, वे पौषध और सामायिक पार करके 'शान्ति' सुनें।

तपस्या-स्तवन और विधियें।

॥ पखवासा-तपका स्तवन ॥

सीमंधर करजो मया-ए देशी ॥

जंबुद्वीप सोहामणो, दक्षिणभरत उदार। राज-ग्रही नगरी भली, अलिकापुर अवतार ॥१॥ श्रीमु-निसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय। मनवंछित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राज करै तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम। पटरा-णी पद्मावती, शीलगुणें अभिराम ॥ श्री० ३ ॥ श्रावण उज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश। माता-कुक्षि सरोवरे, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पढम पक्ष अट्ठमी, जायो श्रीजिनराज। जन्ममहोच्छव सुर करै, त्रिभुवन हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम रूप निधान। जिनवर लंछन काछवो, वीस धनुष

तनु मान ॥ श्री० ६ ॥ परणी नार प्रभावती, भोग पुरंदर साम । राजलीला सुख भोगवै, पूरै वंछित काम ॥श्री० ७॥ तब लोकांतिक देवता, आवि जंपै जयकार । प्रभु फागुण वदि बारसै, लीधो संजम भार ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसै, मनधर निरमल ध्यान । च्यार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥श्री० ६॥

ढाल २ ॥ सुख कारण भवियण—ए देशी ॥

ततखिण तिहां मिलिया चलिया सुरनर कोडि, प्रभुना पदपंकज प्रणमैं बे कर जोडि ॥ बे कर जोडि मच्छर छोडी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रिगडो छत्रत्रय झलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म प्रकासै, बारै परखदा बैठी आगलि सुणै मन उल्हासै ॥ १०॥ तपने अधिकारै पखवासो तप सार, पडवाथी कीजै पनरह तिथी ऊदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उपशम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजै वांदी देव उल्लास ॥ तप

ऊजमणें रजत पालणो सोवन पूतली चंग, मोदक थाल देहरै मूंकी जिनवर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर अहुरव दर्शनी जेम, मनवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति वल्लभ भरतार, जस कीरत सोभाग वडाई महियल महिमा जाण ॥ परभव मुगति फल लहियै, ए तपनें प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संघतणो अधिकार, भरुवछ प्रमुख नगरादिक करिया विहार ॥ विहार करी प्रतिवोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्तिकसेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सहस वरस आऊखो पालै जग दया सार, श्रीसम्मेतशिखर परमेसर पुहता मुगति मझार ॥१३॥ इम पंच कल्याणक थुणिया त्रिभुवन ताय, मुनिसुव्रतस्वामी वीसमो जिनवर राय ॥ वीसमो जिनवर राय जगतगुरु भयभंजण भगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरामर अरिहंत ॥ श्रीजिनचन्द विनय शिरोमणि सकलचन्द गणि सीस,

वाचक समयसुंदर इम पभणे पूरो मनह जगीस ॥ १४ ॥

पखवासा-तपकी विधि ।

पहले शुभ दिन गुरुके पास जा करके शुक्ल प्रतिपदासे पूर्णिमा तक निरन्तर १५ पनरह उपवास करे । यदि शक्ति न होतो पहले शुक्लपक्षकी एकम और दूसरे शुक्लपक्षको दूजका उपवास करे, इस तरह अनुक्रमसे पनरह शुक्लपक्षमें तपस्या पूर्ण करे और श्रीमुनिसुव्रत स्वामीका भावगर्भित स्तवन पढे । यदि गुरुका संयोग होतो गुरूके पास जाकर श्रवण करे । "श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः" इस पदको २००० बार गुणना करे। इसके बाद तपग्रहण विधि तथा देववंदनादिककी विधिके अनुसार विवेकी पुरुष सारी तपस्याकी विधि पूर्ण करे । संयुक्त विधि करनेसे उत्तम फलकी प्राप्ती होती है ।

दश पच्चस्काण-तपका स्तवन ।

॥ दहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर

भगवंत। त्रिगडै बैठा जिनवरू, परषद बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिणसमे,पूछै श्री जिनराय। दश पच्चक्खाण किसा कह्या, कीयां कवण फल थाय ॥ २ ॥

ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो—ए देशी !

श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांभल गोमय ताम। दस पच्चक्खाण कियां थकां, लहिये अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी २, साढपोरसी-पुरिमड्ढ ४। एकासण-नीवी कही ६, एकलठाण देवड्ढि ॥ श्री० ४ ॥ दात ८ आंबिल ९ उपवास १० ही, एहिज दस पच्चक्खाण। एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करूं वखाण ॥ श्री० ५ ॥ रतनप्रभा १ सर्करप्रभा २, वालुक तीजी जाण। पंकप्रभा ४ तिम धूमप्रभा ५ तमप्रभा ६ तमतम ७ ठाम ॥ श्री० ६ ॥ नरक सात कही ए सही, करम कठिन करजोर। जीव करम वस ते सही, ऊपजै तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ छेदन भेदन ताडना,

आयु खिण एकमें, साढपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमड्ढ करै नित जीव जे, नरके ते नवि जाय। लाख वरस करमनें दहै, पुरिमड्ढ करम खपाय ॥सु० १६॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत। इतरा करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोडि वरसां लगै, करम खपावै जीव। नीवीय करतां भावसूं, दुरगति हणे सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोडि जीव नरकमें, जितरो करै करम दूर। तीतरो एकलठाणाही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात करंता प्राणियो, सो कोडी परिमाण। इतरा वरस दुरगति तणा, छेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल वहु कह्यो, कोडी एक हजार। करम खपाव इण परै, भाव आंबिल अधिकार ॥ सु० २१ ॥ कोडि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मझार। उपवास करै इक भावसुं. तो पामे मुगति मझार ॥ सु० ॥ २२॥ ॥

ढाल ३ ॥ केकइ वर लाधो-ए देशी ॥

लाख कोडि वरसां लगे, नरके करता रीव रे।

भूख तृषा वलि त्रास । रोम २ पीडा करै, परमाहम्मो तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल भर नहीं जिहां सुख ॥ किया करम जे भोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥ इक दिनरी नवकारसी, जे करै भाव विशुद्ध । सो वरस नरकनो आउखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री ॥ १० ॥ नित्य करै नवकारसी, ते नर नरक न जाय । न रहे पाप वलि पावला, निरमल होवे जी काय ॥ श्री० ११ ॥

ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो—ए चाल ।

सुण गौतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय । भावसुं जे पोरसी करै, दुरगति छेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि जे नारकी, वरसें एक हजार । करम खपावै नरकमें, करता बहुत पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार । करम हणें सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४॥

ति मांहे नारकी, दस हजार प्रमाण । नरक

आयु खिण एकमें, साढपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमड्ढ करै नित जीव जे, नरके ते नवि जाय। लाख वरस करमनें दहै, पुरिमड्ढ करम खपाय ॥सु० १६॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत। इतरा करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोडि वरसां लगै, करम खपावै जीव। नीवीय करतां भावसूं, दुरगति हणे सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोडि जीव नरकमें, जितरो करै करम दूर। तीतरो एकलठाणाही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात करंता प्राणियो, सो कोडी परिमाण। इतरा वरस दुरगति तणा, छेदै चतुरसुजाण॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल बहु कह्या, कोडी एक हजार। करम खपाव इण परै, भाव आंबिल अधिकार ॥ सु० २१ ॥ कोडि सहस दस वरस-ही, सहे दुःख नरक मझार। उपवास करै इक भावसुं, तो पामे सुगति मझार ॥ सु० ॥ २२॥ ॥

ढाल ३ ॥ केकइ वर लाधो-ए देशी ॥

लाख कोडि वरसां लगे, नरके करता रीव रे।

गौतम गणधारी अट्ठम तप करतां थकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोडि लाखही, जीव लहै तिहां दुस्करे । ते दुःख अट्ठम तपहुंती, दूर करी पामे सुख रे ॥ गो० २४ च्छेदन भेदन नारकी, कोडाकोडि वरसोइ रे । कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो० २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोडा कोडि वरसनो पाप रे । दूर करै खिण एकमें, निश्चै होय निः पाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय विशेषे फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे भला, करता त्रिभुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं करै, चवदह पूरब होय धार रे । इम अनेक फल तपतणा, कहतां वलि नावै पार रे ॥ गो ० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै भव पार रे ॥ गो० २९ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ त भवना पापथा, छूटै, जीव निरधार रे ॥

गो ३०॥ तपहुंती पापी तस्या, निसतरियो अरजुन-माल रे । तपहुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गज-सुकमाल रे ॥ गो० ३१॥ तपना फल सूत्रे कह्या, पच्चक्खाणतणा दस भेद रे । अवर भेद पिण छै घणा, करतां छेदे त्रय वेद रे ॥ गो० ३२ ॥

(कलशः) ॥ पच्चक्खाण दस विध फल प्ररुप्या महावीर जिणदेव ए, जे करै भविअण तप अखं-डित तासु सुर पय सेव ए । संवत निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि दशमी दिने, पदम-रंग वाचक शीस गणिवर रामचन्द्र तपविधि भणे ॥३३॥ इति दस पच्चक्खाण वृद्ध स्तवनम् ॥

दश पच्चक्खाण तप विधि ।

महावीर स्वामीके उपदेशासार शास्त्र कारोंने जिसतरह अन्यान्य तपस्याओंके करनेका फल समझाया है, उसीतरह दश पच्चक्खाण तपके महात्म्यका फलभी वतलाया है । अतएव धर्मा-नुरागी श्रावक और श्राविकाओंके लिये यह तप करनाभी लाभदायक है । जो सज्जन "दश पञ्च-

तपकी ओली उच्चरे । एक ओली दो माससे छह मास पर्यंत पूरी करे । यदि छह मासकी अवधिमें एक ओली पूरी न कर पाये तो वह ओली फिरसे करनी पड़ती है; यानि तपस्वीने जो व्रत-पच्चक्खाण कर लिये हैं, वह उस ओलीकी संख्यामें नहीं लिये जाते; अर्थात् ओलीकी तपस्या फिरसे आरंभ करनी पड़ती है ।

एक ओलीके वीस पद होते हैं, उन वीसों पदोंकी क्रमशः आराधना करनी पड़ती है । इस लिये जो तपस्वी शक्ति-सम्पन्न होता है, वह तो वीस दिनमें वीसों पदोंकी आराधना कर डालता है । और जो शक्ति-सम्पन्न नहीं होता है, वह वीस दिनमें केवल एक पदकी आराधना करता है, इस तरह क्रमशः वीस-वीस दिनमें एक-एक पदकी आराधना करके वीसों ओलीकी तपस्या पूरी करता है ।

शास्त्रकारका कथन है, कि पदाराधन करने के दिन यदि शक्ति होतो अट्ठम व्रत करके तपा-

राधन आरंभ करे। क्रमशः वीस अट्ठम-व्रत कर लेनेपर एक ओली पूरी होती है। इस तरह ४०० चार सौ अट्ठम व्रत हो जानेसे वीस ओलीकी आराधना पूरी हो जायगी। यदि तपस्वीमें अट्ठम व्रतसे आराधन करनेकी शक्ति न होतो छट्ठ-व्रत करके आरंभ करे। छट्ठसे होनेकी शक्ति न हो तो उपवास द्वारा करे। उपवाससे भी करनेकी शक्ति न हो तो आयंबिल या एकासण द्वारा ही तपाराधन करना आरंभ करे। उस समय शक्ति हो तो अष्टप्रहरी पौषध करे, यदि अष्टप्रहरी पौषध करनेकी शक्ति न हो तो दैवसिक-पौषध करे। जहां तक हो सके समस्त पदोंकी अराधना पौषध-पूर्वक करे। यदि सभी पदाराधनमें पौषध न कर सके तो आचार्य, उपाध्याय, थिवर, साधु, चारित्र, गौतम और तीर्थ इन सात पदोंके अराधनके समय अवश्य हो पौषधव्रत करे। फिर भी पौषध करनेकी शक्ति न हो तो देशावगासी-व्रत करे। इसके करनेकी भी शक्ति न हो तो यथा

शक्ति जो व्रत हो सके वही करे, और सावद्य व्यापारका त्याग करे।

तपस्वीको यहाँपर इस बातका ख़्याल रखना चाहिये कि जन्म-मरणादिकके सूतकके समयकी तपस्यायें ओलीकी संख्यामें नहीं ली जातीं, इसलिये किसी तरहके सुतकके समय कोई तपस्या की हो तो उसे ओलीकी संख्यामें न लेवे, स्त्रियोंके लिये ऋतु कालकी तपस्या भी वर्जनीय है, अतः स्त्रियोंको इस बातका ख़्याल जरूर रखना चाहिये।

तपस्या करते समय ऊपर कहे अनुसार पौषध आदि कोई भी धार्मिक क्रिया करनेका कहा है; पर उनमेंसे कोई भी क्रिया न हो सके तो तपस्याके दिन दो वार प्रतिक्रमण करे, और तीन वार देव-वन्दन क्रिया करे। समस्त तपस्यायें करते समय ब्रम्हचर्यका सेवन रखे। ज़मीन पर सोवे। तपस्याराधन करके किसी तरहका सावद्य व्यापार न करे। असत्य-झूठ न

वोले। सारा दिन तपस्याकी गुणावलीके वर्णनमें व्यतीत करे। पारण करनेके दिन देव-दर्शन-पूजन करके यति-मुनिको अहार दे कर वाद पारण करे।

अन्तमें किसी तरहको धार्मिक क्रिया न कर सके तो देव-पूजन, अंग-रचना करवा कर मन्दिरमें गाना-वजाना करे। और शुभ भावना भावे। तपस्याके पदके अनुसार गुण-भेद संख्या-प्रमाणसे काउसग्ग करे। तपस्याके गुणोंको स्मरण कर उतने ही खमासमण दे कर वन्दना करे। वाद तपस्याके गुणोंकी उदात्त स्वरसे स्तवना करे, और प्रसन्न-चित्त रहे।

वीस स्थानक-गुणना और काउसग्ग प्रमाण।

(१) "णमो अरिहंताणं" इस पदकी २० वीस माला गिन कर १२ वारह लोगस्सका काउसग्ग करे। (२) "णमो सिद्धाणं" इस पदकी वीस माला गिन कर १५ पनरह लोगस्सका काउसग्ग करे। (३) "णमो पवय-

गास्स" इस पद्की वीस माला गिन कर ७ सात लोगस्सका काउसग्ग करे। (४) "णमो आय-रियाणं" इस पद्की वीस माला गिन कर ३६ छत्तीस लोगस्सका काउसग्ग करे। (५) "णमो थेराणं" इस पद्की वीस माला गिन कर १५ पनरह लोगस्सका काउसग्ग करे। (६) "णमो उवज्झायाणं" इस पद्की वीस माला गिनकर २५ पच्चीस लोगस्सका काउ-सग्ग करे। (७) "णमो लोए सव्व साहूणं" इस पद्की वीस माला गिनकर २७ सत्ता-ईस लोगस्सका काउसग्ग करे। (८) "णमो नाणस्स" इस पद्की वीस माला गिनकर ५ पाँच लोगस्सका काउसग्ग करे। (९) "णमो दंसणस्स" इस पद्की वीस माला गिन कर १७ सतरह लोगस्सका काउसग्ग करे, (१०) "णमो विणयसंपराणाणं" इस पद्की वीस [illegible] गिनकर १० दस लोगस्सका काउसग्ग [illegible]। (११) "णमो चारित्तस" इस पद्की

वीस माला गिनकर ६ छह लोगस्सका काउसग्ग करे। (१२) "णमो बंभव्वय धारीणं" इस पद्को वीस माला गिनकर ६ नौ लोगस्सका काउसग्ग करे, (१३) "णमो किरिआणं" इस पद्को वीस माला गिनकर २५ पच्चीस लोगस्सका काउसग्ग करे। (१४) "णमो तव-स्सीणं" इस पद्की वीस माला गिनकर १५ पनरह लोगस्सका काउसग्ग करे, (१५) "णमो गोयमस्स" इस पद्की वीस माला गिनकर १७ सतरह लोगस्सका काउसग्ग करे। (१६) "णमो जिणाणं" इस पद्को वीस माला गिन-कर १० दस लोगस्सका काउसग्ग करे। (१७) "णमो चरणस्स" इस पद्को वीस माला गिन-कर १२ बारह लोगस्सका काउसग्ग करे। (१८) "णमो नाणस्स" इस पद्की वीस माला गिन-कर ५ पाँच लोगस्सका काउसग्ग करे। (१६) "णमो सुअ नाणस्स" इस पद्की वीस माला गिनकर १० दस लोगस्सका काउसग्ग करे

(२०) "णमो तित्थस्स" इस पदकी वीस माला गिनकर ५ पाँच लोगस्सका काउसग्ग करे।

इस प्रकार गुणना गिन कर विधि-पूर्वक वीसों ओलीयें सम्पूर्ण करे। यदि शक्ति-सम्पन्न हो तो वीसों ओलीयोंका उत्सव धूम-धाम पूर्वक करे। यदि समस्त ओलीयोंका न कर सके तो जिन शासनकी उन्नतिके लिये एक ओलीका उत्सव तो अवश्य ही धूम-धामके साथ करे। इस जगह संक्षिप्त रूपसे यह विधि लिखि गयी है, इस लिये गुरुका संयोग हो तो वीसों पदोंकी सुविस्तृत विधि गुरु मुखसे समझ कर करे। यदि गुरुका संयोग न हो तो विवेकी पुरुष इसी विधिके अनुसार समझ कर ओलीकी अराधना करे। तपस्या करते समय वीस स्थानकका स्तवन जो इस विधिके ऊपर दिया है, उसे पढ़े या किसीसे श्रवण करे। अनन्तर मन्दिरमें वीस स्थानककी पूजा पढ़ावे। पनी शक्तिके अनुसार वीस-वीस ज्ञानोपकरण चावे। देव-पदका देवमें, ज्ञान-पदका ज्ञानमें

और गुरु-पदका गुरुमें खर्च करे। तपस्या पूर्ण हो जाने पर समस्त तीर्थोंकी यात्रा कर आये। यदि उतनी शक्ति न हो तो एक-दो तीर्थोंकी यात्रा तो अवश्यही करे। इस प्रकार विधि-पूर्वक जो भव्यात्मा वीस स्थानक तप ओलीकी अराधना करेगा, वह जिननाम कर्मोंको उपार्जन कर तीसरे भवमें अक्षय-सुखको लाभ करेगा *।

॥ रोहिणी-तप का स्तवन ॥

शासन देवत सामणी ए मुझ सानिध कीजै, भुलो अक्षर भगति भणी समझाई दीजै॥ मोटा तप रोहण तणो ए जिणरा गुण गाउं, जिम सुख सोहग संपदा ए वंछित फल पाउं॥ १॥ दक्षिण भरते अंगदेस छै चंपानयरी, मघवा राजा राज्य करै तिण जीता वयरी॥ पाटराणी राणी रूवडी ए लखमी इण नामे, आठ पूत्र

* हमने यह विधि रत्न समुच्चय नामक ग्रन्थके आधार पर लिखि है। इसे दो-तीन भाषाकी पुस्तकोंसे भी मिलाया; पर सभीमें एकसी भाषा और एकसा ही क्रम देखा गया, इसलिये इसे सुविस्तृत रूपसे नहीं लिख सके। सम्०

ढाल—वीर सुणो मोरी वीनती—ए देशी ॥

तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊज़-मणो एम ॥ तप करतां प्रातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥ त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृक्ष अशोक ॥ गुणनो बारम जिनतणो, भला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त० ॥ १६ ॥ केशर चन्दन चरचियै, कीजै आगे हो आठ मंगलीक ॥ विधसु पुस्तक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥त० १७॥ सेवा कीजै साधुनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषीजे साहमी, मनरंगे हो कर२ पकवान ॥ त० १८॥ पाटी पोथी पूंछना, मिस लेखण हो झिलमिल सुजगीस, नवकरवाली वोटणा, गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै, ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥

ढाल—धरम करो जिनवर तणो—ए देशी ॥

इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थंकर पासे रे ॥इ० २१॥ इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेनने रोहणी, मन सूधै संजम लीधो रे ॥ इ० २२ ॥ आठे पूत्रे आदरी, दिख्या वारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपै, धरमतणी मति जागे रे ॥ इ० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लंहि केवल शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित लाया रे ॥ इ० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिवपुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिबतणी, हिव पुन्यें सेवा पामी रे ॥ इ० २५ (कलश) ॥ इम गगन जुग मुनि चन्द्र वरसे (१७२०) चोथ श्रावण सुदि भली ॥ में कही रोहणतणी महिमा सुगुरु मुख जिम सांभली ॥ वासुपूज्य असने थया सुप्रशन चित्तनी चिन्ता टली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्या फली ॥२८॥ इति रोहणी-तप स्तवन

रोहिणी-तपकी विधि ।

जिस तपस्वीको रोहिणी-तपकी तपस्या करनेकी इच्छा हो वह पहले शुभ दिन और शुभ समय देख कर गुरुके पास जा कर वन्दना व्यवहार कर के विनय-पूर्वक रोहिणी-तप ग्रहण करे। बाद जिस दिन रोहिणी नक्षत्र हो, उस दिन उपवास करके बारहवें वासुपूज्य स्वामीकी पूजा-अर्चना करे। अष्ट मंगलिककी रचना कर अष्ट द्रव्य चढ़ावे। देव-वन्दनादिक धार्मिक क्रियाये करके गुरुके मुखसे धर्मोपदेश श्रवण करे। यदि गुरुका संयोग न हो तो इस विधिके पहले जो रोहिणी-तपका स्तवन दिया गया है, उसे शान्ति-पूर्वक पढ़े, या किसी साधर्मिक भाईसे श्रवण करे। और "श्री वासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः" इस पदको २००० दो हजार वार गिने; यानि इस पदकी वीस मालायें गिने। इस तरह विधि-पूर्वक सात वर्ष पर्यन्त रोहिणी-तपकी आराधना कर लेनेसे तपस्वीकी मनोकामना पूर्ण हो जाती

है, यदि तपस्वीको पुत्र पानेकी इच्छा हो तो वह भी इस तपके आराधनसे पूरी हो जाती है और उसके सुख-सौभाग्यकी वृद्धि होती है।

छम्मासी-तप का स्तवन।

गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय। महावीरस्वामी जे जे तप किया, तेहनो कहिसुं विचार॥ वलि-वली वांदु वीरजी सुहामणा ॥१॥ भावठ भंजण सेव्यां सुख करै, गातां नव निधि थाय। बारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै सहु पाप ॥व०॥२॥ बे कर जोड़ी ए हूं वीनवूं, श्रीजिनशासन राय। नाम लियां थी नव निधि संपजै, दरिशण दुरित पुलाय॥ व०॥३॥ नव चौमासी जिनजीरा जाणिये, एक कियो छम्मास। पांचे ऊणा छ वली जाणियै, बारके कोजो माश ॥व०॥४॥ बहुत्तर माशखमण जग जीपता, छ दो मासी रे जाण। तीन अढ़ाई दो दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥व०॥५॥ भद्र महाभद्र शिवगति जाणियें, उत्तम एहना

प्रकार । वीचमें पारणो स्वामी नहि कियो, नहि कियो चोथो आहार ॥ व० ॥ ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रतिमा बारमी, कीधा बारे जी माश । दोयसें वेला जिनजीरा जाणियै, इण गुण तीस विलास॥ व०॥७॥ तीनसे पारणा जिनजीरा जाणियै, तीन गुणतीस पचास । एहमें स्वामी केवल पामिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ॥८॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर सयल सुखकर अतहि दुक्कर तप करी, संयमसु पाली कर्म टाली स्वामी शिव रमणी वरी । सेवक पभणें वीर जिनवर चरण वंदित तुमतणा, संसार कूप पडंत राखो आपो स्वामी सुख घणा ॥ ७ ॥ इति छम्मासी तप स्तवनम् ॥

छहमासी-तपकी विधिः ।

जिस तरह शासन-नायक भगवान महावीर स्वामीने छह मासो तपकी उत्कृष्ट तपस्या की थी, उस तरह तो इस समय होना कठिन है, कारण वैसा बल-पराक्रम इस समय नहीं रहा। तथापि १८० एक सौ अस्सी उपवासोंके

करने पर जघन्य छह मासी-तपका फल प्राप्त होता है, अतः तपस्वीको चाहिये कि समयानुसार १८० उपवास करके यह तपस्या पूर्ण करे। तपस्याके दिन देव-वन्दनादिक धार्मिक क्रियायें करे। और जो इस विधिके पहले छह मासी तपका स्तवन दिया है, उसे मनन-पूर्वक पढ़े। यदि स्वयं न पढ़ सकता हो तो दूसरे किसीसे श्रवण करे। साथही तपस्याके दिन "श्री महावीर स्वामी नाथाय नमः" इस पदको २००० दो हजार वार गिने, यानि इस पदकी २० वीस माला गिने। तपस्या पूर्ण कर लेनेके बाद जहां पर महावीर स्वामीका तीर्थ हो--पावापुरी, क्षत्रियकुण्ड आदि जा कर यात्रा कर आयें। शक्तिके अनुसार छोटा-बड़ा उजमणा भी करे। इस तपस्याके फलसे लघु-कर्मी होकर अक्षय-सुख संपत्तिको लाभ करता है।

बारहमासी-तप का स्तवन।

दान उल्लटधरी दीजीयें—ए देशी॥ त्रिभु-वन नायक तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे।

चौसठ इंद्र करै सदा, तुझ पदपंकज सेव रे ॥ त्रिभु० ॥१॥ प्रथम भूपाल प्रभु तूं थयो, इण अव-सरपणी काल रे। तुझ सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनदयाल रे ॥त्रि० ॥२॥ प्रथम तीर्थंकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे। धर्म प्रज्ञापक प्रथम तू, तूही है प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ॥३॥ अंतर अरि जे आतमतणा, काल अनादि थिति जेह रे। ते तप शक्तियें तें हण्या, आतम वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ॥४॥ ताहरी शक्ति कुण कह सकै, जेहनो अंत न पार रे। द्वादश मासनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरण्व्यो, आगममें जिनराज रे। ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम सरे काज रे ॥त्रि०॥६॥ तीनसै साठ उपवास ते, ते इण पंचम काल रे। अवसर आदरै क्रम विना, ते पिण भवि सुवि-शाल रे ॥ त्रि० ॥७॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्र णे अनुसार रे। पडिक्रमणादिक भावथो, क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ॥८॥ चित्त समाधि

शुभ भावथी, धरे ताहरो ध्यान रे। ते नर उत्तम फल लहै, कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ॥६॥ काल अनादि संसारमे, जन्म मरणतणा दुःख रे। ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किम हुवै सुख रे ॥ त्रि० ॥१०॥ हिव लह्यो नरभव पुण्यथी, वलि लह्यो श्रीजिन धर्म रे। तत्त्वनी रुचि थइ हे मुझे, हिव मिट्यो मनतणो भर्म रे ॥ त्रि० ॥११॥ भव-भव एक जिनराजनो, सरण होज्यो सुखकार रे। कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिव परिहार रे ॥त्रि० ॥१२॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्ष-मारग सुविशाल रे। भव-भव जे मुझ संपजे, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० ॥१३॥ श्रीजिनशासन तप कह्यो, ते तप सुरतरू कंद रे। धन-धन जे नर आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥त्रि०॥ १४॥ कलश ॥ इम नाभिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में थुण्यो धन दिन आजनो मुझ मात मरुदेवी नंदनो। संवत सुनेत्राकास निधि शशि नयर श्रीवालूचर. श्रीजिनसोभाग्य सुरिन्दके सुपसाय विजय विमल वरै ॥ १५ ॥ इति ॥

बारेह मासी-तपकी विधि ।

आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामीने बारह मासी व्रतकी उत्कृष्ट तपस्या की थी, इसलिये तपस्या करनेवालेको चाहिये कि बारह मासी तपस्या भी जरूर करे। तपस्या करनेवालेको इस व्रतके ३६० तीन सौ साठ उपवास करने पड़ते हैं। वह क्रमशः अपनी इच्छाके अनुसार करे। तपस्याके दिन उपवासादि व्रत करके धार्मिक क्रियायें करे, और बारह मासी तपका स्तवन जो इस विधिके पूर्वमें दिया है, उसे श्रद्धा-पूर्वक पढ़े या किसीसे श्रवण करे। साथ ही तपस्याके दिन "श्री ऋषभ देव स्वामी नाथाय नमः" इस पद को २००० दो हजार बार गिने, अर्थात् २० बीस माला गिने। तपस्या पूरी कर लेने पर यथाशक्ति उजमणा करे। बाद सिद्धक्षेत्र या केसरियाजी तीर्थकी यात्रा कर आये। इस तपस्याके महात्म्यसे तपस्वी किसी तरहके कष्ट नहीं पाता, और वह अपना सारा जीवन आनन्दकी लहरोंमें

अवगाहन करता हुआ व्यतीत करता है। इस तपश्चर्याके प्रभावसे रोग, शोक, भय आदि कोई भी दुख नहीं आने पाते। इसलिये तपस्या करने वालेको यह तपस्या अवश्य ही करनी चाहिये।

॥ अट्ठाईस लब्धि-तपका स्तवन ॥

दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरू, शुद्ध मने सुखकार। लबधि अट्ठावीस जिन कही, आगम-ने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याकरणें प्रगट, भग-वतीसूत्र मझार। पन्नवणा आवश्यके, वारू लबधि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजै, लबधां अट्ठावीस। ए हिव परगट अरथसुं, सांभ-लज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥

ढाल ॥ १ ॥ सकज संसारनी-एदेशी ॥ अनुक्रमें एह अधिकार गाथातणे, लबधिना नाम परिणाम सरिपा भणे। रोग सहु जाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ने लबधि है नाम आमोसही ॥४॥ जासु मल मूत्र औषध समा जाणियें, बीय वप्पोसही लबधि वखाणियें।

खेरु थाय, ए लवधि इग्यारमी आसोविश क-
हिवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम वादर देखै लोका-
लोक, ते केवल लवधी वारमियै सहू थोक।
गणधर पद लहियै तेरम लवधि प्रमाण, चव-
दम लवधे करी चवदै पूरव जाण ॥ ११ ॥ ती-
र्थंकर पदवी पामे पनरमी लवधि, सोलम सुख-
दाई चक्रवत्ति पद रिद्ध। वलदेवतणो पद
लहियै सतरमी सार, अढ़ारमी आखा वासुदेव
विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृत चीरे मेल्या-
जेह सवाद, एहवी लहै वाणी उगणीशम परसा-
द। भणियो नवि भूलै सूत्र अरथ सुविचार, ते
कुष्ट कबुद्धी वीसम लवधि विचार ॥ १३ ॥ एके
पद भणियां आवै पद लख कोड, इकवीसमी
लवधी पयाणसारणी जोड। एके अरथे करी
ऊपजै अरथ अनेक, वावीसम कहियै वीजवुद्धि
सुविवेक ॥ १४ ॥

ढाल ॥ ३ ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे—ए
चाल ॥ सोलह देशतणी सही रे, दाहक सगति

वखाण । तेह लवधि तेवीसमी रे, तेजोलेश्या जाण, चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार, आगमने अधिकार ॥ च० ॥ वारू लवधि विचार ॥ च० ॥ एआंकणी ॥ १५ ॥ चवद पूर-वधर मुनिवरू रे, उपजंता सन्देह । रूप नवो रचि मोकले रे, लवध आहारक एह ॥ च० ॥१६॥ तेजोलेश्या अगननी रे, उपशमवा जलधार। मोटी लवधि पचवीसमी रे, शीतोलेश्या सार॥ च० ॥ १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै रूप । सद्गुरु कहै छावीसमी रे, वैक्रिय लवधि अनूप ॥ च० ॥१८॥ एकण पात्रे आदमी रे, जीमाडै केइ लाख । तेह अक्खीणमहानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० ॥ १९ ॥ चूरै सेन चक्रीसनी रे, संघादिकने काम । तेह पुलाक लवधी कही रे, अट्ठावीशमी नाम ॥ च० ॥२०॥ तेज शीत लेश्या बिहुं रे, तेम पुलाक विचार। भगवतीसूत्रमें भाषियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार॥ च० ॥२१॥ पन्नवणा अहारनीरे, कलपसूत्र गण-

धार। नाम २ इक २ मिली रे, वारू आठ विचार ॥ च० ॥ २२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, वाकी लब्धां वीश। सांभलतां सुख ऊपजे रे, दौलत हुवे निशदीस ॥ च० ॥२३॥ ॥ कलश ॥ संवत सत्तरेसे छवीसे मेरुतेरस दिन भले, श्रीनगर सुखकर लूणाकरणसर आदिजिन सुपसाउले। वाचनाचारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन भणतां प्रगट ज्ञान प्रकास ए ॥२४॥ इति २८ लब्धि स्तवनम् ॥

अट्ठाईस लब्धि-तप की विधि।

जिस तपस्वीको यह तपस्या करनी हो वह पहले उत्तम दिन और समय देख कर गुरुके समीप जाये। बाद अनुनय-विनय पूर्वक गुरुसे तपस्या उच्चरे। इस तपस्याके २८ अट्ठाईस उपवास करने पड़ते हैं, वह समयानुसार क्रमशः करे। जिस दिन जिस लब्धिका उपवास हो, उसके नामको गुणना-माला गिने। अगर शक्ति हो तो देववन्दनादिक धार्मिक क्रियायें करे। और तप०

पूरा कर लेनेपर शक्तिके अनुसार उद्यापन-उजमणा भी करे। इस तपस्याके प्रभावसे बुद्धि निर्भय हो कर निरन्तर अनन्द रहता है।

॥ अथ चतुर्दश पूर्व-तप स्तवन ॥

ढाल ॥ बे कर जोडो ताम—ए देशी ॥

जिनवर श्री वर्द्धमान, चरम तीर्थंकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए। श्रुतधर श्रीगणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदै पूरब नाम, सूत्रै जूजूवा, वीरजिनंदे भाषिया ए। ते हिव सुगुरु पसाय, वरणविस्युं इहां, आगममें जिम उपदिस्या ए ॥ २ ॥ पहिला पूर्वउत्पाद १, दूजो आग्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥ ३ ॥ छट्ठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अट्ठम गिणो ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ९, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो कह्यो ए १० ॥४॥ इग्यारम नाम ल्याण ११, प्राणायु बारमो १२, क्रिया विशाल

तेरम भणो ए ॥१३॥ बिंदुसार १४ इण नाम, चवदे ए कह्या, शास्त्र थकी में संग्रह्या, ए ॥५॥

ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल शिर तिलो— ए देशी ॥ उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण। पट भाव प्रगट छे ने जिहां, त्रिपदी भाव विनाण ॥१॥ सर्व द्रव्य पर्यायतणो, जीव विशेष प्रमाण। दूजो पूर्व अग्रायणी, छिन्नुं लख पद जाण ॥२॥ पद लख सत्तर जेहनो, संख्या परगट एह। वीर्य प्रवलता जीवनी, भाषी तीजे तेह ॥३॥ चोथे पूर्व जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद। पद संख्या साठ लाखनी, सप्तभंगी स्याद्वाद ॥४॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आगम जोइ। मत्या-दिक पण भेदसुं, पद संख्या इक कोडि ॥५॥ सत्यप्रवाद छठ्ठो कहुं, भाखुं सत्य स्वरूप। संख्या पद इक कोडनी, भाषा आगम अनूप ॥६॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम द्रव्य स्वभाव। छत्रीस पद कोड जेहना, सूत्रे आतम।

भाव ॥ ७ ॥ कर्म प्रवादतणो हिवै, प्रगटपणें अधिकार । लाख असी पद जेहना, कोडो इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं हिवै, नामे प्रत्याखान । लाख चोरासो जेहना, पद संख्या चित्तआन ॥ ६ ॥ अतिशय गुण संयुत भणो, साधन साध्य निदान । विद्या अनुपम सातसै, कोडो वरस लख जान ॥ १० ॥ कल्याण नाम इग्यारमो, छव्वीस कोड प्रमाण । ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव कल्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, छप्पन लख इग कोडि । प्राण निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आणयो जोड ॥१२॥ क्षायिकादिक जे क्रिया, छन्द क्रिया सुविशाल । पदसंख्या नव कोडनो, तेरमो क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारबिंदु चवदमो, नामे अरथ निहाल । पद संख्या इग कोडनो, लाख पचवीस संभाल ॥ १४ ॥ लोकत्रत्यय देखण भणी, संख्या गज परिमाण । सोले सहस अरु तीनसै, और तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरब संख्या

ए कही, गुणमालाथी देख । आगे बुधजन सांभज्यो, बाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

ढाल ॥३॥ वीर जिनेसर उपदिसे---ए चाल ॥

सूत्रे गुंथे गणधरा, अरथे अरिहंत भाखे रे । ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमिर जिम नासे रे ॥१॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित्त हित आणी रे। तत्व रमणना अनुसरे, सम्पूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय तजी करी, ध्यान भगन उर धारी रे । विधि संयुत जिनमन्दिरे, प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी, श्री श्रुतज्ञान निधानो रे । सद्गुरु चरण नमो करी, संवरजाग प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अक्षत लेइ ऊजला, गुंहली सुन्दर कीजे रे । नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजे रे ॥ वा० ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इण परे, सुगुरु संजोगे लेई रे । विधिसुं पुस्तक पूजिये, चित्त अति आदर देई रे ॥ वा० ॥ ६ ॥ इम तप संपूरण थयां, ऊजमणो हिव कीजे रे ।

भाव ॥ ७॥ कर्म प्रवादतणो हिवै, प्रगटपणें अधिकार । लाख असी पद जेहना, कोडो इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं हिवै, नामे प्रत्याखान । लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित्तआन ॥ ६ ॥ अतिशय गुण संयुत भणी, साधन साध्य निदान । विद्या अनुपम सातसै, कोडो वरस लख जान ॥ १० ॥ कल्याण नाम इग्यारमो, छव्वीस कोड प्रमाण । ज्योतिषशा-स्त्र विचारणा, चोविह देव कल्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, छप्पन लख इग कोडि । प्राण निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आणयो जोड ॥१२॥ क्षायिकादिक जे क्रिया, छन्द क्रिया सुवि-शाल । पदसंख्या नव कोडनो, तेरमो क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारबिंदु चवदमो, नामे अरथ निहाल । पद संख्या इग कोडनी, लाख पचवीस संभाल ॥ १४ ॥ लोकत्रत्यय देखण भणी, संख्या गज परिमाण । सोले सहस अरु तीनसै, और तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरब संख्या

ए कही, गुणमालाथी देख। आगे बुधजन सोधज्यो, बाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

ढाल ॥३॥ वीर जिनेसर उपदिसै--ए चाल ॥

सूत्रे गुंथे गणधरा, अरथै अरिहंत भाखै रे। ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमिर जिम नासै रे ॥१॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित्त हित आणी रे। तत्व रमणता अनुसरै, सम्पूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय तजी करी, ग्यान भगत उर धारी रे। विधि संयुत जिनमन्दिरै, प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी, श्री श्रुतज्ञान निधानो रे। सदगुरु चरण नमो करी, संवरजोग प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अक्षत लेइ ऊजला, गुंहली सुन्दर कीजै रे। नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे। विधिसुं पुस्तक पूजियै, चित्त अति आदर देई रे ॥ वा० ॥ ६ ॥ इम तप संपूरण थयां, ऊजमणो हिव कीजै रे।

घर सारू धन खरचने, नरभव लाहो लिजै रे ॥ वा० ॥७॥ पूठा परत विटांगणा, पूरब नाम प्रमाणो रे। नवकरवाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥ वा० ॥८॥ देहरै देव जुहारने, आरती मंगल कीजै रे। स्नात्रपूजा वलि साचवी, तत्त्व सुधारस पीजै रे ॥ वा० ॥९॥ इण पर तप आराधतां, दुरगति कारण छेदै रे। चवदह रज्जु शिरोमणी, जीव अक्षयगति वेदे रे ॥ वा० ॥१०॥ तप आराधन विधि भणी, आगम वचने जोइ रे। भवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं भव-भ्रमण न होई रे ॥ वा० ॥ ११ ॥ कलश॥ इम सयल सुखकर गच्छ खरतर तपै रवि जिम क्रांत ए, सौभाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृतंत ए। सम्बत अठारै वरस छिन्नूं नयर श्रीबालूचरै, ए स्तवन भणतां श्रवण सुणतां सयल मनवंछित फलै॥ १२ ॥ इति चतुर्दश-पूर्व-तप स्तवनं सम्पूर्णम् ॥

चउदह पूर्व-तपकी विधि।

तपस्वीको यदि यह तपस्या करनी हो तो वह पहले उत्तम दिन देखकर गुरुसे उक्त तपस्या ग्रहण करे। इस तपस्यामें चउदह उपवास करने पड़ते हैं, वह समयानुसार क्रमशः करे। जिस दिन जिस पूर्वकी तपस्या हो, उस दिन उसी पूर्वके नामकी वीस माला गिने। स्तवनमें १४ पूर्व के नाम और उनकी विधि दी गयी है, उसके अनुसार विवेकी पुरुष गुरुसे समझ कर सारी क्रिया करे। इस तपस्याके स्तवनको भाव-पूर्वक श्रवण करे या स्वयं पढ़े। यह तपस्या करनेसे ज्ञानावरणीय आदि कर्मोंका क्षयोपशम हो कर उत्तम ज्ञान और लक्ष्मीकी वृद्धि होती है।

॥ अथ तिलक तपस्याका स्तवन ॥

दुहा ॥ शासन देवी शारदा, वाणी सुधारस वेल। बालक हित भणी बगसियै, सुबुद्धि सुरंगी रेल ॥१॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ वीर जिणेसर उपदिसै—ए देशी ॥
कमला जिम कुंडणपुरै, भुजबल नरपतिभीमो रे । पद्मनी पद्म सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥पद्म०१॥ परतख्य फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता पूरै माशै रे । दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशै रे ॥ पद० २ ॥ चौसठकला विच-चणा, रूप गुणें करी रंभा रे ॥ देव गुरु धर्म दी-पावती, ब्रत्तधारी दृढ बंभा रे ॥ प० ३ ॥ प्रतिमा पूजै शांतिनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ उव-झायाधिप श्रीनिषधनो, नल लिखियो निलाडै रे ॥ आनन्दसु पंथ आवतां, पूरव पून्य उघाडै-रे ॥प० ५॥ मज्झम रयणी तम भरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि भाले तेज दिन मणी, जाग्रत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ॥६॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिले, पूछियै एह प्रसन्नो रे ॥ कम बलै मुनि आविया, परीसह जीत मदन्नो रे ॥प०। ७॥ पंच जीत पंच पालतां, टालता दुस्सह सबला रे ॥

संजम शुद्ध संभालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ॥८॥ दोहा ॥ मणि तेजें मुनि तरु ठवे, रथ थकी स्त्री भरतार ॥ देवै तीन प्रदत्तणा, विधिसुं चरण जुहार ॥६॥ देशना सुण पावन थया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परभव तिलक है, कहि यै श्रीमुनिराय ॥ १० ॥

॥ढाल २॥ भरत भावसुं ए—ए देशी ॥ मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना ए ॥ कम शुभाशुभ परभवै ए, इह भव फल निपजाय, करम गति वंकडी ए ॥११॥ ओहिनाण भव प्रागनो ए, नृप सुणे निरमल भाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवतीको नृपवधू ए, जाणयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥१२॥ चोथ प्रमुख नृप चंपसूं ए, किरिया शूद्ध करी एह, भलै चित भावसुं ए ॥ नवांग पूजे तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवीस, रयण कचंण जड्या ए ॥१३ ॥ तिलक २ सें पामियो ए, समकित एह सत्तीस, जनम सफलो गिणो ए ॥ भगवन तप विधि

भाखियै ए, नल कहै बोध वरीस, पीहर षट्कायना ए ॥१४॥ आदिनाथ अरिहंतना ए, षट् उपवास कहीस, त्री चौवीहारस्युं ए ॥ चोथ दोय जिन वीरना ए, अजितादिक बावीस, आणा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोषध त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढ़ाय, तारक जगदीसने ए ॥ उद्यापन संघ भक्तिसुं ए, जन्म सफल नर राय, सूधै मन साधियै ए ॥ १६ ॥ सुण वाणी समकित ग्रहै ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित्त ऊमाहीयो ए ॥ इण पर जे भवि आदरै ए, थायै चरम शरीर, मूल सुख शासतो ए ॥ १७ ॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता भविक ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो शिवघरां ॥ आगमे आखै सूरीय साखै सुगुरु भाषै सुण थया, शुद्ध ध्यावै भविक भावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ इति तिलक तपस्या स्तवनम् ॥

तिलक-तपस्याकी विधि ।

उत्तम दिन देखकर तपस्वी गुरुके पास जाये और उनसे विनय-पूर्वक तिलक तपस्या ग्रहण करे। इस तपस्याके करने वालेको कुल ३० तीस उपवास करने पड़ते हैं, वह इस क्रमसे करे। पहले ऋषभदेव भगवानके छह उपवास करे, इन छहों उपवासोंके करते समय "श्रीऋषभदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः" इस पदका २००० बार चिन्तवन करे; अर्थात् इस पदकी २० माला गिने। जब यह छह उपवास हो लें, तब महावीर भगवानके दो उपवास करे। इन दो उपवासके समय "श्री महावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः" इस पदकी वीस माला गिने, और धर्म-ध्यानमें समय व्यतीत करे। इन दो उपवासोंके हो जाने पर बाईस तीर्थंकरोंके क्रमशः बाईस उपवास करे। जिस दिन जिस तीर्थंकरका उपवास हो, उसीके पदकी वीस माला गिने। बाकीकी सारी विधि स्तवनके अनुसार गुरुसे समझ कर करे। तपस्या करते समय आरंभ-समारंभके कार्य नहीं करे।

॥ अथ सोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर भाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, भवि प्राणी रे॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जाय ॥भ० ॥वी१॥ कोड वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावै फल तास ॥ भ० ॥ मान करे जे प्राणियारे, लाल ते जगमें न सुहाय ॥ भ० वी० ॥२॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मल्लिनाथ ॥ भ०॥ रूप परावृत कीया घणा रे लाल, आषाढ़भूति गणिका साथ ॥ भ० वी० ॥ ३ ॥ च्यार कषाय छे मूलगा रे लाल, उत्तम सोले भेद ॥भ०॥ इम भव-भव भमतो थको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ भ० वी० ॥ ४ ॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ भ० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ भ० वी० ॥५॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो रे लाल, उपजै लबधि अपार ॥ भ० ॥ उपवास करता भावसुं रे लाल, भवनो पार ॥ भ० वी० ॥ ६ ॥ इम दिन

शोले तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥भ०॥ देव गुरु पूजा करै रे लाल, मन वंछित फल थाय ॥ भ० ॥ नर सुर रिद्धि पिण भोगवे रे लाल, निश्चै मुगति जाय ॥ भ० वी० ॥ ८ ॥ इति ॥

सोलह तपस्याकी विधि ।

क्रोध, मान, माया, और लोभ इन चारों कषायोंके अनन्तानु बन्धी, अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी, और संज्वलन इनके द्वारा चार-चार भेद होने पर चार कषायोंके क्रमशः सोलह भेद पड़ते हैं। इनको निवारण करनेके लिये तपस्वीको यह तपस्या करते समय सोलह दिनकी तपश्चर्या करनी पड़ती है, वह इस तरह कि, पहले दिन एकासण, दुसरे दिन निवि, तीसरे दिन आयंबिल और चौथे दिन उपवास, इस तरह अनुक्रमसे चार बार व्रत करके सोलह दिन की तपस्या पूरी करे। तपश्चर्याके दिन सोलह तपका स्तवन पढ़े, या श्रवण करे। समूचि तपश्चर्या पूर्ण कर लेने पर यथा-शक्ति उद्यापन-उज़मणा करे।

प्रातःकालकी पडिलेहण विधि ।

पहले खमासमण देकर "इरिया वहिय" पढ़े, बाद खमासमण-पूर्वक "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पडिलेहण संदिसा हूं" इच्छं, कह कर फिर खमासमण-पूर्वक "इच्छाकारेण संदिह भगवन्! पडिलेहण करूं ?" इच्छं, कह कर मुहपत्ति पडिलेहण करे। बाद खमासमण देकर इच्छाकारेण० "अंग पडिलेहण संदिसाहु" इच्छं, फिर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० अंगपडिलेहन करूं ? इच्छं" कहकर आसन, चरवला, कंदोरा, धोती आदि उपकरणोंकी पडिलेहण करे। पीछे खमासमण पूर्वक "इच्छकार भगवन्! पसायकरी पडिलेहण पडिलेहावोजी ? इच्छं, कह कर शुद्ध स्वरूपके पाठ-पूर्वक स्थापनाचार्यजीकी पडिलेहण करे, बाद स्थापनाचार्यजीको उच्च स्थान पर रख। खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० उपधि मुहपत्ति पहिले हुं ?" इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। इसके बाद खमासमण-पूर्वक

इच्छाकारेण० ओहि पडिलेहण संहिसा हूं ? इच्छं, कहकर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० ओहि पडिलेहण करूं ?" इच्छं, कहकर बाद कम्बल, वस्त्र आदिकी पडिलेहण करे। इसके बाद पौषधशालाको प्रमार्जन करके कूड़े-कचरेको जयणासे एकान्त स्थानमें रखदे। बाद "इरिया वहिय" पढ़े। इसके बाद खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं, कहकर खमा० इच्छा० सज्झाय करूँ ? इच्छं, कहकर नवकार सहित पोसहको सज्झाय करे, और उपदेश मालाका श्रवण करे।

संध्या पडिलेहण विधि।

पहले खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुपुड़ि पुन्ना पोरिसो इच्छं, कहकर खमासमण देवे, बाद "इरिया वहिय" पढ़े। बाद खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० पडिलेहण करूं ? इच्छं, कहकर, बाद फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण० पौषधशाला प्रमार्जन

करूं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। बाद खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० अंग पडि-लेहण संहिसा हूं ? इच्छं, कहकर फिर खमा-समण देकर इच्छाकारेण० अंग पडिलेहण करूं ? इच्छं, कहकर आसन, चरवला, कदोरा, धोती आदि उपकरणोंकी पडिलेहण करे। बादमें पौषधशालाका प्रमार्जन कर कूड़े-कचरेको यथा-विधि रखे। फिर खमासमण देकर "इरिया वहिय" पढ़े। पीछे खमासमण-पूर्वक "इच्छकार भगवन्! पसायकरी पडिलेहण पडिलेहवावोजी? इच्छं, कहकर शुद्ध स्वरूपके पाठ पूर्वक स्थापना-चार्यजीकी पडिलेहण करे। बाद स्थापनाचार्यजी को ऊंची जगहपर रखे। पीछे खमासमण देकर इच्छाकारेण० उपधि मुहपत्ति पडिले हुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। बाद खमास-मण-पूर्वक "इच्छाकारेण० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं, कहकर खमासमण-पूर्वक "इच्छाकारेण सज्झाय करूं ? इच्छं, कहकर एक नमुक्कार

बोलकर पोसहकी सज्झाय करे। बाद फिर एक नमुक्कार पढ़े। इसके बाद दो वान्दना देकर पच्च-क्खाण लेवे (जिसने उपवास किया हो वह वान्दना न देवे) बाद खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० उपधि थंडिला पडिलेहण संदिसा हूं? इच्छं, कह कर फिर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० उपधि थिंडिला पडिलेहण करूं? इच्छं, कहकर फिर खमासमण-पूर्वक इच्छाकरेण० बेसणे संदिसा हुं? इच्छं, कहकर फिर खमासमण-पूर्वक इच्छा-कारेण० बेसणे ठाऊं?, इच्छं, कहकर कम्बल वस्त्रादिकी पडिलेहण करे। जिसने उपवास किया हो वह इस समय केवल कन्दोरा और धोतिकी पडिलेहण करे।

रात्री संथारा विधि।

खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० बहुपुडि पन्ना पोरिसी?" इच्छं, कहकर खमासमण देवे और "इरिया वहिय" पढ़े। इसके बाद खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० राईसंथारा

मुहपत्ति पडिहले हुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। बाद खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० राईसंथारा संदिसा हूं ? इच्छं, कहकर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० राईसंथारा ठाऊं ? इच्छं, कह कर फिर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० चैत्यवन्दन करूं ?" इच्छं, कहकर चउक्कसाय, नमुत्थुणं यावत् जयवीयराय चैत्यवन्दन करे। बाद "निस्सही ३ णमोखमासमणाणं गोयमाइणं महामुणिणं" तीन नवकार, तीन करेमी भन्ते कह कर अणुजाणह चिट्ठिज्जा आदि राई संथाराकी गाथायें कहे और अन्तमें सात नमुक्कारका स्मरण करे।

॥ पच्चक्खाण पारनेकी विधि ॥

खमासमण देकर इरियावहिय पढ़े ॥ पीछे खमा० इच्छा० पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ति पडिलेहुँ ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे ॥ पीछे खमा० इच्छा० पच्चक्खाणपारुं ? यथाशक्ति खमा० इच्छा० पच्चक्खाण पारेमि ? तहत्ती। कह

कर मुट्ठी बन्द कर एक नवकार गिने। बाद जो पच्च-क्खाण किया हो उस पच्चक्खाणका नाम ले कर पच्चक्खाण पारनेका पाठ बोलकर एक नवकार गिने, पीछें खमासमण देकर इच्छा० चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कहकर जयउसामि० यावत् जय-वीयराय० पर्यंत चैत्यवंदन करे।

॥ देववंदनकी विधि ॥

खमा० इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं, कह कर चैत्यवंदन णमुत्थुणं कहे। बाद खमासमण देकर इरियावहिय पढ़े। पीछे खमा० इच्छा० चैत्यवन्दन करूं ? इच्छं, कहकर चैत्यवंदन करे। बाद जंकिंचि णमुत्थुणं कहकर चार थुईसे देव वांदे। पीछें णमुत्थुणं यावत् जयवीयराय पर्यंत कहे; फिर णमुथुणंका पाठ पढ़े।

॥ पोसह लेनेकी विधि ॥

पोसहके उपगरण लेकर उपाश्रयमें जाये। बाद सामायिककी विधिके अनुसार स्थापनाचार्यकी स्थापना करके विधि-पूर्वक गुरुवंदन करे। बाद

खमासमण देकर इरियावहिय पढ़े। पीछे खमा० इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह मुहपत्ति पडिले हुँ ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। पीछे खमा० इछा० पोसह संदिस्साऊं ? इच्छं, खमा० इच्छा० पोसह ठाऊं ? इच्छं, कहकर खड़े हो, हाथ जोड़कर तीन नवकार गिने। बाद इच्छकार भगवन्! पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावोजी! (यदि आठ प्रहरका पोसह लेना हो तो "अहोरत्तं" कहे, दिनका लेना हो तो "दिवसं" कहे, और रात्रिका लेना हो तो "रत्तं" कहे) बाद जो बड़ा आदमी हो वह करेमिभंते पोसहं० इत्यादि पोसहका पच्चक्खाण तीनवार उच्चरावे— यदि कोई बड़ा न हो तो आप तीनवार उच्चर लेवे॥ बाद खमा० इच्छा० सामायिक मुहपति पडिलेहवुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे॥ पीछे खमा० इच्छा० सामायिक संदिस्साहु ? इच्छं, इत्यादिक सामायिककी विधिके अनुसार पोसहकी विधि जानना। परंतु इरियावहिय न

पढ़े । पांगरणाके आदेशके बाद खमा० इच्छा० बहुवेलं संदिस्साउं? इच्छं, खमा० इच्छा० बहु-वेलं करूं ? इच्छं, पोसह लिये बाद राई प्रति-क्रमण करे तो प्रतिक्रमणमे चार थुइसे देववांदे, बाद णमुत्थूणं कहकर बहु बेलका आदेश लेवे । पीछे आचार्यमिश्रं इयादि कहे ।

॥ पोसहकृत्यकी विधि ॥

पहले पोसह लेनेके बाद पड़िलेहणके समय प्रभात पड़िलेहणकी विधिसे पड़िलेहण करे । पीछे गुर्वादिक विद्यमान हो तो विधिपूर्वक वंदना करे । बाद पच्चक्खाण करके बहुवेलका आदेश लेवे, पीछे देवदर्शन करनेको मंदिरमें जावे, (जिसने पोसह किया हो वह यदि देवदशन न करे तो दो या पांच उपवासके प्रायश्चित्तका भागी होता है) अनन्तर विधिसहित चैत्यवंदन करके पच्चक्खाण करे । उपाश्रय और मंदिरसे निकलते समय तीनवार आवस्सही कहे । और प्रवेश करते समय तीनवार निस्सीहि कहे ॥

लघुनीति और बड़ो नीति परठनी हो तो पहिले "अणुजाणह जस्स गो" कहे, पीछेसे तीनबार 'वोसिरे' कहे। मंदिरमें जाकर उपाश्रयमें आवे और लघुनीति बडिनीति करके पीछे उपाश्रयमें आवे। निद्रा या प्रमाद आगया हो तो इत्यादि कार्योंमें इरियावहिय पढ़े। मंदिरसे उपाश्रयमें आकर गुरुका संयोग हो तो व्याख्यान सुने। पीछे पौनो प्रहर दिन चढ़े बाद उग्घाडा पोरसी भणावे यथाः—खमा० इच्छा० उग्घाडा पोरसी ? इच्छं, कह कर खमा० इरियावहिय पढ़े। पीछे खमा० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति पड़िलेहुँ ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे॥ पीछे कालवेलामें मंदिरमें अथवा उपाश्रयमें विधिके अनुसार पंचशक्रस्तवसे देववंदन करे। पीछे जल आदि पीनेकी इच्छा हो तो पचक्खाण पारनेकी विधिके अनुसार पचक्खाण पारके जल आदिक परिभोग करे। पीछे चौथे पहरमें संध्यापडिलेहणकी विधिके अनुसार पडिलेहण करे। रात्रिका पोसह लेनेवालाभी पोसहकी

विधिके मुताबिक पोसह लेकर पडिलेहण करे ॥ रात्रि पोसहवाला प्रतिक्रमणके आदिमें इरिया-वहिय पढ़कर चौवीस थंडिलां पडिलेहण करे। प्रतिक्रमणमें सात लाख पापस्थानककी जगह ठाणेक-मणे चंकमणे इत्यादि पोसह अतिचार पढ़े ॥ जिसने दिनका पोसह न लिया हो और रात्रिका लिया हो तो वह सात लाख आदि बोले । प्रतिक्रमण करनेके बाद सज्झायका ध्यान करे । प्रहर रात्रि जानेपर संथारा पोरसी विधिके अनुसार पढ़ कर विधिसे शयन करे। पीछली रात्रिको ऊठकर नवकार मंत्र गिने । बाद इरियावहिय पढ़ कर खमासमण-पूर्वक कुसुमिण दुसुमिणका काउ-स्सग्ग करे । (पोसहवाला कुसुमिण दुसुमिणका काउस्सग्ग पहले करे पीछे चैत्यवंदन करे) सात लाखकी जगह संथारा उवट्टण इत्यादि पोसह अतिचार बोले । बाद प्रभात-पडिलेहणकी विधिके अनुसार पडिलेहण करे । तदनन्तर गुर्वादिक वन्दन करे बाद पोसह पाले ।

पोसहमें राइमुहपत्ति पडिलेहणको विधि ।

गुरुमहाराजके सामने खमासमण देकर इरियावहिय पढ़े। बाद खमा० इच्छा० राइमुहपत्ति पड़िलेहुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। पीछे दो वांदणा दे कर इछा० राइयं आलोउं ? इछं, आलोएमि जोमेराइओ कहकर विधि-पूर्वक गुरु वंदन करे। बाद पचक्खाण लेकर बहुवेलका आदेश लेवे।

पोसह पारनेकी विधि ।

खमासमण देकर इरियावहिय पढ़े। बाद खमासमण-पूर्वक मुहपत्ति पडिलेहण करे। पीछे खमा० इच्छा० पोसह पारु ? यथाशक्ति, खमा० इछा० पोसह पारेमि ? तहत्ति कहकर जीमना हाथ नीचे रखकर तीन नवकार गिने, पीछे खमा० देकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। पीछे खमा० इछा० सामायिक पारु ? यथाशक्ति, खमा० इछा० सामायिक पारेमि ? तहत्ति कह कर जीमना हाथ नीचे रख, तीन नवकार गिन कर

भयवं दसण्ण भद्दो का पाठ पढ़े । पीछे दाहिना हाथ स्थापनाचार्यजीके सामने सीधा रख कर तीन नवकार गिने, (पोसह और सामायिक पारनेका पाठ एक ही वार कहा जाता है) यानी दोनोंके पारनेका पाठ एक ही है ।

देसावगासिक लेने और पारनेकी विधि ।

देसावगासिक लेनेकी विधि पोसह लेनेकी विधिके अनुसार समझना, परंतु पोसह लेनेके आदेशमें देसावगासिकका आदेश लेना । जैसे— देसावगासिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? देसावगासिक संदिस्साउं ? ठाऊं ? देसावगासिक दंडक उच्चरावोजी ? करेमिभंते पोसहके पच्चक्खाणके बदले अहन्न भंते ? तुह्माणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि इत्यादि देसावगासिकका पच्चक्खाण तीन वार उच्चरे । वहुवेलका आदेश न लवे, देसावगासिक जघन्यसे दो सामायिकका और उत्कृष्टसे १५ सामायिकका होता है ।

देसावगासिक पारनेकी विधि पोसह पा

विधिको तरह समजना जैसे—देसावगासिक पारुं ? पारेमि ? इत्यादि सामाइय पोसह संट्ठियस्सकी जगह सामाइय देसावगासियं संट्ठियस्स इत्यादि पाठ कहना ।
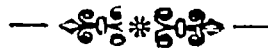
भक्ष्याभक्ष्य-विचार ।

प्राचीनकालके समय श्रावक लोग भक्ष्याभक्ष्यके सम्बन्धमें बड़ा ही उपयोग रखा करते थे, प्रायः उस समयके श्रावकोंको अभक्ष्य चीज़ोंका त्याग ही रहता था, वे लोग अभक्ष्य सेवन करना महा पाप और नरकका मार्ग समझते थे। यदि कोई न समझ कर या ग़लतीसे किसी अभक्ष्य पदार्थका सेवन कर लेता तो वह उसे बड़ाभारी दुःष्कर्म किया समझ कर अत्यन्त पश्चाताप करता और उसके लिये गुरुके पास जा कर यथाविधि आलोयणा-प्राथश्चित ले लेता था।

वर्तमान समयके श्रावक-श्राविकाओंमें इस

विषयकी पूरी शिथिलता पड़ गयी है। कई श्रावक भाई तो भक्ष्याभक्ष्य किसे कहते हैं, वह भी ठीक तरह नहीं समझते । कई भाई यदि इस विषयमें थोड़ासा कुछ जानते हैं; किन्तु इन्द्रियोंको लोलुपताके कारण भक्ष्याभक्ष्य को न सोच कर उसे सेवन करते ही रहते हैं। कई सज्जन खूब पढ़े-लिखे हैं, अंग्रेजी बी० ए० और एम० ए० पास किये रहते हैं, उनको इस विषयका ज्ञान भी ठीक रहता हैं; किन्तु फिर भी वे लोग रस-नेन्द्रियकी लालसामें पड़ कर अभक्ष्य पदार्थोंका सेवन आनन्द-पूर्वक करते ही रहते हैं, यदि उनसे इस विषयमें कुछ कहा जाय तो यही उत्तर मिलेगा कि "आलू, बैगन न खानेसे थोड़े ही धर्म या मोक्ष प्राप्त होता है ?" इसी तरह और भी अनेक प्रकारके कुतर्क करने लगते हैं। उस समय यदि उन्हें शास्त्र-प्रमाण देकर ठीक तरह समझाया जाय तो उसे भी वे लोग अङ्गिकार करनेको तैयार नहीं होते। और जब अपना पक्ष

कमजोर देखते हैं, तब इस विषयको हँसी-दिल्लगीमें ले आते हैं।

प्यारे पाठक और पाठिकाओं! शास्त्रकारोंने भक्ष्याभक्ष्यके सम्बन्धमें जो अमूल्य उपदेश दिया है, वह वास्तवमें हम लोगोंके लिये बड़ा ही उपकार का काम किया है। यदि हम लोग भक्ष्य और अभक्ष्य पदार्थोंको शास्त्रके अनुसार समझ कर काममें लिया करें तो हमारे लिये बड़ा ही लाभदायी है। शास्त्रकारोंने अभक्ष्य पदार्थों का त्याग किया है, वह वास्तवमें सोच-समझ कर ही किया है। इस नियमके पालनसे सिवा लाभके किसी तरहकी हानि नहीं।

अभक्ष्य पदार्थोंके खानेसे अनेक स्त्री-पुरुष रोग-ग्रस्त और कमजोर हो गये हैं। ऐसे अनेक दृष्टान्त पढ़ने और सुननेमें आते हैं, कि अज्ञात फलके खानेसे कई स्त्री-पुरुषोंने अपने प्राणोंसे हाथ धोये हैं, कईयोंके हाथ-पाऊँ गल गये हैं। २ अभक्ष्य पदार्थ ऐसे भी हैं, जिनके खानेसे

उस समय तो परम आनन्द मालूम होता है। परन्तु कालान्तरमें उन्हींके कारण असाध्य रोग हो जाया करते हैं, जिनसे मनुष्य अल्प अवस्थामें ही संसारसे चल बसता है। अतएव मनुष्य मात्रको अभक्ष्य चीजोंका त्याग करना परमावश्यक है।

अब आप धार्मिक भावोंसे भी इस विषयका विचार कीजिये, जिससे आपको इसके त्यागका सच्चा महत्व और भी मालूम हो जायगा। जितने अभक्ष्य फल और कन्दमूल हैं, उन सभीमें दृश्य और अदृश्य रूपसे अनेक सूक्ष्मजीव रहते हैं। जब वह फल और कन्दमूल सेवन किये जायेंगे तो उन बिचारे जीवोंकी क्या दशा होगी यह आप स्वयं समझ लें। प्रत्येक प्राणीका कर्त्तव्य है, कि वह एक दूसरेकी आत्माको जहाँ तक वन पड़े बचानेका यत्न करे। छोटे-बड़े सभी जीवोंमें एकसी आत्मा है। उसमें छोटी-बड़ीका किसी तरह भेद नहीं। जितनी बड़ी आत्मा

आपमें है, उतनी ही उन सूक्ष्म जीवोंमें है। अतएव आपका पूर्ण कर्त्तव्य है, कि जिस पदार्थ-के खानेसे जीवहानि होती हो, या किसी जीवको कष्ट होता हो तो उस पदार्थको सर्वथा न खाना चाहिये। यदि कोई आपका दूसरा भाई खाता हो तो उसे भी खानेको निषेध करना आपका परम कर्त्तव्य है।

श्रावकको उत्सर्ग मार्गसे प्रासुक अहार लेना कहा है; पर यदि शक्ति न हो तो सचित्त पदार्थ का त्याग करे, यदि वह भी न बन पड़े तो बाईस अभक्ष्य और बत्तीस अनन्त कायका त्याग करना तो परम आवश्यक है। अतएव यहाँ पर हम अपने प्रेमी पाठकोंके लाभके लिये कौन-कौन से अभक्ष्य पदार्थ हैं। वह संक्षिप्त रूपसे समझा देते हैं। आशा है, पाठक गण इसे पढ़ समझकर यदि थोड़ासा भी लाभ उठायेंगे तो हम अपने परिश्रमको सफल समझेंगे।

बाईस अभक्ष्य किसे कहते हैं ?

पाँच तरहके उम्बर फल ५, चार महा विगइ ४, हिम १०, विष ११, करहा-ओले १२, सब तरहकी मिट्टी १३, रात्रा-भोजन १४, बहुबीज १५, अनन्तकाय १६, बोल आचार १७, घोलबड़ा १८, बेंगन, जिनके नाम अज्ञात हों ऐसे फल-फूल १६, तुच्छ फल २०, चलित रस २२, इन बाईस चीजोंको अभक्ष्य पदार्थ कहते हैं। अतएव श्रावक-श्राविकाओंको इनका त्याग जरूर करना चाहिये।

अभक्ष्य पदार्थ।

१ बड़के फल, २ पारस-पीपली (फालसा) या पीपलके फल, ३ प्लक्ष (पीपलकी ही जातिका वृक्ष है) ४ गूलर और ५ कचूमर या कालुम्बर, इन वृक्षोंके फलमें बहुतसे छोटे-छोटे जीव होते हैं, जिनकी गिनती नहीं हो सकती। इस

लिये ये सब अभक्ष्य हैं। दुष्काल पड़नेपर अन्न न मिले, तोभी विवेकी पुरुष इन्हें न खावे।

६, मधु ७ मदिरा ८ मांस ९ मक्खन, इन चारों वस्तुओंका जैसा रंग होता है, उसी रंगके असंख्य जीव इनमें निरन्तर उत्पन्न होते रहते हैं। इस लिये ये भी अभक्ष्य हैं—ये चार 'महा-विगइ' कहलाते हैं।

मधु।—मधुमक्खियाँ या भौंरे अपने भोजनके लिये जो मधु या शहद जमा करते हैं, उन्हें ही नीच जातिके लोग धुआँ दिखा कर या मारकर, चुरा लाते हैं। बेचारे असंख्य जीव मारे जाते हैं। तिस पर मधुमें भी बहुतसे जीव पैदा होते रहते हैं, इसलिये जिह्वाके स्वादके लिये तो क्या कहना, औषधके लिये भी इसे नहीं खाना चाहिये। इसे खानेसे नरक-गति प्राप्त होती है।

मदिरा।—इसका तो सर्वथा त्याग ही करना उचित है। अंग्रेज़ी दवाओंमें ज़रूर स्पिरिट (दारू) [illegible] है, इसलिये उन्हें भी नहीं खाना चाहिये।

अंग्रेज़ी दवाओंमें जो चूर्ण आदि होते हैं, उनमें भी बहुतसे अभक्ष्य पदार्थ मिले होते हैं। अतएव इनसे परहेज़ ही रखना उचित है।

मांस।—मछली, बकरा, हरिन, भेड़ा, चिड़िया आदि जीवोंको मारकर जो मांस प्राप्त होता है, वह महा अशुद्ध तथा अभक्ष्य है। सभी धर्म-ग्रन्थोंमें मांस खानेकी निन्दा की गयी है, तो भी लोग मोटे-ताज़े होनेके लोभसे या जिह्वाके स्वादके लिये दूसरोंके प्राण ले लेते हैं। यह महा अधर्म और पाप-कर्म है।

मांसके अन्दर प्रत्येक रग-रेशेमें अनेक त्रस जीव उत्पन्न होते हैं—उसे आगसे उबालने पर भी उसमें जीव उत्पन्न होते रहते हैं। इसी लिये धर्मात्माओंने मांस, अण्डे या मछलियोंका खाना बुरा बतलाया है।

आजकल कुछ पापियोंने घीमें चर्बी मिलाना शुरू किया है। यह महा पाप है। इसी प्रकार विलायती बिसकुट आदि खाना भी बुरा है—

इन्हें तो छूना भी नहीं चाहिये। कितनी ही अंग्
दवाएँ—जैसे, काडलीवर आयल (मछली
तेल), और मुम्बई* आदि कई औषधियें चर
वगैरहसे तैयार की जाती हैं। इनका सेव
करने वाले घोर नरकमें जानेका रास्ता तैय
करते हैं। जन्म, जरा, मरण, आधि, व्या
और उपाधिके दुःखसे छूटना हो, तो मनु
कभी इन चीज़ोंको न खाये।

मक्खन।—छाँछमें से मक्खन निकालते ही तु
उसमें जीव उत्पन्न होने लगते हैं, इसीलिये
अरिहन्त भगवान्‌ने इसका खाना मना किया
प्रभुकी आज्ञाका अवश्यही पालन करना चाहि

ओस।—१० बर्फ़, और ओले,—इन ती
भी बड़ादोष है। अप्काय (हर एक सचित्त प
की प्रत्येक बूंदमें असंख्य जीव होते हैं—

* मुबई नामक औषधी—पशु और मनुष्योंके कलेजे
निकाल कर बनायी जाती है। इसलिये वह प्रत्यक्ष रूपसे
है। इस औषधीके स्थान पर यदि शीलाजित काममें ला
तो बड़ा ही लाभदायक है।

उनका आकार सरसों बराबर भी हो जाय, तो उनकी गिनती इतनी अधिक होती है, कि फिर तो वे सारे जम्बूद्वीपमें भी न समा सकें। परन्तु चूंकि पानीके बिना प्राणीका जीना ही कठिन है, इसलिये अवश्यक्ताके अनुसार खर्च करना पड़ता है। परन्तु उसीका जमा हुआ रूप जो बर्फ़ है, उसमें तो और भी बहुतसे जीव इकट्ठे होकर मर जाते हैं, इसलिये थोड़ी देरके स्वादके लिये ऐसी चीज़ कभी न पीना। बहुत गरमी मालूम पड़े तो चन्दनका लेप करे या बादाम तथा चन्दनक शरबत पिये।

कुदरती बर्फ या ओलेका पानी भी नहीं पीना चाहिये; क्योंकि उस पानीमें असंख्य जीव होते हैं। यह तीर्थंकर महाराजका ही किया हुआ निषेध है। आइसक्रीम, आइस वाटर, आइस सोडा, कुलफी आदि बर्फ़की बनी चीज़ों का भी त्याग करना चाहिये।

११ विष—भाँग, अफ़ीम, वच्छनाग, हर-

इन्हें तो छूना भी नहीं चाहिये। कितनी ही अंग्रेज़ी दवाएँ—जैसे, काडलीवर आयल (मछलीका तेल), और मुम्बई* आदि कई औषधियें चरबी वगैरहसे तैयार की जाती हैं। इनका सेवन करने वाले घोर नरकमें जानेका रास्ता तैयार करते हैं। जन्म, जरा, मरण, आधि, व्याधि और उपाधिके दुःखसे छूटना हो, तो मनुष्य कभी इन चीज़ोंको न खाये।

मक्खन।—छाँछमें से मक्खन निकालते ही तुरत उसमें जीव उत्पन्न होने लगते हैं, इसीलिये श्री अरिहन्त भगवान्‌ने इसका खाना मना किया है। प्रभुकी आज्ञाका अवश्यही पालन करना चाहिये।

ओस।—१० बर्फ़, और ओले,—इन तीनोंमें भी बड़ादोष है। अप्‌काय (हर एक सचित्त पानी) की प्रत्येक बूंदमें असंख्य जीव होते हैं—यदि

---

* मुबई नामक औषधी—पशु और मनुष्योंके कलेजेसे रक्त निकाल कर बनायी जाती है। इसलिये वह प्रत्यक्ष रूपसे अभक्ष्य है। इस औषधीके स्थान पर यदि शीलाजित काममें लाया जाय तो बड़ा ही लाभदायक है।

उनका आकार सरसों बराबर भी हो जाय, तो उनकी गिनती इतनी अधिक होती है, कि फिर तो वे सारे जम्बूद्वीपमें भी न समा सकें। परन्तु चूंकि पानीके बिना प्राणीका जीना ही कठिन है, इसलिये अवश्यक्ताके अनुसार खर्च करना पड़ता है। परन्तु उसीका जमा हुआ रूप जो बर्फ़ है, उसमें तो और भी बहुतसे जीव इकट्ठे होकर मर जाते हैं, इसलिये थोड़ी देरके स्वादके लिये ऐसी चीज़ कभी न पीना। बहुत गरमी मालूम पड़े तो चन्दनका लेप करे या बादाम तथा चन्दनक शरबत पिये।

कुदरती बर्फ़ या ओलेका पानी भी नहीं पीना चाहिये ; क्योंकि उस पानीमें असंख्य जीव होते हैं। यह तीर्थंकर महाराजका ही किया हुआ निषेध है। आइसक्रीम, आइस वाटर, आइस सोडा, कुलफ़ी आदि बर्फ़ की बनी चीज़ों का भी त्याग करना चाहिये।

११ विष—भाँग, अफ़ीम, वच्छनाग, हर-

ताल, संखिया, धतूरा आदि जहरीली और नशीली चीजें अभक्ष्य हैं; क्योंकि इनके खानेसे पेटके कीड़े मर जाते हैं, शरीर शिथिल हो जाता है और आदमी बेसुध सा हो जाता है। इस लिये शौक़ या बल प्राप्तिके लिये इन्हें नहीं खाना चाहिये—दवाके लिये खा सकते हैं। नशों-का व्यसन बड़ा ही बुरा होता है। इससे इस लोकमें भी बुराई होती है और परभवमें भी। अकसर स्त्रियाँ बच्चोंको नींद आनेके लिये थोड़ी सी अफ़ीम खिला दिया करती हैं; पर इससे बच्चोंको कुछ फ़ायदा नहीं पहुंचता, उलटी हानि होती है। साथ ही कहीं भूलसे उसने पुड़िया उठाकर खाली, तो जान जानेका डर होता है। इस लिये इसका ध्यान रखना चाहिये, कि स्त्रियाँ इस कामको न करें।

१२, ओले—आकाशसे जो वर्षाके पानीके साथ ओले गिरते हैं, वे भी बर्फ़की तरह अभक्ष्य हैं।

१३—भूमिकाय (पृथ्वीकाय) सब तरहकी मिट्टी, खड़िया, खार, नमक, आदि अभक्ष्य हैं; क्योंकि इनमें असंख्य जीव होते हैं। इनके बदले बहुत सी ऐसी चीजें काममें लायी जा सकती हैं. जो अचेतन हैं। खार या भूतड़ा नहाने-धोनेके काममें लाते हैं, वे उसके बदलेमें सोड़ा, आँवला, कंकोल, साबुन आदि काममें ला सकते हैं।

मिट्टी खानेसे पेटके असंख्य जीव मर जाते हैं और पाण्डु, आमवात, पित्त और पथरी रोग होते हैं। यदि भूलसे खाने—पीनेकी चीजोंमें धूल या कंकड़ी आ जाय, तो उसका दोष नहीं लगता, तथापि उपयोग रखना जरूरी है।

कच्चा सचित्त नमक श्रावकको त्याग करना चाहिये। अचित्तका व्यवहार करना चाहिये। दाल और शाकमें डाल देनेसे नमक सचित्तसे अचित्त हो जाता है, परन्तु मसाले या औषधिमें अचित्त नमकका व्यवहार किया जा

१४—रात्रिभोजन-रातको भोजन करना इस भव और परभव दोनोंहीके लिये दुःखका कारण है। रातको खानेवाले उल्लू काग, गीध, बिच्छू, चूहा, बिल्ली, सांप चिमगादड़ आदिकी योनिमें उत्पन्न होते हैं, बड़े दुःख पाते हैं और धर्मकी तो उन्हें प्राप्ति ही नहीं होती। स्वयं रातको भोजन करनेसे बाल-बच्चे भी वही चाल चलने लगते हैं। रातको खानेसे भोजनके साथ जीव-जन्तुओंके मिल जानेका भी बड़ा डर रहता है। उत्तम पशु-पक्षी भी रातको नहीं खाते। दिनको भी अन्धेरे या छोटे बरतनमें खाना मना है। दिनका बना हुआ भोजन रातको और रातका बना हुआ दिनको खाना भी दोषयुक्त है, सूर्योदयके दो घड़ी बाद तथा सूर्यास्तके दो घड़ी पहले खाना चाहिये। इसके पहले या पीछे खाना मना है। रातको पानी पीना रुधिरपान तथा भोजन करना मांस-भोजन करनेके समान है। प्यारके मारे बच्चोंको रातमें खिलाना मना है।

१५—बहुबीज-जिन फलोंमें बीज-बीजमें अन्तर न हो, अर्थात् एकसे दूसरा सटा हुआ इस प्रकार बीज हों, उनको बहुबीज जानना। इनके प्रत्येक बीजमें जीव होते हैं, इसलिये इनका व्यवहार नहीं करना। अनार अभक्ष्य नहीं है।

१६—आचार बहुतसी चीजोंके बनते हैं, पर कोई-कोई तो तीन दिनमें ही अभक्ष्य हो जाते हैं। आचार अधिक तेलमें डुबाये जानेसे अचित हैं; क्योंकि ऐसा होनेसे उनके बिगड़नेका डर नहीं और तबतक वे भक्ष्य बने रहते हैं। आचारके बर्त्तन बड़ी सफाईसे और खूब अच्छी तरहसे मुंह बन्द करके रखे जाने चाहियें। जहाँतक हो सके, आचार जल्दी खाके ख़तम कर देने चाहियें। वर्षों तक पड़े रहने देना ठीक नहीं।

१७—द्विदल ऐसे पदार्थ जिनकी दो फाँक दाल हो सकती हो, जिनको पेरनेसे तेल नहीं निकले और जिनके रोपनेसे फल नहीं होता, २

सबको द्विदल कहते हैं,--जैसे, चना, मूंग, अर-हर, उड़द, बजरा, मक्का, कुलथी, मटर, ग्वार, मसूर आदि। इनकी दाल, पकौड़ी, भाजी चाहे कुछ बनाकर खाइये। इसके साथ अगर दूध, दही या मठेका संयोग होता है, तो तुरत ही दो इन्द्रियोंवाले जीव उत्पन्न होते हैं। छाछ, दूध या दहीको खूब गरम करके अथवा गरम करनेके बाद ठंडे पानीमें मिलाकर किसी विदल पदार्थके साथ मिलानेसे दोष नहीं होता। मेथी ग्वार या अन्य बिना तेजवाले पदार्थों के पत्तोंका साग, मटर, चना, ग्वारकी फली, मूंगकी फली मटरकी फली, हरे चनेके पत्तोंके साग, सुखौंते या आचार अथवा दालमोठ, बुंदिया, गांठिया आदि तले हुए पदार्थों के साथ तथा उड़द, मूंग, आदिके पापड़ या बड़ेके साथ या मेथी पड़े हुए अचारमें कच्चा गोरस (दूध, दही या मठा) नहीं डालना चाहिये। दही-बड़ा अगर उबाले हुए गोरसका हो तो उसी दिन, खाना,

नहीं तो अभक्ष्य है। राई तथा सरसों द्विदल नहीं है, क्योंकि उनमें तेल होता है। सिखर-नके साथ भी द्विदलका स्पर्श नहीं करना चाहिये। स्पर्शदोष टालनेके लिये दाख, केला खजूर वगैरहका रायता भी गोरस गरम करके बनाना चाहिये। यदि गेहूं या बाजरेकी रोटीके साथ कच्चा गोरस खानेकी इच्छा हो तो द्विदल-वाले वर्त्तन, हाथ, मुँह आदि धोकर ही विदल-पदार्थ भोजन करने चाहिये। कहनेका तात्पर्य यह कि किसी प्रकार द्विदल-पदार्थके साथ कच्चे दूध-दही छांछकी छुआछूत नहीं होनी चाहिये। गोरस खूब गरम कर लेनेपर उसके साथ द्विद-लके संयोगसे कोई दोष नहीं होता। इसलिये कढ़ी, वड़े या रायता बनाते समय गोरसको खूब गरम कर लेना चाहिये।

१८ वैगन—सब तरहके वैगन खाना छोड़ देना चाहिये; क्योंकि इसमें बहुत बीज होते हैं-इसके मुँहपर सूक्ष्म त्रस-जीव (कीड़े) होते

हैं। यह काम और निद्राको बढ़ानेवाली चीज़ है। इससे पित्तवाले रोग होते हैं। इसे खाना एकदम मना है। इसका तो आचार वगैरह कभी बनना ही नहीं चाहिये। रोग और पापके इस आगारको तो तिलाञ्जलि ही दे देनी चाहिये।

१६ अनजाने फल—जिस फलका नाम नहीं मालूम हो, जिसे कोई न खाता हो, उसका फल या फूल कभी नहीं खाना चाहिये। उसके गुण-दोषका जब पता ही नहीं, तब कौन जाने वह ज़हर ही हो? इसलिये उसका सदैव त्याग ही करना उचित है।

२० तुच्छफल—जो असार पदार्थ तृप्ति-कारक नहीं हो, जैसे खट्टे जामुन, पीलू, पीचू, गुण्डी, आमकी केरियों, आदि तुच्छ फल हैं। चना, मटर, ग्वार, बाजरा, शमो आदि केवल तथा अन्य फलोंको जो अत्यन्त कोमल होते हैं।
च्छ ही जानना, क्योंकि कोमल अवस्थामें

वनस्पतियां अनन्तकाय होती हैं। इसलिये उनका कोमल अवस्थामें भक्षण करनेसे अनन्तकाय-व्रतका भङ्ग होता है। ऐसी चीजें कितनी भी खा जाओ, तो भी जी नहीं भरता। साथही जो ऐसे तुच्छ फल बहुत खाता है, उसके बहुत रोग भी होते हैं। इसलिये इन सब तुच्छ फलोंका त्याग ही करना चाहिये।

२१ चलित रस—सड़ा हुआ अन्न, बासी रोटी या पूरी, भात, दाल, साग, खिचड़ी, हलुआ, लपसी, भुंजिया, बर्फी, पेड़ा, ढोंकला, (दाल, और चांवलके चूर्णका बना हुआ) आदि खानेकी चीजें एक रात बीत जानेपर बासी-हो जाती हैं-यही नहीं, सूर्यके अस्त होते ही उनके स्वाद, गन्ध, रस और स्पर्शमें परिवर्त्तन हो जाता है और वह "चलित रस" हो जानेसे अभक्ष्य पदार्थ हो जाते हैं। यदि बरसातके दिनोंमें बड़ी उत्तमरीतिसे मिठाई बनायी गई हो, तो उत्तम तो यही है कि उसे पन्द्रह दिनों-

तक काममें लाये, मध्यम यह है, कि २० दिन तक काममें लाये और लाचारी दर्जे एक महीने तक उसे खा सकते हैं। यदि बनानेमें ही कच्ची रह जाये, तो उस दिनकी बनी हुई उसी दिन अभक्ष्य हो जाती है। शास्त्रमें जितना समय दिया हुआ है, उसके बाद पदार्थके चलित-रस हो जानेसे उसमें असंख्य दो इन्द्रियोंवाले जीव उपन्न हो जाते हैं। इसलिये श्रावकोंको चाहिये कि, बासी चीजें कभी न खायें। भोजनकी थालीमें जूठा भी नहीं छोड़ना चाहिये। वल्कि खानेके बाद थाली धोकर पी लेना चाहिये। यदि खानेसे बचा हुआ अन्न किसी जानवरको दे दिया जाये, तो और भी अच्छा है। दिनकी बनी चीजें सूर्यास्तके पहले खा लेनी चाहिये। रातकी बनी चीजें सवेरे खाना उचित नहीं। सवेरे सूर्यकी किरणें निकलनेके वाद चूल्हा जलाना और सूर्यास्त होते ही उसे बुझा देना चाहिये। अर्थात

रातको कभी चूल्हा नहीं जलाना चाहिये।

चलित रसके सम्बन्धमें अन्य सूचनाएं ।

१ आटा—विना छलनीमें चाला हुआ आटा पीसनेके बाद् कुछ दिनोंतक मिश्र (यानी कुछ सचित्त और कुछ अचित्त) रहता है—इसके बाद् वह अचित्त हो जाता है। सावन-भादोंमें विना चाला हुआ आटा पांच दिनोंतक मिश्र रहता है। आश्विन-कातिकमें चार दिन, मगसर-पूसमें ; ३ दीन ; माघ-फगुनमें पांच-पहर ; चैत्र-वैसाखमें चार पहर ; जेठ-असाढ़में तीन पहर। इसके बाद् वह अचित्त हो जाता है। और जिस दिन आटा पोसा गया हो, उसी दिन चाल लिया गया हो तो सभी ऋतुओंमें उसी दिन अचित्त हो जाता है और दो घड़ी बाद् मुनि महाराज भी उसे खा सकते हैं। अचित्त हो गये हुए आटेमें भी वर्ण, गन्ध, रसका परि-वर्तन हो गया हो तो वह अभक्ष्य हो जाता है। अगर उसमें कीड़े पड़ गये हो, तो उसे चाल कर

भी नहीं खाना चाहिये। चौमासेके दिनोंमें आटा हर रोज दोनों वक्त चालना चाहिये और जाड़े गरमीमें एक वक्त। कारण नहीं चालनेसे उसमें जाली पड़ जाती है और वह अभक्ष्य हो जाता है। आटेको हरदम इस्तेमाल करनेके पहले चाल लेना चाहिये। गेहूं और चनेके आटेसे बाजरेका आटा बहुत जल्द बिगड़ता है। इस लिये उस पर ज्यादा ख़याल रखना चाहिये। व्यापारी पुराना अन्न बेचा करते हैं। इस लिये पिसवानेके पहले अनाजको अच्छी तरह देख लेना चाहिये। नहीं तो कितनेही छोटे-छोटे जीवोंके भी पिस जानेका डर रहता है। चौमासेमें तो ख़ास करके हर एक चीज़में कीड़े पड़ जानेका डर रहता है। इसलिये नाजको बराबर देखते रहना चाहिये, इन सब बातोंकी तरफ़ स्त्रियोंको पूरा ख़याल देनेकी जरूरत है। इसमें उनकी बुद्धिमानी है। पहलेतो बड़े-बड़े घरोंकी स्त्रियां भी जीवदयाकी ख़ातिर अपने घरके काम लायक़ आटा आपही

पीसलिया करती थी; पर आजकलके ज़मानेमें तो इसमें अपनी हलकाई समझी जाती है।

२ जलेबी—जिस तरिकेसे जलेबी बनायी जाती है, वह बहुतही ख़राब है। उससे बहुतसे जीवोंकी उत्पत्ति होनेका भय रहता है। मेदेको कई दिन रखे विना और उसमें कुछ खटाई डाले विना जलेबी फूलती नहीं है। इसलिये इसे तो कभी खाना ही नहीं चाहिये। बाज़ारकी तो और भी ख़राब होती है।

३ हलवा—हलवा यदि जिस दिन बने उसी दिन खाया जाये, तो भक्ष्य है। नहीं तो अभक्ष्य है। बासि तो खाना ही नहीं चाहिये।

४ इमरती—यह जलेबीकी सी होती है। पर इसमें बासी या खट्टी मैदानी काममें नहीं आती, अतएव जिस दिनकी बनी हो उस दिन खानेमें कोई हर्ज नहीं है। दूसरे दिन अभक्ष्य हो जाती है।

५ मावा (खोया)—दूधका मावा जिस

दिनका बना हो उसी दिन भक्ष्य है । रातको अभक्ष्य हो जाता है। अगर वह घीमें भून लिया जाये तो रात-भर रह सकता है । उससे पेड़ा, बर्फी, गुलाबजामुन आदि मिठाई उसी दिन बनानी और सिर्फ ५ दिन तक खानी चाहिये। उसके बाद उसका रंग और स्वाद बिगड़ जाता है। कितने ही हलवाई मावेके साथ रतालू आदि कन्द मिला देते हैं। इस बातका ध्यान रखना चाहिये।

६ मुरब्बा—आमका मुरब्बा जाड़ा, गरमी और बरसातके दिनोंमें जबतक उसका रंग, गन्ध, रस और स्पर्श नहीं बदले तबतक खाने योग्य है। जैसाकि आचारके प्रकरणमें लिखा है। अगर वैसीही सफ़ाई और सावधानीके साथ उसे रखा जाये तो ठीक है। मुरब्बेकी चाशनी अगर नरम हो, तो बिगड़ जाती है। पन्द्रह बीस दिनमें ही उसके मुरब्बेमें खराबी आ जाती है। इस लिये ऐसी चीजें बड़ी सावधानीसे बनानी चाहियें।

चौमासेमें तो इन चीजोंकी और भी देख-भाल करनेकी ज़रूरत है। मुरब्बेकी चाशनी नरम हो, तो थोड़े दिनमें मुरब्बा बिगड़ जाता है। नरम चासनीके मुरब्बेमें पन्द्रह-बीस दिनमें ही काईसी जमने लगती है। मुआ उठने लगता है। मुरब्बे या आचारका बर्तन खुला रखनेसे भी खराब होनेका डर रहता है। इसके विपरीत मिठाई या गाँठिया वगैरह बन्द रहनेसे ही खराब हो जाते हैं। चौमासेमें तो हवा लगनेसे भी चीजें बिगड़ने लगती हैं। इसलिये जो चीज़ जिस तरीकेसे रखने योग्य हो, वैसेही रखनी चाहिये।

७ सेव, वड़ी, पापड़ आदि चीजें जाड़े-गरमीमें सूर्योदय होनेपर ही बनानी और सूर्यके अस्त होनेके पहले ही सुखा लेनी चाहिये। नहीं तो वे बासी हो जाती हैं। चौमासेमें तो ऐसी चीजें बनाकर रखना हीं ठीक नहीं, क्योंकि उनमें पीले रंगकी काईसी जम जाती और अनेक त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं। चौमासेमें बने हुए

पापड़ प्रतिदिन फेरफार कर देखते रहना चाहिये। भरसक तो इस ऋतुमें इन्हें काममें नहीं लानाही अच्छा है। ऐसी चीजें बनी रखी हो, तो आषाढ़ सुदी १५ के पहले ही खाडालना चाहिये और फिर कार्त्तिक सुदी १५ के बाद बनाना चाहिये। बाजारकी बनी हुई ये चीजें तो खानी ही नहीं चाहिये। श्राद्ध-विधिमे लिखा है, कि चौमासेमे सेव, बड़ी और पापड़ नहीं खाना चाहिये।

८, दूधपाक—बसौंधी, खीर, सिखरन. दूध मलाई आदि चीजें दूसरे दिन बासी हो जाती हैं। इसलिये अभक्ष्य हो जाती हैं। रातको भी ये चीजें अभक्ष्य होती हैं। दही या दहीकी मलाईके विषयमें भी यही समझना चाहिये।

९, आम—आर्द्रा-नक्षत्रके बाद आमका रस चलित होने लगता है, इसलिये आम अभक्ष्य हो जाता है। सड़े हुए, उतरे हुए, बदबूदार आम एक दम अभक्ष्य हैं। चूसकर खानेकी अपेक्षा रस निचोड़कर खाना ठीक है। यह रस भी

ज्यादा देरतक नहीं रखना चाहिये। यदि चार-छ:या आठ घड़ीबाद खाना हो, तो ठंडे पानीके बर्त्तनमें रसवाला बर्त्तन रख देना चाहिये और ऐसी जगह रखना चाहिये, जहाँ गरमी न लगे। आर्द्रा-नक्षत्रके बाद तो आमका खाना छोड़ ही दना चाहिये।

१०, पापड़ —सेकें हुए पापड़ दूसरे दिन वासि हो जाते हैं। घी या तेलके तले हुए पापड़ दूसरे दिन खासकते हैं।

११, चटनी—धनिये और पुदीनेकी चटनीमें सेके हुए चने या गाँठिया आदि डाल कर जो चटपटेदार चटनी बनायी जाती है। वह जिस दिन बने उसी दिन भक्ष्य है। दूसरे दिन नहीं। नीबू, करौंदी, धनीया, पुदीना आदि चीजोंकी चटनीमें यदि किसी तरहका अनाज न पड़े तो भक्ष्य है। भरसक तो चटनी रोज ही ताजी बना कर खानी चाहिये।

१२, मसाला—आटे या मेथीके साथ बनाया

हुआ मसाला दूसरेही दिन अभक्ष्य हो जाता है।

१३, पकवान—पकवान या मिठाइका जब तक रुप रस या गन्ध नहीं बिगड़े तबतक भक्ष्य रहते हैं। बरसातके दिनोंमें उत्तम रीतिसे बनायी हुइ मिठाइ पन्द्रह दिन गरमीमें २० दिन तथा जाड़ेमें एक महीने तक भक्ष्य रहती है। हलवाईकी दूकानकी मिठाईका समय यह नहीं हो सकता; क्योंकि इसका कोई ठीक नहीं रहता कि उसने कब मिठाई बनायी। अगर वर्ण, गन्ध, रसमें फ़र्क पड़ जाये तो इस समयके पहले ही अभक्ष्य हो जाती है। दूकानकी मिठाईमें बहुतेरे दोष हैं। इसलिये जहाँतक होसके घरपरही बनवानी चाहिये। बरसातमें तो भूलकर भी हलवाई की दूकानकी मिठाई नहीं खानी चाहिये।

१४, बेसनकी चीजें—सेव, गाँठिया, बुंदिया दालमोठ आदि बेसनकी चीज़ोंका समय मिठाईके ही समान जानना। भुजिया, कचौरी, पूरी, मालपुआ आदि नरम चीज़ें तो दूसरे ही दिन बासी हो जाती हैं। इसलिये अभक्ष्य हैं।

१५, चूरमेका लड्डू—यदि तला हुआ न हो तो दूसरे दिन बासी हो जाता है, नहीं; तो दूसरे तीसरे दिन भी खा सकते हैं। बहुतसे लोग चूरमे के लड्डू या अन्य मिठाइयोंमें तिल डालते हैं। तिल अभक्ष्य है इसलिये उसका त्याग करना चाहिये ।

१६, रसोई—गरमीके दिनोंमें सवेरेकी रसोई, (दाल, भात, आदि) शामको स्वाद हीन (चलित—रस) हो जाती है, इसलिये अभक्ष्य है। रोटी—पूरी भी बड़ी हिफ़ाज़तसे रखना चाहिये ।

१७, भात—रींधे हुए भातपर यदि दही या छाछके छींटे डाले जाये तो वह आठ पहर तक भक्ष्य रहता है; पर सवेरेका पकाया हुआ भात इसी तरह दहीके छींटे डाल कर रखा गया हो, तो सिर्फ़ उसी दिन तक भक्ष्य रहता है—सूर्यास्तके बाद वह काम लायक़ नहीं रहता ।

१८, दही—सवेरेका जमाया हुआ दही

सोलह पहर तक काम लायक रहता है। इसके बाद अभक्ष्य हो जाता है। साँझका जमाया हुआ दही १२ पहर बाद अभक्ष्य हो जाता है। इसका हिसाब यों लगाना चाहिये, कि रविवारको दिनमें दस बजे दही जमाया जाये तो उस समयसे नहीं, बल्कि सूर्योदयसे ही समयकी गिनती होगी। वह दही मंगल वारके सूर्योदय के पहले—पहल खालेना चाहिये। इसके बाद उस दहीके छांछका सोलह पहर समय गिना जायेगा। दूधका यदि रंग वगैरह न पलट गया हो, तो वह चार पहर तक पीने योग्य होता है। दोपहर या संध्याके बाद दुहा हुआ दूध हो, तो उसमें रातके बारह बजेके पहले-पहल जोरन (मेलन) डाल देना चाहिये।

बाज़ारका दही नहीं खाना चाहिये; क्योंकि बाज़ारके बर्त्तन-बासनका कोई ठिकाना नहीं रहता—कभी-कभी तो उसमें मरे हुए कीड़े भी मिलते हैं। काँजीका काल भी १६, पहरका

है । इस प्रकार दूध, दही, छाँछ मट्ठे का जो समय कहा गया है । उसके पहले भी यदि उनका रूप, रस, गन्ध विगड़ जाये तो उन्हें अभक्ष्य जानना चाहिये ।

१६, दूध — दूध चार पहर तक भक्ष्य रहता है; पर साँझका दुहा हुआ दूध आधी रातके पहले ही इस्तेमालमें आजाना चाहिये । कभी-कभी गरमीके दिनोंमें कड़ी गरमीमें, बड़ी देर तक बिना गरम किये छोड़ देनेसे बिगड़ जाता है; पर उसे दही समझ कर काममें नहीं लाना चाहिये; क्यों कि उस दूधका वर्णादिक पलट जानेसे वह अभक्ष्य हो जाता है । आजकल बहुत से दूध बेचनेवाले रातको दूध खूब गरम करके उसमेंसे मलाई निकाल लेते हैं । और उसमें अरारोट मिलाकर सबेरे ताजा दूध कहकर उसी को बेचदेते हैं । इसका पूरा ख़याल रखना ।

बिगड़े हुए या वासी दूधका दही, खीर, बसोंधी, मलाई, खोआ आदि नहीं खाना चाहि-

ये। जहाँतक हो सके, तुरतका दुहा हुआ दूध झटपट गरम कर लेना चाहिये, नहीं तो उसके बिगड़नेका डर रहता है। बिना छाने दूध नहीं पीना चाहिये। जैनशास्त्रोंमें इन ७ चीज़ोंका छान लेना बहुत ज़रुरी बताया गया है।

(१) मीठा पानी (२) खारा पानी (३) गरम-पानी (४) दूध (५) घी (६) तेल और (७)आटा।

दुध बेचने वाले अकसर दूधमें पानी मिला देते हैं। उन्हें इसका विचार नहीं रहता, कि उस पानीमें कीड़े हैं या बाल हैं या वह पानी छना हुआ है या नहीं।

गाय, भैंस, बकरी और भेंड़का दूध तो ग्रहण करने योग्य है और किसी जानवरका नहीं। जो दूध जल्द बिगड़ जाता है, वह रोग उत्पन्न करता है।

२०, घी—घीका रुप, रस, गन्ध, स्पर्श बिगड़ जाय, तो वह अभक्ष्य हो जाता है। बहुत दिनका रखा हुआ घी भी बिगड़ जाता है।

आज कल बहुतसे बेईमान घीके व्यापारी चर्बी, रतालू आदि मिला कर घी बेचते हैं। इधर कई दिनोंसे तो "वनस्पति-घृत"के नामसे एक प्रकारका विलायती घी बिकने लगा है। यह सब अभक्ष्य हैं। इसकी ओर सबको ध्यान देना चाहिये। घी बनानेवाले यदि मक्खनसे घी निकाल कर तुरत आग पर रख गरम कर लिया करें तो ठीक है' नहीं तो अक्सर देखा जाता है, कि वे दो-चार या पाँच-सात दिनका इकट्ठा हुआ मक्खन लेकर घी बनाते हैं। जिनके घरमें गाय भैंस हो, उन्हें तो अपने घर घी तैयार करनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

२१—बलि—हालकी व्यायी हुई गाय-भैंसके तुरत दुहे हुए दूधकी बलि बनती है। व्यायी हुई गायका दूध १० दिन, भैंसका १५ दिन, बकरीका ८ दिन तक ग्रहण करने योग्य नहीं है।

२२—खट्टी पकौड़ी—जो चाँवल, उरद या चनेकी दालकी दहीमें पकौड़ी बनायी जाती

है। वह रातकी बनायी हुई अभक्ष्य होती है। सूर्योदयके बाद बनानी और सूर्यास्तके पहले ही खालेनी चाहिये। रोटी, पूरी, दाल, कढ़ी, भुजिया, पकौड़ी या बिना दही छिड़का हुआ भात आदि चीज़े बासी होने पर बिलकुल ख़राब हो जाती हैं। इनके खानेसे अनेक जीवोंके विनाशका भय रहता है, शरीरमें बहुतसे रोग पैदा होते हैं, प्रभुकी आज्ञाका भी उल्लंघन होता है। इसलिये हमको हरएक चीज़ तुरतकी ताज़ीही खानी चाहिये। बहुतसी जगह यह रिवाज है, कि शीतलाष्टमीके दिन चूल्हा नहीं जलाते और रातकी बनी हुई चीज़े दूसरे दिन सवेरे और शामको खाते हैं। यह बिलकुल मिथ्यात्व है। इसे छोड़ देना चाहिये।

२३ दही-बड़े—अगर गरम दहीमें बनाये हों, तो उसी दिन भक्ष्य हैं। कच्चे दहीके बड़े अभक्ष्य हैं।

२४, खाखरा—गुजरात आदि प्रान्तोंमें

गेहूंका खाखरा बना कर सुखा कर रख लिया जाता है और लोग उसे पाँच-सात या अधिक दिनतक खाते रहते हैं । अक्सर लोग उसी बरतनमें ऊपरसे भी खाखरा बना बना कर रखते जाते हैं । ऐसा करना उचित नहीं जिस बर्तनमें रखते हैं, उसे तो हरदम साफ़ ही रखना चाहिये नहीं तो उसमें कितने ही त्रस ज़ीवोंके पैदा हो जानेका डर रहता है ।

२५—पापड़की लोई, बड़ा, मीठी पूरी—उरद, मूंग आदिके बड़े या मीठी पूरी, मुलायम रोटी सवेरेकी बनी हुई हो, तो चार पहर तक खाने योग्य रहती है ।

२६ जुगलीराब—ज्वार या मक्काके आदेको छाँछमें रींध कर जो 'राब' बनायी जाती है उस जुगली राबका समय १२ पहरका है । इसके उपरान्त वह अभक्ष्य हो जाती है । अन्न कम और छाँछ ज्यादा हो तो जुगली राब और छाँछ कम तथा अन्न ज्यादा हो तो 'घाट' कहलाती है । इसका समय ८ पहर है ।

२७ रायता—केला, दाख, खजूर, छुहारे आदिका रायता बनाते हैं। इसका समय १६ पहरका कहा गया है। यदि इसे विदलके साथ खाना हो, तो खूब गरम करके दही डालना चाहिये। सेव, गाँठियाँ, बुंदिया आदि डाल कर रायता बनाना हो तो पहले दही गरम करके तब इन बिदल पदार्थोंको मिलाना चाहिये। यह रायता शाम तक खाने योग्य है।

२८ भूना हुआ अन्न-चावल, चना, मटर, मक्का आदिको भून कर चबेना बनाते हैं। इसका काल-प्रमाण भूंजिया, पूरी, चूरमेके लड्डू आदिके समान है। इसे चौमासेमें १५ दिन, जाड़ेमें १ महीना और गरमीमें २० दिन जानना।

२९ ढुंढणिया-यह काठियावाड़में बनती है। ज्वार-बजरेमें पानी डालते और कूटते हैं। इसके बाद उसे सुखाकर भूसी अलग कर देते हैं। उसका समय वर्षामें १५ दिन, जाड़ेमें १ महीना और गरमीमें २० दिन।

३२ बत्तीस अनन्तकाय।

सभी अनन्तकाय अभक्ष्य हैं; क्योंकि एक सुईकी नोक बराबर जगहमें कन्द-मूलोंकी कलीमें अनन्त जीव रहते हैं। अतएव श्रावकोंको उचित है कि अनन्तकायसे परहेज़ करें। एक जिह्वाके स्वादके लिये अनन्त जीवोंकी हानि करना बहुत ही बुरा है। अनन्तकायका सर्वथा त्याग करनेसे अनन्त जीवोंको अभयदान देनेका फल मिलता है। क्या अभक्ष्य-भक्षण किये बिना हमारा निर्वाह नहीं हो सकता? क्या और वनस्पतियोंका अकाल पड़ गया है? जो लोग प्राण जायें, तो जायें, पर अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाते, वे धन्य हैं। जो अपने बुरे कर्मोंके वशमें पड़ कर जानबूझ कर आँखें बन्द किये हुए, परभवका लेश-मात्र भी भय न मान कर अदरक, मूली और गाजर आदि चीज़ें खाते हैं, उन पापियोंकी न जाने क्या गति होगी? मनुष्यत्वके साथ जैन-धर्मका पालन कर अपना यह भव सफल करो और अन्तमें शिव-सुखके भागी बनो। हे भव्य-पुरुषों! भगवान तीर्थङ्कर महाराजने जो २२ अभक्ष्य पदार्थ बतलाये हैं, उनका शीघ्रतासे त्याग कर, श्रावक नामको सार्थक कर, सच्चे जैन बनो।

बत्तीस अनन्तकायोंके नाम।

१ भूमिके मध्यमें जो कन्द उत्पन्न होते हैं, वे सब तरहके कन्द। २—कच्ची हल्दी। ३—कच्ची अदरक। ४—सूरन। ५—लहसुन। ६—कच्चू। ७—सतावर। ८—विदारी ९—घीकुआर। १०—थुहरीकन्द। ११—गिलोय। १२—

१३—करैला। १४—लोना साग। १५—गाजर। १६—लोढ़ीपद्म-का कन्द। १७—गिरिकर्णी—(यह काठियावाड़में अँचारके काममें आती है, कच्छ देशमें इसकी पैदाइश बहुतायतसे है)। १८—किसलय (कोमलपत्ते) सभी प्रकारके वृक्षके हरे और नये पत्ते तथा वनस्पतियोंके उगनेके समयका अंकुर अनन्तकाय जानना चाहिये। यदि जरुरत हो, तो मोटे पत्ते लेने चाहियें। १९—खीरसुआकन्द (कसेरू) २०—थेगकन्द। २१—मोथा। २२—लोन-वृक्षकी छाल। २३—खिलोड़ कन्द। २४—अमृतवेली।

२५—मूली (देशी विदेशी)—मूलीके पांचों अङ्ग अभक्ष्य है (१) मूलीका कन्द (२) डाल (३) फूल (४) फल (५) बीज ये पाँचों ही अभक्ष्य हैं। इनमे बहुतसे त्रस-जीव उत्पन्न होते हैं।

२६—भुईफोड़—यह बरसातके दिनोंमें छत्रके आकारमें उत्पन्न होता है।

२७—वथुएका साग।

२८—बरुहा—जिसमें विदल धान्यकी तरह अङ्कुर निकल आया हो। रातको जो दाल पानीमें छोड़ी गयी हो और उसमें अङ्कुर निकल आये हो, वह अभक्ष्य है। जो अन्न पानीमें फुलाया जाये वह सवेरे ही फुलाना चाहिये और थोड़े ही देर पानीमें रखना चाहिये। मतलब यह कि अङ्कुर नहीं फुटना चाहिये। अगर अन्नको उवाला जाये, तो अङ्कुर निकलनेका भय नहीं रहता।

२९—पालकका साग। ३०—सुअरवल्ली (जंगली लता)

३१—कोमल इमली, जिसमें बीज न हों, वर्जित है।

३२—आलू कन्द तथा रतालू, पिण्डालू, शकरकन्द, घोषात

की, करे, करीर आदि वनस्पतीयोंके अङ्कुर अनन्तकाय कहे जाते हैं। टिंडेका कोमल फल, वरुण-वृक्ष, बड़ा नीम आदिको भी अनन्तकाय जानना (अङ्कुरावस्थामें)।

इस प्रकार अनन्तकायके ३२ नाम गिनाये गये हैं। प्रसिद्ध तो इतने ही हैं, विशेष नाम तो अनेक हैं। किसी वनस्पतिके पांचों अङ्ग, किसीकी, जड़, किसीका पत्ता, फूल, छाल, या काठि अनन्त काय होता है। किसीका एक, किसीके दो, किसीके तीन, किसीके चार और किसीके पांचों अङ्ग अनन्तकाय होते हैं। जिस वनस्पतिके पत्ते, फल आदिकी नस या सन्धि मालूम न पड़े, गांठ गुप्त हो, तुरत टूटजाये, तोड़ते ही पिचक जाये, पत्ता मोटे दलका और चिकना हो, जिसके फल और पत्ते बड़े कोमल हों उसको अनन्तकाय जानना। यह सब लक्षण एक ही में हों, यह सम्भव नहीं है। कोईका साग भी अनन्तकाय कहा गया है।

अनन्तकायके सम्बन्धमें जानने योग्य बातें।

१—कितने ही धूर्त्त दूकानदार दूध, खोये और घीमें रतालू या शकरकन्द पीस कर मिला देते हैं। इसके बारेमें पूरा ध्यान रखना चाहिये।

२—गीली अदरक या कच्ची हल्दीके स्थानमें सोंठ या सूखी हुई हलदी खानेके काममें लानी चाहिये। इनके सिवा और किसी अनन्तकायका सुखौता भी काममें नहीं लाना चाहिये। इनका अँचार भी वर्जनीय है। गाजरका सुखौता या अँचार तथा ग्रीकुवार, कच्ची हल्दी, अदरक, गिरीकर्णी आदिका आचार अभक्ष्य है।

३ दूकानदार अपने यहाँ लहसुन, प्याज़ वगैरह अशुद्ध चीज़े भी रखते हैं। बाजारकी चटनीमें तो प्रायः लहसुन मिला होता है। साथही वे बासी चीज़ें भी गरम करके ताजीके समान बेंचते हैं। अतएव बाजारू चीजोंके खानेमें कई तरहके दोष हैं। जिस कढ़ाई या तेलमें लहसुन प्याज तले गये हैं, उसमें फिर कोई चीज़ नहीं तली जानी चाहिये। कितने ही लोग दालमें अदरक छोड़ते हैं कितने ही लहसुन-प्याज़से वघारते हैं, कभी कभी लोग दाल या कढ़ीमे हरी इमली डाल देते हैं। इनकी ओर विशेष ध्यान देना चाहिये छुआ-छूतका भी विचार रखना उचित है। अनजानकी बात दूसरी है; पर जान बूझ कर दोष करना ठीक नहीं है।

४ मेथी पालक वगैरहके सागोमें भुआ और लोनीका साग जो अनन्तकाय है, मिले तो उसे निकाल देना चाहिये। अनजाने की बात और हे ।

एक और ग्रन्थमें ये नीचे लिखे बाईस पदार्थ अभक्ष्य बतलाये गये हैं—

(१) गूलर (२) प्लक्ष (३) काकोदुम्बरी (४) बड़ (५) पीपल (इस किस्मके पांच फल); (६) मांस, (७) मदिरा, (८) मक्खन और मधु (ये चारो महा विकृत या महाविगई कहे जाते हैं।) (९) अनजाने फल (१०) अनजाने फूल (११) हिम (बर्फ) (१२) विष (१३) ओले (१४) सच्चित्तमिटी (१५) रात्रि-भोजन (१६) दही-बड़े आदि जो कच्चे दही-दूधमें नाजकी बनी चीजें डाल कर बनाये जायें (१७) बैंगन (१८) पोश्ता (१९) सिंघाड़ (यद्यपि अनन्तकाय नहीं है तथापि काम बृद्धि करता है, इस लिये वर्जित है) (२०) छोटे बैगन और (२१) कायंवानी। २२ खस खसके दाड़े।

पहले कहे हुए २२ अभक्ष्योंके साथ इस ग्रन्थोंमे ११, १८, २०, २१ और २२ नम्बर वाले अभक्ष्य विशेष है, इनका भी त्याग करना चाहिये ।

अभक्ष्य अनन्तकाय दूसरेके घर, अचित्त किया हुआ हो; तो भी नही खाना चाहिये ; क्योंकि एक तो दोष लगे और दूसरे व्यसन पड़ जाये । सोंठ तथा हल्दी नाम तथा स्वादका फेर होने से अभक्ष्य नहीं रह जाते । इन अभक्ष्योंमे भाँग, अफ़ीम आदिकी जिन्हें लत लगी हुई है, उनको चाहिये, कि उसकी नाप-तौल ठीक रखे । रात्रि भोजनके बारेमें चौविहार तिविहार या दुविहारका नियम ले लीजिये, कि एक महीनेमें इतना करेंगे । यदि रोगके कारण दवाके तौर पर कोई अभक्ष्य पदार्थ खाना पड़े तो उसका नाम, समय और वजन भलीभाँति समझ लेना चाहिये । यदि कभी कोई चीज़ अनजानतेमें खा ली जाये, तो उससे व्रतका भङ्ग नहीं होता ।

श्रावकोंको अन्य मतोंके मानने वालो या जाति विरादरी वालोंके यहाँ जीमने जाना पड़े, तो वहुत समझ-वुझ कर जीमना चाहिये; क्योंकि उनके यहाँ २२ अभक्ष्य और ३२ अनन्तकायमेसे कुछका दोष तो अवश्य ही लग जानेका डर रहता है । इसीसे जहाँ तक वन पड़े, वहुत कम आदमियोंसे जान-पहचान रखे, वहीं तक अच्छा है । ख़ास कर द्वादशव्रतधारी तथा विरति-व्रतवालोंको तो ऐसी जगहोंमे जाकर जीमना ही नही चाहिये ।

उधर जो वाईस अभक्ष्योंका वर्णन किया गया है, उसको भलीभाँनि समझनेकी चेष्टा करनी चाहिये । स्वयं भगवान्‌ने उन्हे

भोजनका निषेध किया है, इसलिये उनकी आज्ञाका अवश्य ही पालन करना चाहिये। हमलोग पूजाके समय सबसे पहले माथेमें जो तिलक लगाते हैं, उसका आशय यही है, कि हम प्रतिज्ञा करते हैं, कि हे भगवन्! हम आपकी आज्ञाएँ अपने शिर पर चढ़ाते हैं। इसलिये नित्य ही भगवानकी आज्ञाका पालन करना तथा इस प्रतिज्ञाके चिह्न-स्वरूप तिलक लगाना चाहिये।

इन अभक्ष्य पदार्थोंका वर्जन करके हम असंख्य जीवोंको अभयदान देनेका पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। शास्त्रोंमें लिखा है, कि एक जीवको अभय देना सुवर्णके सुमेरुपर्वतका दान करनेके बराबर है। फिर जो असंख्य जीवोंको अभयदान करते हैं, उनके पुण्यका क्या ठिकाना है? इसलिये हे चतुर और सुज्ञ बन्धुओ! आप लोग भगवानके वचनोंका आदर कीजिये; क्योंकि यही मोक्षका द्वार है। जो यह कहते हैं, कि खाना, पीना, मौज करना ही जीवनका मूल-मन्त्र है, वे पापी और मूर्ख हैं। जो लोग शरीरको दुःखोंकी आँचसे तपाकर महाफलकी प्राप्ति करनेमें लग जाते हैं, वेही शीघ्र मोक्षके अधिकारी होते हैं।

विशेष सूचनाएँ।

बाईस अभक्ष्योंके सिवा और भी कितनी ही चीजें अभक्ष्य हैं। हम नीचे उनका हाल और कब कौन चीज़ भक्ष्य या अभक्ष्य है, उसका वर्णन लिखते हैं।

१—फागुन सुदी १५ से कातिक सुदी १५ तक दोनों तरहके ..., दोनों तरहके तिल, पोस्ता, खारेक, काजू वगैरह मेवे तथा ५ तरहकी पत्तोंकी भाजी अभक्ष्य हैं। फागुनका चौमासा

लगनेके पहले ही तिलका तेल पेरवाकर रख लेना चाहिये ; क्योंकि तिलमें बहुतसे त्रस जीवोंकी उत्पत्ति होती है, इसलिये ८ महीने पहलेसे ही तेल भर कर रख लेना चाहिये । तिल-शक्करी, तिलके लड्डू और रेवड़ियाँ नही खानी चाहिये । पोस्ता बहुबीज है, इसलिये इसका खाना सर्वथा वर्जित है । जिस चीजमें पोस्ताके दाने पड़े हों, वह सब तरहसे श्रावकोंके लिये अभक्ष्य है । अकसर लोक चूरमेके लड्डू घुघुरी आदि मिठाइयोंमें पोस्ताके दाने डालते हैं, इस बातका पूरा-पूरा ख़याल रखना चाहिये ।

होलीके दिनसे ऋतु बदलने लगती है, इसलिये अनेक चीज़ोंमें त्रस जीव उत्पन्न होते हैं । इसलिये इस समय भक्ष्याभक्ष्यका पूरा विचार रखना चाहिये ।

काजू, अंगुर और सूखे अञ्जीर आदिमें जीव पडनेका सम्भव रहता है । अतएव ये अभक्ष्य हैं । ये चीजें जाड़ेके दिनमें ही खानेकीहैं, अतः ८ महीनेतक (कातिक सुदी १५ तक) इनका व्यवहार न कर, उसके बाद करना चाहिये ।

जो शाग-भाजी या पत्ते आदि तरकारी या आचारके लिये रखे जाते हैं, वे आठ महीने बाद अभक्ष्य हो जाते हैं; क्योंकि नव महीनेमें उनमें त्रस जीव उत्पन्न होने लगते हैं ।

जो लोग आठ महीने भाजी या पत्ते नहीं खाते, वे पानके पत्ते भी नहीं खा सकते और कढ़ीमें मीठे नीबूका रस भी नहीं डाल सकते, यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये ।

२—असाढ़ चौमासेसे कातिक चौमासे तक सूखे ...
बदाम, पिस्ता, चिरौंजी, किशमिश, दाख, अखरोट, कुं...

जरदालू, अंजीर, मूंगफली, सूखे नारियलकी गिरी, सुखी रायण, कच्ची खांड़, सूखे अंगुर आदि अभक्ष्य हैं। कारण उनमें तद्वर्ण जीव होते हैं, कुन्थू आदि त्रस जीव पड़ जाते हैं और भुआ या काई जम जाती है। ताज़े तोड़े हुए बदाम, पिस्ता, पानीवाला नारियल उसी दिन काममें ला सकते हैं। जो बदाम या पिस्तेकी मींगी बाज़ारमें बिकती है, वह नहीं खानी चाहिये। एक दिनका फोड़ा हुआ नारियल, जिसका पानी निकाल लिया गया है, दूसरे दिन तक खा सकते हैं अगर उसका रंग बदल नहीं गया हो। कितने ही सूखे मेवे फागुनमें भी अभक्ष्य माने जाते हैं। बात भी ठीक मालूम होती है ; क्योंकि प्रायः देखा जाता है, कि चैत-बैसाखके दिनोंमें काली दाखमें कीड़े पड़ जाते है। इसी प्रकार ज़रदालू, अंजीर वगैरह पदार्थोंमें भी जीवोत्पत्ति हो जाती है, जिससे वे अभक्ष्य समझने चाहिये। बहुतसे व्यापारी गत वर्षकी दाख, अंजीर, बदाम, पीस्ता, चिरौंजी आदि मेवे बेंचते हैं। ख़रीदते समय इनके विषयमें पूरी सम्हाल रखनी चाहिये। जहाँ तक हो सके, ताजे माल ही ख़रीदने चाहियें। नहीं तो जाने-पहचाने हुए व्यापारीके यहाँसे ही मंगवाना चाहिये। नौकर चाकरोंके हाथसे मंगवानेमें तो अकसर धोखा ही होता है।

३—चौमासेमें (असाढ़ सुदी १५ से कातिक सुदी १५ तक हुए सागका * सुखोंता तो सर्वथा त्याग ही करना चाहिये।

---

* आज कलके समयमें प्राय. सब तरहके सागोंको सुखोंता बनानेकी जो [illegible] हो रही है, वह सर्वथा त्याग करने योग्य है। यह कोई शास्त्रीय विधान

कारण, उसमें त्रस जीव पैदा हो जाते हैं। गरमीमें भी सुखौंता वडी हिफ़ाजतसे रखना चाहिये, नहीं तो कीड़े पड़ जाते हैं। चौमासेमें तो इसका ख़ास कर त्याग करना चाहिये।

४—चवेना—चाँवल, गेहूं बाजरा, ज्वार, मक्का, चना आदिका भुना हुआ चवेना कभी नही खाना ; क्योंकि इस प्रकार भुने हुए अन्नमें बहुतसे जीवोंके विनाशका भय रहता है।

५—किसी भी वनस्पतिका भर्त्ता वनाकर नहीं खाना चाहिये

६—पान—इसके खानेसे वहुतसे त्रस जीवोंके नाशका भय है। इसलिये पान नहीं खाना। ब्रह्मचारियोंके लिये तो यह और भी वुरा है। जिनको पान खानेकी आदत लग गयी है, उनको भी कमी करनी चाहिये।

७—चक्कीका आटा—अजकल वड़े-वडे शहरोंमें विदेशी चक्कीका आटा विकता और वाहर भी चालान होता है। कितने दिन वाद भी यह आटा विकता रहता है, अतएव इसमें वहुतसे जीव पैदा हो जाते हैं। अतएव इसका व्यवहार नहीं करना चाहिये। जिस घरमें इस आटेकी चीजें वनी हों, वहाँ खाने नही जाना चाहिये। इस आटे या मैदेकी वनी मिठाई; पुरी, कचौरी, नानखताहो विसकुट, आदिका त्याग करना ही उचित है।

नहीं है। केवल लोगोंने अपने आरामके लिये ही यह प्रथा जारी कर रखी है। मारवाड़ वीकानेरकी ओरके श्रावकोंने तो जमी कन्दके सुखोंतेको भी खाने-की प्रथा चला रखी है। यह तो और भी खराव है। हमारे खयालसे तो किसी मागका सुखोंता वनाना ही नहीं चाहिये। इसमें अनेक तरहके दोष हैं।।

संपादक—

८—मीठा काजू—हलवाई जो मीठा काजू बनाता है, उसको बिना देखे माल बना डालता है, इसलिये उसमें त्रस-जीव होनेकी शङ्का रहती है। इसलिये उसे नहीं खाना चाहिये। यदि खानेकी इच्छा हो तो घरमें बना लो और काजुका छिलका अलग करके भलीभाँति देख लो कि कोई जीव तो नहीं हैं।

९—विलायती दूध—विलायतसे डिब्बेमें भरे हुए नेसलस मिल्क,' 'मिल्कमेड मिल्क' आदि दस-बारह तरहके बनावटी दूध आते हैं, जो मुसाफिरीमें दूधके बदले चायमें डाले जा सकते हैं; परन्तु ये सब तथा शीशेमें बन्द करके आनेवाले आचार, मुरब्बे, गुलकन्द और विलायत बिस्कुट आदि वस्तुएं अभक्ष्य हैं। इसलिये इन सबका त्याग कर देना चाहिये। आजकल हमारे देशमें इतना रोग-शोक इन्हीं सब अभक्ष्य पदार्थोंके खानेसे बढ गया है।

१०—सोडा, लेमोनेट, जिञ्जर, राजबेरी, पिक-मी-अप, विल-कास, एलटौनिक, कोल्ड-ड्रिङ्क, कोल्ड-क्रीम, जिजरेल-लाइम, लीथियो, मरीक, चेरी सीडर, चैम्पियन सीडर, क्विनाइन, टौनिक, क्रीम सोडा आदि कितनी ही चीज़ें बोतलमें बन्द करके आती हैं। इनका व्यवहार करना ठीक नहीं ह। इसका कारण यह है कि इन बोतलोंको मुसलमान, पारसी, आदि सभी मुंहमें लगाते हैं—फिर उन्हें अपने मुंहसे लगाना धर्म भ्रष्ट होना नहीं तो और क्या है? फिर ये न जाने कितने दिनोंकी भरी-भरायी [illegible] धरी रहती हैं। आजलकके अंग्रेजी पढ़े जैन-युवकों-को इस भ्रष्टकारी आदतसे बचना चाहिये।

११—बीड़ी, हुक्का, चिलम, चुङ्गी, सिगरेट, तम्बाकू, गाँजा, चरस, माजून, अफ़ीम, कुसुम्बी, भाँग आदि नशेकी चीजें काममें लाना बुरा है। जीवहिंसा, अनर्थका कारण तथा पैसेकी फ़िज़ूल खर्चीके सिवा इससे और कोई फ़ायदा नहीं है। जिसे नशेकी लत लग जाती है, उसे तो जिस दिन नशा नहीं मिले, उस दिन जान जानेकी नौबत आ जाती है। अन्तमें क्षयरोग हो जाता है और किसी-किसीकी तो नशेकी ही हालतमें जान चली जाती है। इससे अग्नि, वायु तथा अन्य त्रस जीवोंकी हिंसा होती है, इसलिये इन सब व्यसनोंको छोड़ देना चाहिये।

१२—विलायती दवाएं भी अभक्ष्य है। उचित तो यह है कि आदमी रोगका कारण ही पैदा न होने दे। यदि आत्मा बलवान हो, तो क्या नहीं कर सकती? यह स्वर्ग प्राप्त कर सकती है, सिद्धि-सौध (मोक्ष-पद) को भी प्राप्त कर सकती है। कितने ही लोग तो बड़े शौकसे विलायती दवाएं पिया करते हैं, यह बहुत बुरी आदत है। प्रत्यक्ष अनाचार है।

१३—गुड़में जीवकी उत्पत्ति होती है। कितने ही बेईमान व्यापारी नफ़ेके लिये गुड़में चनेका बेशन, खारा या मिट्टी मिला देते हैं। इस लिये खूब परीक्षा करके गुड लेना और खाना चाहिये।

१४—विदेशी खाँड़ बहुत ही अशुद्ध पदार्थोंसे साफ़ की जाती है, इस लिये उसका व्यवहार करनेसे धर्म भ्रष्ट होता है और रोग भी होता है। इसीसे लोग काशी आदिकी चीनी काममें लाने लगे

हैं, पर इसमें भी बेईमानी चल गयी है। परदेशी चीनी स्वदेशी कहकर बेंची जाती है। इसलिये जानी हुई जगहसे ही चीनी लेनी चाहिये, जहाँ इस तरहकी मिलावट नहीं की जाती हो। इसी प्रकार विदेशी नमक, विदेशी केशर भी इस्तेमाल नहीं करनी चाहिये।

१५—खडी दाल—किसी तरहकी दालका अनाज विना दोनों दाल अलग किये नहीं खानी चाहिये।

१६—दिल्लीका हिन्दू-बिस्कुट-दिल्ली, पूना, बड़ौदा आदि स्थानोंमें जो बिस्कुट तैयार होते हैं, उन्हें हमारे कितने ही भाई काममें लाते हैं; परन्तु पहले तो उनके बनानेमें विलायती मैदा काममें लायी जाती है और दूसरे दो-दो तीन-तीन दिन तक पानी में फूलती रहती है, इसके बाद उसके बिस्कुट बनाये जाते हैं। इससे असंख्य संमूर्च्छिम और द्वीरन्द्रियादिक जीवोंकी उत्पत्ति होती है और उनकी हिंसा होती है। कहीं-कहीं तो बिस्कुट तैयार करनेमें चरबी भी काममें लायी जाती है, इसलिये विस्कुट सर्वथा त्याग देने योग्य है। नानखाखताईमें भी विलायती मैदा काममें लायी जाती है, इससे वह भी त्याग देना चाहिये।

१७—टूथ-पाउडर और टूथ ब्रश (दांतका मंजन और कूंची) विलायतसे जो दन्तमंजान आता है, उसे काममें लाना ठीक नहीं न मालूम उसमें कौनसा भक्ष्याभक्ष्य पदार्थ पड़ा होता है। यदि मञ्जन ही लगाना हो तो बदामके छोकलेको जला कर उसकी बुकनीके साथ कपूर, बरास, खड़िया, हरड़, बहेड़ा; आँवला, अनारकी छाल, गेरू, कत्था, मोचरस, हीराकसीस, छोटी हर्रे,

अनारके सूखे हुए फूल, माजूफल, कवावचीनी आदि गुणकारी वस्तुओंको मिलाकर दाँतका वढ़िया मञ्जन तैयार किया जा सकता है। इसके अलावा जानवरोंकी हड्डीके वने हुए व्रूश भी काममें लाना उचित नही हैं।

१८—होटल—होटल, विश्रामगृह, भोजनालय, व्राह्मणोका-वासा आदि नामोंसे कितने ही होटल नगरोंमें खुले हुए हैं। जिससे पूछो वही कहेगा, कि शुद्ध व्राह्मणोंके हाथकी शुद्ध वस्तुएँ वहीं उसीके पास मिलती है; पर न तो उन सभीकी जात-पाँतका कुछ ठीक रहता है, न वहाँ अच्छी चीजें मिल सकती हैं। इस-लिये इन होटलोंमें खाना वहुत ही वुरा हैं। आजकल कुछ लोगों-की मति तो ऐसी भ्रष्ट हो गयी है, कि छुताछूत, भक्ष्याभक्ष्यका विलकुल विचार ही छोड़ वेठे हैं और मुसलमानों तथा किस्तानों-के होटलसे मक्खन और पावरोटी माँग कर खाते हैं। न मालूम ये किस नरकमें जा कर पड़ेगें।

१९—पानी—आजकल जहाँ-तहाँ रास्तेमें और रेल-स्टेशनों पर नलें लगी हैं जिनसे पानी लेकर मुसाफिर अपनी प्यास वुभाते हैं; पर यह वहुत वुरी वात है। विना छना हुआ पानी शराबके वरावर कहा गया है। पीनेका पानी तो जरूर ही छान लेना चाहिये। वर्तन कभी जुंठे नहीं रहने देना चाहिये। पानीके वर्तनमें जुंठे लोटे आदि नहीं डालना चाहिये। जो विना ढक कर नहीं रखा गया हो, उसे पोनेमें वड़ा दोष है। थोडी सी ला परवाहीमे असंख्य जीवोका नाश हो जाता है। इसलिये पानीके विषयमें प्रत्येक भाई-वहनको पूरी सावधानी रखनी चाहिये

वर्जित वनस्पतियाँ।

जिन वनस्पतियोंके खानेसे तृप्ति नहीं होती और साथ ही बहुत हिंसा होनेका भय रहता है, उनके नाम ये हैं—

नाम और वर्जित होनेका कारण

ईख—कितना भी खाइये, तृप्ति नहीं होती। रस चूस कर सीठी फेक देते हैं, उससे बहुत संमूर्च्छिम जीव उत्पन्न होते हैं और मिठाईके मारे चींटी आदि त्रस जीव भी उसके ऊपर टूट पड़ते हैं, जो जानवर या आदमी के पैरों तले पड़ कर मर जाते हैं।

कुम्हड़ा, पेठा, जामुन करौंदा, बेर, गुन्दी — इन सबमें भी संमूर्च्छिम जीवोंकी उत्पत्ति और हिंसाका भय रहता है इसलिये त्याग देना ही ठीक है।

अञ्जीर—इसमें बहुत बीज होते हैं, अतएव त्यागने योग्य है।

शहतूत, फालसे,—कितना भी खा जाओ तृप्ति नहीं होती, इसीलिये वर्जित है।

सिंघाड़ा—कामवर्द्धक हैं, अत: त्याज्य है। तोड़ते वक्त बहुत जीव मरते हैं।

वालोल—ताजा मिलना मुश्किल है, और थोड़ी देर रखनेसे भी उसमें त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं।

दर्शन-विरुद्ध तथा लोक-विरुद्ध वर्जित वनस्पतियाँ।

नाम और—कारण।

चिंचड़ी—लम्बी साँपके आकारकी होती है। अशुद्ध परिणामी है, अतः वर्जित है।

कटहल-फनस—दर्शन-विरुद्ध (माँसपेशी-सी मालूम पड़ती है) होनेके कारण वर्जित है।

कद्दू—मोटाफल होनेके कारण लोग नहीं खाते।

पेठा—लोग इसे कभी-कभी पशुकी कल्पना कर देवीके सामने वलि चढ़ाते हैं। (औषधके लिये हर्ज नहीं है)

कड़वी तुम्वी—कहीं जहरी निकली तो जान ही ले लेती है।

कंटोला, करैला, टिण्डा, टमेटा, कंकोड़ा, — इनमें कीड़े पड़ जाते हैं, किसीमें जीव वहुत होते हैं, तो किसीमें वीज। इसलिये इनका त्याग ही उचित है।

महुआ—इसीके फलसे शराव चुलायी जाती है, इसलिये वर्जित है।

वहुतसे त्रस जीवोंकी हिंसासे वचना हो, तो नीचे लिखी वनस्पतियोंका और भी त्याग करना उचित है,—

श्रीफल (वेल)-का फल या मुरब्बा अथवा वाँसका आचार वर्जित है, स्त्रियोंके लिये तो ख़ास कर मना है। इनसे रोग भी उत्पन्न होते हैं।

फागुन सुदी १५ से कातिक सुदी १५ तक जिनकी भाजी या पत्तोंका साग जीव हिंसाके कारण खाना मना है उनके नाम—

मेथीका साग, ताँदड़ी, धनिया, पुदीना, भिंडी, केला, नागर-वेल, अरवी, कन्दा, सूरन, नीमके हरे पत्ते, पोईका

चीके पत्ते, चाय, गुलाबके फूल, तुलसीके पत्ते, अजवाइनके पत्ते आदि ८ महीनेतक वर्जित हैं। गोभी और करमकल्ले (पत्तागोभी) में भी बहुतसे त्रस जीव उत्पन्न होते हैं, जो मालूम नहीं पड़ते। जाड़ेके दिनोंमें इन्हें अच्छी तरह देख भाल और झाड़-पोछ कर काममें लाना चाहिये। सब तरहकी तरकारी बहुत सावधानीसे खानी चाहिये।

आर्द्रा-नक्षत्रसे ही त्यागने योग्य वनस्पतियाँ—

आम—आम स्वादिष्ट फल है, इसलिये बहुतसे लोग आर्द्रा-नक्षत्रके बाद भी खाते हैं; पर यह भगवान्‌की आज्ञाका उल्लंघन करना है, इससे असंख्य जीवोंका नाश होता है, जिससे अन्तमें दुर्गति होती है। इससे आर्द्रा-नक्षत्रसे ही इसका खाना छोड़ देना चाहिये।

चौमासेमें वर्जनीय वनस्पतियाँ।

भिण्डी, कंटोला, करैला, तुरैया, — यों तो अन्य ऋतुओंमे भी त्रस जीव उत्पन्न होते हैं; पर चौमासेमें तो ख़ास कर बहुत पैदा होते हैं। करैला वगैरह तो ऊपरसे जरा भी सड़े नहीं मालूम पड़ते; पर उनके अन्दर कीड़े होते हैं। कहीं भूलसे जीवहिंसा न हो जाये, इसीलिये चौमासेमें वर्जनीय है। यदि कोई साग या भाजी खानेकी आवश्यकता ही हो, तो उसे भलीभाँति देखकर, वनारना खाना चाहिये।

व्यवहारमें आनेवाली बनस्पतियाँ ।

शाकके काममें—	फलके तौर पर
१ ककड़ी	तरबूजा
२ करेला	मीठे नीबू
३ कंटोला	पपीता
४ तिनुआ	अननास
५ ग्वारकी फली	नासपाती
६ गूंदा	अमिया
७ हरे चने	जमरुद
८ हरेज्वार	कोठ
९ चौराई	केला
१० टमेटा	अनार
११ टिण्डा	आँवला
१२ ड़ाला	नारङ्गी
१३ डोडी	नरियल
१४ खरबूजा	पीनस
१५ तरोई	अंगुर
१६ थूहर	बिजौरा
१७ दातोन (बबूल, ग्रारेडी आदि)	
१८ दूधिया	
१९ परवल	
२० पत्तेका साग	

२१ फलसी

२२ भिण्डी

२३ हरी मिर्च

२४ मरवा

२५ मोगरा

२६ खट्टे नीबू

२७ मटर

२८ आलकुल

ऊपर जिन वनस्पतियोंके नाम लिखे हैं, इनमें भी जिनका त्याग करते बने, करना चाहिये। जो वनस्पति बारहों महीने मिलती हो, उसका उपयोग करना, जैसे—केला। इसके सिवा प्रत्येक हरी साग-सब्जी अमुक समय तक खानी, फिर नहीं; इसका ध्यान रखना चाहिये। जैसे कार्त्तिक महीनेमें अमुक-अमुक चीजे खानी चाहिये, परन्तु यदि उनका बारह महीनेका आश्रय ले रखे, तो विरतिपनका फल मिलता है; क्योंकि आम जाड़ेके बाद चैतसे आर्द्रा-नक्षत्र तक खाना चाहिये, फिर नहीं। इस प्रकार नियम कर लेनेसे बड़ा लाभ होता है। नियम लेनेके बाद प्रति वर्ष कुछ चीज़ोंका सर्वथा त्याग करना होगा। ऐसा करनेसे त्याग और अभयदानकी भावना प्रबल होती है। जबतक नियम नहीं किया जाता, तबतक कोई फल नहीं मिलता। श्रावकोंको तो चाहिये कि छओं "अट्ठाईयोंमें" * तो वनस्पतियोंका एकदम त्याग करदें।

* चैत्र और आश्विनकी दो अट्ठाई शाश्वती हैं। वह चैत छदी ७ से १५

कमसे कम पाँच पर्वो तिथियोंमें—जैसे शुक्र पंचमी, दोनों अष्टमी, दोनों चतुर्दशी और अन्य उत्तम पर्वोंकी तिथियोंमें तथा दोनों दूज, दोनों अष्टमी, दोनो चतुर्दशी, अमावास्या और पूर्णिमा तथा मध्यम रुपसे आठ या दश पर्वतिथियोंमें अवश्य ही हरियाली यानी साग-सब्जीका त्याग करना चाहिये। कितने ही लोगों इन तिथियोंमें पके केलोंका उपयोग करते हैं, वह अचित्त है। उसके सिवा और कोई वनस्पति इन दिनोंमें काममें नहीं लानी चाहिये।

सामान्य रीतिसे कहा गया है, कि अनजाने फल, विना भलीभाँति देखे-भाले हुए साग या पत्ते, सुपारी आदि सम्पूर्ण फल वाजारके चूरन, चटनी, मलिन घी और विना परीक्षा किये हुए अन्य पदार्थोंके खानेसे मांस भक्षणका दोष लगता है। चौमासेमें तो जिस दिनकी तोड़ी हुई हो, उसी दिन सुपारी खाये फिर नहीं इसी तरह इलायची भी देखकर ही खानी चाहिये। चौमासेमे पीपरामूल, सोंठ आदि भी नहीं खाना चाहिये। दवाके लिये व्यवहार करना हो तो भली भाँति देख लेना चाहिये।

तथा आसोज सुदी ७ से १५ तक, होती है। तीन चौमासेकी तीन अट्ठाई—पहली कार्तिक सुदी ७ से १५ तक दूसरी फाल्गुन सुदी ७ से १५ तक और तीसरी असाढ सुदी ७ से १५ तक जाननी चाहिये। पर्युषणा पर्वकी अट्ठाई श्रावण वदी १२ से भादों सुदी ४ तक होती है। इस प्रकार छः अट्ठाइयां बतलायी गयी है। इन दिनोंमें सचित्त पदार्थों एव वनस्पतियोंका त्याग, अमारी, तप, जिनपूजा, गुरुवन्दन, व्याख्यान-श्रवण, समायिक, पौष-धि-सविभाग आदि नियमों का अवश्य ही पालन करना चाहिये।

जानने योग्य विषय।

अब जिन लोगोंने सचित्त पदार्थोंका सर्वथा त्याग कर रखा है, उन्हें यह बतलाया जाता है कि कौन-कौन चीजें सचित्त हैं और वे कैसे अचित्त बनायी जा सकती हैं तथा उनका व्यवहार कितने समय तक किया जाना चाहिये।

१ गेहूं, बाजरा आदि नाज सचित्त है; पर कुछ काल बाद अचित्त हो जाते हैं। उसका वर्णन श्राद्धविधि आदि ग्रन्थोंमें देखना चाहिये। मेथी भी अनाज है, यह याद रखना चाहिये। इन अनाजोंका आटा पीसने पर वह कैसे अचित्त होता है, यह हम पहले ही लिख चुके हैं। जबतक वे सचित्त रहते हैं, तबतक उनको काममें नहीं लाना चाहिये। चने आदिकी दाल अचित्त है; इसलिये उसका आटा (बेसन) भी अचित्त है।

२ ताजे ज्वार या चनेका चबेना मिश्र (अर्थात् सचित्त और अचित्त) है, अतएव नहीं व्यवहार करना।

३ सभी अभक्ष्य वस्तुएं सचित्त हैं, अतएव उनका त्याग करना अत्यन्त आवश्यक है।

४ सिंके हुए चने तथा और अनाज बालूमे भूने हुए हों तो बराबर अचित्त बनते हैं। अन्यथा कामके लायक नहीं होते।

५ धनिया, जीरा अजवाइन आदि कूट-पीस कर या आँच दिखानेसे अचित्त हो जाते हैं और तब व्यवहारमें लाये जा सकते नहीं। दही, छाँछ आदिमें पडा हुआ सचित्त जीरा प्रासुक होता।

६ वरियाली भी सचित्त कही जाती है ; क्योंकि जो चीज़ें बोनेसे पैदा होती हैं, वह सचित्त हैं। अतएव सूखी वरियाली भी यदि सेकी हुई हो तभी काममें ला सकते हैं।

७ नमक भी सचित्त है, परन्तु भूमिकायमें लिखे अनुसार अचित्त होनेपर व्यवहारमें ला सकते हैं।

८ लाल सेंधानमक सचित्त है—सफेद सैंधव अचित्त है।

९ खड़िया भी सचित्त है। यह खानेके काममें तो नहीं आती पर मंजन बनानेके काममें आती है। इसे पहले कहे अनुसार अचित्त बनाकर व्यवहार करना चाहिये। केम्फर-चाँक आदि जो चीजें आती हैं, उनका व्यवहार नहीं करना चाहिये, क्योंकि मालूम नहीं, वे किस प्रकार बनायी जाती हैं।

१० "चलित रस" शीर्षकके नीचे जिन चीजोंकी सूची दी हुई है, वे सब सचित्त हैं और इसीलिये अभक्ष्य हैं।

११ उबाल देनेपर पानी अचित्त हो जाता है। जहाँ जीव पड़नेका डर हो, वहाँ पानी कपड़ेसे ढककर रखना चाहिये। चौमासेमें गरम किया हुआ पानी भी सिर्फ ३ पहर तक काममें ला सकते हैं। बादमें सचित्त हो जाता है।

१२ तरह-तरहके शरबत, सोडा गुलाबजल, केवड़ाजल, आदि कभी व्यवहारमें नहीं लाना चाहिये।

१३ अंग्रेजी दवाएँ जो अर्ककी तरह हों, कभी नहीं लेनी। अगर लाचारी लेना ही पड़े तो प्रायश्चित्त भी करना चाहिये।

१४ बर्फ आदि एकदम अभक्ष्य है।

१५ बबूल आदिके हरे दाँतौन सचित्त हैं।

१६ ताम्बूल, नीमपत्ते, तुलसी, इलायची आदिके पत्ते सचित्त होनेके कारण व्यवहारमें नहीं लाने चाहिये। परन्तु नीमके पत्ते कढ़ीमें डाले जायें या नागर बेलका पत्ता घी आदिमें गरम करके डाला गया हो, तो वह चीज अचित्त और व्यवहारमें लाने योग्य हो जाती है।

१७ नीम और आमकी मोजरें, तथा गुलाब आदिके फूल सचित्त हैं, इसलिये व्यवहार नहीं करना चाहिये। गुलाबके फूल मिठाइयोंपर छिड़कते हैं, वह अचित्त होनेपर व्यवहार करना कहा है।

१८ धनिये या पुदीनेकी चटनीमें वनस्पति और नमक दोनो ही सचित्त हैं; पर पीस देनेसे वे दोनों दो घड़ी बाद अचित्त हो जाते हैं, इस लिये २ घड़ीके बाद खाना चाहिये।

१९ पिसे हुए मसाले, जिनमें नमक मिला हो या आँचार भी दो घड़ी बाद खाये जा सकते हैं; परन्तु ग्वार आदिके अँचारके अचित्त होनेमें देर लगती है; क्योंकि उनके अन्दर बीज होते हैं, इसलिये उनपर नमकके शस्त्रका शीघ्र प्रभाव नही पड़ता।

२० अनार और अमरुद भी सचित्त हैं, ये दो घड़ी बाद अचित्त नहीं होते, इसलिये इनका सर्वथा* त्याग करना चाहिये।

---

*सर्वथा त्यागके २ भेद हैं—एक सर्वथा-सचित्त त्याग और दूसरा सर्वथा-त्याग जिन्होंने सचित्तका सर्वथा त्याग किया है, वे तो उसे आग आदिके द्वारा अचित्त कर व्यवहारमें ला सकते हैं; पर जिन्होने अनार और अमरुद

सचित्त तो कभी व्यवहारमें नलाये। हाँ, यदि अग्निके द्वारा अचित्त कर लिया जाये, तो व्यवहार कर सकते हैं। अमरूदको आग दिखानेसे भी उसका बीज कठोर ही रहता है, इससे मिश्रताका दोष लगता है।

२१ ईख और शहतूत सचित्त हैं। इसलिये सर्वथा त्याग करना चाहिये, ईखका रस निकालनेके दो घड़ी बाद अचित्त हो जाता है।

२२ सीताफलको तो सचित्त त्यागियोंको अवश्यही त्याग देना चाहिये; क्योंकि वह तो कभी अचित्त होही नहीं सकता कारण, उसमेंसे बीज अलग नही हो सकते, इसी प्रकार जाम्बु, रायण, बोर, हरेबदाम या अंगुर आदि विना बीज निकाले नही खाना चाहिये।

२३बीजवाले केले भी सचित्त हैं, इन्हें भी नहीं खाना चाहिये। पके हुए केले छिलका उतार लेनेसेही अचित्त हो जाते हैं।

२४ पके हुए ककड़े या ख़रवूजेके कुल बीज निकाल कर दो घण्टेके बाद खाना चाहिये।

२५ ककड़ीके बीज अलग नहीं किये जासकते, इसलिये सचित्त नहीं खाना, पर तरकारी आदिमे अचित्त है। इसलिये खाना चाहिये।

२६ आमका रस निकाल, गुठली फेकनेके बाद दो घड़ीके अनन्तर खाना चाहिये।

आदि वस्तुओंका ही त्याग किया है, उन्हे तो सचित्त या अचित्त कोई नहीं खाना चाहिये।

२७ नारियलका पानी या गरीसे बीज निकाल देनेके दो घड़ी बाद व्यवहारमें लाना चाहिये ।

२८ पकी इमली, खजूर या पिनखजूरके भीतरका बीज निकाल कर दो घड़ी बाद काममें लाना चाहिये ।

२९ सुपारी पूरी तोडकर * और बदाम तथा अखरोट बीज निकालनेके दो घड़ी बाद खाना चाहिये । कितनी ही चीजे तुरत अचित्त हो जाती हैं; पर अपनेको इसका ठीक ज्ञान नहीं, इसलिये दो घड़ी बाद ही उपयोग करना चाहिये ।

३० पिस्ते या जायफलका छोकला उतार लेने पर अचित्त है

३१ काला मुनक्का या लाल मुनक्का जिसमें बीज हो, उसे बीज निकाल कर दो घड़ी बाद खाना ।

३२ जरदालूके भीतरकी गुठली निकाल कर दो घड़ी बाद खाना चाहिये । यदि उसके भीतरके बदाम हो,तो उसे भी तोड़कर दो घड़ी बाद खा सकते हैं ।

३३ पेड़ परसे तुरतका उतारा हुआ गोंद दो घडी बाद अचित्त हो जाता है ।

३४ सूखे अंजीरके बीज तो निकाले नहीं जा सकते । अतः अंजीरका सर्वथा त्याग करना चाहिये ।

३६ सचित, त्यागीको उचित है, कि यदि अचित्त पानीके करनेका अवसर न मिले, तो पानीमें थोड़ी-सी शक्कर या राख डाल देनेसे वह पानी दो घड़ी बाद अचित्त हो जाता है ।

ऊपर देखी हुई सचित-सम्बन्धी सूचनाओंकी और सचित्त-

इच्छा हुई तो उस इच्छा-मात्रसे अतिक्रम हुआ ; जिस स्थान पर हो वहाँसे पानी पीनेके स्थानपर जाये, तो व्यतिक्रम-दोष लगता है ; वर्तमानमें पानी लेकर मुंहके पास ले आये ; पर पिये नहीं तो अतिचार-दोष लगता है, और जब पानी पी डाले तब अनाचार हो जायेगा । इसलिये व्रत पालनेवालोंको तो चाहिये, कि ऐसी चेष्टा करे । जिसमें अतिक्रमका भी दोष न लगे । इस नाशवान शरीरके मोहमे पड़कर उभयलोकमें सुख देनेवाले व्रतको तो प्राणोंसे भी बढ़कर समझना चाहिये । आगमें कूद पड़ना अच्छा पर व्रतका भङ्ग करना अच्छा नहीं होता ।

चँदोवा ।

प्रत्येक श्रावकके घर नीचे लिखे १० स्थानोंमें चाँदोवे या छप्पर जरूर बांधने चाहिये—

(१) चूल्हेपर (२) पानीके पन्डेरे पर (३) भोजनके स्थानोंमें (४) चक्कीकी जगह (५) खाने-पीनेकी चीज पर (६) दूध-दहीके ऊपर (७) सोनेके बिछोनेके ऊपर (८) स्नान करनेकी जगह (९) समायिक आदि धर्म-क्रियाके स्थानमें (पौषधशालामें) और मन्दिरमें ।

सात प्रकारके छनने रखना चाहिये ।

(१) पानीका छनना । (२) घीका छनना । (३) तेलका छनना । (४) दुधका छनना । (५) छाँछका छनना । (६) म किये हुए अचित्त पानीका छनना । (७) आँटा चालनेका छाननेकी चलनी ।

इनके द्वारा हम बहुतसे जीवोंका हिंसासे बच सकते हैं। जैनशासनका यही उपदेश है, कि वही पुरुष धन्य है, महान है पुण्यवान् है, तेजवान है, सुखी है, भाग्यशाली है, जोकि जीवदया का भली भाँति पालन करता है।

अब सक्षेपमें यह समझ लीजिये कि कैसे वर्त्तनमें और किस प्रकार भोजन करना चाहिये।

जो दोष रात्रि भोजनमें है, वही अंधेरेमे भोजन करनेमें भी है। ठीक वैसा ही दोष छोटे मुंहवाले लोटे आदिमें पानी पीनेमें भी है, जिसके भीतर नजर न पहुंच सके।

काँसा या कलईवाले ताम्बे पीतलके वर्तन काममें लाने चाहिये। टीनपर कलई किये हुए वर्त्तन तो कभी किसी जैन या हिन्दूको व्यवहारमें नहीं लाना चाहिये। लोहे या टीनके वर्त्तन त्याज्य हैं। केले आदिके पत्तेपर भी भोजन नहीं करना चाहिये। दिनको भी यदि अंधियाला हो तो नहीं खाना चाहिये। उजेलेमें स्वच्छ वर्त्तनमें, भक्ष्याभक्ष्यका विचार करते हुए स्थिरचित्त हो बिना बोलेचाले भोजन करना चाहिये। खाते-खाते बातें करनेसे ज्ञानावरणीय कर्मबन्ध होता है। दूसरी ओर ध्यान चले जानेसे भोजनमें मक्खी आदि त्रस जीव पड जानेका भय रहता है। अगर कहीं ग्रासके साथ मुंहमें मक्खी चली गयी तो के हो जाती है। अगर बोलनेकी जरूरत ही पड़ जाये तो पानीसे मुंह शुद्ध करके बोलना चाहिये। सदा देख-भाल कर अच्छा और परिमित भोजन करना चाहिये। दो तीन आदमी एक साथ नहीं खाना चाहिये

भोजन करते समय दूसरी धोती पहननी चाहिये। और हाथ पैर धो कर खाने बैठना चाहिये। जो प्रभुकी नित्य पूजा करनेवाले हैं, उन्हें तो बराबर राखसे हाथ शुद्ध कर लेना चाहिये। मिट्टी सचित्त है, इस लिये राख ही काममें लानी चाहिये। खुली जगहमें जिसके ऊपर छाननी न हो, भोजन नहीं करना चाहिये। घी, गुड़, दूध, दही, मठा, दाल तरकारी और पानीके वर्त्तन क्षण भर भी खुले नहीं छोड़ने चाहिये। श्रावकको उचित है, कि थोड़ी भूख रहते ही खाना खतम कर दे; यानी जितना चाहिये, उससे कम ही भोजन करे अथवा जितनी भूख हो, उतना ही खाना चाहिये। थालीमें जूठन नहीं छोड़नी चाहिये। भरसक तो खा-पी कर थाली धो कर पी लेनी चाहिये। थाली धो कर पीनेसे आयंबीलका फल होता है। मुनिमहाराजको शुद्धता-पूर्वक आहार करानेके बाद आप इसी प्रकार शुद्धताके साथ नित्य आहार करनेसे अमृतके समान फल मिलता है, नहीं तो अवश्य ही विषके समान फल होता है।

जूठा वर्त्तन देर तक नहीं पड़े रहने देना, उसे तुरत आप धो लेना या नौकरसे धुलवा लेना चाहिये। अन्यथा, उसमें बहुतसे जीवोंकी उत्पत्ति हो सकती है।

स्त्रियोंके ध्यान देने योग्य बातें।

जैसे राज्यमें मन्त्री प्रधान होता है, वैसे ही घरमें स्त्रीकी धानता होती है। इसलिये उनको इस अभक्ष्य-अनन्तकायका

वर्णन भली भाँति पढ़ कर व्यवहारमें लाना चाहिये। यदि वे नीचे लिखी बातोंकी ओर ध्यान दें तो अपना पराया सबका कल्याण कर सकती हैं।

१—सूर्योदयके पहले कभी चूल्हा नहीं जलाना। पहले सारा घर झाड़-बुहार करके तब कोई काम शुरू करना चाहिये।

२—प्रति दिन सवेरे घर द्वारकी सफाई और वर्तनोंकी मंजाई धुलाई होनी चाहिये। लकड़ी आदि भी ख़ास करके बरसातमें, देख लेनी चाहिये। क्योंकि अकसर उसमें जीव पड़ जाते हैं, जो बिना देखे जल जा सकते हैं।

३—रसोई करके वर्तन वासन तथा घी, मसाला, तेल, दूध, दही, रोटी, पूरी, पानी आदिके वर्त्तन खुले नहीं रखने चाहिये। उच्छिष्ट पदार्थको तो तुरत हटा देना चायिये, नहीं तो उसमें बहुतसे संमूर्च्छिम जीव पड़ जाते हैं।

४ नमक और मसाले भरसक शीशेके वर्त्तनोंमें रखने चाहिये। बरसातमें मिर्चमें तो वैसे ही जीव पड़ जाते हैं और कहीं भूलसे बिना देखे-भाले खानेकी चीज़में वह मिर्च डाल दी, तो जीवहत्याका पाप अलग लगे। शाक या दालमें डालनेके पहले मसाला, चाय दूधमें डालनेके पहले चीनी, दाल, शाक, रोटी के साथ काममें लानेके पहले घी भली भाँति देख लेना चाहिये।

५—शामको सूर्यास्तके पहले ही चूल्हा ठंडा कर देना चाहिये। बासी चाजें तो न कभी खुद खानी, न बच्चोंको खिलानी। इससे धार्मिक ही नहीं शारीरिक लाभ भी है।

६—यदि तुम्हारे पास धन है तो उसे पूर्व पुण्योंका उदय समझो और जो काम नौकरों द्वारा करवाना हो, उसे ठीक समझ बूझ कर करवाना चाहिये। कारण आप जैसे जयणा पूर्वक काम करेंगे, वैसे वह नहीं कर सकेगा। जैसे आप साग न बनावें, तो नौकर सागके साथ साथ न जाने कितने जीवोंको मार डालेगा। पानीमें भी गोलमाल कर सकता है। अतएव जो काम अपनेसे न हो सके, उसीके लिये नौकरोंको पुकारें यही हमारे लिये उचित है।

७—चार 'महाविगइ'का अवश्य ही त्याग करना। बरफ, मलाईकी बरफ आदिका व्यवहार नहीं करना। बच्चोंको अफीम न खिलाना। कच्ची मिट्टी या नमक न खाना। आलस्य छोड़ कर नमकको अचित्त बना लेना। रातको भोजन नहीं करना। तिलों और पोस्तके दानोंका त्याग करना; जहाँ तक हो सके चटनी, आँचार वगैरहका चटोरपन छोड़ना और दूसरोंसे भी छुड़वाना; विदल वस्तुओंका ख़ास ख़याल रखना तुम्हारा ही काम है। यदि पुरुष विरतिवान न हों, तो तुम उनको वैसा बना सकती हो। बैंगन बग़ैरहका भुर्त्ता बना कर नहीं खाना-खिलाना। झड़बेरी या खट्टे जामुन न खाना। गाली, निन्दा आदि बुरी बातें न करना धर्मके कामोंमें लगी रहना। जिन चीजोंका रस विगड़ गया हो, या जो बासी हो गयी हो, उन्हें कभी काममे न लाना। आटा, मुरब्बा, आँचार, सेव, बड़ी, पापड़ आदिके विषयमें जो कुछ पहले लिखा गया है; उस पर पूरा ध्यान देना। अनन्तकाय—

का त्याग करना। कच्ची हल्दी, अदरख, लसुन वगैरह बीमार पड़ने पर भी न खाओ। फागुनकी चौमासा शुरू होनेके पहले ही आठ महीनेके लिये साफ़ बर्त्तनमें तेल भरवा रखो। असाढ़से शुरू होनेवाले चौमासेमें खांड़, काजू, बदाम, पिस्ता, दाख आदि-को काममें लाना बन्द कर दो। सूखे आँचार आदि असाढ़के चौमासेके पहले ही खा कर ख़तम कर दो। हरे बाँस, बेल, केर नागर बेलके पान और मेदेसे परहेज करो। आटा या सोजी बाजारसे नहीं मंगवाओ। घरमें पीस लेनेमें मिहनत तो पड़ेगी, पर अनेक जीवोंका आशीर्वाद मिलेगा। पानीको बहुत ख़र्च न किया करो और बिना छाने काममें न लाओ।

८—पर्वके दिनोंमें दलना-मलना, पीसना, तोड़ना, धोना-माँजना, सिर गूंथना, मठा निकालना, गोबरके कण्डे पाथना आदि मना है। छहों अट्ठाइयोंके दिन भी ये सब काम करना मना है।

६—मिथ्यात्व-लौकिक पर्व—आसाढ़की पूनो, रक्षाबन्धन, नवरात्र, होली, संक्रान्त, गणेशचौथ, नागपञ्चमी, राँधन छठ, शीतलासप्तमी (जिसमें बासी चीजें खायी जाती हैं) गोपाष्टमी, नोलीनवमी, अहबादशमी, भोम-एकादशी, धनतेरस, अनन्तचौदस सोमप्रदोष, सोभवती अमावस, बुधाष्टमी, दसहरा, मुहर्रम, बक-रीद आदि पर्व मिथ्यात्वके हेतु और अनर्थकारी हैं, अतएव इन्हें त्याग देना।

१०—रोने-कूटनेकी चाल, दसें, ग्यारहवें, बारहवें, ते[illegible] का सूतक मानना, गृहप्रवेश, अधरणी (पहले पहल गर्भ

उत्सव मनाना), श्राद्ध, बाल-विवाह आदि रिवाज छोड़ देने योग्य हैं।

प्यारी बहिनो ! इन बातों पर अवश्य ही ध्यान देना। इससे आपका बहुत उपकार होगा।

चौदह स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाले संमुच्छिम जीवोंकी हिंसा, जो मनुष्यकी असावधानीसे हो जाती है। इसके विषयमें पूरा ध्यान रखना चाहिये।

१—जो लोग छोटे छोटे गाँवोंमें रहते हैं, जिनके गाँवके पास नदी, तालाव, जंगल, खेत वगैरह हों, उन्हें चाहिये कि पायखानेके अन्दर न जा कर दिशा-फरागतके लिये बाहर मैदानमें चले जाया करें। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी यही उचित है और धार्मिक दृष्टिसे भी, क्योंकि बन्द पायखानोंमें बहुतसे संमूच्छिम मनुष्य पञ्चेन्द्रिय जीवोंकी उत्पत्ति और नाश हुआ करते हैं। अगर पायखानेमें रोगी जाते हों, तो उनका रोग औरोंको भी हो जा सकता है। इसीलिये मैदानमे जाना चाहिए। वहाँ भी यह देख लेना चाहिए कि कोई कीड़े मकोड़े तो नहीं है। गीली जमीन भी बचा देनी चाहिये।

२—पेशाब भी ऐसी जगहमें करना चाहिये, जहाँ जल्द सूख जाये। किसीके पेशाब किये हुए स्थान पर पेशाब नही करना चाहिये। मोरी, पनाले वगैरहमें पेशाब करनेसे भी संमू-
ेम मनुष्य पंचेन्द्रिय जीवों तथा कीडे आदि त्रस-जीवोंकी

उत्पत्ति होती और विनाश होता है। इसलिये भरसक पायखाना-पेशाब तो ऐसी ही जगह करना, जहाँ वह झट सूख जाय।

३—मुंहसे थूक-खखारके करने, नाक छिनकते, कै करते, कानका मैल या पीव निकालनेमें अथवा शरीरके किसी हिस्सेसे खून, या पीव निकाल कर फेंकनेमें यह खयाल रखना चाहिये, कि वह ऐसी जगह गिरे जहाँ झट सूख जाये। दिन हो तो सूर्यकी धूप जिस स्थान पर पड़े, वहीं फेंकना और उसके ऊपर राख तो हर हालतमें डाल देना प्रत्येक विवेकी धर्मात्मा पुरुषको इस विषयमें पूरा ध्यान रखना चाहिये। ऐसा नहीं करनेसे अनेक सम्मूर्च्छिम पचेन्द्रिय जीव पैदा हो कर मरते हैं।

४—स्नान करनेके पहले तेल लगा लेना उचित है। बंधे हुए पानीमें न नहा कर बहते हुए पानीके सोतेमें नहाना चाहिये। भरसक तो श्रावकोंको नदी, तालाब, कुण्डल आदिमें कभी नहाना नहीं चाहिये, क्योंकि इससे अनेक जीवोंकी हिंसा होती है। पानीका परिमाण भी नहीं रहता। कभी कभी तो भयंकर जल जीवोंसे प्राण जानेका भी भय रहता है। श्रावकको तो बिना छाने हुए पानीसे कभी नहीं नहाना चाहिये।

इस बातका सदैव स्मरण रखना चाहिये, कि पाखाना पेशाब जिन मन्दिरसे कमसे कम सौ हाथ दूर पर करना चाहिये। मन्दिरके मकानमें नाक छिनकना, थूक फेंकना उचित नहीं है।

५—शास्त्रोंमें कहा है, कि भोजनकी थालीमें जूठन नहीं छोड़नी चाहिये। कारण उसमें कुछ ही देर बाद असंख्य संमूर्च्छिम

जीवोंकी उत्पत्ति हो जाती है। इसलिये भोजनकी थाली तो धो पोंछ कर पी जानी चाहिये। अकसर जीमन आदिमें लोग बहुतसी जूँठन छोड़ देते हैं, श्रावकोंको चाहियें, कि न इतनी चीजें परोसें, न इतनी लें कि जूँठन रह जाये।

६—ऐसाही पानीके भी विषयमे भी समझना चाहिये। पानीके बर्तनोंसे पानी काढ़नेका लोटा अलग रखना चाहिए। जूँठा वर्तन उसमें नहीं डुबोना चाहिए। गुजरात काठियावाड़में तो यह वुराई बहुत है। सब भाई-बहनोंको इस दोषसे बचनेकीजरूरत है।

सूतक-विचार ।

लड़केका जन्म हो तो १० दिन तक सूतक रहता है, इसी तरह लड़कीका हो तो १२ दिन। यदि लड़का या लड़की जन्म ले कर मरणको प्राप्त हो जाय तो केवल एक दिनका सूतक लगता है। जिस स्त्रीके बच्चा होता है, उसे एक मास तक सूतक पालन करना पड़ता है। कोई स्त्री या पुरुष विदेशमे मर जाय तो उसके लिये एकदिन सूतक रखना चाहिये। यदि अपने घरमे नौकरनीको लड़का या लड़की हो तो तीन दिन तक सूतक लगता है। किसी स्त्रीको गर्भ रह कर गिर जाय तो जितने महीनेका गर्भ हो उतने दिन तक सूतक रखना पड़ता है।

जिनके घरमें जन्म-मरणका सूतक हो वह १२ दिन तक देव-पूजन न कर सकें। मृतकके सूतकमें घरके जिन आदमियोंने शवको उठाया हो वह १० दिन तक देव-पूजन न करें। और और बाहरके आदमी ३ दिन तक पूजन न करें।

जिन्होंने मृतकके शवको स्पर्श किया हो, वह चौवीस प्रहर प्रतिक्रमण न करें। जिनको नित्यके नियम हो वह समताभाव रख, मवर धर्ममें रहें। किन्तु मुखसे नवकार मन्त्रका भी उच्चारण न करे। स्थापनाचार्यजीको छुए नहीं। और जो मृतकको न छुआ हो वह आठ प्रहर प्रतिक्रमण न करे।

रजस्वला स्त्री चार दिन पर्यन्त घरकी किसी चीज़से स्पर्श न करे। चार दिन प्रति क्रमण न करे। पाँच दिन पूजन न करे। यदि रोगादिके कारण स्त्रीको रक्त वहता मालूम हो तो उसके लिये विशेष दोष नहीं। स्नानादि करके शुद्ध-पवित्र हो कर पाँच दिन बाद पुस्तकादिके स्पर्श करे। प्रभु दर्शन करे। अग्रपुजा करे, परन्तु अंग-पूजा न करे। रजस्वला स्त्री यदि तपस्या करे तो वह फलवती होती है। जिस घरमें जन्म-मरणका सूतक हो, वहाँ पर मुनिराज १२ दिन अहार-पानी न लेवें। सूतक वालेके घरका पानी या अग्र-पूजनके काममें नहीं आ सकता।

गाय, भैंस, घोड़ी, सांड, आदि घरमें विआवे तो १ दिनका सूतक लगता है। यदि मरण हो जाय तो जब तक शव न उठाया जाय तब तक सूतक रहता हे।